# विषय—सूची

## सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाने की दर

| स्थान | १ मास के लिये | ३ मास के लिये | ६ मास के लिये | १ वर्ष के लिये |
|---|---|---|---|---|
| पूरा पृष्ठ | १०) | २५) | ४०) | ७५) |
| एक कालम | ६) | १५) | २५) | ४०) |
| आधा ,, | ३॥) | ९) | १५) | २५) |
| चौथाई ,, | २) | ५) | ९) | १५) |

नोट—चौथाई कालम से कम विज्ञापन आने पर कालम की एक पंक्ति के =) प्रति मास के हिसाब से लिए जावेगे । विज्ञापन तथा रुपया प्रत्येक दशा मे पेशगी ही आना चाहिए ।

॥ ओ३म् ॥

# सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र।

वर्ष ८ | चैत्र सम्वत् १९९१ वि० | मार्च १९३४ ई० ] [ दयानन्दाब्द ११० | अङ्क १

## वेद की शिक्षाएँ

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ सनिषद्य यन्मंत्रयेते राजा तद्वेद वरुण स्तृतीयः॥

अ ४।१६।२

अर्थात् ( य तिष्ठति ) जो खड़ा होता है ( चरति ) चलता है, ( यश्च वंचति ) जो धोखा देता है ( यो निलायं चरति ) जो अपने को छुपा कर घूमता है ( यः प्रतङ्कम् ) जो दूसरे को कष्ट देकर इधर उधर जाता है, ( द्वौ संनिषद्य ) दो मित्र शान्ति से बैठ कर ( यत्र मन्त्रयेते ) जो गुप्त सलाह करते हैं ( तत ) उस सबको ( तृतीय. वरुण. ) तीसरा सर्व श्रेष्ठ ( राजा ) ईश्वर ( वेद ) जानता है।

भावार्थ यह है कि उस सर्वज्ञ सर्व व्यापक से कोई भी अपने को गुप्त नही रख सकता। परमेश्वर को सर्वज्ञ सर्व व्यापक समझने से ही मनुष्य अपने को सब पाप व्यवहारो से दूर रख सकता है।

# ॥ सम्पादकीय ॥

## भविष्य की भावना—

'सार्वदेशिक' अपने ८ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। 'पत्र' का मुख्योद्देश्य आर्यसमाज की शक्ति और पुरुषार्थ को संयुक्त करना और प्रान्तिक संकीर्णता को दूर करके 'सार्वदेशिकता' को प्रतिष्ठित करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये 'पत्र' का जन्म हुआ था। यह 'पत्र' सार्वदेशिक सभा का मुख-पत्र है। पत्र की नीति सभा की नीति से सम्बन्धित है। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि 'पत्र' अभी तक शैशवावस्था को पार नहीं कर पाया है। अपने अल्पजीवन में उसने यथा सम्भव उद्देश्य की पूर्ति और नीति की रक्षा के लिए भरसक यत्न किया है और 'सार्वदेशिक सभा' के उद्देश्यों को लोकप्रिय बनाने और आर्य समाज की सामूहिक शक्ति और पुरुषार्थ को केन्द्रित करने की दिशा में शानदार योग दिया है। सभा के गत कई वर्षों के वार्षिक विवरणों के पृष्ठ और पत्र के स्तम्भ स्वयं उपर्युक्त कथन के लिए प्रमाण हैं, साक्षी हैं।

हमारी एकान्त इच्छा और सतत प्रयत्न यही रहा है और रहेगा कि 'पत्र' अपने उद्देश्य के अधिकाधिक निकट पहुँचे और इसके लिए अपनी ओर से हमने कोई सम्भव प्रयत्न नहीं उठा रक्खा है और न भविष्य में उठा रक्खेंगे, इसका हम अपनी ओर से विश्वास दिला देना चाहते हैं।

उपर्युक्त उद्देश्य के संक्षिप्त विश्लेषण और प्रतिबन्धों के प्रकाश में हम एक और कदम आगे बढ़ने का साहस करते हैं। हमें 'आर्यजगत' में उच्चकोटि के एक मासिक का अभाव खटकता है—उस उच्चकोटि के मासिक का अभाव जिसमें वैदिक अन्वेषण, वैदिक सिद्धान्तों को प्रोत्साहन दिया जाय देश और विदेश की चर्चा रहे, आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण प्रगतियों का समावेश हो, भारतीय मातृत्व को प्रतिष्ठित किया जाय, उन्नत किया जाय आदि आदि। उच्च कोटि के मासिक की लग भग यही रूप रेखा हमारे सामने है। आर्यसमाज का एक ऐसा ही सर्वाङ्ग पूर्ण 'मासिक' होना चाहिए तब ही वह आर्यसमाज के बाहर के क्षेत्र मे सचालित होने वाले उच्चकोटि के मासिक पत्रो की प्रतियोगिता मे खड़ा रह सकता है। आर्यसमाज के बाहर इसमे सन्देह नहीं, बहुत अच्छे मासिक पत्र निकल रहे हैं और वे मासिक आर्यसमाज के इस अभाव से बहुत कुछ आर्थिक लाभ भी उठा रहे है और ऐसी लहर पर देश को, समाज को ले जा रहे हे, ऐसा साहित्य उत्पन्न कर रहे हैं, जो आर्यसमाज की प्रगतियो के प्रसार के लिये अनुकूल नहीं हैं और जिनसे देश और समाज के कल्याण की अधिक सम्भावना भी नहीं है। स्वयं आर्य नर नारी और आर्यसमाज के सदस्य भी उस आर्थिक लाभ और लहर में योग दे रहे हैं। क्या यह कम दुःख की बात है?

इन पंक्तियों के द्वारा हम किसी के पक्ष और स्वार्थ की पुष्टि करने नहीं आ रहे हैं, वरन् हम आर्य जगत के एक अभाव की ओर सच्चे हृदय से संकेत कर देना चाहते हैं। आर्य जनता से हम विनीत शब्दों में यही कहेंगे कि वह सर्वाङ्ग पूर्ण मासिक के अभाव पर गम्भीरता से विचार करे। यदि सचमुच वह इस अभाव को अनुभव करती है तो उसका कर्तव्य है कि वह इस अभाव को दूर करने का यत्न करे।

'सार्वदेशिक' आर्यों की शिरोमणि सभा का पत्र है। सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज के क्षेत्र में केन्द्रीय

शक्ति है । कदाचित् अपने क्षेत्र, अधिकार और उत्तर-दायित्व के अनुसार 'सार्वदेशिक' सभा को इस अभाव को दूर करने के लिए, कहा जा सकता है । 'सार्वदेशिक' सभा इस अभाव को अपने 'सार्वदेशिक' के द्वारा ही दूर करने का निश्चय कर सकती है और 'सार्वदेशिक' पत्र ने अब तक यथासम्भव कुछ यत्न भी किया है। हमारा विचार है कि 'सार्वदेशिक' पत्र इस अभाव को बहुत कुछ दूर कर सकता है । यह तब ही सम्भव है जब आर्य जगत का पूर्ण सहयोग इसे प्राप्त हो।

हम उन आर्य विद्वानों, आर्य लेखकों, आर्य कवियों और आर्य साहित्यिकों को उनकी रचनाओं के लिये हृदय से धन्यवाद देते है जिन्होंने 'सार्वदेशिक' के प्रति अब तक अपनी क्रियात्मक सहानुभूति और प्रेम का परिचय दिया है। उन रचनाओं से 'सार्वदेशिक' के गौरव में वृद्धि हुई है, इसे हम कृतज्ञता पूवक स्वीकार करते हैं। हमें आशा है कि 'सार्वदेशिक' भविष्य में भी उसी सहयोग और सहानुभूति का उपभोग करेगा । अभी तक यह पत्र जिन लेखकों और विद्वानों की सहानुभूति को आकर्षित नहीं कर सका है, विश्वास है कि जनता के सहयोग और हमारे प्रयत्नों से इस वर्ष यह भी सम्भव हो जायगा।

आर्य जनता को पता है कि 'सार्वदेशिक' गत कई वर्षों से निरन्तर घाटा सहन कर रहा है फिर भी किसी न किसी प्रकार अपने अस्तित्व को स्थिर रख रहा है। यदि भूमण्डल की १२०० समाजों मे से प्रत्येक पत्र का ग्राहक बन जाय तो 'पत्र' आर्थिक सङ्कट से मुक्त होकर उन्नति की दौड़ में आगे बढ़ सकता है और उच्च कोटि के मासिक का हमारा स्वप्न बहुत कुछ सच्चा हो सकता है। उच्चकोटि के मासिक के लिये 'सार्वदेशिक' के केवल २ फार्म पर्याप्त न होंगे । इसे बहुत कुछ विस्तार देना होगा। अधिक पैसा व्यय करना पड़ेगा। यह सब कुछ पत्र की ग्राहक संख्या की वृद्धि पर आश्रित है । आर्य मात्र का कर्त्तव्य है कि वह पत्र की ग्राहक संख्या बढ़ाने में अभी से यत्न शुरू करदे और हम अपनी ओर से 'सार्वदेशिक' के सम्पादन और प्रकाशन में कोई प्रयत्न उठा न रक्खेंगे। हम प्रसन्नतापूर्वक पत्र सम्बन्धी किसी भी त्रुटि को दूर करने और सलाहों पर ध्यान देने के लिये तैयार रहेंगे।

---

## धर्मार्य सभा—

*धर्मार्य सभा* का आगामी अधिवेशन जो २८ मार्च को होने वाला है वह एक महत्वपूर्ण अधिवेशन होगा। उसमें इस विषय का विचार उपस्थित किया जायगा कि आर्यसमाज का सदस्य अथवा आर्य सभासद बनने के लिये केवल १० नियमों का मानना जरूरी है अथवा उनके साथ अन्य वैदिक सिद्धान्तों का भी। इसी विषय पर विचार करने के लिये धर्मार्य सभा की बैठक से पूर्व २७ मार्च को सार्वदेशिक सभा की ओर से एक विशेष कान्फ्रेंस की आयोजना भी कर दी गई है। उस कान्फ्रेंस में सार्वदेशिक के सदस्य, धर्मार्य सभा के सदस्य, प्रादेशिक के निमन्त्रित सदस्य तथा इनके अतिरिक्त कतिपय विशेष निमन्त्रित विद्वान भी सम्मिलित होंगे। हम आगन्तुक सज्जनों की सेवा में यह निवेदन कर देना चाहते हैं कि वे यदि उपरोक्त कान्फ्रेंस में भाग लेवें तो आर्यसमाज तथा वैदिक धर्म के महत्व को दृष्टि में रखते हुए अपने विचारों को पेश करें। ऐसा न हो कि आर्यसमाज के विरोधी दल ये कहने पर उतारू हों कि आर्यसमाज के विद्वान गम्भीर विषयों पर पूर्ण गम्भीरता से विचार नहीं कर सकते । प्रायः देखा गया है कि विवादास्पद विषयों पर बोलते हुये उक्त लोग

गर्मी अधिक प्रगट करते हैं और प्रकाश की मात्रा कम। प्रस्तुत विषय को समझने के लिए तथा समझाने के लिए विद्वानो को अपनी विद्वता का प्रकाश करना चाहिए न कि उसके स्थान मे वैयक्तिक संघर्ष में आकर अनावश्यक व्यक्तिगत आक्षेपो में उलझना चाहिए।

---

## प्रस्तुत विचार

कान्फ्रेन्स में प्रस्तुत विचार नई दृष्टियो से पेश किया जा सकता है। आर्य्य समाज का भूतकालिक इतिहास यह सिद्ध करता है कि आर्य्य समाज का सदस्य होने के लिए केवल नियमो का मानना ज़रूरी समझा जाता रहा है। उन नियमो को मानकर जो लोग आर्य्यसमाज के सभासद् बन जाते थे उनके लिए ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्तो को मानना तथा उनका प्रचार करना भी अनिवार्य्य समझा जाता था। अब कतिपय महानुभाव इस बात पर जोर देते है कि दयानन्द प्रतिपादित सिद्धान्तो का मानना क्यों अनिवार्य समझा जावे। अत आवश्यक है कि इस बात को गम्भीरता पूर्वक विचारा जावे कि ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक सिद्धान्त क्यों और कहा तक आर्य्य सभासदो द्वारा माने जा सकते हैं। वेद ऋषि दयानन्द के पूर्व भी उपस्थित थे। वेदो के सिद्धान्तो की व्याख्या भी कई आचार्य्यों द्वारा की जा चुकी थी। ऋषि दयानन्द ने वेदो की जो व्याख्या की और उनके प्रचार के लिए जो आर्य्य समाजरूपी सस्था स्थापित की उनकी विशेषता को दृष्टि में रखते हुए प्रस्तुत विषय पर जितनी गम्भीरता से विचार किया जावे उतना थोडा है। हम किसी पक्ष का इस स्थान पर समर्थन करना उचित नहीं समझते हैं। हा! इतना अवश्य निवेदन करना चाहते हैं कि आर्य्यसमाज के विद्वानो को ठंडे दिल से इन प्रश्नो पर विचार करना चाहिए ताकि आर्य्यसमाज का सगठन कम जोर न होने पावे और दिनो दिन उसकी शक्ति बढती जावे, यह तभी सम्भव है जबकि आर्य्यसमाज के विद्वान अपने व्यक्तित्व पर ध्यान न देकर केवल आर्य्यसमाज की भलाई तथा वैदिक धर्म्म के प्रचार को अपनी दृष्टि मे प्रधान स्थान देगे।

---

## एक याचना—

हमारे यहा आए दिन ऐसे भाइयो के पत्र आते रहते है जो 'सार्वदेशिक' को पढने के लिए तो बहुत लालायित रहते है परन्तु पैसे की तङ्गी के कारण स्वय ग्राहक नही बन सकते। उन पत्रो मे यही माग होती है कि उन्हें सार्वदेशिक मुफ्त या कम मूल्य पर दिया जाय। 'सार्वदेशिक' पत्र की आर्थिक स्थिति अभी तक पूर्णतया न सभल सकने के कारण, हमे बडी अनिच्छा और दुख के साथ उन भाइयो को निराश कर देना पडता है। एक दो माग ही होती तो कदाचित् हम मौन रहते परन्तु जिस गति से यह मॉग उत्तरोत्तर बढ रही है वह सहसा ही उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखी जा सकती और इसी लिए विवश होकर हमें सार्वदेशिक परिवार के समक्ष आना पड रहा है। हम उन भाई बहनो की ओर से सार्वदेशिक परिवार से बलपूर्वक उनकी सहायता की याचना करेंगे। सहायता के कई रूप हो सकते हैं। एक रूप यह है कि सार्वदेशिक का प्रत्येक ग्राहक कम से कम ५ और ग्राहक बनावे और इस प्रकार पत्र की आर्थिक स्थिति को ठीक करने में योग देता हुआ सार्वदेशिक को ही यथासम्भव इस सहायता का श्रेय लाभ प्राप्त करने का अवसर देवें। एक दूसरा रूप यह हो सकता है कि

सार्वदेशिक के कोई सम्पन्न प्रेमी सार्वदेशिक सभा के निर्णय पर इस कार्य के निमित्त कुछ राशि रख दें और ज्ञान-दान के पुण्य के भागी बनें अथवा सार्वदेशिक परिवार के अन्य कोई सदस्य किन्हीं अन्य श्रीमान् को ऐसा करने के लिए प्रेरित कर दें।—

आशा है कि सार्वदेशिक के प्रेमी महानुभाव इस निवेदन पर विशेष ध्यान देंगे।

———

## ज्योतिषियों की लीला—

जो लोग समाज में अविद्या और अज्ञान फैलाते और लोगों को ठगने में उनसे लाभ उठाते हैं उनमें ही फलित ज्योतिष की आड़ में शिकार खेलने वाले ज्योतिषी होते हैं। यह लोग किस प्रकार गृहों के फल, यंत्र मंत्रों के जाप का विधान करते हुए भोली भाली जनता को ठगते हैं वह एक देवी के उस पत्र से भली भांति स्पष्ट है जो उसने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी को लिखा है। उस पत्र के उपयोगी भाग तथा श्री स्वामी जी के उत्तर को हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

देवी का पत्र—

मैं एक कुलीन तथा सम्पन्न पिता की कन्या हूँ। और वैसे ही एक सभ्य घराने में मेरा विवाह हुआ है। हम दोनों ( पति-पत्नी ) के विचार आर्य्य हैं। मेरे पिता जी को ज्योतिष ग्रन्थों में बड़ा विश्वास है। उन्हों ने स्वयं भी यह विद्या बड़े चाव से पढ़ी थी। बड़ी आयु तक वह सन्तान हीन रहे। जिस समय मेरा जन्म हुआ उस समय उनकी आयु ४० से ऊपर थी। उनके कथनानुसार भृगु शास्त्र की बतलाई हुई पूजा और जप आदि करने के अनन्तर ही मेरा जन्म हुआ था।

मेरे पिता के संस्कारों का प्रभाव मुझ पर भी है। आर्य्य विचार रखते हुए भी मेरा मन डाँवा डोल हो जाता है।

इस समय मेरी आयु २६ वर्ष की है। भृगु शास्त्र के कथनानुसार मैंने पूर्व जन्म में एक माता को उसके पुत्र सहित मरवा डाला था। अतएव मैं तब तक सन्तान सुख नहीं प्राप्त कर सकूंगी जब तक भृगु शास्त्रानुसार नियत पूजा और दान दक्षिणादि न दिया जाय।

गत मास एक पुत्र का जन्म हुआ भी था परन्तु वह मृतक था। यह घटना भृगु शास्त्र के कथन की पुष्टि करती है। मैं किंकर्त्तव्य विमूढ़ हूं। कृपा करके मेरे संशय निवारणार्थ उचित उपाय बतलाइए। इस बार की पूजा के पश्चात यह भृगु शास्त्री पंडित ८००० की रकम दक्षिणा में मांगते हैं। अभी कुछ ही दिन हुए हैं उन्होंने एक पत्र में यह भी लिखा है कि अट्ठाईसवें वर्ष में तुम्हारा अल्प मृत्यु योग भी है। अर्थात दूसरे वर्ष में, क्योंकि इन दिनों मेरी आयु का छब्बीसवां वर्ष जा रहा है।

मैं सत्य-असत्य का निर्णय नहीं कर सकती। और केवल सन्तान प्राप्ति के लिए ८०००रु० का दान देकर मैं पतिदेव को कंगाल भी नहीं बना सकती। परन्तु इतने पर भी मेरी मानसिक अशान्ति साथ नहीं छोड़ती। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रखते हुए भी कोई अज्ञात आशंका मुझे भयभीत बनाती है। पता नहीं यह नारी हृदय की दुर्बलता है या वास्तविक सत्य।

कृपा करके मेरा कर्त्तव्य-पथ बताइए।

श्री महात्मा नारायण स्वामी जी का उत्तर—

वह ज्योतिषी जो ८०००) माँगता है निश्चित रीति से ठग है। उसे एक पैसा भी नहीं देना चाहिए।

ज्योतिष जहाँ तक गणित नक्षत्रों के भ्रमण आदि

से सम्बन्धित है बिल्कुल ठीक है परन्तु जो ज्योतिष फलित के नाम से प्रसिद्ध है वह झूठी है। उसकी कोई बात यदि ठीक होगई हो तो उसे आकस्मिक घटना समझना चाहिए। मुझे आज तक ऐसा कोई ज्योतिषी नहीं मिला जो सब अथवा अधिक बातें ठीक बतला सके। आप संस्कार विधि के गर्भाधान प्रकरण को पढ़ कर उसके अनुकूल आचरण करें।

---

## ईसाइयों के प्रचार का ढंग

अभी हाल में भारतवर्ष में एक अमेरिकन ईसाई मिशनरी आया हुआ है। वह भारत के बड़े बड़े शहरों में प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यक्तियों और सभा सोसाइटियों के कर्मचारी से भेंट कर रहा और उनके हाथ अपना साहित्य बेच रहा है। लाहौर के दयानन्द कालेज के अनुसन्धान विभाग ने भी उससे कुछ साहित्य लिया है। इस मिशनरी ने एक लारी बना रक्खी है इसी में किताबें रक्खी हुई हैं और उसी में उसने अपने सोने का एक कमरा बना रक्खा है। जहाँ कोई होटल या डाक बंगला ठहरने के लिए नहीं मिलता वहाँ वह अपनी लारी के कमरे में ही सोता है।

ईसाई मत के प्रचार के ढंगों में से यह एक ढंग है। किसी भी प्रचार आयोजना को चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक हो, या अन्य किसी प्रकार की स्थिर और व्यापक रूप देने का सर्वोत्तम साधन उसका लेख बद्ध प्रचार होता है। जो समाज इस बात के महत्व को अधिकाधिक अनुभव करते हुए इससे लाभ उठाते हैं उनमें ईसाई समाज विशेष स्थान रखता है। ईसाइयों का प्रकाशन कार्य्य वा लेखबद्ध प्रचार अच्छा, सुदृढ़ और सराहनीय है और इसी से वे अपने प्रचार कार्य्य में आशातीत लाभ उठाते तथा अपनी प्रगतियों को व्यापक बनाते वा बनाने का यत्न करते रहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण इस कथन की भली भाँति पुष्टि करता है। जहाँ इस ईसाई मिशनरी का धर्म प्रेम सराहनीय है वहां उसका त्याग और तपस्या अनुकरणीय है। आर्य समाज ने वेद के सन्देश को घर घर पहुँचाने के लिए जो कुछ किया है वा जो कुछ वह इस समय कर रहा है उसे चाहिए कि वह उस पर इस तथा इस प्रकार के उदाहरणों के प्रकाश में विचार करे।

## पंजाब यूनिवर्सिटी का प्रशंसनीय निश्चय

पंजाब की यूनिवर्सिटी ने निश्चय किया है कि भविष्य में सिवाय अंग्रेजी के इंट्रेंस तक की शिक्षा वर्नाक्यूलर भाषाओं में हो सकेगी और परीक्षाएं भी इन्हीं भाषाओं में हुआ करेंगी। यह निश्चय विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास और उनकी उन्नति तथा शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए जहाँ महत्व पूर्ण है वहाँ पंजाब जैसे उर्दू प्रधान प्रान्त को देखते हुए और भी महत्व पूर्ण है। इस निश्चय के प्रति सिण्डीकेट के अधिकांश मुस्लिम सदस्यों ने जिस मनोवृत्ति का परिचय दिया वह बड़ा ही खेदजनक था। उन्होंने वर्नाक्यूलर को उर्दू में परिवर्तित करने पर बल दिया था परन्तु सिण्डीकेट के बहुमत ने इसे अस्वीकार करके दिखला दिया कि उनकी मनोवृति कितनी दूषित कितनी संकुचित और साम्प्रदायिक थी। हम सिण्डीकेट को इस निश्चय पर बधाई देते हैं।

---

# त्रैतवाद

इस लेख में वैदिक धर्म के त्रैतवाद की अन्तर्निहित वैज्ञानिकता सत्यता, विशिष्टता और सुन्दरता को प्रकाश में लाया गया है। लेख पठनीय है।

[ ले० श्रो० पं० चन्द्रभानु जी आर्य्योपदेशक ]

( गताङ्क से आगे )

त्रैतवाद फिलौस्फी के लिये वैदिक धर्म मुख्य है। यह ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीनो की सत्ताओ को स्वीकार करता है। जैसा कि मेरे पूर्व लेखो के पढ़ने से ज्ञात हुआ होगा कि ससार के विशाल धार्मिक क्षेत्र मे कोई तो केवल ईश्वरवाद के लिये ही संसार मे धूमधाम मचाना चाह रहा है, और दूसरो को जगन्मिथ्या की तरह मिथ्या ही समझ रहा है तो दूसरा केवल प्रकृति या Matter को ही सर्वेसर्वा. समझ रहा है, और उसी के आगे सिजदा किये पड़ा है उसी की परस्तिश और तरक्कीमे अपनी तरक्की समझ रहा है। इधर तीसरा केवल जीव और प्रकृति को लिये ही अपना राग अलाप रहा है और यदि ईश्वरवादी बनने की इच्छा कर भी रहा है तो जीव की उच्चावस्था (Superlative degree) मे ही ईश्वर की झलक देख रहा है परन्तु वैदिक धर्म ऐसा विशाल, उच्च और गम्भीर धर्म है कि वह सब प्रचलित धर्मो को एक २ या दो २ तत्वों पर लडते झगड़ते देखता हुआ तथा केवल ईश्वर ही एक तत्व है या केवल प्रकृति ही एक तत्व है या केवल जीव और प्रकृति ही, चेतन और अचेतन ही, जीव और अजीव ही दो तत्व हैं ऐसा कह २ कर मचलने वाले बन्धुओ की हालत को परखता हुआ मुस्कराता है और बड़े प्रेम से समझा कर कहता है कि न तो केवल जगत् मे ईश्वर की ही ज्योति जगमगाती है और न केवल जीवात्मा की ही सत्ता स्वय सिद्ध है तथा न केवल स्वय जगत् ही अपने अस्तित्व का प्रमाण भली प्रकार और पुकार २ कर दे रहा है अपितु ईश्वर जीव और प्रकृति यह तीनो ही सत्ताएं इस ससार मे स्वय सिद्ध है। ससार का कोई भी मत इन मे से किसी एक को भी सिद्धान्त या तर्क की बारूद से नही उड़ा सकता है। सब धर्म थोड़े २ से सत्य को लिये हुए खड़े हैं परन्तु वेदिक धर्म सत्य से ओतपोत है इसलिये आओ ' सब अपने २ सत्यो को मिला डालो तो फौरन देख लोगे कि वह वैदिक धर्म बन जाता है अथवा तुम वैदिक धर्म मे ही सब सत्यो की आभा और प्रभा पा जाओगे, यह सब सत्यो का समाश्रय है इससे ही सब ओर सत्य का प्रकाश प्रसरित हुआ है यह सब धर्मो मे सबसे प्राचीन और सब का आदिस्रोत है। विदेशी विद्वान मैक्समूलर के शब्दो मे वैदिक धर्म की सब से प्रथम पुस्तक ऋग्वेद विश्व साहित्य मे प्राचीनतम पुस्तक है अत मै धर्मों के सामान्यवाद को लेकर कह सकता हू कि जिस प्रकार ईश्वर दृष्टि से रब सब मे है और सब रब मे है उसी प्रकार धर्म दृष्टि से वैदिक धर्म सब मे है और सब वैदिक धर्म मे है तथा विशेष वाद को लेकर ज़ोरदार शब्दो मे कहता हूँ कि जहां किन्ही धर्मों ने केवल ईश्वर वा

केवल प्रकृति तक केवल एक क़दम उठाया है तथा दूसरे धर्म ने जीव व अजीव कह कर प्रकृति और जीव को मान कर पहलों से बढ़कर दो क़दम उठाये हैं वहां वैदिक धर्म ने इन सब मतों सम्प्रदायों और धर्मों से बढ़ कर बड़ी बुद्धिमत्ता जवांमर्दी और मजबूती के साथ ईश्वर जीव और प्रकृति नामक तीन क़दम उठाए हैं या यों समझिये जिस प्रकार शून्य से एक बड़ा है उसी प्रकार शून्य वादियों से एकत्वादी बड़े हैं तथा जिस प्रकार दो एक से बड़ा है और दो में एक शामिल होता है उसी प्रकार एकत्ववादियों से द्वैतवादी बढ़ चढ़ कर हैं और एकत्ववाद द्वैतवाद में शामिल है और जिस प्रकार तीन में एक और दो दोनों शामिल होते हैं परन्तु तीन, एक और दो इन दोनों से अलग २ तौर पर आगे बढ़ा हुआ होता है उसी प्रकार त्रैतवादी वैदिक धर्म एकत्वादियों और द्वैतवादियों से बढ़ चढ़ कर हैं तथा वे सब इस में सम्मिलित हैं।

यह त्रैतवाद की फिलौस्फी या ईश्वर जीव और प्रकृति का सिद्धान्त बहुत ही वैज्ञानिक (Scientific), युक्ति युक्त (Rational) और पूर्ण (Complete) है। यदि आप ज़रा भी विचारें तो आप इसकी विभूति यत्र तत्र सर्वत्र विद्यमान पाएँगे, दुनियां में जिस प्रकार राजा, प्रजा और राज्य तीन चीज़ होती है उसी प्रकार ईश्वर हमारा राजा है वेद में कहा है —

इन्द्रो विश्वस्य राजति शन्नो, अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ यजु० ३६ । ८

यह सारी प्रकृति उस प्रभु का राज्य है और हम सब उसकी प्रजा हैं। जिस प्रकार दुनियां में दान देने वाला, दान लेने वाला और दान यह तीन चीजें होती हैं उसी प्रकार ईश्वर सबसे बड़ा दानी है, हम सब उसके दर के भिखारी हैं, और यह सारी प्रकृति उसका दान है। जिस प्रकार बाज़ार में एक दुकानदार होता है, दूसरे ग्राहक और तीसरी बेची जाने वाली चीजें, उसी प्रकार ईश्वर इस दुनियां के बाज़ार में सबसे बड़ा दुकानदार है और मज़ा यह है कि वह सब चीजें हम ग्राहकों को अपनी असीम अनुकम्पा और कृपा से मुफ़्त ही दे रहा है। दुनियां के सब पदार्थ और भोग तथा मोक्ष जैसे उत्कृष्ट रत्न उसकी दुकान में एक से एक बढ़ कर रक्खे हुए हैं जो भी ज्ञान और कर्म के जितने दाम लेकर पहुँचता है उसको उतना ही पदार्थ मिल जाता है। अथवा त्रैतवाद को यों समझिये कि जिस प्रकार संसार में साधक, साध्य और साधन तीन चीजें होती हैं, एक यात्री होता है जो किसी की प्राप्ति के लिये चलता है तथा सड़क पर चलता है उसी प्रकार हम सब जीव यात्री हैं, यह दुनियां ही सड़क है तथा ईश्वर ही हमारा साध्य, लक्ष्य, मंज़िले मक़सूद और Destination है। अस्तु, इसी प्रकार की वैदिक धर्म की अन्य अनेक सचाइयों विशेषताओं और सुन्दरताओं का निदर्शन मैं आपको कराना चाहता था परन्तु विस्तार भय और समय संकोच से इतने पर ही सन्तोष करता हुआ अन्तमें ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार वैदिक धर्म के सुन्दर, सरल, सरस, और सार भरे तत्वों और उपदेशों ने मुझे मुग्ध कर रक्खा है तथा उसके शीतल, निर्मल और मधुर सुधामृत ने मुझे परितृप्त किया है उसी प्रकार

# भूगर्भ

[ लेखक—श्री० पं० प्रियरत्न जी आर्ष ]
( गताङ्क से आगे )

६—भूभ्रमण:—

( प्रश्न ) पृथिवी घूमती है या नहीं ?

( उत्तर ) अवश्य घूमती है क्योंकि वेद मे लिखा है—

"आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः"

( प्रश्न ) जब कि यह पृथिवी पूर्व को तरफ घूमती है तो कोई पक्षी उड़कर पश्चिम की तरफ जाता है और सायंकाल अथवा कुछ कालान्तर में वह पक्षी अपने घोंसले को प्राप्त कर लेता है। ऐसी हालत में उसको उसका घोंसला नहीं मिलना चाहिये क्योंकि पक्षी वायु में उड़कर पश्चिम की ओर चला गया और पृथिवी पूर्व की ओर बहुत दूर पहुँच गई अतएव पृथ्वीस्थ वृक्ष आदि पर उसका घोंसला भी उस पक्षी से बहुत दूर होजाने से नहीं मिलना चाहिये ?

( उत्तर ) पक्षी जितनी वायु मे उड़ सकता है वह सब वायु मण्डल पृथिवी के साथ घूमता है इस लिये पक्षी की चाल का ही अन्तर पड़ता है पृथिवी की चाल का नहीं। ऐसा ज्योतिष का सिद्धान्त है।

( प्रश्न ) दिन रात की व्यवस्था किस प्रकार होती है ?

( उत्तर ) दिन रात की व्यवस्था में पृथिवी का भ्रमण तथा सूर्य रश्मियों का सामुख्य-पतन कारण है क्योंकि वेद में लिखा है:—

"एते उत्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते" (साम० । उ० १९ । ५ । १)

इस सूर्य को किरणें पृथिवी आदि लोक के सामने वाले आधे भाग पर दिन को बनाती हैं। तथा—

"उदयो यो लङ्कायां सोऽस्तमयः सवितु रेव सिद्धपुरे। मध्याह्नो यमकोट्यां रोमक विषये अर्ध रात्रिः स्यात्" ( आर्यभट्ट ज्योतिः शास्त्र )

अर्थ:—लङ्का में जब सूर्योदय होता है तब सिद्धपुर के अन्दर अस्त होता है। तथा जब यम कोटी नगरी में मध्याह्न होता है तब रोमक देश में अर्द्ध रात्रि होती है। ये चारों नगरी क्रान्तिवृत्त ( सूर्य के भ्रमणरूप गोलाकार मार्ग ) में नवति नवति ( नब्बे नब्बे ) अंशों के अंतर से हैं।

पृथिवी के घूमने के कारण से ही प्रदेशक्रम

---

यह सकल विश्व के सतप्त और पिपासु बन्धुओं की तुष्टि और पुष्टि का कारण बने तथा मुझे सदा ही इस पवित्र धर्म की सेवा करके अपने चरित्र को महान् और उदात्त बनाने का सौभाग्य प्राप्त हो तथा मैं अपने प्रत्येक जन्म में झूम २ कर और मस्त हो कर गाया करूं—

हे ईश! भारतवर्ष में शतवार मेरा जन्म हो।
कारण सदा ही मृत्यु का वैदिक प्रचारक कर्म हो॥

से दिन रात मे हेर फेर पड़ता रहता है क्योकि जितना भू भाग सूर्य के सामने आता है उतने ही भूभाग पर दिन और शेष पर रात्रि होती है।

(प्रश्न) भूमि के निचले भाग पर पाताल (अमरीका) मे रहने वाले लोग गिर क्यो नही जाते ?

(उत्तर) "सर्वतैव महीगोले स्वस्थान मुपरिस्थितम्। मन्यन्ते रवे यतो गोलस्तस्य क्वोर्ध्व क्वाप्यधः ॥"

अर्थ.—इस भूगोल के सभी जगह रहने वाले अपने आपको ऊपर मानते हैं क्योकि भूगोल का ब्रह्माण्ड मे स्थित होने के कारण ऊर्ध्व और अधो भाग ही नही है। अत आकाश के बीच मे पृथिवी गोल पर ऊपर नीचे का व्यवहार परस्पर का अपेक्षाकृत है। वास्तविक नही है।

इसलिये यदि गिरने का प्रश्न होगा तो भूगोल के सभी उपस्थित वस्तुओ के गिरने का हो सकता है किन्तु जिस प्रकार किसी वृत का सबसे नीचे का अंश केन्द्र आधार रूप होता है एव खगोल मध्य मे पृथिवी सबसे नीचे पर है यह ज्योतिष का सिद्धान्त है तब गिरने वाली वस्तु नीचे पृथिवी पर ही गिर सकने से सदा पृथिवी पर रहेगी क्योकि पृथिवी सबसे नीचे है। यद्यपि आजकल का विज्ञान इस बात को नही मानता कि पृथिवी खगोल के मध्यम यानी बीचके अवकाश मे हो यह कोई आवश्यक नही कि प्राचीन अनुभूत ज्योतिष-सिद्धान्त को आजकल के विचारो के सामने गलत समझा जावे। कारण कि वर्तमान विज्ञान दिन प्रतिदिन अपने विचार या सिद्धान्त बदलता रहता है कई बार देखने मे आया कि अन्त मे बदलते बदलते पुराने आर्य सिद्धान्तो को ही माना। ज्योतिष मे खगोल या ब्रह्माण्ड ही गोल है ऐसा मानते हैं अन्त मे आज विज्ञान को भी स्वीकार करना ही पड़ा कि आकाश भी गोल है उसकी कक्षा भी गोलाई से चलती है। 'अस्तु'

"आकृष्टशक्तिश्च मही तया यत्स्वस्थं गुरुस्वाभि मुखम् स्वशक्तया। आकृष्यते तत्पततीव भाति समेसमन्तात् क्वपतत्वियंखे' (सिद्धान्त शिरोमणि)

अर्थ—पृथिवी के अन्दर आकर्षण शक्ति बड़ी भारी है। इस आकर्षण शक्ति से जो भी उसके ऊपर का पदार्थ है वह गुरुत्वाभि मुख होकर स्व शक्ति से आकर्षित होता है। लोक दृष्टि से गिरता जैसा प्रतीत होता है। पर गिरता नही है कारण कि चारो ओर से एक बिन्दु के आधार वालवृत से आकाश मे कहा गिर कर जा सके। अपितु आकर्षण शक्ति पृथिवी के समीप वाले पदार्थो को अपनी ओर खींचे रखती है। कदाचित् किसी दूसरे निमित्त से पृथिवी स्थल को छोड़कर कोई वस्तु ऊपर चली जावे तो पुन. निमित्त के अभाव से आकृष्ट होकर पृथिवी तल पर आ जाती है। जैसा कि ऊपर वेग से फैका हुआ मिट्टी का ढेला वेग की समाप्ति के अनन्तर न इधर उधर टेढ़ा होता है और न आगे गति कर सकता है किन्तु पृथिवी का विकार होने से पृथिवी पर ही आता है। यही सिद्धान्त महाभाष्य व्याकरण मे भी वर्णित है:—

"लोष्टः क्षिप्तो बाहुवेगं गत्वा नैव तिर्यगाच्छति नोर्ध्व मारोहति पृथिवी विकारः पृथिवीमेव गच्छति ॥" (महाभाष्य)

# वैदिक सिद्धान्त तथा वेदार्थ की चर्चा

[ले०-श्री० राज्यरत्न मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी]

१—कई विद्वान कहा करते हैं कि ऋषि दयानन्द जी युरुपादि के विज्ञानियो के प्रयोगो के आधार पर जो बात लिखते थे उसको ही वैदिक धर्म वा वेद का सत्य मत दर्शाते थे।

पर यह बात उनकी ठीक नहीं—कारण कि

(क) ऋषि के समय मे युरुप के सब विज्ञानी Sixtyfour Elements वा ६४ भौतिक तत्व मानते थे। ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश मे ५ महाभूत ही सत्य माने हैं, जिनके सत्य होने का आधार वैदिक ऋषियो की योगदृष्टि पर है।

(ख) ऋषि के समय डारविन साहेब का विकासवाद सत्य माना जाता था। ऋषि ने समाज के प्रथम तथा तीसरे नियम मे इसको नही माना।

(ग) आज Allopathic विज्ञान डाक्टर लिखते हैं कि तेल के जलाने से जो जो धूम ( Gases ) उत्पन्न होती है-ठीक वही वही धूम (Gases) घृत के जलाने से जन्म लेती हैं। इसलिये वह हवन यज्ञ मे सस्ते तेल जलाने का अनुरोध किया करते हैं।

पर योगदृष्टि तथा मानवी Natural Senses उक्त बात का खण्डन करती हैं। बाजार मे एक बालक भी तेल के रूप तथा गन्ध मे अपनी आँख तथा नाक से घृत की तुलना मे भेद पाता है। स्वाद मे भी चखने पर भेद पाता है। जलने पर भी एक मे दुर्गन्धी वाली खासीजनक वायु अनुभव करता है। दूसरे मे नही।

अत उक्त प्रयोग इन डाक्टरो का ठीक नहो। विज्ञानके अशुद्ध प्रयोग योग दृष्टि ही ठीक करेगी।

(घ) सब Chemists ( रसायन शास्त्री )लिखते हैं कि Diamond ( हीरा ), Charcoal ( कोयला ) तथा Graphite ( पैंसली सुरमा , उनके भौतिक प्रयोगो की दृष्टि से एक Carbon ( अगारक तत्व के समान विकार है।

पर मानवी Intution वा योगदृष्टि इसका अनुभव द्वारा खण्डन करती है। एक माशा कोयले का चूर्ण वा पैंसल का सुरमा खा जाने से मनुष्य मरता नही—किन्तु उतनी मात्रा मे हीरा खा जाने से यह मर जाता है।

इसलिये विज्ञान की अशुद्ध बातो को हम सत्य कैसे मानल।

अत हम कहना चाहते है कि वैदिक वा आर्ष-सिद्धान्तो का आधार यूरुप के भौतिक प्रयोग नहीं किन्तु जीवन युक्त वैदिक ऋषियोकी योग दृष्टि है। यूरुप के विज्ञानी जिस दिन Reason के साथ साथ Intution वा योग दृष्टि की बात भी मानेंगे—उस दिन वह अपने प्रयोगो की भूले सुधार सकेंगे।

अब वेदार्थ सम्बन्धी एक दो बाते लिखनी जरूरी है। आज कल अनेक सस्कृत के पण्डित चाहते है कि वेदो मे से ही वेदो के अर्थ करे। यह बात सेवक को ठीक नहीं प्रतीत होती,कारण कि

(क) इस समय अमरीका मे Davis योगी हुए हैं। जिनको महामुनि पं० गुरुदत्त जी भी सच्चा योगी मानते थे। उन्होने अपना मुख्य ग्रन्थ Natures Divine Revelation समाधि दशा मे उच्चारण किया था। उक्त ग्रन्थ गुरुकुल कांगड़ी के

# विशेष प्रचार आयोजन

[ ले० श्रीयुत केशवदेव ज्ञानी ( मद्रास ) ]

( इस लेख में विविध शिक्षा केन्द्रो में आर्य्य समाज की ओर से विशेष व्याख्यानमालाओ के आयोजन की ओर संकेत किया गया है। यद्यपि इस प्रकार के आयोजन का विचार नवीन नहीं है और आर्य्य समाज के ज़िम्मेवार व्यक्तियों और सभा सोसाइटियोका ध्यान बहुत पहले से इस ओर खिंचता रहा है तथापि इसकी व्यावहारिकता के सम्बन्ध में विद्वान लेखक ने जो क्रियात्मक उपाय प्रस्तुत किया है अवश्य ही उस पर गभीर विचार होना चाहिए। )

आयसमाज पर प्राय आक्षेप किया जाता है कि उसने अपनी प्रचार शैली म ईसाई मिशनरियो का अनुकरण किया है। सम्भव है कि यह ठीक हो। क्योकि जैसे मिशनरी लाग अपने धर्म प्रचार के लिये स्थान २ पर स्कूल कालिज, बोडिग हाउस, अस्पताल, अनाथालय, आदि खोलते हैं उसी प्रकार आर्य समाज भी कर रहा है। परन्तु प्रश्न तो यह है कि ईसाइयो ने प्रथम मे यह शैली कहाँ स सीखी ? सीधा उत्तर है 'बौद्धो से" और बौद्धा न ? हिन्दू धर्म स। इस प्रकार वस्तुत आर्यसमाज अपनी ही प्राचीन आर्य पद्धति का अनुकरण कर रहा है।

अस्तु, यहाँ हम एक "विशेष प्रचार आयोजन' का वर्णन करने लगे है जिस क्रिश्चियन मिशनरी प्राय कार्य मे लाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व की बात है कि स्थानीय क्रिश्चियन कालेज के

---

पुस्तकालय मे है। इसकी भूमिका प्रत्येक जिज्ञासुको पढनी चाहिये। ठीक इसी बात की पुष्टि कि योगी ही वेदार्थ कर सकता है आपको योगी वर ऋषि दयानन्द जी के सत्यार्थ-प्रकाश मे मिलेगी—जहा वह दर्शाते हैं—कि जब २ योगीजन समाधि को प्राप्त हुए तो ईश्वर ने अभीष्ट मन्त्रो के अर्थ जनाये। Davis Rishi Dyanand Muni Gurudatta सेवक के विचार मे योग दृष्टि से वेदार्थ अनुभव करके लिखते थे।

जब भारत के योगी ऋषियो ने छ अङ्ग और छ उपाग वेदार्थ करने को रचे हैं तो हमे इनके मार्ग पर चलकर वेदार्थ करना होगा—ऋषि तथा परम योगी दयानन्द का वेद भाष्य हमारे लिये एक Guide ( मार्ग दर्शक ) का काम दे रहा है। स्वर्गीय पं० श्रीतुलसीराम जी, पं० श्रीआर्य्य मुनि जी, तथा स्वर्गीय पं०श्री काव्यतीर्थजी ने इसी मार्ग पर चलकर वेदार्थ प्रकाश का उत्तम काम किया है। उसकी अधिक जरूरत आजकल है। America मे वेदों के सूत्रो के यदि महामुनि पं० गुरुदत्त समान अङ्गरेज़ीदां आर्य्य पंडित विद्वान Expositions लिखे तो कवि सम्राट समान भारी सेवा कर सकते हैं। कवि सम्राट का एक ग्रन्थ जिसका नाम English मे The Sadhana है प्रत्येक विद्वान को पढ़ना चाहिये।

एण्डरसन हाल में शिकागो यूनीवर्सिटी के सुप्रसिद्ध विद्वान डीन शैलर मैथ्यूज एम० ए० डी० डी० एल० एल० डी० की व्याख्यानमाला प्रारम्भ हुई। उसके लिये हमें भी निमन्त्रण मिला। योग्य विद्वान ने अपने छः भाषणों में अद्भुत रूप से ईसाई धर्म को शिक्षित जनता के समक्ष रखा। वक्ता की विद्या, योग्यता, भाषण शैली तथा अकाट्य युक्तियों ने अवश्य श्रोताओं को मुग्ध कर लिया। और इस प्रकार अल्प प्रयत्न से अनेक शिक्षित हिन्दुओं का झुकाव ईसाइयत की ओर हो गया।

डाक्टर शैलर मैथ्यूज भारतवर्ष में Barrows Lectures" बैरोज़ लैक्चर्स की ओर से आये हैं। इसका प्रारम्भ आज से ४१ वर्ष पूर्व सन् १८९३ ई० में पार्लियामैण्ट-आफ़ रिलिजन्स शिकागो में हुआ था। उस समय एक मिसिज़ हास्कैल ने धन-राशि दान में दी थी जिसके द्वारा समय २ पर भारत के मुख्य स्थानों में व्याख्यान दिये जायँगे। बैरोज़ लैक्चर्स के उद्देश्य को समझने के लिये हम निम्न पंक्तियां उद्धृत करते हैं:—

"A course of lectures to be given by leading Christian Scholars of America Europe and Asia, in which, in a friendly, temperate, conciliatory way and in the fraternal spirit which pervaded the Parliament of Religions, the great questions of the truth of Christianity, its harmonies with the truths of other religions, its rightful claims and the best methods of setting them forth, should be presented to the scholarly and thoughtful people of India."

अर्थात् इसके द्वारा शिक्षित भारतीयों में ईसाई-मत के सत्य सिद्धान्तों का अमरीका, यूरुप व एशिया के प्रसिद्ध क्रिश्चियन विद्वानों द्वारा प्रचार किया जाएगा।

× × ×

जैसा हम पहले ही कह चुके हैं, कि यह प्रचार का ढंग हिन्दुओं के लिये कोई नया नहीं। क्योंकि जब हम बृहत्तर भारत यथा बाली, जावा, सुमात्रा, स्याम अनाम आदि द्वीपों के प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालते हैं तो हमे स्पष्ट दिखाई देता है कि किस प्रकार पिछले जमाने में हमारे भारतीय विद्वान—विशेषतः आर्य अपने धर्म तथा विज्ञान को फैलाने के लिये देश-देशान्तर तथा द्वीप-द्वीपान्तर जाया करते थे। दूर की छोड़ दीजिये। यहीं दक्षिण-भारत के मद्रास प्रान्त में अभी तक कितने ही प्राचीन चिह्न मिलते हैं जिनसे साफ़ पता चलता है कि हमारे पूर्वजों ने किस प्रकार अनेक असभ्य अथवा अर्द्ध सभ्य जातियों को महान् आर्य-धर्म का उपदेश किया। अस्तु।

× × ×

गत कुछ समय से आर्य समाज नवीन प्रोग्राम बनाने की चिन्ता में है। कइयों ने ग्राम-प्रचार का विषय जनता के समक्ष उपस्थित किया है। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि लगभग ९० प्रतिशत भारतीय जनता देहातों में रहती है। और जब तक उसमें आर्य सामाजिक विचारों का प्रचार न किया जाय तब तक ध्येय में सफलता नहीं मिलेगी।

इसी प्रकरण में हम आर्य जनता का ध्यान उन दस फीसदी शिक्षित भारतीयों की ओर खींचना चाहते हैं जो प्रायः नगरों में रहते हैं और जिनका प्रभाव अशिक्षित जनता पर वर्णनातीत है। हमारा

"विशेष-प्रचार-आयोजन" इन्हीं शिक्षितों के लिये ही है। इस आयोजन का यह सर्वथा अर्थ नहीं कि हमें ग्राम-प्रचार नहीं करना चाहिये, अपितु ग्राम-प्रचार के साथ शिक्षित जन-समुदाय की उपेक्षा भी नहीं करनी चाहिये।

अस्तु, विशेष-प्रचार-आयोजन हमारी नम्र सम्मति में अत्यन्त क्रियात्मक, बहुत कमखर्चीला और अतिशय उपयोगी है। इस आयोजन का उद्देश्य यह है कि वर्ष में एक या दो बार मुख्य २ नगरों में, शिक्षणालयों, कलाशालाओं, टाउनहाल आदि मुख्य स्थानों व अन्य पब्लिक जगहों पर आर्यसमाज के चोटी के विद्वानों द्वारा व्याख्यान-मालायें दिलाई जाए।

उदाहरण के लिये डी० ए० वी० कालेज अथवा गुरुकुल के २, ३ उपाध्यायों को ले लीजिये जो सर्वथा प्रचार कार्य के योग्य हों। गरमी के दिनों में जब कि उन्हें लगभग ३ मास का अवकाश मिलता है, यदि कोई प्रान्तीय अथवा सार्वदेशिक सभा उन्हें बंगाल, बम्बई व मद्रास प्रान्त में भेजने का प्रयत्न करे और उक्त सज्जन दो तीन मास निरंतर भ्रमण करके प्रान्त के समस्त मुख्य नगरों में ऋषि दयानन्द का सन्देश पहुँचाएं तो कितना महान् कार्य हो सकता है।

हम अपने १०, १२ वर्षों के प्रचार-अनुभव से कहते हैं कि आज कल के शिक्षित युवक वर्तमान रूढ़िवादी हिन्दू धर्म से अत्यन्त उदासीन हैं। वह चाहते हैं कि किसी प्रकार अपने धर्म को Rational अथवा युक्ति युक्त बना सकें परन्तु उन्हें कोई उपाय नहीं सूझता। परिणाम यह है कि वे धर्म से विमुख हो कर या तो नास्तिक हो जाते हैं और नहीं तो ईसाइयत की शरण लेते हैं। यही कारण है कि मद्रास प्रान्त में जहाँ शिक्षा अधिक है वहां ईसाइयत का प्रचार भी अन्य प्रान्तों से बहुत ज्यादा है।

जैसा हमने ऊपर कहा हमारे इस विशेष प्रचार-आयोजन का व्यय अत्यन्त न्यून होगा। प्रस्तुत में केवल मात्र मार्ग व्यय देना पर्याप्त है। हमारा विश्वास है कि यदि कोई जिम्मेवार संस्था इस कार्य को अपने हाथ में लेवे तो ऋषिभक्त विद्वानों की कमी न होगी जो अपना ठीक समय इस विशेष-प्रचार-आयोजन के लिये अर्पण कर सकें।

मद्रास आर्यसमाज की हार्दिक इच्छा है कि अवश्य इस प्रकार के विद्वान प्रचारक इधर आवें और इस पिछड़े हुए प्रान्त में आर्य विचारों का प्रचार करें। यदि कोई सज्जन २-३ मास का समय देने के लिये उद्यत हों तो आर्यसमाज मद्रास उनका मार्ग व्यय भरने के लिये सहर्ष तैयार है।

पत्र व्यवहार का पता: -

श्री मंत्री आर्य समाज,
१७०, चाइना बाजार
मद्रास।

— ——

# श्री स्वामी स्वतंत्रानन्द जी का भाषण

(आर्य विद्वत्-सम्मेलन (अर्द्धशताब्दी) अजमेर के सभापति की हैसियत से श्रीस्वामी जी महाराज ने जो विद्वत्तापूर्ण अभिभाषण पढ़ा था वह सार्वदेशिक के पाठकों के लाभार्थ क्रमशः दिया जाता है।)

येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा।
तेन सहस्र धारेण पावमानीः पुनंतु नः।
(साम)

आप सज्जनों ने जो इस पद पर मुझे कार्य करने की आज्ञा दी है, मुझे यह कहने में कुछ भी संकोच नहीं है कि मैं इसके योग्य नहीं हूँ क्योंकि मेरी अपेक्षा अधिक अनुभवशील तथा विद्वान आप में हैं। यह पद उन्हीं को शोभा देता था और उन्हीं से यह सुशोभित होता तो अत्युत्तम होता। इस विषय मे अब अधिक लिखने और बोलने का अवसर न होने से मैं इसे समाप्त करता हुआ आप सज्जनों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे यह सेवा दे कर आशीर्वाद रूप से उन्नत करने का यत्न किया है और सब विद्वानों से सानुरोध प्रार्थना करता हूँ वह मुझे अयोग्य समझ कर इस कार्य को अपनी सहायता से पूर्ण करने का यत्न करें। उनकी कृपा से ही यह कार्य्य पूरा होगा मैं उनके कृपाकटाक्ष से ही इस कार्य्य में नाम मात्र निमित्त बन सकता हूं इससे अधिक मेरा कुछ भाग न होगा। इस प्रकरण को समाप्त करने से पूर्व मैं सब को पुनः धन्यवाद देता हूँ और इस कार्य में सहायता की भिक्षा मांगता हूँ। अब मैं उन विषयों पर अपनी सम्मति प्रकट करता हूं जो आप महानुभावों ने इस सभा के विचारार्थ नियत किये हैं।

## (१) वर्णाश्रम व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देने के साधन।

इनमें से भी सूची कटाह न्याय से प्रथम आश्रम व्यवस्था को लेता हूँ। आप सब जानते ही हैं आश्रम चार हैं। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास।

ज्ञान प्राप्ति अथवा विद्या पढ़ने का समय ही प्रथमाश्रम है उसका समय न्यून से न्यून २४, १५ वर्ष है। इस विषय में आर्य समाज ने पर्य्याप्त उन्नति की है। परन्तु उस उन्नति को देख कर हमें मोह न होना चाहिये। अभी इस क्षेत्र में परिश्रम की आवश्यकता है। यह सत्य है शारदा एक्ट ने सहायता की है परन्तु वह १८, १४ तक ही जाता है उसे बढ़ा कर २४, १६ करने के लिये यत्नवान होना चाहिये।

दूसरा गृहस्थ है वह वर्ण व्यवस्था में आवेगा। अतः वानप्रस्थ पर विचार करना ठीक होगा। वानप्रस्थ का नाम तो भली भांति जनता में आगया है परन्तु उसका रूप अभी तक आंखों से ओझल ही है। आर्यसमाज में वानप्रस्थी भी हैं परन्तु उनकी संख्या अल्प ही है। यह सर्व साधारण की रुचि का विषय नहीं बना है। आर्यसमाज को यत्न करना चाहिये कि इस आश्रम को उपयोगी बनाया जाय। मेरी सम्मति मे वर्तमान समय को ध्यान में रख कर आयु ५० वर्ष से न्यून

और उनकी योग्यतानुसार काम की कोई व्यवस्था कर देनी चाहिये। यदि यह किसी भांति न हो सके तो गृहस्थी पुत्र कलत्र से आसक्ति शून्य होकर जो धन कमावे वह जनता के काम में ही लगावे, यह तो अवश्य हो जाना चाहिये।

चतुर्थ आश्रम संन्यास है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने पूर्व के संन्यास में कई परिवर्तन करके इसे भी कार्य क्षेत्र बनाकर वैदिक धर्म के नाम पर जो आलस्य हो रहा था उसे दूर कर दिया है। आर्यसमाज आरम्भ से ही इस आश्रम की बुराइयों को बतलाता रहा है परन्तु आश्चर्य है कि उस आर्यसमाज में भी इसकी बुराइयां हैं। मेरे जीवन का अधिक भाग साधुओं में व्यतीत हुआ है मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि जैसे निकम्मे, कमजोर, व्यसनी साधु आर्यसमाज से बाहर हैं आर्यसमाज में उतने तो नहीं हैं परंतु आर्यसमाज में भी यह रोग है ही, चाहे उसकी मात्रा अल्प है।

अब रहे वर्ण यह भी ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र भेद से ४ हो हैं और यह एक गृहस्थाश्रम के ही भेद हैं। वर्तमान समय में इन में गड़बड़ विशेष रूप से है, इस गड़बड़ के दो मुख्य कारण हैं। जिन में से एक तो विदेशी राज्य है, जिसके नियमानुसार भारतीय क्षत्रिय साधारण सिपाही से आरभ कर के सरदार तक तो हैं इस के ऊपर के पद पर भारतीय नहीं जा सकते हैं। पता नहीं सेना में यह व्यवस्था कब तक रहेगी ? दूसरे जन्म के आधार पर वर्ण मानने की प्रथा है। आर्य समाज ने इस का खंडन बलपूर्वक किया है और करता है ऐसे ही और करेगा। परन्तु इस समय तक हम जन्म के संस्कारों को मिटा नहीं सके हैं। इन दोनों के अतिरिक्त इस समय आजीविका का विकट प्रश्न है। यदि कोई आज ब्राह्मण का काम करता है तो यह भी संभव है वह अगले वर्ष वैश्य का काम करने लग जाय। इसे छोड़ कर अभी तक आर्य समाज ने कई कामो के विषय मे यह भी निश्चय नही किया है कि उनके कर्त्ता किस वर्ण मे हैं। यथा डाक्टर, वकील, कर्णिकादि का कोई निश्चित वर्ण नही है। यह सब कारण गड़बड़ के सहायक हैं इसलिये वर्ण निश्चय में आश्रम निश्चय से अधिक कठिनता है। इस कठिनता को सावधानी से ठीक करने का यत्न होना चाहिये। इसका एक साधन यह भी है कि कोई विद्वान सभा रूप में व्यवस्था दें। मेरे अनुभव में यह भी ठीक नही है। क्योंकि मुझे स्मरण है ऐसी ही सभा ने कई महानुभावों को वर्ण दिया भी है। उनमे से कोई तो सहमत हैं और एक आध ऐसा भी उदाहरण है सभा तो उसे ब्राह्मण कहती है, परन्तु पश्चात् पता लगा वह महाशय कहते हैं, मै तो क्षत्रिय बनना चाहता था। इसी भांति यदि गुरुकुल आदि व्यवस्था दे, तो उनकी भी यही गति होगी और यह आशा करना कि सब ही उस सभा वा संस्था से व्यवस्था लें, दुराशामात्र है। इससे भिन्न एक मार्ग आपापंथी का है जो जिस वर्ण को चाहे वही बन जाय इसे आधार मानना तो गड़बड से भी गड़बड़ मे जाना है। इन कठिनताओं को देख कर एक उपाय यह भी हो सकता है कि सामान्य रूप से लोग आर्य ही कहलावें। उनमें जो विशेष व्यक्ति हों उनको ब्राह्मणादि नाम दिये जांय इस अवस्था में वैश्य प्रधानता होगी।

इस समय सभा को इन सब पर विचार करके निश्चय करना चाहिये और वह निश्चय भी ऐसा हो जो मार्ग को सीधा करे न कि मार्ग को विषम बना दे। (क्रमशः)

# उपनिषदों की सभ्यता

प्रस्तुत लेख में पाश्चात्य और पूर्वीय सभ्यता का तुलनात्मक विवेचन करते हुए, उपनिषदों की सभ्यता पर उत्तम प्रकाश डाला गया है।

(ले०—श्री नारायण स्वामी जी महाराज)

संस्कृति और सभ्यता प्राय: पर्याय वाचक के तौर पर प्रयुक्त हुआ करते हैं, परन्तु वास्तव मे इनमे कारण और कार्य का सम्बन्ध होता है अर्थात् संस्कृति का कार्य या फल सभ्यता है।

संस्कृति—शब्द वर्तमान काल की रचना है और अंग्रेजी के कलचर Culture शब्द की जगह संस्कार शब्द बनाया गया है। संस्कृत वस्तु, संस्कार (शुद्ध) की हुई चीज को कहते है उसी से संस्कृति शब्द बना लिया गया है। संस्कार, हृदय पटल पर पड़े हुये उन छापो को कहते हैं जो मन, वाणी आदि की शुद्धता के बार २ अभ्यास से उत्पन्न हुआ करते हैं, जिससे मनुष्य की मानसिक और नैतिक बुद्धि का विकास हुआ करता है और इस प्रकार उन्नत हुई मानसिक और नैतिक बुद्धि, जब अन्य प्राणियो के सम्पर्क से व्यवहार मे आया करती है, तब इसी व्यावहारिक मर्यादा का नाम सभ्यता होता है।

इस प्रकार सभ्यता संस्कृति का फल या उसकी सन्तति हो कही जा सकती है। अस्तु। संस्कृति और सभ्यता का यह रूप होते हुए भी भिन्न २ देशो मे वहा की परिस्थिति के अनुकूल इसके पृथक् पृथक् भाव हुआ करते है। पश्चिमी देशों मे, मशीनो से काम लेना सभ्यता का मुख्य अङ्ग माना जाता है। कुछेक वर्ष हुये जब एक चीनी विद्वान ने कहा था कि "जब 'लाइड जार्ज' संस्कृति का सकेत करते है तो उससे, उनका अभिप्राय सस्ता साबुन और बेतारकी तारवर्की होता है, परन्तु जब मैं (वह चीनी विद्वान) इस संस्कृतिका नाम लेता हूँ तो मेरा तात्पर्य, उससे उस योग्यता का होता है, जिससे मैं फूलो की सुन्दरता और उनके हल्के और गहरे विभिन्न रङ्गो को देखकर उत्साह से भर उठता हूँ।"

सभ्यता के दो भेद—सभ्यता और संस्कृति के उपर्युक्त भाति अनेक भेद होते हुये भी, हम सभ्यता को, मुख्य रीति से, दो भागो मे बटा हुआ पाते हैं। एक भाग वह है जिसमे आत्मा का स्थान प्रकृति से ऊँचा हुआ करता है और दूसरा भाग, इसके विरुद्ध, वह है जिसमे प्रकृति आत्मा से ऊंची क्या अपितु सब वही मानी जाती है। पहला भाग, आत्मा की मुख्यता वाला, होने से आस्तिकता के भाव से पूर्ण होता है और इसलिये उसके दृष्टि-कोण मे, विश्व-भावना निहित होती है परन्तु दूसरा भाग प्रकृति की मुख्यता वाला होने से जगत के ऐश्वर्य (सोना चाँदी) की ओर मुंह रखता है इसीलिये सकुचित जाति भावनाओं से पूर्ण हुआ करता है। पहले भाग के दृष्टि-कोण मे विश्व-भावना होने से वह समस्त ब्रह्माण्ड को ईश्वर की रचना और समस्त प्राणियो को उसका पुत्र समझते हुए ससार के सन्मुख आदर्श उपस्थित करता है कि वह ईश्वर को समस्त प्राणियो का पिता (Fatherhood of man kind समझे और समस्त प्राणियो मे भ्रातृ भाव (Brotherhood of mankind) देखे। दूसरा भाग, धन दौलत का इच्छुक होने से अपने देश की चारदीवारी से बाहर की

दुनिया को नहीं देखता अपितु अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये अपनी चारदीवारी से बाहर वालों को कभी कभी जहरीली गैसों घातक गोले बरसाने वाली तोपो, और बम के गोलो से, स्वागत किया करता है।

**उपनिषदों की सभ्यता—**

सभ्यता के इन भेदो को जान लेने के बाद समझ लेना चाहिये कि उपनिषदो की सभ्यता पहिली कोटि में है जब कि वर्तमान सभ्यता दूसरी कोटि में—उपनिषदो की सभ्यता का हृदय उपनिषद् के इस वाक्य मे खुला हुआ दिखाई देता है—

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्व भूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते॥
(ईशोपनिषद ६)

अर्थात् जो, समस्त प्राणियों को ईश्वर के अन्दर और समस्त प्राणियों मे, ईश्वर देखता है, वह (किसी के भी) घृणा का पात्र नहीं बनता। ईश्वर प्यार करने वालों की दृष्टि मे, संसार के एक-एक प्राणी का शरीर, उसी प्यारे ईश्वर का मन्दिर होता है। अपने प्यारे का मन्दिर किस को प्यारा नहीं लगता। देखो एक प्रेमी, अपने प्रेष्ठ के घर को, कितनी महत्ता दे रहा है—

न जाऊंगा कभी जन्नत में, मैं न जाऊगा।
अगर न होवेगा नक्शा तुम्हारे घर का सा॥

अस्तु—प्रत्येक प्राणी के लिए सद्भावी भावना रखना उपनिषद् की सभ्यता का प्रारम्भिक पाठ है। स्पष्ट है कि इस प्रकार का व्यक्ति अपने स्वार्थ, केवल अपने शरीर के सुखी रखने की संकुचित भावना से सर्वथा पृथक् होता है।

असुरोपनिषद्—इसीलिये प्रजापति के पास से जाकर विरोचन ने असुरों को, जिनका वह प्रतिनिधि होकर इन्द्र के साथ प्रजापति के पास गया था, जब यह शिक्षा दी कि अपने ही शरीर को मुख्य समझ कर उसी की चिन्ता करो, तो उपनिषद्कार ने इस शिक्षा का नाम, असुरोपनिषद् रख दिया उपनिषद्कार ने इसके साथ जो प्रेत (मृत प्राणी) के शरीर को भिक्षा (पिंड) वस्त्र और अलकार (जेवर) से सत्कार करते हैं—इस प्रथा को भी असुर उपनिषद् ही कहा है। (छान्दोग्योपनिषद प्रपाठक ८, खण्ड ८ वाक्य ४-५)

इससे स्पष्ट प्रगट है कि उपनिषद काल में मृतक श्राद्धादि कार्य असुरोपनिषद के अन्तर्गत समझे जाते थे।

**उपनिषदों की सभ्यता के अग—**

जो हो उपनिषद कालीन सभ्यता स्वार्थपरायणता रहित और समस्त प्राणियो की कल्याणकारिणी सभ्यता थी। उस सभ्यता का लक्ष्य मनुष्य को असुर नही किन्तु दिव्य मनुष्य बनाना था। वह सभ्यता मुख्यतया तीन प्रकार के नियमो के आचरणो से पूरी हुआ करती थी—

(१) पहला अग ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य का भाव केवल उत्पादक शक्ति के लिये सम्मान का भाव पैदा करना ही नहीं बल्कि समस्त इन्द्रियो को, दुरुपयोगो से बचाकर उन्हे सीमा मे रखते हुये शुद्ध पवित्र और शक्तिवान् बनाना है।

दूसरा अंग आत्म विद्या है—बोध इन्द्रिय द्वारा उत्पन्न ज्ञान को कहते हैं और प्रति बोध, आत्मा द्वारा प्राप्त ज्ञान का नाम है। ब्रह्मविद्या, मुख्यतया दूसरे प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करके उसे चरम सीमा तक पहुँचाने का नाम है। इसी ज्ञान में भक्ति

# बाइबिल-व्यवसाय-युद्ध

१

(ले०—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक )

(ईसाई पादरी-कुटिल राजनीति के हाथों में खेलते हुए किस प्रकार व्यापारिक लूट-खसोट साम्राज्य-विस्तार और युद्धों में योग देते हैं इन सब बातों पर इस लेख में प्रकाश डाला गया है )

मज़हब के नाम पर जो पाप, जो दुष्कृत्य जो पाखण्ड और जो स्वार्थ साधना संभव है वह सब कुछ ईसाई मिशनरियों द्वारा भी होता रहा है परन्तु इनके परिमाण इनकी संख्या और भयंकरता में आश्चर्यजनक वृद्धि हो जाती है जब कुटिल राजनीति इस मज़हब को और ईसाई मिशनरियों को नाच नचाती है, इसी लिये संगठित ईसाइयत में पूंजी-पतियों, राजनीति विशारदों प्रभावशाली व्यक्तियों और मुख्य प्रमुख पादरियों का बोलबाला रहता है। शासक वर्ग के कतिपय लोगों के निजी स्वार्थ राजनीति के आवरण में आविर्भूत होते हैं, उनकी पूर्ति के लिये सर्वसाधारण को कूट-नीति के सहारे अज्ञान और अंधकार में रखना जरूरी होता है और इस काम में मज़हब और पादरियों से भरपूर सहायता ली जाती है। चूंकि ईसाई पादरियों के लौकिक स्वार्थ और हित तत्कालीन सरकारों से सम्बद्ध होते हैं इसलिए उनकी पूर्ति या अभिवृद्धि के लिये उन्हें उनका साथ

---

की पुट रहती है, इसी ज्ञान में मनुष्यों की आत्मा ईश्वरीय दिव्य ज्योति की, जिसे उपनिषदों में "ज्योतिरिवाधूमकः ।" कहा है, रश्मि बनकर प्रदीप्त होने लगता है।

( ३ ) तीसरा अंग—कर्म के उस उत्कृष्ट भाव से सम्बन्धित है, जिसके द्वारा मनुष्य निश्चयात्मक रीति से समझने लगता है कि जब तक एक प्राणी दूसरे को अच्छा नहीं बना लेता वह पूर्णतया सुखी नहीं हो सका, क्योंकि मनुष्य जहां अपने कर्मों के फल से सुखी और दुखी हुआ करता है वहाँ दूसरों के कर्म से भी सुख दुख प्राप्त, किया करता है यदि दूसरे अच्छे हैं तो उनके कर्म से उसे सुखी, यदि बुरे हैं तो उनके कर्म से दुःखी होना पड़ेगा। इस अंग से समाज उत्कृष्टता प्राप्त किया करता है। पहले दो अंगों से व्यक्ति उत्कृष्ट बना करते हैं।

उपनिषदों की सभ्यता मुख्यतया उपर्युक्त तीन भावों से पूर्ण होकर समस्त संसार के व्यक्तियों और संसार को अच्छा बनाने का साधन एक समय बनी हुई थी और आइन्दा भी बन सकती है। इस समय भी, उसे जो जितना ग्रहण कर पाता है, उससे उतना ही वह कल्याण प्राप्त कर लिया करता है।

अन्त में, एक बात यह भी समझ लेनी चाहिये कि जब यह कहा जाता है कि उपनिषद की सभ्यता मुख्यतया आत्मा को अपना प्रधान अङ्ग मानती है तो इसका तात्पर्य यह नहीं कि उसमें प्रकृति का कोई स्थान ही नहीं, अवश्य उसमें प्रकृति के लिये भी जगह होती है अन्तर केवल मुख्य और गौण होने के कारण से है। कौन कह सकता है कि जनक बुद्ध, शङ्कर, चेतन्य नानक और दयानन्द प्राकृतिक जगत का उपभोग नहीं करते थे। उपभोग करते हुये भी इनका दृष्टिकोण आत्म समर्पण करना ही था। जूलियस सीजर नैपोलियन आदि की तरह इनकी दृष्टि में दुनियां ही सब कुछ नहीं थी।

---

देना होता है और इस प्रकार वे अपनी आत्मा का खून करके अपने पद अधिकार का दुरुपयोग करके परमात्मा को और अपने को धोखा देकर, अन्याय, पक्षपात, असत्य और अत्याचार के काले धब्बों से अपने पवित्र वेश को कलङ्कित कर बैठते हैं और मानव समाज मे दुख, अज्ञान और व्याधियो को बढ़ाते हैं अथवा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से योग देते हैं।

कूटनीतिज्ञ राजनीति विशारद हर प्रकार का प्रलोभन देकर ईसाई पादरियो को अपनी ओर बनाए रखते हैं। जब कोई पादरी अपना ज्ञान प्रकट करता हुआ परमात्मा और उसके आदेश को विचार के अयोग्य बतलाता है तो सार्वजनिक प्रेस उसके वाक्यो को खूब प्रकाशन प्रदान करता है। बड़े बड़े आर्थिक प्रलोभन जानते हैं कि किस प्रकार महत्वाकांक्षी पादरियो की खुशामद की जा सकती है। इसलिए पूंजीपति और राजनीति विशारद पादरियो के सामने दाने फैंक देते हैं और वे बडी उत्सुकता से उन पर दौड पडते हैं। शासन के कर्णधार पादरियो को हर प्रकार की सुविधाएँ देते है। किस लिये ? जनता को ठगने लूटने और अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए ? अस्तु—साम्राज्य विस्तार मे कुछेक सत्ताधारियों के कुत्सित स्वार्थो की पूर्ति मे, राष्ट्र विशेषो की व्यापारिक लूट-खसोट मे और युद्धोमे पादरियो का किस प्रकार उपयोग किया जाता है उसके १-२ नमूने हम अपने पाठको के सामने रखते हैं —

एक पादरी महोदय धार्मिक सत्संग मे उपदेश देते हुए फरमाते हैं 'कि सब से अंतिम कार्य—गिनती के लिहाज से सबसे अन्तिम, पर महत्व के लिहाज से अन्तिम नहीं—हमारे व्यापार के लिये अन्य देशो का द्वार खोलना है। इस कार्य को स्टेलनी अच्छी तरह समझता था। कांगो ( अफ्रीका ) की घाटी से लौटने पर स्टेलनी ने जो कार्य किये उनमे सबसे पहला यह था कि उसने मैनचैस्टर के व्यापारियो को एकत्रित करके उन्हे बताया कि काँगो प्रदेश के लाखो निवासी कमीज कुर्तो और कपडों के उपयोगो से एक दम अपरिचित है। इसके लिये मैनचैस्टर वालो को सिर्फ यही करना होगा कि वे वहां बहुत से पादरियो को भेजे जिनका काम वहां के निवासियो को यह समझाना होगा कि वे सभ्य वस्त्रो का प्रयोग करे। फिर देखिए कि मैनचैस्टर के सूती कपडो की कितनी मांग बढती है।" इसी तरह एक बडे कारखाने वालो की ओर मुंह करते हुए पादरी साहब ने कहा 'तुम्हारे लिए भी केवल यही पर्य्याप्त होगा कि इन प्रदेशो मे धर्म्म प्रचारको को भेजो जो वहा के देशी आदमियो को समझायेगे कि हाथ से खाना खाने की गन्दी आदत छोड़ कर वे काटा छुरी का प्रयोग करना सीखे फिर देखिए कि शेफील्ड के छुरी काटे के व्यापार मे कितनी तेजी के साथ वृद्धि होती है।"

अफीम के व्यापार के लिए ब्रिटिश गवर्नमेंट और चीन मे युद्ध हुआ। चीन की पराजय हुई और उसे अफीम का आयात स्वीकार करना पड़ा। इस सम्बन्ध मे एक प्रसिद्ध चीनी देश भक्त ने इस प्रकार प्रगट किया था।

"पेकिन की सरकार ने चीनियो के भयकर नैतिक पतन की सम्भावना बताकर अपने साम्राज्य मे अफीम प्रवेस का विरोध किया। इसके

प्रत्युत्तर मे हमे पहले तो मिले तोप के गोले, फिर आए अफीम से भरे जहाज और उनके साथ साथ शराब, धर्मग्रन्थ, प्रार्थना पुस्तके और मिशनरी आए।''

बड़े बड़े सत्ताधारी भारत सरीखे देशो और प्रदेशोको उन देशो के सगठित उचित विरोधको जान पूछकर ठुकराते हुए किसी भी दृष्टि से पिछडा हुआ उद्घोषित कर न्याय, शाति रक्षा और नैतिकता को थोथी दुहाई से सत्ता विशेष के आधार को सुदृढ करते हैं, और इस काम मे ईसाई प्रचारको से खूब सहायता ली जाती है। अस्तु--

युद्ध होते है। नर सहार, रक्तपात, और उसके परिणाम स्वरूप महामारी, दुर्भिक्ष आदि से सृष्टि के सौन्दर्य का विनाश होता है। वैभव, सस्कृति और सदाचार का ह्रास होता है। जो युद्ध किसी उचित उद्देश्य को सामने रखकर किए जाते है शायद उनसे कोई लाभ निकलता हो परन्तु जो युद्ध व्यावसायिक स्पर्धा से, कुछेक पूंजीपतियो सत्ताधारियो के व्यक्तिगत स्वार्थों के तकाजे पर होते है परिणामत: वे बड़े भयकर और विनाशकारी होते हैं। सन् १९१४ का महायुद्ध व्यावसायिक स्पर्धाका ही परिणाम था, उसके दुष्परिणाम जनतापर प्रकट हैं। सबसे अधिक जिम्मेवार और अपराधी व्यक्ति वे होते हैं जो अपने व्यक्तिगत नीच स्वार्थों की पूर्ति के लिए, जातियो मे श्रेणियो मे और राष्ट्रो मे पारस्परिक युद्ध कराते वा युद्धो मे योग देकर नर सहार कराते हैं और जो उन राष्ट्रो के दुर्भाग्य से जो युद्धो मे मजबूरन शामिल होते है घर बैठे मौज उड़ाते हैं। इन्हा अपराधियो और जिम्मवार व्यक्तियो मे पादरी होते हैं जो ईसा और परमात्मा के प्रतिनिधि होने का तो दावा करते है परन्तु युद्ध भूमि मे, खाइयो मे लाखों नवयुवको मे युद्ध का प्रचार करते है और उन लोगो को युद्ध-भूमि मे मरने से स्वर्ग प्राप्ति आदि के प्रलोभन देकर उन्हे युद्धमें खींच लाते हैं। सन् १९१४ के युद्ध मे भी ईसाई पादरियो का युद्ध के प्रति यही रुख देखा गया था।

हमारा यह अभिप्राय नही कि सब ही पादरी इस प्रकारका रुख अख्तियार करते हो अवश्य ही कुछेक ऐसे भी है जो युद्ध मे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष किसी प्रकार से भी भाग नही लेते और अपने को और ईसाईमत को कलुषित होने से बचाते हैं।

अन्य देशो तथा मुख्यत भारतवर्ष मे ईसाई मिशनरियो के राज नैतिक रुख को देखकर बहुधा लोगो को आश्चर्य होता है, इस सम्बन्ध मे वास्तविकता क्या है उसी पर सक्षिप्त प्रकाश डालने के उद्देश्य से यह पक्तिया लिखी गई हैं।

---

## कर्त्तव्य पालन कीजिये

'सार्वदेशिक' समस्त आर्यजगत की शिरोमणि सभा-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है। प्रत्येक आर्य, आर्य परिवार तथा आर्यसमाज का कर्त्तव्य है कि वह उसका स्वयं ग्राहक बने और दूसरों को भी ग्राहक बनाए। किसी आर्य परिवार और समाजको बिना सार्वदेशिक को पढ़े हुए न रहना चाहिए। सार्वदेशिक के प्रचारमें सहायता और सहयोग प्रदान करना प्रत्येक आर्य का कर्त्तव्य है।

# देशांतर-प्रचार

## अमेरिका में वैदिक धर्म प्रचार

श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी को कुछेक कारणों से २-३ मास के लिये ब्रिटिश गायना में (दक्षिण अमेरिका) जाना पड़ा है। और इस प्रकार उन्हें प्रवासी भाइयों की धार्मिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करने का अवसर मिल गया है।। इस सम्बन्ध में उन्होंने जो चिट्ठी सार्वदेशिक सभा को भेजी है उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं:—

"न्यूयार्क से दक्षिण अमेरिका जाते हुए ऐटलांटिक महा समुद्र के कतिपय द्वीपों में ठहरता जा रहा हूं और इन द्वीपों में बसे हुए हिन्दुओं की अवस्था का अध्ययन कर रहा हूँ। रास्ते में सेण्ट थोम्स तथा सेण्ट लूसिया आदि छोटे द्वीपों में ठहरा था और पता लगाकर वहां के कुछ भारतीयों से मिला था। सेण्ट लूसिया में ही कई सौ भारतीय बसते हैं। नवयुवक तो कोई हिन्दी नहीं बोल सकता। हां! बूढ़े देहाती हिन्दी बोल लेते हैं मातृ भाषा सब की फ्रेंच वा इंगलिश बन गई है। और नवयुवक प्रायः सब ईसाई बन गए हैं। बूढ़े हिन्दू धर्म पर डटे हुए हैं पर इनका हिन्दू धर्म इसी में है कि गो मांस नहीं खाते तथा अपने को हिन्दू कहते हैं। कतिपय नवयुवकों में भाषण करने का भी अवसर प्राप्त हुआ, और यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इन्हें कोई हिन्दू धर्म की शिक्षा दे तो ये फिर हिन्दू बनने को तय्यार हैं। और यदि इन्हें तथा इनकी सन्तान को हिन्दी भाषा सिखाने का प्रबन्ध किया जाय तो ये हिन्दी भी बड़े प्रेम से सीखेंगे। प्रायः लोग विवाह नीग्रो जाति में कर लेते हैं और उनमें हिल मिल गए हैं। गोरे लोग इन्हें तुच्छ समझते हैं और उन्हें भी इस बात का ज्ञान हो गया है कि गोरों के ईसाई धर्म को ग्रहण करने पर भी गोरे इनको अपने समान नहीं समझते। यदि इन छोटे छोटे द्वीपों में आर्यसमाज के प्रचार का प्रबन्ध हो तो शीघ्र लौट आयेंगे तथा बचे हुए हिन्दुओं का भी संरक्षण होजायगा और बहुत परिमाण में नीग्रो जाति के लोग भी वैदिक धर्म के अनुयायी बन सकते हैं। जिस प्रकार भारतवर्ष में अशिक्षित हिन्दू नाम के ही हिन्दू हैं धार्मिक सिद्धान्तों से वे परिचित नहीं इसी प्रकार यहां के ईसाई भी नाम के ईसाई हैं, इनमें कट्टरपन नहीं है। आर्यसमाज का प्रचार यदि जम कर स्थायी रूप से हो तो बहुत संभव हो सकता है। इन छोटे द्वीपों में प्रचार का प्रबन्ध किस प्रकार हो सकता है अभी तक मैं नहीं विचार सका हूँ। ट्रीनीडाड, जमैका आदि स्थानों में लाखों की संख्या में हिन्दू आबाद हैं। वहां पहुँच कर वहाँ की स्थिति का अध्ययन करके इस प्रश्न पर विचार करने में समर्थ बन सकूंगा। इस विषय का सविस्तर अध्ययन करके सविस्तर लिखूँगा।"

# आर्य्य-समाज का भूकम्प सम्बन्धी रिलीफ कार्य्य

अखिल भारतीय आर्य्य समाज रिलीफ सोसाइटी की ओर से बिहार में रिलीफ, ( सहायता ) का जो कार्य हो रहा है उसका कुछ विवरण नीचे के चित्र में दिया जाता है:—

| नं० | नाम केन्द्र | झोपड़ियां | कुआ साफ हुआ | वस्त्र बंटा | बंटा अन्न | कितने मनुष्यो को | कितने ग्रामो मे | अनाथ अबला रक्षा | स्थान बचाकर जहा भेजा | औषध वितरण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मुजफ्फरपुर | १०२ | ८७ | ३४४६ | २४०८ | १०९६ | ८ ग्राम व नगर | १ बच्चा | १ परिवार को सुपुर्द | १७५ |
| २ | दरभंगा | २४ | ३० | ० | ९३८ | २००० | १५ | १ | १ श्रीमद्दयानन्द अना० दानापुर | ० |
| ३ | छपड़ा | ० | ० | ६७ | ० | ६० | २१ | ० | ० | ० |
| ४ | सीतामढी | ४५ | १५ | २७५ | ३५८ | १०२५ | २२१ | ६ | २ सीतामढी अनाथालय | ० |
| ५ | समस्तीपुर | १ | १६ | २१५ | ० | ११५ | २१ | ० | ० | ० |
| ६ | मोतीहारी | ५५ | ३० | सस्ती दुकान | सस्ती दुकान | ० | ५५ ११ मुहल्ले | १ स्त्री | १ विधवा आश्रम मुंगेर | ० |
| ७ | मुंगेर | २ | ० | २५ | ७॥८२। | ४० | ९ ग्राम | ० | ० | ० |
| ८ | रामपुरहरि | ५२ | ७० | ३७५ | ७२ | २६० | ५३ | ० | ६ | ० |
| | जोड़ | २५१ | १९८ | ४४०३ | ४४२॥८२। | ४५९६ | ४११ | ९ | ६ | १७५ |

## शुद्धि सभा मुरादाबाद की रिलीफ मन्डली

समाचार मिला है कि शुद्धि सभा मुरादाबाद की एक रिलीफ मन्डली श्री पं० भद्रदत्त जी शर्मा पाठक तर्क रत्न मंत्री सभा की अध्यक्षता मे २३ ३४ को विहार के भूकम्प पीडित क्षेत्रो के लिये रवाना हो गई है। मंडली के सदस्यो मे श्री प्रोफेसर महेशचन्द्र जी स्नातक गुरुकुल वृन्दावन तथा श्री पं० बसन्तराम रिटायर्ड स्टेशन मास्टर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। रिलीफ के कार्य के लिये उक्त सभा ने विशेष रूप से संग्रह करके ५००) तक के व्यय की स्वीकृति दी है।

———

# बिछुड़ों का मिलाप

१—आर्य्य समाज कुरतरा (बरेली) में गत १५ जनवरी को एक नव मुस्लिम परिवार की शुद्धि की गई।

२—गत १३ जनवरी को आर्य्य समाज बलिया के प्रचारक द्वारा सहतवार ग्राम में १ नव मुस्लिम की शुद्धि की गई।

३—आर्य्य समाज कालटी द्वारा एक १० वर्षीया राजपूत लड़की का मुसलमानों के पंजे से उद्धार किया गया।

४—आर्य्य समाज सुल्तानपुर ( अवध ) के उद्योग से ३० जनवरी को १ ईसाई परिवार की शुद्धि की गई। परिवार में ७ प्राणी हैं।

५—आर्य्य समाज उमरखेड़ में गत २ फरवरी को श्रीमती राजकुँवर देवी नव मुसलिम की शुद्धि हुई। देवी जी १५ साल पहले मुसलमान बनी थीं। उनके साथ दो लड़कियाँ और १ लड़का भी है।

६—अभी हालमें तहसील एतमादपुर (आगरा) के इलाके में ईसाई मिशन ने आस पास ४०० चमारों को ईसाई बना लिया था अब सूचना मिली है कि दूसरे गाँवों के चमारों ने अपने इन पथ-भ्रष्ट भाइयों को वापस लेने का यत्न शुरु कर दिया है। सुना है कि ८ परिवार हिन्दू बिरादरी में वापिस लिए जा चुके हैं और औरों के लिए भी यत्न जारी है।

# दलितोद्धार

## बंगलौर आर्यसमाज के सदस्यों का पूज्यपाद महात्मा गान्धीजी की सेवा में अभिनन्दनपत्र

परम श्रद्धेय पूज्यवर महात्मा जी !

आर्य सभ्यतोद्धारक आपके पवित्र दर्शनों से हम सब आज अत्यन्त आनन्दित हुए हैं। यह हर्ष की बात है कि आप प्रातः स्मरणीय ऋषि दयानन्द और धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्दजी के पवित्र संदेश को जनता के सामने अत्यन्त प्रभावजनक रूप में रख रहे हैं। आप जानते ही हैं कि आर्यसमाज अपने जन्मदिन से ही अस्पृश्यता के घोर कलङ्क का समूल नाश करने में तत्पर है। यहां भी हम लोग अस्पृश्यता निवारक और दलितोद्धार के पवित्र आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। हरिजनों की बस्तियों में जाकर आर्य भाई उन्हें सफ़ाई रखने, मद्य-मांस छोड़ने आदि बातें प्रेमपूर्वक समझाने के अतिरिक्त उन्हें स्वयं स्नान कराते भजनादि सिखाते और मिठाई, साबुन आदि बांटते रहे हैं। गत वर्ष लगभग ३०० हरिजनों को वैदिक मन्त्र दीक्षा दीगई। समाज मन्दिर में लगभग ५० सार्वजनिक तथा प्रार्थना सभाएं कीगई जिनमें हरिजन भाई बहिन भी सम्मिलित होते रहे तथा कई सहभोज हुए जिनमें सब जातियों के लोग शामिल थे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि अस्पृश्यता का आधार जन्मसिद्ध जातिभेद की पद्धति पर है अतः शास्त्रीय गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का पूर्ण समर्थन करते हुए भी हम लोग जन्मसिद्ध जातिभेद के विरुद्ध प्रचार करने में तत्पर हैं। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप 'सत्यार्थप्रकाश' का मनन करके इस विषय को सर्वथा स्पष्ट करदें जिससे किसी प्रकार का भ्रम जनता को न हो सके और अस्पृश्यता के घोर पाप का

## ट्रावनकोर राज्य तथा अस्पृश्यता

ट्रावणकोर राज्य मे हरिजनो की भीषणता का अन्दाजा सिर्फ इसी एक बात से लगाया जा सकता है कि वहा हिन्दुओ की कुल जन संख्या ३१ लाख है—इस ३१ लाख मे सवर्ण सिर्फ १२ ही लाख है यानी ३९ फीसदी सवर्ण हिन्दू है और बाकी के ६१ फीसदी तो सब अवर्ण ही समझे जाते है। 'जात पात के भेद भाव और अन्धविश्वासो से भरे रीति रिवाज यहाँ इतने अधिक और इतने व्यापक रूप मे मौजूद है, कि कुछ पूछिए नही। यह बात भारत मे अन्यत्र कही भी देखने मे न आयगी।' इन १२ लाख सवर्णो ने हरिजनो कि इतनी बडी जन-संख्या को उसके सार्वजनिक अधिकारो से वचित कर रखा है। न तो उनकी पहुँच कुए, तालाब आदि सार्वजनिक स्थानो मे है और न सार्वजनिक मन्दिरो मे वे प्रवेश कर सकते है। सार्वजनिक सडको और मन्दिरो के उपयोग का अधिकार दिलाने के लिए राज्यसे अनेक सत्याग्रह भी हुए और हरिजनो को सार्वजनिक स्थानो के उपयोग से वचित रख कर उनके साथ जो अन्याय किया जा रहा है उसके खिलाफ लोकमत भी तैयार किया गया। ट्रावणकोर सरकार ने हरिजनो के लिये सार्वजनिक सडके, तालाब कुए और सत्र खोल देने की घोषणा की। सरकारी विज्ञप्ति मे लिखा है—"कमेटी की इस राय से सरकार सहमत है, कि "थिंडल" (हरिजनो को कुछ फासल पर दूर रखना) अब बन्द कर दिया जाय और सरकार की राय है, कि उन सार्वजनिक तालाबो, कुओ, सत्रों आदि पर कि जिनका उपयोग थिंडल जाति का होने के कारण ही कोई व्यक्ति नही कर सकता, सरकार अब किसी साधारण सार्वजनिक फण्ड का पैसा खर्च न करेगी। इसलिये सरकार ने यह निश्चय किया है, कि सभी सार्वजनिक सडके, तालाब, कुए, सत्र आदि तमाम जाति के लोगो के लिए, बिना किसी भेद-भाव के खोल दिये जाय।" वस्तुत इस सुधार के लिये ट्रावणकोर सरकार धन्यवाद की पात्र है, लेकिन सुधारको को तबतक सन्तोष नहीं हो सकता, जबतक कि राज्य अस्पृश्यता को किसी भी रूप मे मानता रहेगा।

---

समूल नाश हो जाए। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि हम सदा इस अविद्या-शोधन मे पूर्ण क्रियात्मक सहयोग देते रहेगे। आपकी दीर्घायु और आरोग्य के लिये प्रार्थना करते हुए आपके आशीर्वादाभिलाषी

विनीत भक्त

बंगलौर आर्यसमाज के सदस्य।

नोट—यह अभिनन्दन पत्र पूज्यपाद महात्मा गान्धी जी को ७—१—३४ को आर्यसमाज की ओर से दिया गया। पूज्य महात्माजी ने सार्वजनिक सभा में इसकी भाषा (जो स्नातक धर्मदेव विद्यावाचस्पति की बनाई हुई थी। लेख जो श्रीमती विद्यावती देवीजी के हाथ का था) तथा भावों की बहुत प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद दिया।

---

### आवश्यक सूचना

महात्मा गान्धी द्वारा संचालित अस्पृश्यता आन्दोलन के लिए उन्हे अपने दौरे मे इस समय तक (९ मार्च तक) ३०५५१८॥=)८ प्राप्त हुआ है।

## पुस्तक परिचय

—:o:—

**दलितोद्धार**—ले० देशभक्त कुंवर चाँदकरण शारदा, शारदा-भवन अजमेर। मूल्य ।≈)

यह पुस्तक तीसरी बार छपी है। इस बात से पुस्तक के विषय की उपादेयता तथा समयानुकूलता का प्रकाश होता है। श्री शारदा जी कलम के धनी हैं, इस विषय में आपने खूब जानकारी प्राप्त की है। दलित-भाइयों मे चिरकाल से सेवा-कार्य भी किया है। इस समय भी बहुमूल्य कार्य आपके द्वारा सम्पादित होरहा है। आपको पूर्ण अधिकार था कि दलितोद्धार विषयक पुस्तक लिखते। आपने पुस्तक लिखी और जनता ने उसका आदर भी किया। पुस्तक में दलितोद्धार की समस्या पर नीति, इतिहास तथा धर्मशास्त्र सभी दृष्टियों से प्रकाश डाला गया है। स्वराज्य और आर्य संगठन पर स्वतन्त्र विचार लिखकर पाठकों का ध्यान भावी विशाल कार्य की ओर खींचा है। महात्मा गांधी के विचारों को भी लेखक महोदय ने अपनी सम्पुष्टि स्थान २ पर दिया है तथा सनातन धर्म के कर्णधारों के वक्तव्य उद्धरित कर दिये हैं। हिन्दू मन्दिर प्रवेश बिल तथा अस्पृश्यता निवारण बिल के सम्बन्ध में भी सक्षिप्त चर्चा कर दी है। पुस्तक को हर प्रकार से up-to-date ( समयानुकूल ) बना दिया है। पाठकों को अपनी जानकारी के लिये तथा दलितोद्धार समस्या सम्बन्धी साहित्य को अपनाने के लिये इस पुस्तक को अवश्य मंगा लेना चाहिए।

**आत्मदर्शन**—ले० श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रकाशक—म० राजपाल ऐंड संज, "सरस्वती-आश्रम" लाहौर। मूल्य १।) सजिल्द १।।)

आर्यसमाज के क्षेत्र मे गम्भीर, समयोपयोगी तथा बहुमूल्य साहित्य लिख कर श्री स्वामी जी महाराज आर्य संस्कृति की जो सेवा कर रहे हैं वह सर्वांश मे अनुकरणीय है। यह पुस्तक "आत्मदर्शन" एक गहन विषय पर लिखी गयी पुस्तक है। इसमे पाश्चात्य देशो के प्रसिद्ध विचारकों के आत्मा सम्बन्धी लेखों की समालोचना की गयी है। लगभग एक सौ पुस्तको का निचोड़ इसमे दिया गया है। इतना गम्भीर विषय और इस पर इस पुस्तक का चोथी बार छपना, सिद्ध करता है कि वर्तमान समय मे पूज्य स्वामीजी की पुस्तकों का जनता में कितना आदर तथा मान्य है। स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिये यह पुस्तक विचारों का भंडार खोल देती है। तुलनात्मक-दर्शन के अध्ययन में सहायता देने वाली दूसरी पुस्तक इस पाय की हिन्दी-साहित्य मे नहीं मिल सकती। हमें आशा है कि आर्य जनता विशेष-रूप से इस चौथे संस्करण का आदर करेगी।

The Vedic Caste system and The Panchama Problem by Pandit K. Jnani, Arya Samaj Madras—Price As. 2.

यह छोटी सी पुस्तक अँग्रेज़ी भाषा में पं० केशवदेव ज्ञानी सिद्धान्तालङ्कार ने मद्रास प्रचार के लिये लिखी है। इसमें उन्होने यह सिद्ध किया है कि वेद जन्म से जात-पांत को स्वीकार नहीं करता। वेद की दृष्टि में गुण, कर्म स्वभाव के

# महिला-जगत

( सम्पादिका - श्रीमती विद्यावती जी विशारदा )

हमने कतिपय विदुषी आर्य्य महिलाओ से प्रार्थना की है कि वे सुखी सन्तान के निर्माण' के सम्बन्ध मे अपने क्रियात्मक अनुभव 'सार्वदेशिक के पाठको के सम्मुख रखने की कृपा करे । प्रस्तुत लेख श्रीमती सुमित्रादेवी शास्त्री प्रभाकर की लेखनी का फल स्वरूप है । श्रीमती जी आर्य्य समाज के क्षेत्र मे उन देवियो मे से हैं जिन पर भविष्य में बडी आशा की जा सकती है । उपर्युक्त शीर्षक के नीचे अन्य देवियो के भी विचार दिए जाते रहेंगे ।

## सुखी सन्तान का निर्माण

( लेखिका— श्रीमती सुमित्रादेवी शास्त्री, प्रभाकर )

विवाह के बाद प्राय सभी स्त्रियो की यह स्वाभाविक लालसा होती है कि उनके सन्तान हो। वे माता बनने के सुखस्वप्न लेती है और अन्तत एक दिन सफलकाम भी हो जाती है। किन्तु थोडे दिन पीछे देखा जाता है कि माता पिता अपनी सन्तान को अपने असह्य क्लेश का साधन अनुभव करते है ।

क्या वास्तव में इस क्लेश का कारण सन्तान होती है ? नही, माता पर ही इसका उत्तरदायित्व है । मा यदि किसी बच्चे की शिकायत करती है तो वह एक प्रकार से अपनी त्रुटियो का बखान करती है। वह माता, माता के आसन पर बैठने योग्य न थी । उसने मा बनने की अनधिकार-चेष्टा की थी । यदि सन्तान को मनचाही सन्तान बनाने मे उसे सफलता नही मिली तो यह उसकी अपनी निपुणता की कमी है । सन्तान तो कुम्हार का वर्तन है जैसा जी मे आवे गढ़ लो '

सन्तान की शारीरिक आकृति प्रकृति को इच्छानुकूल बनाने मे माता एक अंश तक सफल

---

अतिरिक्त मनुष्यो मे भेद करनेवाले अन्य कोई अश नही है। अन्य सब प्रकार से मनुष्यो के समानाधिकार है। वेद किसी जाति को सदा के लिये नीच समझकर उसको घृणा का पात्र नहीं बनाता। मद्रास मे हिन्दू समाज का एक भारी भाग पञ्चम जाति के नाम से प्रसिद्ध है। इस भाग को अछूत समझा जाता है। इस भाग मे से लगभग ३०० व्यक्ति प्रतिदिन ईसाई बनते है। और २०० मुसलमान। यह घोरावस्था हिन्दू-सन्तान मे ऊचे वर्णो की कठोरता का फलस्वरूप है। अत मद्रासी हिन्दुओ के लिये यह पुस्तक आँख खोलने का कार्य करेगी। इसको मद्रास मे खूब बटवाना चाहिये। धनी आर्यसमाजियो को ज्ञानीजी की इस कार्य मे सहायता करनी चाहिये। मद्रास मे जहा तक हो सके अग्रजो का साहित्य बटवाकर वैदिक धर्म्म प्रचार मे जो आर्य भाई सहायता देंगे वे पुण्य के भागी होगे ।

हो सकती है, क्योंकि इस में भिन्न २ प्रकार की नस्लों के बीज का भिन्न २ प्रकार के जलवायु का प्रभाव अनिवार्य होता है। सन्तान के युवा हो जाने पर उसको बाह्य वायु मण्डल के प्रभाव से बचाना भी सहज काम नहीं होता। परन्तु बचपन में सन्तान की अच्छी बुरी आदतों और प्रवृत्तियों का श्रेय, अपयश माता के माथे है। माता मनोविज्ञान का आश्रय ले; प्रतिक्षण सजग रहे तो बच्चे की प्रवृत्तियों पर उसका पूरा शासन रह सकता है। यही नहीं, मां अपनी दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता से सन्तान को इतने अधिक उज्ज्वल मनोबल की पूंजी जमा करके दे सकती है जो उसे आगे चलकर बाह्य दूषित वायु मण्डल के प्रभाव से अछूता रहने मे भी सहायता दे। यहां हम किन्हीं ऐसे ही पहलुओं पर विचार करेंगे।

बहुतेरे बच्चों में काहिलो·काम से जी चुरानेका-भारी दुर्गुण पाया जाता है। माताएं रोना रोती है 'जी बच्चे बड़े आलसी हैं कोईकाम कहो टालमटोल करते हैं। इत्यादि।" यह काहिलो उनकी जन्म-सिद्ध प्रकृतिमें कदापि नहीं रहती। प्राय. देखने में आता है कि एक ही घर के २ ३ वर्ष की और ७-८ वर्ष की आयु के दो बच्चों में से छोटा अपनी शक्ति के अनुरूप छोटे मोटे काम करने को अत्यधिक तत्पर रहता है। वह किसी को कोई काम करते देखता है झट बन्दर की तरह नकल उतारने को दौड़ता है। उस नई मशीन के पुर्जों में स्फूर्ति विद्यमान होती है, वह निठल्ला नहीं बैठ सकता। बाहरी दुनियां में विचरना उसे कम मिलता है सो उसकी केन्द्रित शक्तियां घरेलू दुनियां में ही उथल पुथल मचाने की चेष्टा करती हैं। उस समय माता को चाहिए उसकी उस प्रवृत्ति से लाभ उठाए। उसकी रुचि और कार्यक्षमता को देखते हुए उसे वैसे कामो मे लगाती रहे जिनसे उसे विनोद मिले और काम करने की आदत भी पड़े। इस प्रकार की सुव्यवस्था से बच्चे की ऊधमी प्रवत्ति काम करने की आदत का रूप धारण कर सकती है। परन्तु यहां माताएं उस स्फूर्ति और चंचलता को केवल एक हानिकारक वस्तु समझ कर उसे निरन्तर दबाने का यत्न करती है। और फलतः बच्चे को आलसो बना देती है।

सन्तान को आराम पहुँचाने का स्नेहाभास दिखला कर भी माता बच्चे के अन्दर काहिली का बीज बो देती है। यदि आदत डाल दी जाए तो प्राय: ६-७ वर्ष का बालक अपने कपड़े सम्हालना, नहा कर तौलिया फीचना, बिस्तर लगाना-उठाना, अपने बरतने का सामान झाड़ना-पोंछना इत्यादि कामों को बखूबी कर सकता है किन्तु माताए यह सब स्वयं कर देती है अथवा कहती है "नौकर काहे के लिए है जो हमारा बच्चा यह सब स्वय करे" इससे वे सदा के लिए पराश्रित और निठल्ले बन जाते है। नौकर भले ही खाली रहे, बच्चे को आदत डालने को उससे काम लेना ही चाहिए।

इसके अतिरिक्त बच्चा कईबार उत्साह से काम करने लगता है। पर माता देखती है कि वह ठीक ढंग से नही कर रहा अथवा अधिक समय लगा रहा है तो वह अधीर हो उठती है। धैर्य पूर्वक प्रेम से ठीक विधि बता देने के बजाय झुंझला कर बच्चे से वह काम छीन लेती है और स्वयं कर डालती है। इससे भी बच्चे की काम करने की प्रवृत्ति दब जाती है।

इसी प्रकार सरक्षकों की शिकायत रहती है कि 'बच्चे हठ करते है, कहना नहीं मानते'। यह दुर्गुण भी शैशव से ही विकास पाने लगता है। उदाहरणत डेढ दो साल का प्रस्तुत एक साल का भी बच्चा ऐसी चीज माँगता है जो आप उसे देना उचितनही समझते। वह हठ करता है,रोता झीकता है। इस पर कोई माता इच्छा न रहते हुए भी उसे वह चीज दे दती है और कोई उसकी रुलाई पर झुंजला कर उसे दो एक चपत जड देती है। बच्चा चिल्लाहट से घर गुजा देता है। इस स्टेज से गुजर कर अन्तत यह बच्चा भी वह चीज पा लेता है। दोना तरह से बच्चा रोने और हठ मे अपनी विजय देखता है और क्रमश यह चोज उसके स्वभाव का अङ्ग बन जाती हैं। सर्वोत्कृष्ट उपाय यह होता है कि बच्चे का ध्यान पलट दिया जाए,और किसी लुभावने चित्र या फूल देखने मे उसे लगा दिया जाए। इसी तरह रूठने कुढने आदि की आदत से भी बचाया जा सकता है।

एक और शिकायत प्राय माता पिता की यह रहती है कि "हम बच्चा को कलाए, विद्याए सीखने के लिए प्रेरित करते है। अच्छे स अच्छा प्रबन्ध करते है पर व ध्यान ही नहीं देते। उनका मन लगता ही नही।" इस शिकायत से बचने के लिए भी दो बातो का ध्यान आवश्यक है।

पहले तो यह देखना चाहिए कि जिस विषय की कला मे आप बच्चे का सिद्धहस्थ देखा चाहते हैं उसम उसकी रुचि भी है, उसकी मानसिक शक्तिया उस विषय को भला भाति ग्रहण करने मे समर्थ भी है। दूसरे, बहुधा यह देखा जाता है कि लोग बच्चो को हर प्रकार की शिक्षा-दीक्षा के लिए सर्वथा अध्यापको पर निर्भर रहते हैं। यह तो असम्भव ही है कि माता उस प्रत्येक विषय की कला मे पारङ्गत हो जाए जिसका वह बच्चे को विशेषज्ञबनाना चाहती है। सो अध्यापक की सहायता तो अनिवार्य है, पर उस विषय के सिद्धान्त को सरसरी तौर पर अवश्य समझ लेना चाहिए, और बच्चे की शिक्षा के समय अपना साधारण निरीक्षण निरन्तर रखना चाहिए। स्वयं सिद्धान्त समझ लेने स मा अध्यापक की योग्यता की पड़ताल भी कर सकती है तथा उस विषय को अधिकाधिक रोचक और सरल बनाने के उपाय भी उसे सूझ सकते हैं और विविध साधन उपस्थित करके वह बच्चे को पाठमे मन लगाना सिखा सकती है।

इसी प्रकार अन्य कई पहलू हैं, फिर अवसर पाकर विचार करेंगे। इस विषय में पिता का कर्त्तव्य भी माता से किसी अश मे कम नहीं होता पर हमे यहा पर माताओ का ध्यान विशेषत आकर्षित करना था।

## गृहस्थ धर्म्म

( लेखिका—श्रीमती यमुनादेवी जी )

गृहस्थ धर्म का विचार करने से मालूम होता है कि गृहस्थ शब्द सरल और साधारण हो रहा है। इसका अर्थ है, 'घर मे रहे'। प्राचीन काल मे मकान को घर नही माना है। गृहस्थ वे ही कहाते थे जो गृहिणीवाले होते थे। गृहिणी बिना मकान वन थे। उस समय गृहस्थाश्रम स्वर्ग भूमि थी। इस आश्रम से ही सब आश्रय पाते थे। वे सब विपत्ति से पार होते थे। आज वह आश्रम अन्धकार मे पडा है। गृहिणी का अभाव हो गया है। अब वैसी पत्निया घर मे नहा हैं।

इसी कारण घर को श्मशान की उपमा दी जाने लगी। वास्तविक बात क्या है? मनुष्य चेष्टा-हीन पड़े हुए हैं. मनुष्य अकर्मण्यरूप हो रहे हैं तभी तो वे घर श्मशान हो गए हैं। सबने सत्कर्म त्याग दिए हैं, उच्चकर्म छोड़ दिए हैं, सबसे स्नेह छूट गया है इसी से घर श्मशान हो गए हैं। देखिए, जहां अनेक कालेज बने हुए हैं, शिक्षा का प्रचार हो रहा है वहां भी अविद्यापूर्ण गृहस्थ बने हुए हैं। यह कैसे? यद्यपि विद्या का प्रचार हो रहा है, आवश्यकता बढ़ रही है, शिक्षित समाज उन्नति कर रहा है, पर स्त्री-शिक्षा वैसी नहीं है जो गृहधर्म के अनुकूल हो, जो माता के कर्त्तव्य को दिखावे। आज हमारी शिक्षिता बहनों का ध्यान दूसरी ओर जा रहा है। वे गृहस्थ-सुधार की ओर ध्यान नहीं देती हैं। प्राचीन काल में भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा का प्रचार था। गृहस्थधर्म बताने को ऋषिपत्नियां होती थीं। वे ब्रह्मविद्या की अधिकारिणी होती थीं। देखिए जब याज्ञवल्क्य जी अपनी दो पत्नियों को सम्पत्ति देकर तपस्या करने जाने लगे तो मैत्रेयी ने कहा कि मैं सांसारिक भोग-विलास नहीं चाहती, मुझे ऐसी सम्पत्ति से कोई मतलब नहीं। मैं भी अध्यात्म-सुख लूँगी। इस बुद्धिमती पत्नी को ऋषि ने रोका नहीं उसे साथ लिया। जब दम्पति के एक से विचार होते

थे, दोनो एक सी शिक्षा, सभ्यता, आचार-व्यवहार का पालन करते थे तब उन्हे लौकिक तथा पारलौकिक आनन्द मिलता था। आज हमारे शिक्षित भाई शिक्षित स्त्री की तलाश करते है या शिक्षिता बहने शिक्षित पति खोजती हैं। वे कालेज की शिक्षा को पर्याप्त समझ कर विवाह कर लेते हैं पर उन्हे *गृहस्थाश्रम* का आनन्द नही मिलता। यद्यपि वे सामाजिक बन्धन मे बंधे रहते हैं पर एक दूसरे से असन्तुष्ट रहते है। कभी-कभी दु.ख इतना बढ़ जाता है कि एक को किसी तरह सम्बन्ध तोडना पडता है, कई प्राण भी दे देते हैं। कोई-कोई अपना सम्बन्ध वासना नाश होने तक रखत है और मौका पाकर अपनी इच्छा कार्य रूप मे दिखा देते है।

दैनिक काम जितना स्त्री कर सकती हैं उतना पुरुष नही कर सकता। वह बच्चो का पालन पोषण और घर का प्रबन्ध करती है, यदि वह कह दे कि प्रियतम आप चौका चूल्हा सम्हालिए, बच्चे की देख रेख करिए तो यह काम देखने मे मामूली सा है पर करने मे कठिन है।

विवाह ठेका नहीं है। पुरुष और स्त्री दोनो आजकल अधिकार को लड़ रहे है, यदि पुरुष जज है तो स्त्री भी जज होने की इच्छा रखती है, यदि पुरुष वकील है तो स्त्री भी वकील होना चाहती है, यदि पुरुष प्रोफेसर है तो स्त्री भी तद्वत् पद की इच्छुक हो रही है। यह तो बाह्य कार्य की उन्नति है पर असल मे स्त्री का अधिकार क्या है. उसका आसन क्या है? यह भारतवर्ष ही जानता था और अब भी जानता है। भारतवर्ष मे जो विवाह संस्कार है वही इस अधिकार का निबटारा कर देता है। जब विवाह सकल्प पढा जाता है, दाम्पत्य सम्बन्ध शुरू होता है और गृहधर्म का शिलान्यास होता है तभी कन्या माता पद के लिये और पुत्र वर रूप होने के पद की इच्छा करते हुए कुटुम्ब, जाति, समाज, राष्ट्र, पितर आदि की सेवा का भार लेते हैं। पुरुष पिता नहीं, पुत्र बनने को विवाह करता है और आत्मरूप से पुत्र बन जाता है, तभी तय होजाता है कि स्त्री का पद ऊंचा है या पुरुष का। आजकल की बहने ऐसे पवित्र माता के अधिकार को न समझ कर ऊपरी अधिकार के लिये झगड़ती हैं।

आजकल जो विवाह कालेज की शिक्षा या फोटो देखकर होते हैं, जो विवाह योरुप और अमेरिका की नकल करते हैं, जो विवाह अपनी स्वतन्त्रता से होते है उनमे वह गौरव कहां, उन्हे वह आनन्द कहां जो आजीवन भारतीय दम्पति को है? यहां की स्त्रियां बुझे दिये पर जान देती थी। जलते दिये पर जल जाना, प्राण देना तो दूसरे देशो को भी असम्भव है पर (बुझे हुए) मरे हुए पति पर निछावर होना भारत का आदर्श था। भारत ऐसे पवित्र प्रेम का आदर्श रखता है जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता! मैं अपनी बहनो को सचेत कर देना चाहती हू कि वे अपने उच्च आदर्श को न भूल। वे पद के लालच मे पड़कर पुरुषो की तरह मारी मारी न फिरे। वे गृह धर्म को ही सुधार ले, अपने कर्तव्य का पालन करने लगे तो भारत पूर्व की तरह सुखी हो जायगा और हमारे गृहस्थाश्रम का सहारा पाकर भारत के चारो आश्रम अपने अपने कर्तव्य को करने लगेंगे। हमे अपने प्राचीन गौरव के अनुकरण मे ही कल्याण है। हमे भौतिक आनन्द की अपेक्षा परमानन्द की ओर जाना है, वही हमारा परम लक्ष्य है न कि सासारिक सुख।

———

# केरल में पर्दा

लें० — श्री नारायणदेव सिद्धान्त भूषण 'प्रभाकर"

माननीय पाठक वृन्द ! आप लोगों को यह सुन कर आश्चर्य होगा कि उत्तर-भारत के समान दक्षिण भारत के केरल प्रान्त में भी पर्दा की प्रथा है। आप लोग सोचते होंगे कि जिस केरल के विषय में हम सुनते रहते हैं कि वहाँ के समान शिक्षित-स्त्री पुरुष हिन्दुस्तान के किसी भाग में नहीं हैं, तब क्या पर्दा जैसी बुरी प्रथा वहां है; पाठक ! यह तो ठीक है कि यह देश प्रकृति देवी का लीला स्थान है, स्त्री शिक्षा का उत्तम केन्द्र है, जहाँ पर केवल छोटी सी ट्रावनकोर रियासत में ही सम्पूर्ण पंजाब में जितनी ग्रेजुएट महिलायें हैं उससे अधिक हैं। इस बढ़ती को देखकर गवर्नमेन्ट आफ़ ट्रावनकोर यह सोच रहो है कि पोस्टआफिस, और रजिस्टर कचहरी के समान इनको भी पुलिस या सैनिक डिपार्टमेन्ट में भी लेलें। परन्तु इससे यह न समझिये कि सब जाति की स्त्रियां पढ़ी लिखी हुई हैं और पर्दा जाल से बाहर आई हुई हैं। केरल की ब्राह्मण स्त्रियों के समान अनपढ़ स्त्रियां शायद ही संसार के अन्य किसी देश में हों। तब यदि इनमें पर्दा प्रथा हो तो आश्चर्य ही क्या है। केरल में केवल ब्राह्मण स्त्रियों में ही पर्दा है। लेकिन जैसा उत्तर भारत में मुसलमानी स्त्रियां जिस प्रकार बुर्का डालती हैं, हिन्दु-स्त्रियाँ जिस प्रकार सिर ढक लेती हैं उसी प्रकार का पर्दा नहीं है। फिर आप पूछेंगे वह कैसा विचित्र पर्दा है ? यही तो विशेषता है कि यहाँ की पर्दा प्रथा सब दुनियाँ से न्यारी है। स्त्रियां कपड़े से तो सिर नहीं ढकती हैं किन्तु हरेक स्त्री के पास ताल पत्र की बनी हुई एक छत्री होती है जिस को बन्द नहीं कर सकते। और वह छाता इतना चौड़ा है कि एक तरफ करदें तो शरीर का एक भाग पूरा ढक जाता है। और उसकी डण्डी एक हाथ से लंबी नहीं है। यही केरल की ब्राह्मण स्त्रियों का पर्दा है। लेकिन उत्तर भारत के समान ये घर के अन्दर पर्दा नहीं रखतीं। अकसर ये बाहर नहीं निकलतीं। किसी मन्दिर में देव दर्शन के लिये अथवा अपने किसी सम्बन्धी के घर जाती हुई यह छाता ले जाती हैं। और इससे पर्दा करने की रीति भी अजीब है। जब जाते हुए सामने से कोई पुरुष आ जाय तो उसकी ओर छाता कर एक तरफ से जाती हैं जब दोनों तरफ से पुरुष जायें तो एक ही तरफ छाता होता है। एक तरफ पुरुष इनको देख सकते हैं। और कोई वर्षा आ जाय तो यह छाता ऊपर पकड़ती हैं। उस समय कोई पर्दा नहीं। लेकिन यदि कड़ी धूप हो पुरुष समीप से गुजर रहे हों तो ऊपर छाता न पकड़ कर एक तरफ कर लेती हैं। कैसा विचित्र तमाशा है। सदियों से यह घृणित प्रथा केरलीय ब्राह्मण स्त्रियों के जीवन अन्धकार में डाले हुए हैं। इनको अक्षर ज्ञान नहीं, केवल घर में ही बन्द रहती हैं। त्यौहारों के समय भी अन्य नायर स्त्रियों के साथ घरके आंगन में ही उत्सव मनाती हैं। इनका जीवन जानवरों से भी गया गुजरा है। और एक बात, इनको सोने चांदी के कड़े पहनने का अधिकार नहीं। पीतल के कड़े पहनती हैं वह भी एक एक हाथ में १०-१२ हैं। यदि उनको उतारे तो वह जगह आग में जली हुई सी मालूम होती है उसमें एक

प्रकार का चिह्न पड़ जाता है। और इन को अकेले कहीं जाना भी मना है। जब जाती हैं एक नायर स्त्री इनकी सहायता के लिये आगे चलती है। इस का काम है कि रास्ता दिखाये और यदि कोई अस्पृश्य अछूत दूर कहीं दिखाई पड़े तो या तो उनको दूर से ही हटाती है, नहीं तो अपने आप रास्ता छोड़ कर हट जाती है। और एक नियम यह है कि नायर स्त्री जाती हुई बीच बीच में उच्च स्वर से "होई होई" पुकारे। जिसका अभिप्राय यह है कि कोई दलित आता हो तो वह यह पुकार सुनकर दूर हट जाय। लेकिन अत्याचार कब तक रह सकता है। बाल ब्रह्मचारी दयानन्द से पैदा हुई क्रांति इसको कैसे सहन कर सकती है। सभ्यता की इस बीसवीं शताब्दी में इसको कौन सहनकर सकता है। दयानन्द की लगाई हुई आग की चिनगारियां सर्वत्र फैल गई हैं। इन चिनगारियों में कुरीति-रूपी कूड़ा करकट भस्म हो जायगा और उसके देदीप्यमान प्रकाश पुञ्ज से अज्ञानांधकार मिट जायगा। यही कारण है कि आज कल ब्राह्मण युवक कमर बांधकर गांव गांव में पर्दा, कद्दा इत्यादि के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं और "नंपूतिरी योग क्षेम सभा" इन कुरीतियों को मिटाने के लिये प्रस्ताव पास कर चुकी है। और सभा में एक विवाह, विधवा विवाह आदि के लिये भी प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं। पहिले घर में सब से बड़े पुरुष चार चार तक शादियाँ करते थे और विधवा विवाह नहीं होता था। लेकिन अब यह कण्टक दूर हो गया है। और अभी कुछ दिन हुए मध्य ट्रावनकोर के महिला सम्मेलन में पर्दा को छोड़ कर बूढ़ी और नवयुवती चार स्त्रियां आयीं हैं, और उन्होंने सभा में व्याख्यान दे कर यह प्रण किया है कि हम इन कुरीतियों को दूर करने के लिये प्राणपण से प्रयत्न करेंगी। इन घटनाओं को सुन कर क्या आप यह नहीं कहेंगे कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में ऋषि की विजय दुन्दुभि बज रही है? प्रसंग से इतना लिख दिया है। आशा है विज्ञ पाठक क्षमा करेंगे और आर्य कर्तव्य (संसार का उपकार करना) का पालन करेंगे।

# विविध प्रसंग

## बच्चों को जेवर पहनाने का भीषण परिणाम

मिर्जापुर की खबर है कि १६ जनवरी को वहाँ पन्द्रह महीने का एक बच्चा मिला है जिसके मुँह मे कपडा ठूसा हुआ था। जब कपडा हटाया गया तो उसके मुह से खून गिरने लगा। कहा जाता है कि एक आदमी ने बच्चे को उठा लिया था और उसके कडे उतार कर उसके मुह मे कपडा ठूस दिया। प्रसन्नता की बात है कि बच्चे की अवस्था सुधर रही है।

इससे भी अधिक भयंकर और रोमाचकारी घटनाएँ आए दिन होती रहती हैं। आए दिन जेवरो के कारण बच्चे मारे, भगाए या चुराए जाते हैं फिर भी उन भावुक अभिभावकों की आखे नहीं खुलती जो बच्चो के प्रति अपने अत्यधिक लाड और प्यार का परिचय बच्चो को जेवर से अलकृत करने मे देते हैं। वस्तुत इस प्रकार का लाड प्यार जिससे बच्चो का जीवन संकट मे पड़े या जीवन नष्ट हो जाय, लाड नहीं वरन शत्रुता है।

## बूढे श्वसुर की क्रूरता

मुरादाबाद की खबर है कि वहा के फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट की अदालत मे एक बूढे आदमी पर इसलिए मामला चल रहा है कि कहा जाता है कि उसने अपनी पतोहू पर छुरे से घातक आक्रमण किया था। उस पर बूढे के इतना कोप करने का एक कारण तो यह बताया जाता है कि वह परदा नहीं करती थी और दूसरे वह विधवा थी, इसलिए उसकी मा उसका पुनर्विवाह करना चाहती थी। कहते हैं कि बूढे ने बहू के इसी अपराध के कारण कुपित हो उसका और साथ ही अपना अन्त कर डालना चाहा। इसलिए जेब मे संखिया की एक पुडिया रख वह हाथ मे छुरा ले उसके घर मे घुस पडा जहा उसके शरीर पर १८ घाव करने के बाद वह अपना काम तमाम करना चाहता था किन्तु उसके पहले ही कुछ लोगों के पहुँच जाने से वह कुछ न कर सका और पुलिसने पकड कर उस पर यह मामला चलाया है।

यह मामला अभी विचाराधीन है अत इस पर अभी से विस्तार पूर्वक टीका टिप्पणी करना अप्रासङ्गिक होगा। परन्तु यदि इस घटना को जिस रूप मे यह प्रकाश मे आई है सत्य मान लिया जाय तो हम उस बूढे की मूर्खता और अदूरदर्शिता पर अत्यन्त दुख और आश्चर्य होता है जो समय की गति और हवा के रुख को न देखता हुआ पर्दा न करने और पुनर्विवाह का विचार रखने के कारण अपनी पतोहू के और अपने जीवन का अन्त कर देने का दुस्साहस कर बैठता है। क्या इसप्रकार की हतभागी युवतियों के छुप छुप पाप कर्म मे प्रवृत्त हो जाने। इसी के साथ भाग जाने अथवा विवश होकर बाजार मे बैठ जाने से एम लकीर पथियो का बड़ी नाक की रक्षा सम्भव है? यह प्रश्न है जिसका उत्तर हम ऐसे दकियानूस बूढो से माँगते है?

## वृद्ध और बहु विवाह का दुष्परिणाम—

समाचार मिला है कि लाडली नाम की एक षोड्श वर्षीया ब्राह्मण पुत्री ने जबलपुर के सब-

डिवीजनल मजिस्ट्रेट की अदालत में अपने पति से खर्च पाने के लिए नालिश की है। उसने नालिश में कहा है कि मेरे पति पुलिस के रिटायर्ड सर्किल इन्सपेक्टर और दो गांवों के मालगुजार हैं। उनकी अवस्था ५६ वर्ष की है। चार वर्ष पहले मेरा विवाह हुआ था। मेरे पति के उस समय दो और पत्नियाँ मौजूद थीं, परन्तु किसी के सन्तान न थी। मेरे विवाह के बाद उनकी पत्नी के एक लड़का हुआ। उसी दिन से मेरे पति ने मुझे सताना शुरू किया। कई दिनों तक वे मुझे भूखी रखते और घर वालों की थाली की बची हुई जूठन मेरे आगे डाल दी जाती थी। ऊपर से मुझपर मार भी पड़ती। एक दिन मेरे कपड़े तक उतारकर मेरे पति ने अपने घर से बाहर निकाल दिया। गहने भी छीन लिए गए। मैं २॥ वर्ष से अपने भाई के साथ रहती हूँ, बीच में मुझे ससुराल पहुँचाने के जो भी यत्न किए गए, वे सब व्यर्थ हुए, इसलिए लाचारी से खर्च के लिए नालिश करनी पड़ी है।

उन बूढ़ों और रंगीलों को उपर्युक्त पंक्तियां आँखें खोलकर पढ़नी चाहिएं जो सन्तान-लालसा और काम-वासना की पूर्ति और संतुष्टि के लिए अपनी पोतियों की उम्र की बालिकाओं को पर्य्यंकशायिनी बनाने तथा कई कई पत्नियों के मध्य रंग रेलियाँ और विहार करने के सुख स्वप्न देखते हैं और जो निर्दोष बहनों के जीवनों को नष्ट करते हुए अपनी तथा अपनी पत्नियों की दुर्गति कराते हैं।

**फ़क़ीर पंथियों को चुनौती—**

इन्दौर से सूचना मिली है कि वहां के ज़िला मजिस्ट्रेट ने ९ जनवरी को जोधीपुरा की एक नर्स को १ वर्ष की कड़ी क़ैद और ३००) जुर्माने की सज़ा इस अपराध में दी है कि वह उन विधवाओं और लड़कियों को मिलाकर बेचा करती थी जो उसके पास इलाज कराने के लिए अधिक संख्या में जाया करती थीं।

नैतिक दृष्टि से इस नर्स का अपराध इतना बड़ा नहीं जितना बड़ा उस समाज का है जिसमें विधवाओं के लिए स्थान नहीं, उनके लिए जिसके हृदय में दया नहीं तथा जिसमें ऐसी भूलों के लिए —जिनके लिए वह स्वयं उत्तरदाता है— क्षमा नहीं।

**कन्या-वध—**

जम्मू से समाचार मिला है कि काश्मीर राज्य के राजपूतों में कन्या-वध की भयंकर प्रथा अभी तक मौजूद है। जम्मू के राजपूत क्षेत्रों में ७० प्रतिशत घरों में कोई लड़की नहीं और यदि होती है तो जीवित दबा दी जाती है।

इस बीसवीं शताब्दी में हिन्दू समाज में इस प्रकार की भयंकर प्रथा का प्रचलन जितना आश्चर्य्य जनक है काश्मीर जैसे हिन्दू राज्य में उसकी मौजूदगी उससे भी अधिक लज्जाजनक है। काश्मीर दरबार को शीघ्र से शीघ्र राजपूतों की नस्ल और राज्य के सदाचार की रक्षा के लिए इस अमानुषिक प्रथा को कानूनन बन्द करा देना चाहिए।

सार्वदेशिक आ० प्र० सभा के प्रधान, आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता

# महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा

लिखित उपयोगी पुस्तकें

## आत्मदर्शन

यह पुस्तक स्वामी जी ने वर्षों के स्वाध्याय के बाद वानप्रस्थ आश्रम में लिखा है। संसार के भिन्न २ मतों, फिलासफी तथा साईंस में आज तक आत्मा के विषय में जितनी भी थियोरियें निकली हैं, उन सबका इस पुस्तक में विचार किया गया है, प्रत्येक अध्याय में एक से एक बढ़कर शिक्षाप्रद और उपयोगी बातें हैं। हिन्दी में इस विषय का यह सर्वोत्तम ग्रन्थ है। देश की किसी भी भाषा में अभी तक इसके जोड़ का ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ। इसका चौथा संस्करण अभी छपा है। मूल्य १।) सजिल्द १॥)

## मृत्यु और परलोक

मृत्यु का वास्तविक रूप, मृत्यु दुःख प्रद क्यों प्रतीत होती है, मरने के बाद क्या होता है, प्राण छोड़ने के समय प्राणी की क्या हालत होती है, भूत प्रेत क्या हैं, एक योनि से दूसरी योनि तक पहुँचने में कितना समय लगता है, जीव दूसरे शरीर में आता क्यों है……आदि महत्वपूर्ण प्रश्नों पर इस पुस्तक में विचार किया गया है पुस्तक पढ़ने योग्य है। मूल्य ॥।=)

## गृहस्थ-जीवन-रहस्य

गृहस्थ सम्बन्धी कितनी ही पुस्तकें छप चुकी हैं जो इतनी अश्लील हैं कि स्त्री-पुरुष उसे एकान्त में पढ़ते हैं। पुत्र अपने पिता से चोरी से मंगाते और पढ़ते हैं। कन्या भी इसी प्रकार आंख बचाकर पढ़ती हैं।

इसी दशा को सम्मुख रखकर श्री स्वामी जी ने उक्त पुस्तक का निर्माण किया है। पुस्तक में गृहस्थाश्रम की श्रेष्ठता, गृहस्थाश्रम के निर्माता स्त्री-पुरुष की समानता, स्त्री-पुरुषों की शिक्षा में भेद आवश्यक है, गृहस्थ में प्रविष्ट होने के लिए स्त्री पुरुष की योग्यता, गृहस्थ में प्रवेश और प्रतिज्ञा, विवाह की नौ-दश प्रतिज्ञाएँ, अनमेल विवाह का निषेध, विवाह में कितना कम व्यय होना चाहिए, विवाह के साथ अनेक व्यर्थ रस्में, इत्यादि ७४ विषयों पर स्वामी जी ने भली प्रकार विचार किया है जो आर्य स्त्री पुरुषों को अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य बढ़िया सुनहरी जिल्द सहित १)

## अमृत वर्षा

यों तो स्वामी जी की सभी पुस्तकें एक से एक बढ़कर हैं, किन्तु सर्व साधारण स्त्री-पुरुषों के लिये जितनी यह पुस्तक उपयोगी है दूसरी नहीं। इसमें प्रभु का स्मरण, भक्ति का सच्चा उपाय, आत्मबल की आवश्यकता, आगे बढ़ो, दुःखों की औषधि, ईश्वर प्राप्ति के साधन, सच्ची शांति का सच्चा उपाय, अभ्यास की महिमा; वैदिक धर्म की विशेषता आदि ३० विषयों का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। पुस्तक क्या है आत्मशान्ति का स्रोत है। छपाई बहुत बढ़िया, मूल्य ॥)

## प्राणायाम विधि

मन को शुद्ध तथा शरीर को तन्दुरुस्त रखने और नाना प्रकार के रोगों तथा व्याधियों से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय प्राणायाम है। प्राणायाम क्या है और किस प्रकार करना चाहिए, यही इस पुस्तकमें बताया गया है। मूल्य =)

## आर्यसमाज क्या है

पुस्तक का विषय नाम से ही स्पष्ट है। यह आर्यसमाज से अपरिचित पुरुषों को आर्यसमाज के नियमों और मोटे मोटे सिद्धांतों से परिचित कराने का अच्छा साधन है। पुस्तक में जिन विषयों का समावेश है उन्हें खोल कर प्रगट करने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक दूसरी बार सुन्दर छपी है। मू० प्रचारार्थ ।-)

पता—राजपाल एण्ड संज़, सरस्वती आश्रम हस्पताल रोड, लाहौर।

# ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रंथ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहिये —

| | असली मू० | घटा हुआ मू० |
|---|---|---|
| (१) आर्याभिविनय | ।-) | ।) |
| (२) काशी शास्त्रार्थ | -) | )॥ |
| (३) सत्यधर्म विचार | -)॥ | -) |
| (४) पञ्च महायज्ञ विधि | -)॥ | -) |
| (५) आर्योद्देश्य रत्न माला | )॥ | )॥ |
| (६) संस्कार विधि बढ़िया कागज | ॥) | ।=) |
| (७) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया कागज उम्दा छपाई बड़ा आकार | १॥) | १।) |
| (८) व्यवहार भानु | =)॥ | =) |
| (९) वेद विरुद्ध मत खण्डनम् | =)॥ | =) |
| (१०) शिक्षापत्री स्वा० नारायण मतखण्डन | =) | -) |
| (११) भ्रमोच्छेदन | -) | )॥ |
| (१२) भ्रान्ति निवारणम् | =) | -) |
| (१३) गो करुणानिधि | =) | -)॥ |
| (१४) स्वीकार पत्रम् | )॥ | )॥ |
| (१५) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रङ्गीन चित्रों के | ।) | ≤) |
| (१६) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में | ५) | ३॥) |

# सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

## (१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि के आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

घटा हुआ मूल्य „ २)

## (२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य केवल -), घटा हुआ मूल्य )॥

## (३) दयानन्द लहरी—

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों मे किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री प० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य -)॥, घटा हुआ मूल्य -)

( ४ ) आर्य पर्व पद्धति—

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारो के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है । मूल्य ||।), घटा हुआ मूल्य ||≈)

( ५ ) आर्यसमाज क्या है:—

यह पुस्तक पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम ए. प्रयाग, द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास मौजूद है। संस्थाओं और आर्य विद्वान आदि के १९ चित्र हैं। मूल्य |||), घटा हुआ मूल्य ||)

( ६ ) दश नियम व्याख्या:—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह "दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≈)

( ७ ) ओम्मत्यम:—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यती की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य |||), घटा हुआ मूल्य ।≈)

( ८ ) वैदिक सिद्धान्त:—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है मूल्य १।) सजिल्द १||), घटा हुआ मूल्य || ) सजिल्द १)

(९) भारत माता का संदेश—लेखक—श्री भाई परमानन्द जी, मूल्य ||), घटा हुआ मूल्य ।≈), पुस्तक में पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यता, धर्म ( मजहब ) और राजनीति आदि कतिपय विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार किया गया है।

(१०) ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार मू० ||), घ० मू० ।≈), लेखक श्री पं० स्नातक धर्मदेवजी विद्या वाचस्पति। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर विद्वत्ता-पूर्ण रीति से बहुत सुन्दर विचार किया गया है।

(११) वैदिक सन्ध्या रहस्य—लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामीजी, मू०—)||, घ० हुआ मू०—)
इस पुस्तक में वैदिक सन्ध्या की बहुत रोचक, खोज पूर्ण, प्रमाणिक और वैज्ञानिक व्याख्या की गई है सन्ध्या के प्रेमियों और स्वाध्याय शील सज्जनों के मनन करने योग्य पुस्तक है।

(१२) आरोग्य दिग्दर्शन—लेखक—श्री महात्मा गांधी, मूल्य ।≈), घटा हुआ मूल्य ।) शरीर-विज्ञान

और स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में श्री महात्मा जी के स्वयं अनुभूत प्रयोगों का संग्रह। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और पढ़ने योग्य है।

(१३) इज़हारे हक़ीक़त—(उर्दू) लेखक—ला० ज्ञानचन्दजी आर्य्य, देहली। महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक में प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है। मूल्य ॥।≈)

(१४) सत्य-निर्णय—उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है, मूल्य १।)

(१५) योग रहस्य—लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, मूल्य ॥)
इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को प्रकट करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिनसे कोई भी नया आदमी जिसे रुचि हो, योग के अभ्यासोंको कर सकता है। आत्मिकोन्नति के जिज्ञासुओं को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

(१६) विद्यार्थी जीवन रहस्य—ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी। विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर शृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। एक प्रति ॥)

(१७) यम पितृ परिचय—लेखक—श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २)
इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१८) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)
पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(१९) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लगभग ५०० मूल्य १॥)

| | अ० मू० | घ० मू० | | अ० मू० | अ० मू० |
|---|---|---|---|---|---|
| (२०) बंगला अनुवाद आर्य्यसमाज | ।) | =) | (२६) विरजानन्द विजय | ।) | =) |
| (२१) शुद्ध बाल मनुस्मृति | ।=) | ।) | (२७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू | ।) | =) |
| (२२) वर्ण व्यवस्था | -) | )॥ | (२८) भगवद्गीता | १) | ॥) |
| (२३) जातीयता | ।=) | ।) | (२९) ईशोपनिषद् (ले० महात्मा- | | |
| (२४) { वेद में असित शब्द | -)। | -) | नारायण (स्वामी जी) | =) | =) |
| " २५ प्रति का | १।) | १।) | (३०) केनोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |
| (२५) शताब्दी वृत्तान्त | १।) | ॥) | (३१) कठोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |

**32 Crucifixion by an eye witness—**
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ given by one who witnessed it with his own eyes.—price As 6 Reduced price As o

**33 Truth and Vedas—**
It is an excellent exposition and translation of Vibhrat. price As 8 Reduced price A 6

**34 Truth Red Books of Aryan culture:—**
The subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal —price As 10 Reduced price As 8

**35 Torch Bearer—**
A biographical sketch of Swami Dayanand —price Rs 1/8/ Reduced price Rs 1

**36 Vedic Teachings—**
This book contains the most authentic replies to the objection raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has besides brought forth the superiority the Vedic Teachings contained —price Rs 1/12/ Reduced price Rs 1/4/

**37 Voice of Aryavarta—**
This little book comes from the pen of Mr L L Vaswani and contains reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching —price As 8 Reduced price As 6

**38 The daily Prayer of an Arya—**
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya —price As 4 only

**9 The Light of the Vedas—**
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/

**4) Commentary on Ishopanishat—**
Translated by Pt Ghasi Ram M. A LL B.—price As 4

पुस्तक मिलने का पता—

**कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,**

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

श्री पं० प्रियरत्न जी आर्ष कृत

# यम पितृ परिचय

श्री पं० प्रियरत्न जी आर्ष वैदिक विद्वान हैं। उन्होंने कई उपयोगी पुस्तकें लिखी हैं। प्रस्तुत पुस्तक उनके लगभग २ साल के कठिन परिश्रम का फल है। पुस्तक में यम और पितृ प्रकरण वाले वेद-मन्त्रों के विद्वत्तापूर्ण अर्थ किये गए हैं। इन वेद-मन्त्रों में विविध उपयोगी विषयों का समावेश है। उनमें से कुछेक इस प्रकार हैं:—

ईश्वर का सृष्टि कर्तृत्व, सृष्टि क्रम, जीवात्मा का नित्यत्व, पुनर्जन्म, शरीर रचना, वैद्यक शास्त्र, सूर्य्य विज्ञान, ज्योतिष आदि विद्याएं। कला-कौशल, यंत्र आदि का लाभ, विविध उपमाओं और नाना अलङ्कारों द्वारा प्राकृतिक जगत का चित्रण। वैयक्तिक, पारिवारिक और सामूहिक जीवन को उत्कृष्ट बनाने के साधन, कुटुम्ब सहवास, ग्रामनगर तथा देश के प्रति निज कर्त्तव्य आदि सुचरित्रों का आदेश इत्यादि इत्यादि।

ग्रन्थ प्रत्येक व्यक्ति के पढ़ने और व्यावहारिक जीवन में काम आने योग्य है। लाइब्रेरियों के लिये अमूल्य रत्न है। आज ही खरीद कर लाभ उठाइए।

पृष्ठ स० ४०० से ऊपर। छपाई-सफाई उत्तम, कागज बढ़िया आकार-प्रकार आकर्षक। मूल्य लागत मात्र अजिल्द २) सजिल्द २॥)

---

# दयानन्द सिद्धान्त भास्कर

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्वपूर्ण विषयों और सि
स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज की भिन्न २ पुस्तकों व पत्र-व्यवहार तक में वा
जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का
किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पु

यह पुस्तक प्रत्येक आर्य परिवार और आर्यसमाज के पुस्तकालय में रहन

पृष्ठ सं० २०० से ऊपर, छपाई-सफाई बढ़िया, आकार-प्रकार आकर्षक

मिलने का पता—

सार्वदेशिक' कार्यालय, बलिदान-भ

श्रद्धानन्द

---


‍साद पाठक—पब्लिशर के लिये भदावर प्रेस, खारी बावली देहली से छपकर प्रकाशित हुआ।

नवम्बर १९३४ 20-9-34

REG NO L 2121




विदेश से ५ शिलिंग | सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम०ए० | वार्षिक मूल्य ३)
स० सम्पादक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक | एक प्रति का ।)

प० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये चन्द्र प्रिन्टिंग प्रेस कूचा घासीराम देहली में प्रकाशित हुआ।

## ❋ विषय-सूची ❋



---

### सार्वदेशिक में विज्ञापन छपाने की दर

| स्थान | १ मास के लिये | ३ मास के लिये | ६ मास के लिये | १ वर्ष के लिये |
|---|---|---|---|---|
| पूरा पृष्ठ | १०) | २५) | ४ ) | ७५) |
| एक कालम | ६) | १५) | २५) | ४०) |
| आधा ” | ३॥) | ८) | १५) | २५) |
| चौथाई ” | २) | ५) | ८) | १५) |

नोट—चौथाई कालम से कम विज्ञापन आने पर कालम की एक पंक्ति के =) प्रति मास के हिसाब से लिये जावेंगे। विज्ञापन तथा रुपया प्रत्येक दशा में पेशगी ही आना चाहिए।

ओ३म्

# सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र

वर्ष ८ | भाद्रपद सम्वत् १९९१ | अंक ७

सितम्बर १९३४ ई० ] [ दयानन्दाब्द ११०

## वेद की शिक्षाएँ

ते हि वस्वो वसवानास्ते अप्रमूराः ।
महोभिः व्रता रक्षन्ते विश्वाहा ॥

ऋ० म० १ अ० १४ ॥

( ते ) वे पूर्वोक्त विद्वान लोग ( वसवानाः ) अपने गुणों में सब को ढांपते हुए ( हि ) निश्चय से ( महोभिः ) प्रशंसनीय गुण और कर्मों से ( विश्वाहा ) सब दिनों में ( वसु ) धन आदि पदार्थों की ( रक्षन्ते ) रक्षा करते हैं तथा जो ( अप्रमूराः ) सुकृत्य प्रमाद रहित धार्मिक विद्वान हैं ( ते ) वे प्रशंसनीय गुण कर्मों में सब दिन ( व्रता ) सत्य पालन आदि नियमों को रखते हैं ।

**भावार्थ**—विद्वानों के बिना किसी से धन और धर्म युक्त आचार रक्खे नहीं जा सकते । इससे सब मनुष्यों को विद्या प्रचार करना चाहिए जिससे सब मनुष्य विद्वान होकर धार्मिक हों ।

"हम जो कुछ संसार में कहते है संसार या तो उसकी पर्वा नहीं करेगा या बहुत थोड़े समय तक याद रक्खेगा, परन्तु जो कुछ हम संसार मे करते हैं उसे यह कभी नहीं भूलेगा।"

—अब्राहम लिंकन

---

# ❋ सम्पादकीय ❋

## हैदराबाद-दिवस

दो सितम्बर १९३४ को स्थान-स्थान पर आर्य्यसमाजों ने सभाएँ करके एक स्वर में निज़ाम सरकार की वेद-प्रचार पर लगाई बन्दिशों का घोर विरोध किया। 'सार्वदेशिक' के गताङ्क में हमने अपने लेख का शीर्षक "क्या आर्य्य-समाज जीवित है" दिया था। इस प्रश्न के पूछने से हमारा प्रयोजन यह था कि हम आर्य्य-समाज की सर्व-साधारण जनता (Rank and file) का हृदय टटोलें और यह देखें कि उस हृदय में कितना रक्त संचालित हो रहा है? सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में सैकड़ों आर्य्य-समाजों के प्रस्ताव, पत्रों तथा तारों द्वारा "हैदराबाद-दिवस" के सम्बन्ध में प्राप्त हो चुके हैं। उन पत्रों तथा तारों के पढ़ने से हमें इस बात का हर्ष होता है कि आर्य्य-समाज की सर्व-साधारण जनता अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा करने के लिए सर्वदा उद्यत है और यदि आवश्यकता आन पड़े तो जान की बाज़ी लगाने को भी तय्यार है।

इस समय आर्य्य समाज के जन-साधारण का परीक्षण नहीं मालूम होता, अपितु आर्य्य-समाज के नेतृत्वका। यदि आर्य्य-समाज के माननीय, अग्रगण्य नेताओं ने अपनी कुशल प्रवीण तथा दूरदर्शी नीति का परिचय दिया तो आर्य्य-समाज मे एक नवीन स्फूर्ति उत्पन्न हो जायगी जिसके द्वारा वेद-प्रचार के मार्ग में अनेक बाधाओं तथा कठिनाइयों को हम सहल में दूर कर सकेंगे।

निज़ाम हैदराबाद की सेवा में "Memorial" सार्वदेशिक सभा की ओर से भेजा गया था उसके उत्तर की प्रतीक्षा में लगभग १ मास व्यतीत हो चुका है। आशा यह थी कि मेमोरियल का उत्तर उन्हीं भावों से प्रेरित होकर निज़ाम गवर्नमेन्ट की ओर से लिखा जायगा जिन सद्भावों से प्रेरित होकर सार्वदेशिक सभा ने अपना आवेदन-पत्र निज़ाम गवर्नमेन्ट को भेजा था। परन्तु जो पत्र १३ सितम्बर ३४ को कार्यालय में मन्त्री सार्वदेशिक सभा के नाम पर निज़ाम के पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट की ओर से आया है, वह निम्न प्रकार है:—

"I am now desired to inform you that there is no question of putting any restrictions in the way of the followers of any religion or sect in Hyderabad State. His exalted Highness the Nizam's Government is, and always has been, impartial in the treatment it accords to its subjects, of whatever religion or sect or denomination they may be. If, however any one says or does something publicly that is likely to provoke strife between different communities, it is the duty of Government in the interests of law and order, to take such action as may be necessary irrespective of the offender's particular religion.

I am to add, therefore, that there has been no idea of putting the Arya Samajists in particular under any special dis-abilities."

अर्थात्—मुझे आपको यह सूचित करने की आज्ञा हुई है कि हैद्राबाद राज्य में किसी धर्म्म या सम्प्रदाय के अनुयायियों के मार्ग में कोई पाबन्दी लगाने का प्रश्न नहीं है। निज़ाम की सरकार अपनी प्रजाके प्रति व्यवहार में निष्पक्ष है और सदैव रही है, चाहे वह प्रजा किसी भी धर्म्म या सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखती हो। परन्तु यदि कोई प्रकाश रूप में ऐसी बात कहता है वा करता है जिससे भिन्न २ श्रेणियों में खिंचाव पैदा होने की सम्भावना हो तो कानून और व्यवस्था की, रक्षा के लिए गवर्नमेन्ट का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपराधी के धर्म्म विशेष के भेद-भाव बिना आवश्यक कार्य्यवाहि करे।

अतः मैं यहां पर यह भी कहे देना हूँ कि ख़ास तौर पर आर्य्य समाजियों को किन्हीं खास पाबन्दियों के अधीन रखने का कभी विचार नही रहा है।

**यह पत्र मन्त्री सार्वदेशिक सभा के उस पत्र के उत्तर में है जो १७ अगस्त १९३४ को 'पोलीटिकल मेम्बर' निज़ाम गवर्नमेन्ट की सेवा में भेजा गया था। इस पत्र में सार्वदेशिक सभा के मेमोरियल का कोई वर्णन नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि निज़ाम गवर्नमेन्ट अपनी स्थिति को इतना ऊंचा स्वीकार करती है कि वह सभा के आवेदन पत्र की अवहेलना कोई बड़ी बात नहीं समझती। यद्यपि इस पत्र में निज़ाम गवर्नमेन्ट ने इतना तो कह दिया है कि आर्य्य-समाजियों को विशेष प्रतिबन्धों के नीचे रखने का कोई विचार नहीं है परन्तु उन विशेष प्रतिबन्धों को जो हैद्राबाद आर्य्य समाज पर इस समय तक लगाए जा चुके हैं दूर करने की कोई घोषणा नहीं की गई और नहीं उन मांगों का कोई ज़िक्र किया है जिन की पूर्ति के लिए सार्वदेशिक सभा ने अपना आवेदन पत्र भेजा था।**

**यह पत्र सार्वदेशिक की आगामी क्रिया समिति ( council of action ) जो १७ सितम्बर ३४ को होने वाली है, में पेश होगा। इस पर समिति का जो निश्चय होगा वह आर्य्य-जनता पर शीघ्र**

से शीघ्र प्रगट किया जायगा। आर्य्य-बन्धु धैर्य्य से प्रतीक्षा करें। जिन आर्य्य-भाइयों ने अपने व्यक्तिगत पत्रों में सार्वदेशिक सभा को आश्वासन दिलाया है कि अवसर आने पर वह अपनी सेवाएँ एक दम सार्वदेशिक सभा के सम्मुख रक्खेंगे उनका हम हार्दिक धन्यवाद करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आर्य्य-समाजका गर्व और गौरव सदा बना रहे ताकि आर्य्य-समाज के भीतर और बाहर वैदिक-धर्म्म के प्रति आकर्षण में किसी प्रकार की कमी न आने पावे।

---

## पं० रामचन्द्र जी का अनशन—

बम्बई के २७ अगस्त के तार से यह जान कर हमें प्रसन्नता हुई है कि जिन पं० रामचन्द्र शर्म्मा ने मंगरौल के शेख की उस आज्ञा के प्रतिवाद में अनशन आरम्भ किया था जो रियासत में बन्द गोहत्या के लिये अनुमति देती है। उन्होंने देश के नेताओं की सलाह मानकर अपना उपवास भंग कर दिया है। मंगरौल के महाजन, शेख से उक्त आज्ञा के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे हैं और शेख ने भी अपनी आज्ञा पर उन्हे विचार करने का वचन दिया है। इस सम्बन्ध में यह मालूम हुआ है कि मंगरौल के भूतपूर्व शेख ने रियासत के भीतर गोहत्या बन्द करने के लिये एक हुक्म निकाला था जो ८० वर्ष तक वहां बना रहा, और हुक्म निकालने वाले शेख के उत्तराधिकारी अभी तक उसका आदर करते आये हैं।

हम मंगरौल के शेख साहब से निवेदन करेंगे कि वे अपनी हिन्दू-प्रजा के धार्मिक भावों का सम्मान करते हुए गोवध सम्बन्धी अपने नए फ़रमान को वापस लेलें और अपने घराने की तत्सम्बन्धी परम्पराओं की रक्षा करें और पं० रामचन्द्र जी के अनशन के स्थगित करने से शान्ति पूर्वक विचार के लिए जो अवसर उन्हे मिला है उससे भरपूर लाभ उठाएँ।

## मन्दिर प्रवेश बिल

'असेम्बली' का जो अधिवेशन कई दिन पहले समाप्त हुआ है उसमें तीन दिन गैर सरकारी बिलों के लिये थे, उनमे से पहले दिन तो मन्दिर प्रवेश बिल इस कारण उपस्थित नहीं किया जा सका था कि उसके पेश करने वाले मि० रंगाअय्यर के पिता मर गये थे। इसलिये वे शिमला से सैकड़ों मील दूर के स्थान पर अपने पिता के क्रिया-कर्म मे लग रहे थे। इसलिये उस दिन पेश न हो सकने पर यह सोचा जाने लगा कि ग़ैर सरकारी बिलों के अन्य दिन १६ और २३ अगस्त को इस महत्व पूर्ण बिल का नम्बर आयगा। परन्तु १६ अगस्त के दिन यद्यपि मि० रंगाअय्यर असेम्बली में उपस्थित थे तो भी उस दिन भी इसे पेश करने की नौबत न आ सकी। इसके सम्बन्ध में मि० रंगाअय्यर ने एक वक्तव्य निकाल कर यह घोषित किया था कि होम मेम्बर और सर-हरिसिंह गौड़ ने षडयन्त्र करके मन्दिर प्रवेश बिल को पेश होने की नौबत न आने दी। अन्त में २३ अगस्त को मन्दिर प्रवेश बिल पर वाद-विवाद प्रारम्भ हुआ। परन्तु उसके प्रस्तावक ने उसे वापिस लेकर अपने हाथों से इसका अन्त कर डाला। मन्दिर प्रवेश बिल के प्रस्तावक को उस अवसर पर सनातनियों से यह अपील करते देख निश्चय ही असेम्बली में उपस्थित लोग दंग

होगये होंगे कि सनातनी अपने मन्दिरों के पास ही अस्पृश्यों के लिये अलग मन्दिर बनवा दें। साथ ही मि० रंगाअय्यर ने होम मेम्बर पर जो बिल के विरुद्ध षड्यन्त्र का आरोप किया था उसके लिये क्षमा प्रार्थना करते हुए सरकार को बिल पर लोकमत जानने का कष्ट उठाने के लिये धन्यवाद भी दे डाला। मि० रंगाअय्यर ने जिन्होंने मन्दिर प्रवेश बिल को असेम्बली में पेश किया था, इस बिल को क्यों वापस लिया, यह एक ऐसा विषय है जिसके साथ उनका राजनैतिक जीवन सम्बद्ध है। उनके राजनैतिक जीवन से परिचित व्यक्तियों को उनके इस बिल के वापस ले लेने से जितना आश्चर्य हुआ है उससे कहीं ज्यादा हमें दुःख हुआ है। क्या हम आशा करें कि नवीन असेम्बली मे यह लोकोपकारक बिल पास हो जायगा ?

## प्रलयंकर बाढ़—

आसाम, उत्तरी पूर्वी बंगाल, और बिहार के कुछेक ज़िलों से भयंकर जल-बाढ़ के समाचार प्राप्त हुए है। बहुत से व्यक्ति मर गए है, बहुत से बह गए है बहुत से अनाथ हो गए है, बहुत से वे घर-बार के हो गए हैं। जान, माल, पशुओं और खेती को इस बाढ़ से जो क्षति पहुँची है वह बड़ी हृदय विदारक है। पीड़ितों की मुसीबतें बहुत बड़ी हैं और वे तेज़ी के साथ बढ़ रही हैं। मनुष्यत्व के नाम पर वे सब की सहानुभूति, और सहायता के पात्र हैं परन्तु जो सहायता उनको पहुँचाई गई है, या पहुँचाई जा रही है विनाश को देखते हुए, सुनते है, वह बड़ी अपर्य्याप्त है। सरकार का कर्त्तव्य है कि वह बाढ़-पीड़ित-क्षेत्रों में एक बड़े स्केल पर सहायता कार्य्य जारी करे और जहां वह पहले से जारी कर चुकी है वहां वेग और तत्परता के साथ इस काम को कराए। दुःख है हमारे नेताओं का ध्यान बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों की ओर उस तेज़ी के साथ नहीं खिंच रहा है जिस तेजी के साथ खिंचना चाहिए था। इस का कारण यही हो सकता है कि या तो विनाश की भयंकरता उनके हृदयों पर ठीक २ रीति से अङ्कित ही नही हुई है या रेल और मोटर के मार्गों से दूर बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में पैदल चलना और मुसीबतें सहन करना उनके लिए कठिन है। अथवा जहां तक राजनैतिक नेताओं का सम्बन्ध है वे लोग असेम्बली के चुनाव के संघर्ष को प्रकृति के इस संघर्ष और कोप से ज्यादा महत्वपूर्ण समझते है। सर्व साधारण का कर्त्तव्य है कि वह बाढ़ पीड़ितो की सहायता तन, मन, धन, से करें।

## श्रीमती श्याम जी कृष्ण वर्म्मा का दान

सर्व प्रथम 'श्रीयुत श्याम जी कृष्ण वर्म्मा' श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा पर इंग्लैंड में वैदिक धर्म्म के प्रचार के लिए क्षेत्र तय्यार करने गए थे। परन्तु वहां पहुँचने पर उनका ध्यान स्वदेश को पराधीनता से मुक्त करने की ओर चला गया। इसीलिए वे इसी कार्य्य में लग गए। फिर तो धीरे २ वे इतने आगे बढ़ गए कि उन्हें इंग्लैंड में रहना कठिन हो गया, इसलिए वे वहां से फ्रांस चले गए थे। ८-१० वर्ष पहले वहां उनका स्वर्गवास हो चुका है, परन्तु समाचार मिला है कि गत मास में फ्रांस मे उनकी धर्म्मपत्नी का भी देहान्त हो गया है। श्री वर्म्मा जी एक सम्भ्रान्त और लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति थे। भारत से विदेश मे जाने से पूर्व वे एक बड़ी रियासत के दीवान थे। उनके

पास काफ़ी पैसा था, इस पैसे को उन्होने युरोप में खूब बढ़ाया। वे बड़े परिमित व्ययी थे और उनकी मितव्ययता सुनते हैं कंजूसी की हद तक पहुँच गई थी। युरोप में किसी काम से जाने वाले भारतीयों को वर्म्मा-दम्पती से बड़ी सहायता प्राप्त होती थी और वर्म्मा-दम्पती बड़े प्रेम से उन लोगों की आव-भगत किया करते थे। सुनते हैं श्रीमती वर्म्मा ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपनी समस्त सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बना दिया है। ट्रस्ट के कई फ्रेंच सज्जन ट्रस्टी हैं। कुल सम्पत्ति ३० लाख रुपए की है। श्रीमती वर्म्मा के इस दान से विदेशों में शिक्षा के लिए जाने वाली भारतीय स्त्रियों को सहायता दी जायगी। सचमुच श्रीमती वर्म्मा का यह कार्य श्रेष्ठ है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

## हिन्दुओं सावधान—

मन्दिर-प्रवेश-बिल पर जो वाद विवाद हुआ है उसमें दो बातें बड़े मार्के की हुई हैं। एक तो यह कि जिन मि० रंगाअय्यर ने हरिजनों को मन्दिर प्रवेश का अधिकार दिलाने के उद्देश्य से बिल पेश किया था वे ही इसे लौटाते हुए यह बेसुरा राग अलापते देखे गये कि सनातनियों को चाहिए कि वे अपने मन्दिरों के पास ही हरिजनों के लिये अलग मन्दिर बनवादें। दूसरी बात सर मुहम्मद याकूब की है जिन्होंने इस बिल का विरोध इस लिये किया कि असेम्बली में विभिन्न धर्मों के मेम्बर हैं इस लिये इसे धार्मिक मामलों में क़ानून न बनाना चाहिए पर साथ ही हरिजनों से इस्लाम धर्म स्वीकार करने का अनुरोध किया। याकूबमियां ने कहा कि "संसार भर के मुसल्मानों की सहानुभूति बिल के उद्देश्य के साथ है क्योंकि वे यह विश्वास कर ही नहीं सकते कि परमात्मा की किसी सन्तान को पूजा करने के लिये ईश्वर के घर में जाने से रोकना चाहिए। इस्लाम में सभी मुसल्मानो की सामाजिक स्थिति समान है—यहां तक कि ग़ैर मुस्लिम भी मस्जिदों में जाने से नहीं रोके जाते। इस लिये मैं हरिजनों को सभी क साथ भ्रातृ-भाव दिखलाने वाले इस्लाम में आने का निमन्त्रण देता हूँ।"

सरमुहम्मद याकूब के उपर्युक्त वक्तव्य को कट्टर पंथियों को आँखें खोलकर पढ़ना और इस वक्तव्य के प्रकाश मे सोचना चाहिए कि उनके हृदय की सङ्कीर्णता तथा अनुदारता के कारण ही मुसल्मानो को इस तथा अछूतों के हिन्दुओ और मुसल्मानो मे बटवारे सम्बन्धी अनुचित वक्तव्य को देने का साहस हो जाता है। यह कितने शर्म की बात है। सरमुहम्मद याकूब को ज्ञात होना चाहिए कि दलित कहे जाने वाले भाई इतने अविवेकशील नहीं रहे हैं जो वे सहज ही, ऐसे प्रलोभनो के शिकार बन जायें। उनमें काफ़ी जागृति हो गई है, वे बुरे-भले और ऊँच-नीच को समझने लग गए हैं। यदि इस पर भी उन्हें सन्तोष न हो तो उन्हें अवश्य ही मि० ऐम० सी० राजा के उस वक्तव्य से सन्तोष हो जाना चाहिए जो उस दिन उन्होंने असेम्बली मे दिया था और कहा था कि 'हम इस्लाम धर्म्म न ग्रहण करेंगे। हम अपने लिए अलग मन्दिर नहीं चाहते। हम हिन्दू धर्म के भीतर रह कर ही अपने अधिकारों के लिए अन्त तक लड़ेंगे।

सचमुच हिन्दू धर्म्म की रक्षा हरिजनों को अन्य हिन्दुओं के समान अधिकार देने में ही है। हिन्दुओ को हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये तय्यार रहना चाहिए।

## लोक-सेवा कार्य —

श्री म० दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर ने सहयोगी 'हरिजन' सेवक में "अवनती न रहें" के शीर्षक से एक अत्यन्त विचार पूर्ण लेख लिखा है। उस लेख में प्रकट किया गया है कि सेवा के जिस क्षेत्र में हमें काम करना हो या काम करना पड़े उसी के अनुकूल हमें अपनी आदतें, अपने शरीर और स्वभाव बनाने चाहिएँ और जिनकी सेवा करनी हो उनके और हमारे बीच अन्तराय उत्पन्न हो जाय ऐसी भी आदतें हमे छोड़ देनी चाहिएँ और उन्हे यह विश्वास कराना चाहिए कि उनसे हमारी हार्दिक एकता हो गई है। विपरीत इसके हमारी वृत्तियाँ कितनी आराममय और काव्यमय बन गई हैं और अपने आदर्शों को क्रिया की नहीं वरन् हृदय की वस्तु बनाने के लिए हम कितने अभ्यस्त होगए हैं और 'सेवा' के लिए राज-पथ पर चलने के लिए स्वभावतः हम कितनी जल्दी अग्रसर होजाते हैं, इन सब पर उनके निम्न शब्दों से उदात्त प्रकाश पड़ता है:—

"असली बात यह है कि हम लोगों के हृदय में काव्य इतना बैठ गया है कि उसने वहा से कारुण्य को हटा दिया है। हम चाहते तो है सेवा करना, लेकिन वास्तव में तो अपनी विविध रमना वासना को ही हम तृप्त करते है। जब से वैद्धिक शिक्षा का अभाव बढ़ा है तब से हमारा जीवन-रस बौद्धिक बन गया है। व्यक्ति की सेवा करने की अपेक्षा संस्था की कार्य्यवाहि चलाने में ही हमें अधिक सुभीता मालूम देता है। कौटुम्बिक समस्याओ को हम खानगी समझते है, तुच्छ समझते हैं, संस्थाएँ, परिषदे और सभाएँ हमारे मन में अधिक महत्व की हो गई हैं। ऐसी हालत में हम गरीबो की सेवा जितनी चाहते हैं उतनी हम से होती नहीं। प्रवृत्ति बढ़ाने पर भी मनुष्य जाति का दुःख दूर नहीं होता है। हम तो अपनी ही दुनिया में विचरते रहते हैं।"

लोकोपकारक संस्थाओं और समाज सेवकों को इन विचारों से लाभ उठाना चाहिए।

## देवदासी प्रथा —

'देवदासी प्रथा' उन घृणित, कलङ्कास्पद और पाशविक प्रथाओं में से है जो लोगों की स्वार्थपरता, धूर्तता, कपटता और कामुकता की सन्तुष्टि के लिए धर्म के नाम पर हिन्दू समाज में प्रचलित की गईं और प्रचलित रहीं और जो धर्म-प्राण हिन्दू समाज के पतन और उसके अपयश का कारण बनीं। इस अमानुषिक प्रथा के द्वारा मातृशक्ति का जैसा घोर अपमान हुआ है, इस कुप्रथा पर बलि चढ़ी हुईं असंख्य निर्दोष बालाओं के जीवन का और कौमार्य का जिस निर्दयता से विनाश हुआ है और जिनमें से बहुतों ने मन्दिरों के धूर्त, लम्पट और कामुक पुरोहितों, पुजारियों के राक्षसी कर्म में योग देने मे जैसी भीषण यन्त्रणाएँ सहन की हैं और जिनमें से बहुतों का उन यन्त्रणाओं की वेदनाओं के फल स्वरूप जैसा कारुणिक अन्त हुआ है एवं इस धार्मिक वेश्या वृत्ति तथा इस प्रथा के अत्याचारों से बचने के कारण बहुत सी बालाओं को जिन वर्णनातीत कष्टों और मुसीबतों का सामना करना पड़ा है, उन्हे देख और सुनकर कौन ऐसा हिन्दू सभ्यता भिमानी होगा जिनका सिर शर्म के मारे नीचा न होगा। ये बालाएँ देवता की सेवा के लिये अर्पण की जाती हैं। देवता के साथ ही वे वैवाहिक सम्बन्ध में बँधी हुई समझी जाती हैं। किसी मनुष्य के साथ विवाह करने की उन्हें आज्ञा नहीं होती है। उन्हें नाचना और

गाना सिखलाया जाता है और उपासना के समय मन्दिरों में इनका नाच और गान कराया जाता है। उनके भरण-पोषण के लिए मन्दिर की जायदाद में से कुछ जायदाद उनके नाम करदी जाती है। नाच-गान के अतिरिक्त उन्हें कभी कभी वेश्या-कर्म के लिए भी बाधित होना पड़ता है। सामाजिक उत्सवों और त्यौहारों पर गृहस्थों में नाचने और गाने के लिए उनका जाना मुख्य काम समझा जाता है। यह प्रथा दक्षिण के देव-मन्दिरों में प्रचलित रही और प्रचलित है। मन्दिरों के दूषित वातावरण में रहते हुए वेश्या समझी जाने वाली इन बालाओं के पतन की कहानी कैसी सजीव, कैसी कारुणिक हो सकती है, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। जिन्होंने इस प्रथा के विरोध में आवाज़ उठाने और इसे निर्मूल करने का साहस तथा सफल प्रयत्न किया है, वे न केवल हिन्दू समाज वरन् स्त्री-समाज के धन्यवाद के पात्र हैं। उन्हीं में से एक मैसूर की स्वर्गीय महारानी हैं जिन्होंने अपने शासन-काल में इस बुराई का अपने राज्य में अन्त किया। इसके बाद दूसरा नम्बर मद्रास की धारा-सभा की प्रथम स्त्री-सदस्या श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी का है जिन्होंने मैसूर के सुधार से मिलता-जुलता एक बिल उक्त धारा-सभा में पेश करके उसे पास कराया। अभी हाल में बम्बई की धारा सभा में देवदासियों के समर्पण के विरोध में एक बिल पास हुआ है। हमें आशा है कि सुधारक लोग, सुधारक समाज और धारा सभाएँ हिन्दू समाज के इस कलङ्क को शीघ्र से शीघ्र धो देंगे।

## शारदा ऐक्ट—

भारतीय व्यवस्थापिका सभा के कतिपय कट्टर-पंथी सदस्यों ने 'शारदा' ऐक्ट को रद्द करने और उसके स्थान में विवाह की उम्र निर्धारित कर देने के लिए बिल पेश किए हुए हैं। कुछेक सदस्य इस ऐक्ट को कड़ा करने के लिए उत्सुक हैं क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि इस ऐक्ट ने देश में बाल विवाहों का अन्त नहीं किया। स्त्रियाँ बाल-पत्नियों की मुसीबतों से खूब परिचित हैं इसलिए वे स्वाभावतया बाल विवाहों के तत्काल अन्त के लिए उत्सुक हैं, इसलिए स्त्री-समाजों ने इस ऐक्ट को कड़ा करने के पक्ष का समर्थन किया है। गत मास में रायबहादुर लाला जगदीश प्रसाद जी ने 'कौंसिल आव् स्टेट' में एक प्रस्ताव किया कि अपराधियों के विरुद्ध कार्यवाही करने, क़ानून की अवहेलना का कम मौक़ा देने और शारदा ऐक्ट को कठोरता से लागू करने के लिए ऐसे उपायों का जिनमें आवश्यकतानुसार क़ानून का विवेचन भी सम्मिलित है, अवलम्बन करना चाहिए। गवर्नमेंट की ओर से बोलते और गवर्नमेंट की पोज़ीशन को स्पष्ट करते हुए होम सेक्रेटरी मि० हैलट ने प्रगट किया कि ऐसे मामलों में धीरे-धीरे बढ़ने से ही निश्चित उन्नति होती है, उन्होंने यह भी कहा कि इस समय जिस बात की अत्यन्त आवश्यकता है वह यह है कि समाज-सुधारक लोग और मुख्यतया स्त्री-समाज इस त्रुटि के विरुद्ध लोकमत को शिक्षित करें। हमारी सम्मति में केवल लोकमत का शिक्षण पर्याप्त नहीं है। इस सुधार पर लोकमत काफ़ी शिक्षित हुआ हुआ है और गत दो शताब्दियों से सुधारक लोग इस काम में जुटे रहे हैं। लोकमत के अधिकाधिक शिक्षण की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए और इसके लिए स्त्री-शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए देशवासियों से अपील करते हुए भी हम यह ज़रूर कहेंगे कि इस ऐक्ट के जैसा कुछ भी वह है, प्रचलन में गवर्नमेंट ने उस तत्परता का परिचय नहीं दिया और न इस समय दे रही है जो उसे देना

चाहिए था, या देना चाहिए और वह लोकमत के पूर्ण शिक्षण के अभाव या क्रमशः उन्नति के बहाने से अपने उत्तरदायित्व की अवहेलना के अपराध से हर्गिज़ नहीं बच सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि कड़ाई के साथ इस ऐक्ट को लागू किया जाय और आवश्यकतानुसार इसमें ऐसे संशोधन या परिवर्तन कर दिये जावें जिनसे बाल विवाहों पर कठोर से कठोर प्रतिबन्ध लगता और ऐक्ट का वास्तविक उद्देश्य पूरा होता रहे। इस ऐक्ट में जो सब से बड़ी त्रुटियाँ हैं उनमें से एक त्रुटि यह है कि इस ऐक्ट के अनुसार अदालत को बाल-विवाहों को रोकने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। बम्बई में अदालतों ने इस धारणा के अनुसार कार्यवाही की है कि चूंकि इस ऐक्ट के अनुसार बाल विवाह अपराध है अत बाल-विवाह करने का यत्न करना भी अपराध करना है और अदालत की आज्ञा से ऐसे विवाह रोक देने चाहिएँ। मद्रास में यह धारणा प्रचलित रही है कि यद्यपि इस ऐक्ट के अनुसार बाल-विवाह दण्डनीय है, तथापि यह ऐक्ट उनके रोकने का अधिकार अदालतों का प्रदान नहीं करता। ऐसी अवस्थाओं में अवश्य ही इस ऐक्ट में संशोधन होने चाहिएँ, क्योंकि सज़ा की अपेक्षा रोकना ही ज़्यादा अच्छा है।

---

# अनुसन्धान कार्य्य

(ले०-श्री० पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

आर्य्यसमाज जैसे उन्नति-शील समाज के लिए, यह लज्जा की बात है कि उसने अनुसन्धान कार्य्य में नहीं के बराबर पग बढ़ाया है। विदेशी विद्वान और उन्हीं के अनुगामी कोई-कोई स्वदेशी विद्वान भी कह दिया करते हैं कि प्राचीन आर्य्य लिखना नहीं जानते थे, उन्हें क्रम पूर्वक इतिहास लिखना भी नहीं आता था, लोहे के प्रयोग से भी अनभिज्ञ थे और भी इसी प्रकार के अनेक दोषारोपण किया करते हैं। इन लोगों को ऐसा करने का अवसर क्यों मिलता है इसका कारण हमारी अनुसन्धान कार्य्य से लापरवाही के सिवा और क्या कहा जा सकता है? इस समय ५ लाख से अधिक संस्कृत के हस्त-लिखित ग्रंथ हैं— वे किस-किस विषय के हैं इतना तक जानने की चेष्टा नहीं की गई:—

| संख्या | देश | संस्कृत के हस्तलिखित ग्रन्थो की संख्या जो उस देश में हैं — |
|---|---|---|
| १ | बरलिन (जरमन) | ४४००० |
| २ | लंडन (इन्डिया आफ़िस का पुस्तकालय) | २०००० |
| ३ | औक्सफ़ोर्ड विश्व-विद्यालय | १६००० |
| ४ | पैरिस— | १२००० |
| ५ | मदरास राजकीय पुस्तकालय | ३०००० |
| ६ | पूना—भंडारकर पुस्तकालय | २३००० |
| ७ | भद्रपुर—अटायर पुस्तका० | २३००० |
| ८ | काशी—सरस्वती भवन | २१००० |
| ९ | कलकत्ता-एशियाटिक सु० | १५००० |
| १० | बड़ोदा-राजकीय पुस्तका० | १५००० |
| ११ | तंजोर का पुस्तकालय | ६३००० |
| | | २८२००० |

इनके सिवा मैसूर, ट्रावनकोर, बीकानेर, जयपुर, काशमीर आदि के पुस्तकालयों में कितने संस्कृत के ऐसे लिखित ग्रंथ हैं, उनकी संख्या ज्ञात नहीं हो सकी कितने ग्रंथ व्यक्तियों के पास हैं इसका ठीक ज्ञान नहीं। बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय राजेन्द्रलाल मित्र ने अनेक जिल्दों में कुछेक हस्तलिखित ग्रंथों का संक्षिप्त हाल लिखा है। एक पुस्तक में लकड़ियों के अन्दर वर्ण व्यवस्था का उल्लेख है अर्थात् ब्राह्मण लकड़ी क्षत्रिय लकड़ी इत्यादि। जहाज़ बनाते समय कहां ब्राह्मण लकड़ी लगानी चाहिए, और कहां क्षत्रिय इत्यादि इसका भी उस ग्रंथ में संकेत है। अभी कुछ समय हुआ जब बड़ोदा राज्य की ओर से एक संस्कृत ग्रंथ समरांगण सूत्रधार दो जिल्दों में प्रकाशित हुआ उसमें वायुयान आदि के बनाने की विधि लिखी हुई है। ट्रावंनकोर राज्य के प्रकाशित ग्रंथ से श्रीयुत काशीप्रसाद जायसवाल

के लेखानुसार अंगरेजी इतिहास के गैप, जो भारतवर्ष के लिखे गये हैं, पूरे होते हैं। इसी सिलसिले में पत्थरघाटी के एक पुस्तकालय की बात कहदेना उपयोगी होगा । यह पुस्तकालय निज़ामराज्य के अन्तर्गत पत्थरघाटी के जागीरदार डाक्टर सय्यद मुहम्मद क़ासिम के यहाँ प्राचीन संस्कृतादि ग्रंथों का है। कई कई ग्रंथ ताड़ के पत्तों पर लिखे हैं:—(१) एक पुस्तक में मृतक शरीर के हजारों वर्ष तक अविकृत रखने का वर्णन है। (२) एक ग्रंथ मे पत्थर को दो शिलाओं के द्वारा बिना तार के तार का काम लेने का उल्लेख है (३) एक ग्रंथ मे इच्छानुसार रंगीन रुई पैदा करना लिखा है। (४) एक भूगर्भ विद्या से संबंधित है। (५) एकमे पानी के भीतर की वस्तुओं के देखने के लिए शीशा बनाने का जिक है। (६) एक मे बर्फ के बरसाने का उल्लेख है—गर्मी में बरसाई और शीत में बन्द की जा सकती है। (७) एक में पहाड़ को भूमितल के बराबर कर देने की विधि है। (८) एक में नीचे से ऊपर पहाड़ पर पानी पहुँचाने की विधि लिखी है। (९) एक में मोती आदि को गलाकर चाहे जिस आकार का बना लेना लिखा है। (१०) एक में लोहे का गलाना लिखा है । (११) एक में हजारों वर्षों तक पानी को एकसा गरम रखने का उल्लेख है। (१२) एक मे अन्न के सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रखने का विधान है। (१३) एक में लिखा है कि किस प्रकार कुछ न खा पीकर ६ मास तक आदमी स्वस्थ रह सकता है (१४) एक में बहुत-सा भोजन कर लेने पर भी अजीर्ण न होने का विधान है। (१५) एक में मनुष्य को १००० वर्ष तक की आयु करदेना लिखा है । (१६) एक में प्राचीन दुर्बोध भाषाओं के पढ़ने की विधि बतलाई गई है। (१७) पत्थर, हड्डी और लोहे पर चिरस्थायी पालिश करना एक में लिखा है। अस्तु। इस प्रकार की अनेक उपयोगी बातें इन हस्त लिखित ग्रंथों में मिल सकती है। असल में यह अनुसन्धान कार्य्य राज्य को करना चाहिए था। परन्तु राज्य के कोष में इस काम के लिए धन नहीं है क्यों कि राज्य की अधिकतर आय फ़ौज और पुलिस मे खर्च हो जाती है। विदेशी राज्य होने से अधिकतर उसे इन बातों की चिंता भी नहीं है। देशी राज्य यदि चाहें तो एक एक दो दो व्यक्ति इस कार्य मे लगा सकते हैं। आर्य्यसमाज धनाभाव के कारण कुछ विवश भी है कि इस प्रकार का कार्य बहुमात्रा में न कर सके। 'सार्वदेशिक सभा' ने एक 'अनुसन्धान विभाग' इसी कार्य्य के लिए खोल रखा है परन्तु वह भी धन की कमी से इस कार्य्य को अच्छी तरह नहीं कर सकता। यदि धनीमानी पुरुष इस काम के लिए पुष्कल धन सार्वदेशिक सभा को देदेवें तो वह इस कार्य्य को तत्परता के साथ कर सकती है।

# वैदिक स्वाध्याय मञ्जरी

लेखक—
प्र० स्नातक धर्मदेव जी,
सिद्धान्तालङ्कार, विद्यावाचस्पति बगलोर,

## दैनिक स्वाध्याय

( गताङ्क से आगे )

( १२ ) ओ३म् पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः । सखित्वमावृणीमहे ॥

ऋ० ६ । ६१ । ४

शब्दार्थ—( वयम् ) हम सब ( पवित्रम् अभ्युन्दतः ) भक्तों के पवित्र हृदय को अपने प्रेम रस से सींचने वाले ( पवमानस्य ते ) पवित्र करने वाले तेरी ( सखित्वम् ) मित्रता को ( आवृणीमहे ) वरण करते हैं—चाहते हैं या मांगते हैं।

पद्यानुवाद—

सुपवित्र कर रहे हो, हे नाथ तुम सभी को।
निर्मल हृदयको अपने, शुभ भक्तिरससे सींचो ॥
मित्रत्व हम तुम्हारा, दिन रात चाहते हैं।
भिक्षा यही दयामय, कर जोड़ मांगते हैं ॥

( १३ ) ओ३म् ये ते पवित्रमूर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । तेभिर्नः सोम मृलय ॥

ऋ० ६ । ६१ । ५

शब्दार्थः—( ये ) जो ( ते ) तेरी ( ऊर्मयः ) लहरें ( धारया ) अपनी प्रेम धारा से ( पवित्रम् ) पवित्र हृदय को ( अभिक्षरन्ति ) प्रवित करती हैं ( तेभिः ) उन से ( सोम ) हे शान्तस्वरूप जगदीश्वर ( नः ) हमें ( मृडय ) सुखी कर।

पद्यानुवाद—

हे शान्तरूप तेरी, लहरें पवित्रता की।
धारा से शुद्ध करतीं, अपवित्रता भगातीं।
करतीं रसार्द्र वे हैं भक्तों के दिल विमल को।
उनसे सुखी करो तुम, हर ताप मल सकलको ॥

( १४ ) ओ३म् सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते । त्वामभिप्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥

ऋ० १ । ११ । २

शब्दार्थः—हे ( शवसः पते ) बल के स्वामी ( इन्द्र ) परमेश्वर ( ते सख्ये ) तेरी मित्रता में ( वाजिनः ) ज्ञान और बल से युक्त हो कर हम ( मा भेम ) कभी भयभीत न होवें। ( जेतारम् ) सब को जीतने वाले ( अपराजितम् ) कभी किसी से न हारने वाले ( त्वाम् ) तुझे ( अभिप्रणोनुमः ) सब ओर से नमस्कार करते हैं।

पद्यानुवाद—

मित्रत्व में तुम्हारे, भयभीत हम न होवें।
तुम सर्वशक्तियुत हो, बलयुक्त हम भी होवें ॥
जेता तुम्हीं सभी के, तुम हार ना न सकते।
सब ओर से प्रभो हम, तुझको प्रणाम करते ॥

( १५ ) ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी, हवमद्या च मृलय । त्वामवस्युराचके ॥

ऋ० १ । २५ । १९ ।

शब्दार्थः—हे ( वरुण ) सर्वोत्तम पापनिवारक प्रभो ! ( इमम् ) इस ( मे ) मेरी ( हवम् ) पुकार को ( श्रुधि ) सुनो ( अद्या च ) और

आज ही ( मृडय ) सुखी कर दो ( अवस्युः ) ज्ञान और रक्षा को चाहता हुआ मैं ( त्वाम् ) ( आ च के ) तुम्हारी ही कामना करता या तुम्हारी शरण में आता हूँ।

पद्यानुवाद—

सर्वश्रेष्ठ दयामय तेरी, मैं पुकार हूँ मचा रहा।
इस को आज सुनो करुणाकर, दे दो मुझको सुखी बना॥
रक्षा ज्ञान चाहता तेरी, नाथ शरण मे आया हूँ।
अपना तन मन धन सब तेरे, मैं चरणो मे लाया हूँ॥

( १६ ) ओ३म् अपांमध्ये तस्थिवांसं, तृष्णाविदज्जरितारम्। मृला सुक्षत्र मृलय॥

ऋ० ७ । ८६ । ४

शब्दार्थः—( अपां मध्ये ) पानी के बीच में ( तस्थिवांसम् ) बैठे हुए भी ( ते ) तेरे ( जरितारम् ) स्तोता—भक्त को ( तृष्णा ) प्यास ( अविदत् ) लग गई है ( सुक्षत्र ) उत्तम शक्ति शाली प्रभो! ( मृडय ) सुखी करो ( मृडय ) सुखी करो।

पद्यानुवाद—

भक्त मध्य भक्त तेरा, बैठा भी है प्यासा।
आनन्द रूप तेरे, अमृत की उसको आसा॥
हे सर्वशक्ति शाली, उसको सुखी बनादो।
अमृत दिखाके उसके, सब ताप को भगादो॥

(१७) ओ३म् क्रत्वः समह दीनता, प्रतीपं जगमाशुचे। मृला सुक्षत्र मृलय॥

ऋ० ७ । ८६ । ३

शब्दार्थः—हे ( समह ) तेजोयुक्त ( शुचे ) पवित्र जगदीश्वर मैं ( दीनता ) दीनता या निर्बलता के कारण ( क्रत्व ) अपने सकल्प से ( प्रतीपम् ) उलटा ( आ जगम् ) चल पड़ता हूँ ( मृड ) मुझे सुखी करो।

पद्यानुवाद—

हे पवित्र तेजस्वी स्वामि, सर्वशक्तियुत तू है
मुझको सुखी बना दे मालिक, सबका रक्षक तू है।
शुभ संकल्प अनेकों करता, पर उलटे पथ जाता हूँ,
निर्बलतावश, उसे भगाकर, सुखी बना यह चाहता हूँ॥

( १८ ) ओ३म् आहिष्मा सूनवे पिता-पिर्यजत्यापये सखा सख्ये वरेण्यः॥

ऋ० १ । २६ । ३

शब्दार्थ —( हि ) निश्चय से ( पिता ) पिता ( सूनवे ) पुत्र के लिये ( आपिः ) आप्त बन्धु ( आपये ) अपने बन्धु के लिये ( आ यजति ) सब प्रकार से सहायता देता है ( वरेण्यः, उत्तम ( सखा ) मित्र ( सख्ये ) मित्र के लिए सहायक होता है।

पद्यानुवाद—

पिता पुत्र के हित इस जग में, नानाविध करता है त्याग,
आप्त बन्धु निज बन्धु जानकर, दे देता है अपना भाग।
श्रेष्ठ मित्र देता स्वमित्र को, प्रभु मेरे तुम सब कुछ हो,
तुम्ही पिता हो तुम्हीं बन्धु हो, तुम्ही मित्र तुम रक्षक हो॥

( १९ ) ओ३म् त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं, हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं, स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

६ । ४७ । ११

शब्दार्थः—(त्रातारम्) सबकी रक्षा करने वाले (इन्द्रम्) परमेश्वर को (अवितारम् इन्द्रम्) सब से प्रेम करने वाले ईश्वर को (हवे हवे) प्रत्येक पुकार पर (सुहवम्) उत्तमता बुलाये जाने वाले (शूरम्‌इन्द्रम्) बलवान् ईश्वर को (ह्वयामि) मैं पुकारता हूँ (शक्रम्) शक्तिशाली (पुरुहूतम् इन्द्रम्) बहुत से भक्तों द्वारा बुलाये जाने वाले परमेश्वर को (ह्वयामि) मैं बुलाता हूँ (मघवा इन्द्र) ऐश्वर्य युक्त जगदीश्वर (न) हमें (स्वस्ति) कल्याण (दधातु) दे या धारण करे।

पद्यानुवाद—

मैं पुकारता हूँ उस प्रभु को, जो सब जग का रक्षक है,<br>
प्रीति करे सबसे जननी सम, सब भुवनों का पालक है।<br>
जो पुकार सभी सुन करके, करुणा नित ही करता है,<br>
जिसे पुकारें सभी भक्तजन, जो उनके दुःख हरता है।<br>
सर्वशक्तियुत वह परमेश्वर, हम सब का कल्याण करे॥<br>
क्लेश हमारे दूर भगावे भक्ति-भाव का दान करे॥

(२०) ओ३म् यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्रव॥

ऋ० ९।११३।११

शब्दार्थ—(यत्र) जिस अवस्था में (आनन्दः च) आनन्द (मोदाश्च) खुशी (मुदः प्रमुदः आसते) सब प्रकार की प्रसन्नता और हर्ष विद्यमान रहते हैं (कामस्य) कामना करने वाले आत्मा के (कामा) सब कामनाएँ (यत्र आप्ता) जिस दशा में पूर्ण या तृप्त हो जाती है (इन्दो) हे चन्द्र के समान आनन्ददायक प्रभो (माम्) मुझे (तत्र) उस अवस्था में (अमृतं कृधि) अमर करदो (इन्द्राय परिस्रव) सच्चे स्थिर ज्ञानादि ऐश्वर्य की वर्षा मुझ पर करो।

पद्यानुवाद—

आनन्द हो आनन्द हो मंगल प्रमोद जहाँ बसें।<br>
दुःख का जहाँ नहिं नाम हो, सुख शान्ति हा सन्तत बसें।<br>
हे शान्त रूप हमें सदा, उस ही अवस्था में रखो।<br>
जिसमें सभी शुभ कामना, हो पूर्ण उसमें ही रखो॥<br>
दो दान उस अमरत्व का, सब कष्ट जिमसे दूर हों।<br>
ज्ञानादि शुभ ऐश्वर्य से, हे नाथ हम भरपूर हों॥

---

# ईसामसीह वा ईसाइयत का कैंसर

( ले०—श्री० माणलाल जी पराग )

एक शताब्दी से अधिक हुआ भारतवर्ष ने अपने महान पुत्र राजा राममोहनराय के द्वारा ईसाई मिशनों के विरुद्ध अपने विरोध को निम्न शब्दों में अंकित कराया था —

यह सच है कि ईसामसीह के चेले भिन्न २ देशों के निवासियों को ईसाई धर्म की उच्चता की शिक्षा दिया करते थे। परन्तु हमें याद रखना चाहिए कि वे चेले उन देशों में जहां वे उपदेश दिया करते थे शासक नहीं थे। यदि वे मिशनरी लोग उन देशों में जो अंग्रेजों द्वारा विजित नहीं थे जैसे टर्की फारस इत्यादि जो कि इंगलैण्ड के अधिक समीप हैं— उपदेश देते और किताबें बाँटते तो निश्चय ही वे बड़े सम्माननीय व्यक्ति और ईसाई धर्म के संस्थापकों के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए उत्साही कार्यकर्ता समझे जाते। बंगाल में जहां अंग्रेज स्वयं स्वामी हैं और जहां अंग्रेजों का केवल नाम ही लोगों को भयभीत करने के लिये पर्याप्त है वहाँ के गरीब भीरु और नम्र निवासियों के अधिकारों और धर्म में हस्तक्षेप परमात्मा अथवा जनता की दृष्टि में युक्तियुक्त कार्य नहीं समझा जा सकता है '

इस विरोध के बाद राजा राममोहनराय ने 'ईसाई जनता से अपील' नामक तीन जिल्दों में किताब लिखी। उनमें जनता से इस बात की अपील की कि वे ऐसा मिशनरी काम न करने दें जो भारतीयों के धर्मों के अपमान और दुरुपयोग पूर्वक एक नये धर्म को जन्म और दलित हुए व्यक्तियों को सांसारिक प्रलोभन देते हुए किया जा रहा था। यह विरोध केवल एक भारतीय का ही विरोध नहीं था वरन उस व्यक्ति का विरोध था जिसने प्रकाशरूप में अपने को ईसा का शिष्य घोषित कर दिया था।

> प्रस्तुत लेख अमेरिका के मन्थली रिव्यू में प्रकाशित हुआ है। उसके साराश को हम सार्वदेशिक के पाठकों के लाभार्थ यहां उद्धृत करते हैं। वर्तमान ईसाई धर्म अपने प्रधान आदर्शों से कितना नीचे गिर गया है और किस प्रकार वह ईसामसीह के उपदेशों का अनुसरण कर रहे हैं इन्हीं महत्वपूर्ण बातों पर इस लेख में प्रकाश डाला गया है और वर्तमान में यह क्रूरता का साम्राज्य इसा है और जो ईसाई मत को उसके भीतर से खा रहा है।
>
> —सम्पादक।

यह कहना अनावश्यक है कि इस विरोध पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया गया और प्रोटेस्टेण्ट मिशनरी भारतवर्ष में उसी आपत्तिजनक रीति से जिसका कि ऊपर वर्णन किया गया है काम करते रहे। जिस समय राजा राममोहन राय ने विरोध की आवाज उठाई थी उसके लगभग ५० वर्ष बाद मिशनरी काम के तरीके और भी अधिक आपत्तिजनक हो गये थे। १८५७ के सिपाही विद्रोह के ठीक बाद ही

ऐसा हुआ था। विद्रोह के दिनों में एक जर्मन मिशन ने जो कोल्स में काम कर रहा था १० हज़ार कोल ईसाई और एक दूसरा 'अमेरिकन मिशन' ने जो ब्रह्मा में काम कर रहा था विद्रोहियों से लड़ने के लिये ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ३ हज़ार ईसाई पेश किये थे। कम्पनी ने इस सहायता को अंगीकार नहीं किया था मुख्यतया इसलिये कि विद्रोह का उद्भव इस विश्वास में से हुआ था कि अंग्रेज़ लोग हिन्दू और मुसल्मान दोनों को ईसाई बनाना चाहते हैं। विद्रोह शान्त कर दिया गया था और ये बातें तमाम इंग्लैण्ड में प्रसिद्ध हो गई थीं कि भारतवर्ष में लाखों व्यक्ति—अछूत और आदिम जातियाँ—हैं। जिनके हित कुछेक अवस्थाओं में राष्ट्र के अधिकांश भाग के लोगों के हितों के समान नहीं हैं और यदि ये लोग ईसाई धर्म्म में दीक्षित हो जायँ तो सरकार के पास मनुष्यों की एक ऐसी बड़ी जमाअत होगी कि जिसकी सहायता का आपत्काल मे उसे पूरा भरोसा रह सकता है और महाराणी विक्टोरिया से लेकर साधारण से साधारण व्यक्ति तक का भारतवर्ष में मिशनरी काम के लिये ऐसा उत्साह पैदा हुआ जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। अन्य देशों जैसे अमेरिका, जर्मनी इत्यादि के मिशनों ने अंग्रेज़ी मिशनों के साथ मिल कर काम शुरू किया और सन् १८५८ से लेकर उसके बाद भारत में अब हम सार्वजनिक आन्दोलन के रूप में उस मिश्नरी काम को पाते हैं। इन सार्वजनिक आन्दोलनों के परिणाम स्वरूप देश में ईसाइयों की संख्या बड़ी तीव्र गति से बढ़ी और उस समय से ऊँची श्रेणियों के लोगों में ईसाई धर्म में दीक्षित होने का जो कुछ थोड़ा बहुत आकर्षण था वह क्रियात्मक रूप से जाता रहा। भारतवर्ष में सार्वजनिक आन्दोलन का जो कुछ संक्षिप्त इतिहास है वह यही है और 'रिचर्स की हिस्ट्री आफ़ मिशन' में अक्षरशः इस की सत्यता आंकी जा सकती है।

इस कहानी में मिश्नरी साम्राज्यवाद के उदाहरण को हम उसके निकृष्टतम रूप में देख सकते हैं और वह भी ऐसे देश में जहां धर्म के प्रति लोगों की अत्यन्त निष्ठा हो और जहाँ इसी कारण से ईसाइयत बहुत अधिक बदनाम हुई हो। भारतवर्ष में ईसाइयत का ऐसे बुरे ढंग से दुरुपयोग हुआ है जिसका उदाहरण समस्त ईसाई जगत् के इतिहास में मिलना कठिन है। मुझे उस वक्तव्य का भली भाँति स्मरण है जो भारतवर्ष में एक मिश्नरी ने दिया और मुझ से कहा था—"मिस्टर पारीख ! जब कोई आदमी हमारे पास बपतिस्मा लेने के लिये आता है, तो जो पहला प्रश्न हम अपने से करते है, वह यह है कि यह आदमी चाहता क्या है ?" उसी समय सालवेशन आर्मी के एक नवयुवक सदस्य ने मुझ से कहा था—"जिस क्षण कोई आदमी ईसाई बनाया जाता है उसी क्षण उस के सामने धन रख दिया जाता है।" चीन में स्थिति कुछ अधिक अच्छी है। शायद कोरिया में इससे ज्यादा बुरी है। जब मैं चीन और जापान के रास्ते पहली बार अमेरिका आ रहा था तो मुझे कोरिया में काम करने वाले एक विशप से भेंट करने का अवसर मिला और उसने मुझसे मिश्नरी काम के सम्बन्ध में लगभग ऐसी ही

बातें कहीं थीं, उसने कहा था "यह सब घूसखोरी है और मुझे अनुभव होता है कि मैं भी खरीद लिया गया हूँ। तो भी मैं अपने हाथों से काम करने के लिये तैयार हूँ।"

इन तथा अन्य देशों मे हमे मिश्नरी साम्राज्यवाद का सामना करना पड़ता है और यह साम्राज्यवाद ५ प्रकार के,अर्थात्-धार्मिक,जातीय, सांस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक-साम्राज्यवाद का संमिश्रण है और ईसामसीह "ईसाईयत के केसर" के रूप मे परिवर्त्तित कर दिया गया है और ईसा की यह मूर्त्ति विनम्र और सूली पर चढ़े हुए ईसा की मूर्त्ति से सर्वथा भिन्न है। पूर्वीय देशों मे ईसाई मिशनों का यह एक बड़ा ही दुखान्त प्रदर्शन है और ये मिशन पूर्वीय देशों की संस्कृति तथा सभ्यता के लिए बड़े ही खतरनाक है। ईसामसीह की तथाकथित भव्यता पर वह इमारत बनाई गई है,जो ईसा की ईसाइयत से सर्वथा इन्कार करती है। बुद्धिमान् और ईमानदार मिश्नरी इन बातों से सर्वथा अभिज्ञ हैं। यद्यपि वे लोग आपस मे इन बातों पर पूर्णता और स्पष्टता के साथ विचार भी करते रहते हैं परन्तु बहुत से कारणों से वे लोग अपने देशवालों के सामने ऐसा करते डरते हैं। उन्हें अपने काम की असफलता का सामना करने का साहस नहीं होता। एक बार मि० सी० ऐफ़० ऐन्ड्रूज़ जैसे व्यक्ति ने इस अनीश्वरवादी प्रथा से अपना सम्बन्ध विच्छेद करने का साहस किया था और इसका परिणाम यह हुआ कि उनके सहकारी ईसा के प्रति उनकी निष्ठा के सम्बन्ध मे भी सन्देह करने लग गये थे और शायद अब भी करते हों। वस्तुतः स्थिति ऐसी भयंकर हो गई है, एक बड़े प्रसिद्ध मिश्नरी ने इसकी ओर संकेत करते हुए मुझसे कहा—'वास्तविक मिश्नरी-कार्य तो अभी आरम्भ ही नहीं हुआ है, जो कुछ हमने अब तक किया है वह तो केवल परोपकार ही है!" मैंने यह कहकर उनकी गलती को ठीक किया कि कथित मिश्नरी काम अपने पूर्ण आदर्श पर ही परोपकार कहा जा सकता था या कहा जा सकता है। नीच आदर्शों मे तो यह परोपकार भी नहीं कहा जा सकता। यह एक संशोधन था जो उस मिश्नरी ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया था।

इन लाइनों पर किये गये कार्य का परिणाम यह हुआ कि अब मिशन अपने कर्म की कीचड़ में फंस गये है। तथाकथित राष्ट्रीय चर्च न राष्ट्रीय और न चर्च ही रह गये है। भारतवर्ष मे तो यह बात सोलहों आने ठीक है। वहां चर्च एक सामाजिक और आर्थिक श्रेणी बन गया है, जिसका दृष्टिकोण सांसारिक और आर्थिक ही है। एक बड़े प्रसिद्ध अंग्रेज़ी बिशप ने भारतवर्ष से रिटायर होते समय मुझको कहा—"स्थिति ऐसी भयानक है कि जो कुछ तुम मुझसे कह सकते हो उससे मुझे बिलकुल भी आश्चर्य नहीं होगा।' इस सम्बन्ध मे विशेष Laymen's Commission द्वारा प्रकाशित Regional and fact finders Reports रिपोर्ट से जाना जासकता है।

तस्वीर का काला पहलू केवल इतना ही नहीं है। भारतवर्ष मे तथाकथित राष्ट्रीय चर्च भारतवर्ष के लोगों की संख्या को ही हड़प कर जाने की इच्छा कर रहा है। पाश्चात्य जगत् के

मिशनरी सिस्टम से पीठ ठोके जाने पर उसके लिए उसने काफ़ी क्षेत्र तैयार कर लिया है। पिछली आठ या नौ शताब्दियों में तबलोग का काम करने में इस्लाम ने हिन्दूसमाज को दो जातियों में विभक्त कर दिया है और यहां तक कि अब हिन्दू-मुस्लिम समस्या एक स्थिर समस्या बन गई है और देश तथा ईश्वरभक्त हिन्दू और मुसल्मानों को व्यथित कर रही है। ईसाइयत हिन्दू-समाज को और भी ज्यादह विभक्त करके इस समस्या के साथ एक और समस्या जोड़ रही है। सन् १६२८ में जब डाक्टर मोट भारतवर्ष में थे, एक लम्बी बातचीत के दौरान में यह चर्चा छिड़ने पर कि मैंने किस प्रकार ईसाई धर्म ग्रहण किया उन्होंने मुझसे पूछा कि वह कौनसी चीज़ थी जो मेरे मन पर ज्यादह बोझ डाल रही थी। मैंने उनको उत्तर दिया कि ईसा और ईसायत के नाम में इस नई श्रेणी की उत्पत्ति ही मेरे मन पर ज्यादह बोझ डाल रही थी और मैंने यह भी कहा था कि यह श्रेणी भारतवर्ष में पहले से व्याप्त साम्प्रदायिकता की त्रुटियों को और भी बढ़ायेगी और सच्चे हृदय से ईसा को अपना मालिक स्वीकार करने वाले लोगों के मार्ग में रोड़ा अटकायेगी। वस्तुतः यह श्रेणी हिन्दुओं के सांस्कृतिक और धार्मिक विकाश के लिये अत्यन्त घातक है।

चार वर्ष हुए जब मैं इस देश (अमेरिका) में पहली बार आया तो अमेरिका की क्रिश्चियन जनता को ये बातें बतलाने का मैंने यत्न किया परन्तु मेरी बातों से लोग बहुत चिढ़ गये। कैलीफ़ोर्निया के एक आदमी ने जो चीन में एक बार मिशनरी काम कर चुका था यहाँ तक कह दिया कि यदि मैं ये बातें बतलाऊँगा तो वह मेरे सार्वजनिक भाषण बन्द करवाने का यत्न करेगा तब मैंने उससे कहा कि मिशनरी समस्या के सम्बन्ध में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो मैंने भारत के लोगों को नहीं बतलाई हैं और जो मैं यहाँ के लोगों को बतलाना चाहता हूँ जिससे कि स्थिति सुधर जावे। इस पर वह शान्त हुआ। तो भी यहाँ के लोग और मुख्यतः ईसाई लोग मिशनों के सम्बन्ध में सत्य बातें सुनने के लिये तैयार नहीं। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये लैमेन्स रिपोर्ट पढ़नी चाहिये।

# आन्तरिक और वाह्य पवित्रता

लेखक—

( श्रा० प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति )

अपने प्रति मनुष्य के कर्तव्यों मे आन्तरिक और बाह्य पवित्रता का मुख्य स्थान है। इसी लिये वेद में सब प्रकार की पवित्रता के सम्पादन पर बड़ा भारी बल दिया गया है। ऋग्वेद नवम मण्डल के प्रायः मन्त्रों मे जिनका देवता सोम पवमान है, इसी विषय में उपदेश तथा प्रार्थनाये पाई जाती हैं। सामवेद के अनेक मन्त्र भी इसी आन्तरिक और बाह्य शुद्धि का प्रतिपादन करने वाले हैं। अथर्व वेद,तथा यजुर्वेद के अनेक मन्त्र भी स्पष्ट शब्दों मे इस पवित्रता के भाव की सूचना देने वाले हैं। यहां चारों वेदों से इस विषय के थोड़े से मन्त्र उद्धृत किये जाते हैं।

(१) ऋग्वेद ५। ३१५ मे निम्न मन्त्र आया है—

इन्द्रः शुद्धो न आगहि, शुद्धः शुद्धाभि-रूतिभिः। शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः॥

अर्थात् (इन्द्र) ऐश्वर्य शाली राजन् (शुद्धः) शुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वाला तू (न आगहि) हमे प्राप्त हो (शुद्धः) पवित्र तू (शुद्धाभिः) पवित्र (ऊतिभिः) रक्षाओं के साथ हमे प्राप्त हो (शुद्धः रयिं नि धारय) शुद्ध होता हुआ तू ऐश्वर्य धारण कर और (सोम्यः शुद्धः) सौम्य और पवित्र होता हुआ तू (ममद्धि) आनन्द अथवा भोग कर। इस मन्त्र के अन्दर पवित्र भावों के साथ ही रक्षा ऐश्वर्य धारण भोगादि सब कार्य करने चाहिए यह भाव स्पष्टतया सूचित किया गया है।

(२) ऋ० ६। ६७। २२ मे निम्न प्रार्थना है—

पवमान सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणि यः पोता स पुनातु नः॥

अर्थात् (विचर्षणिः) सर्वज्ञ (पवमानः) सब को पवित्र करने वाला (सः) वह परमेश्वर (अद्य) आज (पवित्रेण) अपने पवित्र तेज से (पुनातु) हमे पवित्र करे (यः पोता) जो वह पवित्र करने वाला परमेश्वर है (स नः पुनातु) हमे वह अवश्य ही पवित्र करे। इस मन्त्र मे भी दो बार परमेश्वर से जो कि पवित्रता का स्रोत है पवित्रता की प्रार्थना की गई है।

(३) ऋ० ६। ७३। ७ में वाणी की पवित्रता के विषय में निम्न लिखित मन्त्र आया है—

"सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः॥

अर्थात् (मनीषिणः) बुद्धिमान् (कवयः) दूरदर्शी ज्ञानी लोग (सहस्रधार वितत) सहस्र धाराओं के समान विस्तृत (पवित्रे) पवित्रता के स्रोत परमेश्वर में मग्न हो कर अर्थात् उस का भजन कर के (वाचं) वाणी को (पुनन्ति) पवित्र करत हैं। ईश्वर भजनादि के द्वारा वाणी की पवित्रता को सम्पादन करने का इस मन्त्र में

उपदेश है। इसी भाव को सामवेद में निम्न प्रकार प्रकट किया है—

(४) वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः। पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परिस्तोतार आसते ॥

साम० पू० ३।७।६

अर्थात् (वृत्रहन्) हे सब पापों का नाश करने वाले प्रभो (वयं) हम (घ) निश्चय से (सुतावन्तः) विद्या रूपी ऐश्वर्य से युक्त होते हुए (वृक्त बर्हिषः) अग्निहोत्रादि शुभ कर्मों का अनुष्ठान करने वाले (पवित्रस्य प्रस्रवणेषु) पवित्र स्वरूप तेरे पवित्रता के स्रोत में (आपः न) जलों के समान शान्त स्वभाव (स्तोतारः) स्तुति करने वाले पुरुष (परि आसते) बैठे हुए हैं। वृक्त बर्हिषः' का अर्थ निघण्टु में ऋत्विक् ऐसा ही दिया है। परमेश्वर की पवित्रता की धाराओं में जल के समान बैठकर भक्त लोग भी अपने को शुद्ध कर लेते हैं यह भाव यहां सूचित किया गया है जो काव्य की दृष्टि से अत्यन्त उत्तम है।

(५) यजुर्वेद अ० ३४ के प्रथम ६ मंत्रों में मन को शिवसंकल्प बनाने के लिये जो प्रार्थनाएं आई हैं, वे इस प्रसङ्ग में दर्शनीय हैं। उनमें से केवल एक मंत्र का उल्लेख करना पर्याप्त है—

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरं गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥

अर्थात् (यत्) जो मन (जाग्रतः दूरम् उदैति) जाग्रत अवस्था में दूर-दूर जाता है (तदु दैवं) वह ही निश्चय से दिव्य गुण युक्त मन (सुप्तस्य) सोये हुए पुरुष के भी (तथा एव) वैसे ही (एति) दूर जाता रहता है (दूरं गमं) दूर जाने वाला (ज्योतिषाम्) इन्द्रियों का (एकं ज्योतिः) एक प्रकाशक (तत्) वह (मे) मेरा (मनः) मन (शिवसंकल्पम्) शुभ सकल्प करने वाला (अस्तु) होवे। मन्त्र की व्याख्या करने की यहां आवश्यकता नहीं है। मन के अन्दर सदा शुभ भावों का उदय होना चाहिये यह इन सब मन्त्रों का भाव है।

(६) यजु० ४।४ मे पवित्रता के सम्बन्ध मे निम्न लिखित अत्युत्तम भाव पूर्ण मन्त्र आया है—

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र-पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

अर्थात् (चित्पतिः) चित्त का स्वामी (मा पुनातु) मुझे पवित्र कर (सविता देवः) सर्वोत्पादक देव (सूर्यस्य रश्मिभिः) सूर्य की किरणों के साथ (अच्छिद्रेण) सर्व दोष रहित (पवित्रेण) अपने पवित्र तेज से (मा पुनातु) मुझे पवित्र बनाए (पवित्र पते) हे पवित्र स्वरूप स्वामिन् (पवित्र पूतस्य तस्य ते) पवित्र गुण कर्म स्वभावों के कारण सर्वथा शुद्ध तेरी (यत्कामः) जिस कामना से (पुने) पवित्रता अपने अन्दर धारण करता हूं (तत् शकेयम्) उस कामना को पूर्ण करने में मैं समर्थ

हो सकूं। परमेश्वर पवित्रता का स्रोत है दिव्य शक्ति शान्ति और आनन्द को प्राप्त करने की कामना से उसकी पवित्रता को अपने अन्दर धारण करना चाहिये यह इस मन्त्र का स्पष्ट आशय है। चित्त वाणी आदि का अधिष्ठाता मुझे पवित्र करे; इसी के अन्दर यह भाव आ जाता है कि वह मेरे चित्त आदि वाणी को पवित्र बनाए। इस प्रकार पवित्रता के स्रोत भगवान् की स्तुति प्रार्थना तथा उपासना के द्वारा अपने अन्दर पवित्रता धारण करने का वेद मन्त्रों में बहुत उत्तम उपदेश है।

(७) अथर्व ६। १६ में इस विषयक यह मन्त्र विचारने योग्य है—

पवमानः पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे। अथो अरिष्ट तातये ॥

अर्थात् (पवमानः) सब को पवित्र करने वाला परमेश्वर (क्रत्वे) उत्तम कर्म करने के लिये (दक्षाय) चतुरता अथवा बल के लिये (जीवसे) उत्तम रीति से जीवन व्यतीत करने के लिये (अथो) और (अरिष्ट—तातये) अरिष्ट अथवा मंगल के विस्तार के लिये (मा) मुझे (पुनातु) पवित्र करे। भावार्थ यह है कि अपने अन्दर ईश्वर भक्ति आदि द्वारा पवित्रता धारण करने से मनुष्य का आत्मिक बल बढ़ता है और वह जीवन को सुखमय बनाते हुए उत्तम कार्य करने में समर्थ हो सकता है। इस प्रकार की पवित्रता के सम्पादन के लिये प्रत्येक व्यक्ति को सदा उद्यत रहना चाहिए इस विषय में—

(१) भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥

(२) भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ॥

इत्यादि मन्त्र भी देखने योग्य हैं, किन्तु सुप्रसिद्ध होने के कारण उनकी व्याख्या करने की यहां जरूरत नहीं मालूम होती। अन्त में यजुर्वेद ६। १५ को यहां उद्धृत करके हम इस प्रकरण को समाप्त करते हैं जिसमें सब अङ्गों की सब प्रकार की पवित्रता सम्पादन करना ही वैदिक शिक्षा पद्धति का मुख्य तात्पर्य था यह बात भी स्पष्ट हो जाएगी। मन्त्र निम्न प्रकार है—

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि ॥

गुरु की शिष्य के प्रति यह उक्ति है कि मैं (ते) तेरी (वाचम्) वाणी को शुद्ध करता हूँ (ते) तेरे (प्राणं शुन्धामि) प्राण को शुद्ध करता हूँ (ते चक्षुः शुन्धामि) तेरी आंख को मैं शुद्ध करता हूँ (ते नाभिं मेढ्रं, पायुं च शुन्धामि) तेरी नाभि उपस्थेन्द्रिय और गुदेन्द्रिय को मैं शुद्ध करता हूँ (ते चरित्रान् शुन्धामि) तेरे चरित्र अथवा आचरणों को मैं शुद्ध करता हूँ। मन्त्र का भाव अत्यन्त स्पष्ट है। सब इन्द्रियों को शुद्ध पवित्र रखना चाहिये और अन्त में इस प्रकार अपने चरित्र को उत्तम बनाना चाहिये जिस के विषय में मनु महाराज ने ठीक कहा है कि—

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद् धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम् ॥

# मुक्तिवाद की निःसारता की असारता

लेखक —
( श्री प० चन्द्रभानु जी
सिद्धान्त भूषण आर्योपदेशक)

जुलाई १९३४ के 'चांद' में श्री रजनीकान्तजी शास्त्री बी० ए०, बी० एल० का एक लेख "मुक्ति-वाद की निःसारता" शीर्षक प्रकाशित हुआ है जिसमें प्राचीन भारतीय दार्शनिक ऋषियों पर साधारणतया तथा वर्तमान युग विधाता तार्किक मूर्धन्य स्वनामधन्य महर्षि दयानन्द पर विशेषतया अमृतवर्षा की गई है; आपने चूंकि स्वतन्त्र तर्क को ही अपना साथी बनाया है और कहीं २ प्रमाणों की पुट भी दी है इसलिए हम भी इसी शैली पर अपने विषय का प्रतिपादन करेंगे।

शास्त्री जी लिखते हैं कि— जन्म मरण की परम्परा के अनादि और अनन्त सिद्ध होने से जीव को कभी भी मुक्ति नहीं मिल सकती, वह बराबर एक के बाद दूसरा शरीर अनन्तकाल तक धारण करता चला जायगा और उसके किए हुए याग यज्ञादि सभी मुक्ति के साधन निष्फल होंगे" इसके उत्तर में निवेदन है कि यह दोष तब ही आ सकता है जब कि मुक्ति को सादि अनन्त माना जावे क्योंकि ऐसा मानने से अनादि काल से प्रवर्तमान जन्म-मरण परम्परा टुकड़े टुकड़े हो जाती है, परन्तु मुक्ति के सादि सान्त मानने में कोई भी दोष नहीं आता क्योंकि मुक्ति से पूर्व जन्म-मरण परम्परा और मुक्ति के पश्चात् भी जन्म-मरण परम्परा वैसे ही अक्षुण्ण रहती है परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी की भी मुक्ति केवल एक बार ही नहीं होती बल्कि जिस प्रकार जन्म-मरण परम्परा अनादि और अनन्त है उसी प्रकार मुक्ति और बन्धन परम्परा भी अनादि और अनन्त है। मुक्ति और बन्धन सापेक्ष शब्द ( Relative Terms ) हैं, मुक्ति होती ही तब है जब कोई बन्धन में हो और बन्धन होता ही तब है जब कोई प्रथम मुक्त हो। बिना बन्धन के मुक्ति की इच्छा कौन करेगा? और अब चूंकि बन्धन है, इसी से तो पता लगता है कि हम कभी मुक्त भी थे, गिरफ्तारी होती ही उसकी है जो पहले आज़ाद हो और जिसको गिरफ्तार किया

---

यह चरित्र निर्माण ही वैदिक तथा प्राचीन शिक्षा प्रणाली की आधार शिला थी और इसी आदर्श को हर्बर्ट स्पेन्सर आदि यूरोपीय अनेक शिक्षा वैज्ञानिकों ने भी 'Formation of character is the chief object of education अर्थात् चरित्र निर्माण ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है इत्यादि वाक्य लिखकर फिर से स्थापित करने का यत्न किया है; अस्तु।

---

हुआ है वह कभी न कभो आजाद हो ही जाता है।

इस पर यदि यह कहा जावे कि ऐसी मुक्ति मानने मे लाभ ही क्या जो सादि सान्त हो और उसके लिये प्रयत्न क्यो किया जावे ? उसका उत्तर यह है कि प्रथम मे जीवात्मा नित्य मुक्त नहीं है अर्थात् मुक्त स्वभाव नहीं है। इसलिये उसको नैमित्तिक मुक्ति ही मिल सकती है जो कि निमित्त के हट जाने पर समाप्त हो जाती है यदि जीवात्मा मुक्त होता तो वह बन्धन मे ही न होता, वह मुक्त हो रहता उसके लिए शास्त्रो मे मोक्ष साधनो का उपदेश ही न होता और न किसी जीवात्मा को कोई दुःख ही होता। मुक्त को भला दुःख कहां ? सुख और आनन्द की तलाश मे आ भटकता न फिरता न कोई शास्त्रा उत्तीर्ण होने या बी० ए० पास करने के पचड़े मे पड़ता। बेकारी के थपेड़े भी न खाने पड़ते। सब चैन की वंशी बजाते और नित्य मुक्ति के गीत गाते, परन्तु चूँकि सब आनन्द की तलाश मे है इससे पता लगता है कि आनन्द किसी के भी पास नहीं है। कोई भी ईश्वर की तरह नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव नहीं है। इसलिये मुक्ति अनादि अनन्त वा सादि अनन्त न होकर सादि सान्त ही हो सकती है। शास्त्री जी ने भी स्वयं तीन चार स्थानों पर बार बार यही लिखा है कि यदि मुक्ति सादि हुई तो सान्त अवश्य होगी इसलिये अब इसे सिद्ध करने की विशेष आवश्यकता नहीं। रहा यह प्रश्न कि ऐसी सादि सान्त मुक्ति के लिये प्रयत्न क्यों किया जावे ? तो जब कि कुछ घटों तक रहने वाली क्षुधातृप्ति के लिये हम इतने प्रयत्न करते हैं, कुछ समय तक सिनेमा सुख के लिये लोग पिले पड़ते हैं सांसारिक विषय भोगों के क्षणिक सुख के लिये परेशान और हैरान रहते है तब मुक्ति के उस परमानन्द के लिये जिसका सुख इन सब मे मात्रा और समय मे सैकड़ो गुणा अधिक है प्रयत्न करते हुए क्यो पशोपेश किया जावे और कोशिश करने से क्यो किनाराकशी की जावे ?

इस सादि सान्त मुक्ति पर शास्त्री जी लिखते हैं कि

'जो जीव अपने निःशेष कर्मो के उच्छेद मे मुक्त हुआ था, उसे फिर भी बिना किसी पूर्वकर्म के ही अकारण संसार चक्र मे लौट कर दुःख सुख भोगना पड़ेगा जिससे अन्त में फिर वही बात सिद्ध हुइ कि प्राणियो का जन्म किसी पूर्व कर्मो के आधीन न हो कर एक स्वतन्त्र वस्तु है।'

यहां पर शास्त्री जी को यह भ्रान्ति हुई है कि मुक्त होने पर किसी भी प्रकार के कर्म शेष रहते ही नहीं उनका सर्वथा ही अभाव हो जाता है इसलिये शास्त्री जी को यह जान लेना चाहिये कि प्रथम तो मुक्ति के हेतु रूप जो निष्काम कर्म होते है वे ही शेष रहते है, इनके अतिरिक्त मुक्ति मे जाने वाले जीवात्मा द्वारा अपने उस जन्म में कुछ न कुछ सकाम कर्मों का भी अनुष्ठान होता ही है और वे ही सकाम कर्म जीवात्मा के अल्पज्ञत्व व अल्पशक्तिमत्व गुणों, ईश्वरीय व्यवस्था और मुक्ति हेतुक कर्म फल समाप्ति की सहायता मे मुक्ति के पश्चात होने वाले जन्म का कारण बना करते है।

"क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन दृष्टे परावरे"

इत्यादि प्रमाणों द्वारा कर्मों के अत्यन्ता भाव न होने की स्पष्ट घोषणा है।

यदि प्राणियों का जन्म पूर्व कर्मों के आधीन नहीं है तो कोई राजपरिवार मे क्यों जन्म लेता है और कोई तनक्षीन महामलीन माता पिता का मेहमान क्यों बनता है? कोई विद्वानों और दार्शनिकों के घरों मे तथा कोई महामूर्खों के मकानों में क्यों तशरीफ लाता है? कोई अङ्गहीन कोई सुडौल शरीर, कोई गरीब और कोई अमीर कोई ऐय्याश कोई फ़कीर और कोई आला कोई हकीर कैसे? यदि कहो माता पितादि कारण हैं तो एक को अच्छे माता पिता क्यों मिले और दूसरे को बुरे क्यों? एक ही माता पिता की विभिन्न गुणस्वभाव वाली सन्तान क्यों? यदि इस जन्म के कर्म कारण हैं तो जिन्होंने इस जन्म मे कोई भी ऐसे कर्म नहीं किये, उन्होंने पिछले जन्म में भी न किये हों इसका सबूत क्या? इस जन्म के कर्मों के साथ तो प्रेम का प्याला भरना और पिछले जन्म के कर्मों के साथ सौतेली मां जैसा सलूक करना कहां का इन्साफ़ है?

यदि शास्त्री जी के स्वमतानुसार इसका कारण सृष्टि की विचित्रतादेवी हैं तो इन देवी जी की बिना कारण ही किसी पर नज़रे-महर क्यों और दूसरे पर नज़रे क़हर क्यों? एक के लिये अमृत क्यों और दूसरे के लिये ज़हर क्यों? किसी के साथ ऐसी सखावत और दूसरे के साथ इतनी अदावत !!! यदि इन सब विषमताओं का कारण शास्त्री जी का सर्वव्यापी चेतन तत्व है जो कि न ईश्वर है और न जीव, शायद दोनों का मिक्श्चर है या चूं चूं का मुरब्बा क्योंकि एक ओर तो यह ईश्वर की तरह सर्वव्यापी है परन्तु अजन्मा, निर्विकार और कर्मफलदाता नहीं दूसरी ओर वह जीव की तरह बार बार जन्म भी लेता है परन्तु न पिछले कर्म भोगता है और न आगे कर्मफल भोगेगा तब तो इस चेतन तत्व की बलिहारी है; यह कहीं पर तो शास्त्री जी की बिजली के समान बिजली ही डाल देता है परन्तु शुक्र यह है कि औरों पर नहीं अपने पर ही डालता है और फिर खूब बिल-बिलाता है, दूसरी जगह यह चेतन तत्व अपने सुन्दर चमत्कारों से चकाचौंध कर डालता है और मज़े मारता है, इस स्वयंभूदेव की ये दोनों लीलायें चर्चा और अर्चा करने योग्य ही हैं, ज़रा आगे देखिए कि इस चेतन तत्वको राजा कारागार के चक्कर में इस लिये नहीं चढ़ा सकता कि वह अल्पज्ञ है, उसके साधन अल्प हैं, उसके अहलकार रिश्वत खा सकते हैं। समाज इसका बहिष्कार इसलिए नहीं कर सकता क्योंकि यह समाज के कर्णधारों को दावत देकर अदावत हटवा सकता है, अपनी प्रभा और प्रतिभा से समाज पर रौब दौब डाल सकता है, समाज इसकी पबलिक लाइफ़ ही को देख सकता है, प्राइवेट लाइफ़ को नहीं। प्रकृति रोगादि द्वारा इसे दण्ड इस लिए नहीं दे सकती कि यह सर्वव्यापी चेतनतत्व दुराचार करने पर भी शारीरिक उन्नति का पूरा ध्यान रखता है, बड़े टानिक (Tonic) उड़ाता है, काड-लीवर-आयल की

बोतलें चढ़ाता है और डाक्टरोंमें अपने स्वास्थ्य का बीमा करवाता है। रही चित्त की ग्लानि आदि सो इसे विशेष परवाह नहीं, वह इसे पुरुषोचित उद्दण्डता की रुकावट समझता है और समझता है इसे पण्डितों, पुरोहितों और पादरियों के पास ही फड़फड़ाने वाला परिन्दा; अब इस चेतन तत्व को शास्त्रीजो की कृपा से न ईश्वर का डर रहा है और न परलोक का खटका, अब तो इसकी हर तरहसे चांदी है; जब आराम करने की जरुरत हुई तो काष्ठादि मे छुपा रूप (Latent form) मे जा मौजूद हुए और जब कभी चमकने और दमकने का शौक चर्राया तो किसी भौतिक शरीर को विद्युत् यन्त्र के समान आधार बनाकर विकसत, उद्बोधित और अभिव्यक्त हो बैठे, अब अब कि लोक परलोक का परलोकवास हो गया, खुदा जुदा हो गया तब क्यों न आचार्यपुंगव चारवाक के इन चारु वाक्यों को गाने लगे कि—

यावज्जीवेत् सुखं जीवेद्रणं कृत्वा घृतं पिवेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥

अर्थात् Eat, drink and be merry, क्यों न हो—

जो एयर शिप पर चढे तो ऐसे,
कि बस हमी है खुदा नही ह।
जो एयर शिप से गिरे तो ऐसे
कि लाश का भी पता नह है॥

× × × ×

## प्रमाण भाग

अब शास्त्री जी के प्रमाणो की आलोचना की जाती है। आपने छान्दोग्य के

न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते

वाक्य को लिखकर बतलाया है कि छान्दोग्योपनिषद्कार मुक्ति को निरवधि मानत है परन्तु यदि शास्त्री जी पूर्वापर प्रसंग पढ़ लेन तो उन्हें इतनी जबरदस्त भ्रान्ति न होती और यदि पूरा वाक्य ही लिख देत तो 'चांद' के पाठक स्वयं सच्ची बात को समझ जाते, पूरा वाक्य इस प्रकार है—

स खल्वेवं वर्त्तयन् यावदायुष ब्रह्म लोकमभि संपद्यते, न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते

अर्थात् वह ब्रह्म ज्ञानी इस प्रकार से बर्तता हुआ आयु भर (जितनी उसकी आयु है) ब्रह्मलोक प्राप्त करता है, फिर नहीं लौटता मतलब यह है कि जब तक ब्रह्मलोक को प्राप्त रहता है उससे पूर्व कदापि नहीं लौटता; "यावदायुषं" शब्द मे सावधि मुक्ति की घोषणा तो निकल सकती है निरवधि की नहीं। यदि छान्दोग्यकार को सावधि मुक्ति स्वीकृत न हो तो इसी उपनिषद् के प्रपाठक ४ खण्ड १५ प्रवाक ६ की टीका करत हुए श्री-स्वामी शंकराचार्य और आनन्दगिरि जी यह न लिखे कि जिस कल्प मे ब्रह्मलोक प्राप्ति हो उसमे अन्यत्र कल्प मे ही लौटना होता है, छान्दोग्य के इसी सिद्धान्त को मुण्डकोपनिषद् मे और भी स्पष्ट करके बतला दिया है कि परान्तकाल अर्थात महाकल्प के पश्चात् सब मुक्त जीव संसार मे आ जात है। इस प्रकार उपनिषद्द्वय के समन्वय मे कोई भी परस्पर विरोध नहीं क्योंकि दोनों म साधि मुक्ति सिद्ध है।

रहा गीता का प्रमाण, सो यदि गीता

उपनिषन्निसृता मानी जाती है, उपनिषद् को गौ बतलाया है और गीता को उसका दूध तो ईमानदारी से उपनिषद् और गीता के प्रमाण परस्पर संगत तो हो सकते हैं विरुद्ध नहीं इसलिये गीता के

यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम

का युक्ति-युक्त यही अर्थ हो सकता है कि जो मुक्ति की अवधि है उससे पूर्व मुक्तिधाम से लौटना नहीं होता। वैसे भी गीता के अनुसार जब कि नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव ईश्वर के प्रतिनिधि श्रीकृष्ण जी अवतार लेकर जन्म मरण की परम्परा में प्रवेश कर लेते हैं आगे को प्रतिज्ञा भी करते हैं तब अन्य साधारण मुक्तों के लिये लौट सकने के क़ायदे पर कैसे क़ैद लगायी जा सकती है; वह नित्यमुक्त प्रभु गर्भों में गर्भित रहता हुआ भी यदि गीता के अनुसार गर्भरूप में आ सकता है तो मुक्त जीवों को जन्म धारण करते हुए मानहानि के दावे दायर करने का कहां हक़ रहता है? अस्तु इस प्रकार शास्त्र समन्वय से छान्दोग्य, मुण्डक, गीता और सत्यार्थप्रकाश के आन बचनों में कोई विरोध नहीं रहता, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि आचार्यों में कोई भेद हो ही नहीं सकता और हमें उनकी बातें अन्धाधुन्ध मान लेनी चाहियें, मैं तो स्वयं शास्त्री जी के स्वतन्त्ररूप से विचार करने के पक्ष में हूं लेकिन इन भेदों के भेद खोलने में भी तो कभी स्वतन्त्र रीति से काम लेना चाहिये, न कि इनको और भी भ्रमकारक बना देना चाहिये।

आगे शास्त्री जी को ऋषि दयानन्द द्वारा मुक्तिकाल-परिगणन पर महान् आश्चर्य हुआ है। शायद आप के ख़याले तुवारिक में ऋषि लोग हिसाब में कच्चे हुआ करते हैं; संस्कृतज्ञ भी भला कभी मैथेमेटिक (Mathematics) में माथापच्ची कर सकते हैं इस लिये आपने इस को एक विलक्षण और अश्रुतपूर्व आविष्कार कह डाला है, सो यदि मान लिया जावे कि यह एक आविष्कार ही है तो क्या इसका बहिष्कार और तिरस्कार करना ही एकमात्र पुरस्कार है, पता नहीं हमारे उर्वर मस्तिष्क के धनी शास्त्री जी को यह कैसे पता नहीं लगा कि वेदों और शास्त्रों में मानवी आयुष्य की मर्यादा सौ वर्ष बतलायी गयी है यथा—

शतायु वै पुरुषः, आत्वा हरामि शतशारदाय,
पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतम्,
बुध्येम शरदः शतं रोहेम शरदः शतम्,

इत्यादि. इसलिये जब तक मनुष्य बन्धन में रहता है, और उसका सांसारिक विषयों से सम्बन्ध रहता है तब तो उसकी इस १०० वर्ष की आयुष्य मर्यादा की गणना में सांसारिक दिन रातों का ही हिसाब लगाया जाता है जो कि २४ घंटे के होते हैं परन्तु जब वह मुक्त हो जाता है और उसका सम्बन्ध ब्रह्म से हो जाता है तब उसके उन १०० वर्षों का हिसाब ब्राह्म दिन रात्रियों में ही लगता है जिनका परिमाण मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ७२ के अनुसार हमारे ८ अरब ६४

१ अथर्व ८।२।८।२. ऋ० ७.६६।१६; यजु० ३६।२४ अथर्व १६ ६७।१-२।३—ऋ० ७।६६।१६ अथर्व १९। ६७।१-४

करोड़ वर्ष के बराबर होता है, दूसरे शब्दों में मुक्त उतने समय तक मुक्ति का आनन्द भोगता है जितने समय में सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय ३६ सहस्रबार हो जाती है अथवा हमारे ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष समाप्त हो जाते हैं, यही मुण्डकोपनिषद् का परान्त काल भी कहलाता है। मानवी आयुष्य मर्यादा बद्ध और मुक्तों की वही १०० वर्ष है, दोनों के वर्षों में वही १२ मास और ३६० दिन अथवा कुल ३६ सहस्र दिन होते हैं, भेद केवल दिन रात्रि के परिमाण में है, बद्ध जीव का जहां दिन रात २४ घंटे का है जिसको वह सांसारिक विषय भोगों में थक २ कर और परेशान होकर ज्यों त्यों कर काट देना चाहता है वहां मुक्त जीव को एक दिन सृष्टि की आयु के बराबर और रात्रि एक प्रलय के बराबर अर्थात् हमारे ८ अरब ६४ करोड़ के बराबर मिलते हैं ताकि वह आनन्द को खूब भोग सके और तृप्त हो जावे। बद्ध जीव के कष्टमय दिन रात इतने छोटे रखने और मुक्त के आनन्दमय दिन रात इतने बड़े रखने उस महान् प्रभु की माधुर्य भरी महिमा के परिचायक हैं जिनको ऋषि दयानन्द तो अनुभव करते हैं परन्तु हमारे शास्त्री जी इसे ऋषि का आविष्कार बतला स्वयं अपने दिमाग से एक नया आविष्कार करते हैं।

ऋषि की इस युक्ति युक्त मुक्ति काल गणना में हमारे शास्त्री जी एक और भ्रमात्मक भूत से अभिभूत हो बैठे हैं, आप कहते हैं जब कि इस ब्रह्माण्ड को (शास्त्री जी के शब्दों में बूढ़े बाबा को) हुए २ प्रथम परार्द्ध के पचास वर्ष बीत गये, द्वितीय परार्द्ध के श्वेत वाराह कल्प में ६ मन्वन्तर भी निकल गये" इत्यादि, इसलिये यदि स्वामी जी को मुक्ति भी मिली होगी तब पूर्णानन्द तो दूर रहा उसने आधा भी बड़ी मुश्किल से नसीब होगा, स्वामी जी बहुत घाटे में रहे और यदि आगामी सृष्टि हुई तो उसमें पूर्व सर्वत्र महाप्रलय विद्यमान रहने से मुक्ति के लिये सुदीर्घकाल का विलम्ब रहेगा, स्वामी जी की आत्मा मुक्ति और सृष्टि के बीच महाराज त्रिशंकु की तरह उल्टी लटकती रहेगी' शास्त्री जी! वैदिक शास्त्रानुसार तो आत्मा निराकार ही होती है साकार नहीं होती इसलिये वह तो उल्टी लटक सकती नहीं, अलबत्ता आप के सर्वव्यापी चेतनतत्व को उल्टे लटकते रहने का अवश्य अभ्यास मालूम पड़ता है क्योंकि कभी तो वह शरीर यंत्र के द्वारा आंशिक उद्बोधित होकर शारीरिक मानसिक क्रियाएं करने लगता है और कभी वह बिलकुल उसमें उलट कर काष्ठादि में छन्नरूप ( Latent form ) में छन्न हो जाता है परन्तु खैर इन बेचारे सर्वव्यापी चेतन तत्व को या त्रिशंकु जी को क्या कहें इन दोनों की सत्तायें ही अभी साध्य हैं, हम तो कुछ आप के विचार ही उलट फेर का चक्कर खाते हुए मालूम पड़ रहे हैं क्योंकि आपको यह भी ज्ञात नहीं है कि यदि यह सृष्टि जल्द ही समाप्त भी हो गयी तो स्वामी जी की आत्मा दूसरी सृष्टियों में भी जा सकती है और तब ही क्यों अब भी जा सकती है। किसी एक खास सृष्टि में पड़े रहने का तो हुक्म नहीं है इन्होंने शायद यह समझा होगा कि ईश्वर भी कोई गौरांग महाप्रभु हैं जो एक भारतीय मुक्तात्मा को अन्य सृष्टि रूपी विशेष उपनिवेशों में प्रवेश

# हमारी शिक्षा का अधःपतन

( लेखक—विहाररत्न बाबू राजेन्द्र प्रसाद )

मानव जाति के सम्पूर्ण इतिहास पर—प्रारम्भिक अवस्था के मनुष्य से लेकर प्रतिभावान् मनुष्य की अवस्था तक के इतिहास पर—सरसरी नजर दौड़ाने से पता चलता है कि कभी कोई ऐसा समय न था, जब किसी-न-किसी प्रकार की शिक्षाप्रणाली प्रचलित न रही हो। सच तो यह है कि इसी बात से मनुष्य के विकास का प्रत्यक्ष रूप से पता चलता है कि मनुष्य जाति पर शिक्षा द्वारा बहुत बड़ा प्रभाव डाला जा सकता है। इसमे सन्देह नहीं कि विभिन्न काल और विभिन्न देश में शिक्षा प्रणाली विभिन्न प्रकार की रही है, परन्तु उद्देश्य सभो का एक रहा है। समाज को ध्यान मे रखते हुए उसके अनुकूल मनुष्य का विकास ही

---

करने की आज्ञा न देगा, शास्त्री जी जरा मुक्ति तो प्राप्त करले फिर वे स्वयं देख लेगे कि उनकी आत्मा अन्य सृष्टियों मे भी कैसे फर २ फिरगी, अभी से बहुत फड़फड़ाने की ज़रूरत नहीं है। आपने आगामी सृष्टि तक प्रतीक्षा करत रहने और मुक्ति के आनन्द से वंचित रहने की भी एक ही कही, प्रथम तो मै बतला ही चुका हूँ कि अनेक सृष्टियें हैं जहां पर स्वामी जी की आत्मा जा सकती है, परन्तु यदि दुर्जनतोषन्याय मे यही एक सृष्टि है ऐसा मान लिया जावे तब भी स्वामी जी की आत्मा भला प्रलयावस्था में ब्रह्मानन्द से कैसे वंचित रह सकतो है क्योंकि ब्रह्म तो प्रलयावस्था मे भी विराजमान रहता ही है, कहीं गायब थोड़ा ही होजाता है। अजर, अमर और अविनाशी नित्य ब्रह्म का राम नाम सत्य कौन कर सकता है ? शास्त्री जी ! इस ब्रह्माण्ड का राम नाम सत्य होनेपर भी राम का नाम सत्य ही रहेगा, उसप्रभु का नाम भला असत्य कहां ? कहिये आजतो आप राम नाम सत्य का सत्य तात्पर्य समझ गय होंगे।

अस्तु, शास्त्री जी ने इस प्रकार, ऋषियों म ज़ोर आजमाई करके ईश्वर म भी दो दो हाथ किय है, उस विषय मे कुछ लिखने म लेख बढ़ जावेगा, ईश्वर की सिद्धि के लिय हम क्षुद्र जीव लिख भी क्या सकत हैं वह महान् शक्ति तो स्वयं सिद्ध है, वर्तमान युग में भो महात्मा गांधो जैसे महापुरुष उसके दिव्यालोक के भिखारी है इसलिय शास्त्री जी से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपनी शंकाओ के समाधान के लिय एक बार ध्यान पूर्वक श्रद्धेय पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, एम० ए०, लिखित आस्तिकवाद देख जावे, फिर भी यदि आपको शंकाये रह जावे तो आप चांद में लेख लिखे आप का समाधान यथा शक्ति अवश्य किया जावेगा।

मेरा तो हर सखुन इसी मतलब के साथ है।
कम है खुदा के साथ खुदा सब के साथ है॥

( अकबर )

शिक्षा का ध्येय रहा है। सभी प्रकार की कार्य प्रणाली में विघ्न-बाधायें उपस्थित होती रहती हैं, कभी-कभी वह ग़लत रास्ते पर भी चली जाती है, शिक्षा प्रणाली भी इस नियम का अपवाद नहीं है।

शिक्षा प्रणाली से स्वभावतः यह प्रकट है कि जिस समाज के लिये शिक्षा-प्रणाली स्थिर की जाती है, वही इस बात का सर्वोत्तम निर्णायक हो सकता है कि हमारी शिक्षा-प्रणाली कैसी हो। समाज को यदि अपनी शिक्षा-प्रणाली स्थिर करने की पूर्ण स्वतन्त्रता न दी जाय तो निश्चय ही वह समाज के अनुकूल और उसके लिये लाभदायक नहीं होगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कभी शिक्षाप्रणाली मे विदेशियों का हस्तक्षेप हुआ है, चाहे वे कैसे ही योग्य क्यों न हों तभी वह असफल हुई है। राजनीति की भांति ही शिक्षा के क्षेत्र मे भी यह सिद्धान्त बिल्कुल लागू है कि स्वराज्य ही सर्वोत्तम शासन प्रणाली है।

भारतवर्ष में अभी जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित है, आमतौर पर उसके विरुद्ध आवाज़ उठ रही है। केवल साधारण लोग ही इस शिक्षाप्रणाली का विरोध नहीं करते, बल्कि मुझे तो कोई ऐसे योग्य शिक्षा-प्रेमी नही देख पड़ते, जिन्होंने वर्तमान प्रणाली के प्रति असन्तोष न प्रकट किया हो। अस्पष्ट रूप से सर्वत्र इसके प्रति असन्तोष फैल रहा है।

हमारी शिक्षा-प्रणाली मे सब से पहला दोष तो यह है कि भारतीय समाज पर यह ज़बर्दस्ती लाद दी गई है। इस शिक्षा-प्रणाली का सहज स्वाभाविक विकास नहीं हुआ है, बल्कि इसकी उत्पत्ति ही वर्णसंकर है। यह अंग्रेज़ी और भारतीय प्रणाली का बेमेल मिश्रण है। इसी कारण डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने हाल ही में कोलम्बो के अपने भाषण मे कहा था—'पश्चिमीय शिक्षा अस्वाभाविक है। इसका रंग स्वच्छ है—वैसा ही स्वच्छ जैसा चूनाकिये हुए क्लास रूमका रंग होता है। उसकी अनुभूति उस वृक्ष के समान है, जिसको विकास का पूरा अवसर न देकर बीच में ही काट डाला हो। ऐसी ही दूषित और विचित्र आधुनिक शिक्षा के कारण निकम्मी चीज़ों को हमे अपनाना पड़ता है, जिससे हम मे संस्कृति का विकास नही हो पाता और हम उन सुन्दर वस्तुओं को नहीं अपना पाते, जो वास्तव में शिक्षा से प्राप्त होनी चाहियें।

यह शिक्षा एक प्रकार का जेलखाना है, जिसमे 'आवश्यकता और 'स्वच्छता' मानो दो दरवाजे लगे हुए हैं। इस शिक्षा की जीवनी शक्ति विलुप्त भी हो गयी है, जिससे ऐसी शिक्षा पाने वाले मृत्यु के नाम को सुन कर ही सिहर उठते है।"

अब ज़रा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अन्य त्रुटियों की ओर भी ध्यान दीजिये। चार ऐसी बातें है, जिनसे हम अपनी शिक्षा प्रणाली के गुण-दोषों का पता लगा सकते हैं। वे यह हैं—(१) सरकारी नियन्त्रण, (२) अध्यापक, (३) पाठ्यक्रम और (४) छात्र।

इस चौथे अंग को तो मैं छोड़ ही रहा था, क्योंकि हमारे लड़के-लड़कियों में तो कोई जन्मजात त्रुटि है नही। वे तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के शिकार बने हुए है और सहानुभूति के पात्र हैं। अतएव वर्तमान शिक्षा पद्धति पर विचार करने के लिये मैं यहाँ उपर्युक्त प्रथम तीन बातो पर ही ध्यान देना आवश्यक समझता हूँ। आइये, देखिये तो कि शिक्षा-पद्धति के गुण-दोष का पता लगाने के लिये इनमे से किस बात पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्राचीन हिन्दू शिक्षा प्रणाली में गुरु अथवा अध्यापक ही से इसका पता चल जाता था। सच पूछा जाय, तो गुरु ही एक प्रकार से शिक्षा प्रणाली थे। विद्यालय मानों एक परिवार या गुरुकुल था। यह प्रणाली भारतीय सांस्कृतिक विकास के आधार पर अवलम्बित थी। युवकों की शिक्षा का भार इन गुरुओं पर ही रहता था। वे सब प्रकार से योग्य होते थे और अध्यापन ही उनके जीवन का मुख्य कार्य था वे सांसारिक प्रलोभनों से परे रहते थे। वे अपने शिष्यों को अपने उपदेश तथा उदाहरण द्वारा शांति पूर्ण जीवन बिताने की शिक्षा देते थे। गुरुकुलों में जो धार्मिक वातावरण रहता था, उससे छात्रों में सुन्दर अनुशासन कायम रहता था। साहित्य, कला, विज्ञान और दर्शन की शिक्षा के अलावा उन्हें, जीवनयापन किस प्रकार किया जाय, इसकी भी शिक्षा मिलती थी। इसी शिक्षा प्रणाली के फलस्वरूप प्राचीन भारत में बड़े-बड़े दार्शनिक विद्वान् पैदा हो गये हैं। इस सम्बन्ध में डा० रवीन्द्रनाथ कहते हैं—"एक ऐसा युग था जब भारत में भी सब के लिये एक शिक्षा-पद्धति थी, परन्तु यह उस समय की बात है, जब पाश्चात्य शिक्षा ने इस देश में पैर नहीं जमाये थे। पाश्चात्य शिक्षा से जीविका उपार्जन करने की योग्यता भले ही हो, परन्तु यह एक दूरस्थ रोशनी की भांति सत्यको देखने की शक्ति प्रदान नहीं कर सकती, जिससे जीवन का सांस्कृतिक संतुलन सम्भव हो। यही कारण है कि यूरोपीय शिक्षा-प्रणाली से हमें स्कूली तालीम तो मिल जाती है, परन्तु इससे सांस्कृतिक विकास नहीं होता। इससे किताबी बातें मालूम होती हैं, परन्तु जीवन के सौंदर्य और रहस्य को देखने की शक्ति नहीं प्राप्त होती।"

बाद में चल कर गुरुकुल प्रणाली का स्थान मुसलमान शासन काल में मकतब ने ले लिया। हमारे शिक्षा-विभाग के प्रथम डाइरेक्टर लार्ड मेकाले के समय तक इसी मकतब प्रणाली का अवशेष रह गया था। न्याय की दृष्टि से कहा जा सकता है कि लार्ड मेकाले ने उस समय की आवश्यकता को देख कर इसके अनुसार ही शिक्षा पद्धति निर्धारित की थी। हमारे तत्कालीन अंग्रेज़ शासकों को आफ़िसों में काम करने वाले अंग्रेजी जानने वाले असिस्टेंटों की ज़रूरत थी, इस लिये शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य था भारतीयों में अंग्रेजी भाषाकी योग्यता प्रदान करना। परन्तु इस प्रकार प्रति वर्ष शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले लोगों को काम देने के लिये अगणित स्थान तो थे नहीं कि सभी को काम मिल ही जाय। इस प्रकार की शिक्षा पद्धति का युग, भारत की शिक्षा के इतिहास का सब से दुखद युग है। इस पद्धति के अनुसार शिक्षा देने में अध्यापक और छात्र का बहुत सा समय केवल अंग्रेज़ी भाषा सिखाने और सीखनेमें लग जाता था। पाठ्यक्रम में अंग्रेज़ी के सामने अन्य विषयों का स्थान बिलकुल गौण हो गया। मातृ भाषा की बिलकुल उपेक्षा की जाने लगी।

इसके बाद सुधार का युग आया। शिक्षा-विभाग को हस्तान्तरित विषय बनाया गया। इस तथाकथित शिक्षा विभाग के संचालन का भार भारतीय मिनिस्टरों को सौंपा गया। हमारे मार्गदर्शक भी तो वही लोग हुए, जिन्होंने पश्चिमीय शिक्षा प्राप्त की थी। बेचारे इन्हीं लोगों को अपने देशवासियों में उसी प्रकार की शिक्षा का प्रचार करनेका भार दिया गया। जिन लोगों को देशी शिक्षा का तजर्बा था, वे मैदान से हट गये और उन्होंने इन लोगों को मौका दिया। बेचारे भारतीय मिनिस्टरों के सम्बन्ध में इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि वे पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली की उपयोगिता

में विश्वास रखते हैं और उन्होंने जनता में इसका प्रचार करने में कुछ उठा नहीं रखा। पञ्चवर्षीय और दसवर्षीय योजनाएं बनीं और कंट्राक्ट सिस्टम के अनुसार वे पूरी भी की गयीं! शिक्षा पद्धति के वास्तविक रूप को बदले बिना ही देशी भाषा का प्रचार करने की खूब चेष्टा की गयी, इसलिये परिणाम बड़ा ही निराशाजनक हुआ। देशी शिक्षा के प्रचार विभाग के जितने ही अफ़सरों ने तो मिनिस्टरों तथा उनके नीचे काम करने वाले अफ़सरों की सफलता का नगाड़ा पीटने के लिये इस उद्योग का प्रदर्शनकारी फल दिखाने के हेतु झूठ मूठ का प्रयत्न किया।

सुधार युग में शिक्षा विभाग के सर्वोच्च पदों पर जो नियुक्ति होती थी, उसमें विशुद्ध शिक्षा की भावना नहीं रहती थी, बल्कि राजनीतिक और साम्प्रदायिक भावना ही प्रबल रहती थी। किसी विदेशी विश्वविद्यालय का फर्स्ट क्लास एम ए० अथवा कोई अच्छा कानूनदां या किसी जाति का लोकप्रिय नेता एजुकेशनिस्ट हो, यह कोई जरूरी नहीं। यह मानना पड़ेगा कि पक्षपातरहित और शासकों के दबाव से मुक्त एजुकेशनिस्ट ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली के वास्तविक दोषों को निकाल सकता है। लार्ड मेकाले के उत्तराधिकारियों से हमारे मिनिस्टरों को जो शिक्षा-पद्धति प्राप्त हुई, उसे यों तो उद्देश्य की दृष्टि से उन्होंने निर्दोष मान लिया और तब से लेकर अब तक इस पद्धति के अन्तर्भूत दोष बढ़ते ही गये हैं। आरम्भ में ही इस शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य था नौकरियों का बंटवारा इस लिये शिक्षा के पवित्र क्षेत्र में भी आज साम्प्रदायिकता चरम सीमा तक पहुँच गयी है। इसलिये शिक्षा प्राप्त करने पर भी जब युवकों को नौकरी नहीं मिलती तो वह उनके किसी काम नहीं आती।

यह मिथ्या शिक्षाप्रणाली जब ऐसी अवस्था में पहुँच गयी तब और दो बातों की ओर अधिकारियों का ध्यान गया अब वे पाठ्यक्रम और पुस्तकों के महत्व का अनुभव करने लगे। चारों ओर ट्रेनिङ्ग पाये हुए शिक्षकों की मांग सुनाई पड़ने लगी और पाठ्यक्रम में जैसी तैसी, अच्छी बुरी सभी प्रकार की पुस्तकें भरी जाने लगीं। कभी २ तो वर्तमान प्रणाली को महत्वपूर्ण दिखाने के लिये इस समस्या को बिलकुल उलटे ढङ्ग से सुलझाने की चेष्टा की जाने लगी—पेड़ की जड़ को सींचने के बदले इसकी डालियों को सींचा जाने लगा!

अब तक सरकारी पदाधिकारियों के तत्वावधान में यह शिक्षाप्रणाली अवांछनीय दिशामें बहुत दूरतक बढ़ चुकी है। जो लोग प्रत्यक्ष रूपमें इस शिक्षा के शिकार बनें हैं, वे बेचारे अंधेरे में टटोल रहे हैं। आज यदि हमें कहीं बौद्धिक, नैतिक और चारित्रिक विकास दिखाई पड़ता है तो इसका श्रेय वर्तमान शिक्षा प्रणाली को नहीं है, बल्कि इस शिक्षा प्रणाली की मौजूदगी में भी उन्होंने इतना कर पाया, यह गनीमत है। सौभाग्य की बात इतनी ही है कि शिक्षक के वैयक्तिक सम्पर्क का प्रभाव छात्र के चरित्र पर कुछ न-कुछ पड़ता ही है। स्कूलों में यदि छात्रों का कुछ चरित्र-गठन होता है तो वह शिक्षक के सम्पर्क का ही प्रभाव है। परन्तु वे भी तो स्वयं इसी दूषित पद्धति के शिकार हैं। शिक्षक यदि स्वयं विद्वान् न हो तो वह क्या पढ़ायेगा? जब तक लालटेन की बत्ती जलती न हो, तब तक उससे दूसरी लालटेन की बत्ती नहीं जलायी जा सकती। शिक्षक यदि केवल पाठों को दुहराते जायँ, तो इससे वे छात्र को क्या देंगे? जब स्वयं आत्मस्फूर्ति न हो और केवल कुछ किताबी ज्ञान ही बढ़ता जाय तो मनुष्य की विचार शक्ति क्षीण हो जाती है, वह स्वयं कोई नयी

# दलितोद्धार

## राजपूताने में हरिजनों की स्थिति

'राजपूताना" की जनसंख्या ११२२५७१२ है। हिन्दू १०१५०१५० और हरिजन १५६२४०९ हैं। इस हिसाब से हरिजन कुल आबादी के १४ फी सदी हैं और हिन्दू आबादी के १४, ५ प्रतिशत है। यदि इनमें से ७२६०६२ भील, जिनकी सामाजिक स्थिति हरिजनो से कुछ अच्छी है परन्तु आर्थिक एवं अन्य हालत हरिजनो से भी खराब है शामिल कर लिये जायँ तो हरिजनों का परिमाण और भी बढ़ जाता है। इनमें मुख्य जातियाँ साधारणतः खेती, मज़दूरी, धुनाई, बुनाई सफ़ाई, बाँस एवं चमड़े का काम करती हैं। इस प्रान्त में हरिजनों को आमतौर पर मन्दिर-प्रवेश का अधिकार नहीं है। परन्तु यह बात साश्चर्य प्रसन्नता की है, कि त्यौहार एवं पर्व के अवसरों पर अनेक हरिजन-मन्दिरों में सवर्ण भक्त भी भेद-भाव छोड़कर आते, मिलते और "अछूत" पुजारी के हाथ का प्रसाद निःसंकोच भाव से खाते हैं।

विद्यालयों में एक दो राज्यों के सिवाय हरिजनों का प्रवेश नहीं है। जहाँ है, वहाँ भी कई स्थानों पर हरिजन-छात्रों को अलग बिठाया जाता है। मेहतरों का तो प्राय: सर्वथा बहिष्कार है। हरिजनों में पुरुष ६००० अर्थात् लगभग '०४ फी सदी और स्त्रियाँ २९२ अर्थात् ००२ फ़ी सदी साक्षर हैं।

हरिजनों के मुख्य कष्ट बेगार, पानी और औषधि की संतोष-जनक व्यवस्था का अभाव तथा सवारियों आभूषणों व्यञ्जन और वस्त्र इत्यादि जीवन के सुविधाओं-सम्बन्धी सामाजिक प्रतिबन्ध हैं।

बेगार के विषय में अधिक कहने की ज़रूरत नहीं। एक युग से इस महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक प्रश्न ने सभ्य संसार का ध्यान आकर्षित कर रक्खा है। फलतः बेगार की कठोरता कुछ कम हुई है और कुछ

---

बात सोच नहीं सकता। परन्तु वर्तमान स्कूलों में तो ऐसी ही शिक्षा दी जा रही है।

चरित्र गठन सम्बन्धी शिक्षा के लिये तीन बातें जरूरी हैं—(१) नैतिक अभ्यास, बौद्धिक अभ्यास और इच्छा शक्ति को बढ़ाने का अभ्यास। वर्तमान पाठ्यक्रम में, इनमें से प्रथम और तृतीय के लिये कोई स्थान ही नहीं रहता, दूसरे के लिये भी नाममात्र की गुंजायश रहती है। बौद्धिक अभ्यास का भी समुचित विकास नहीं हो पाता, क्योंकि चरित्र-गठन तो एक साथ ही हो सकता है, इसके विभिन्न अङ्गों का गठन अलग-अलग नहीं हो सकता। ऐसी अवस्था में बेचारे शिक्षकों को क्या दोष दिया जाय, क्योंकि वे स्वयं भी तो उसी प्रणाली के अनुसार शिक्षित हुये हैं। फिर भी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में अनेक दोष ऐसे हैं, जिनके लिये वे ही ज़िम्मेदार हैं।

मज़दूरी भी बढ़ाई गई है। परन्तु समस्या अभी हल नहीं हुई है। हज़ारों हरिजनो के सुख-स्वातंत्र्य के मार्ग मे अब भी बड़ी बाधक है। यह कुप्रथा सारे प्रान्त में विद्यमान है ।

पानी का प्रश्न इस प्रांत में बड़ा विकट है। हाँ दक्षिणी और पूर्वी राजपूताने मे इतना विकट नहीं है। वहाँ नदियाँ और सरोवर भी है । परन्तु पश्चिमी राजपूताना तो मरुभूमि है। कुएँ ही वहाँ के मुख्य जलाशय हैं। वहाँ हरिजनों की हालत बड़ी खराब है। आमतौर पर वे सवर्णों के कुओं पर नहीं चढ़ सकते। मेहतरों की स्थिति अत्यन्त दयाजनक है। उन्हें या तो कोई सवर्ण ऊपर से पानी डाल देता है या पीने और दूसरे कामों के लिए खेल के पानी से काम चलाना पड़ता है। खेल प्रत्येक बड़े कुए से लगे हुए लम्बे हौज़ को कहते हैं। इसमें पशु पानी पीते हैं. रजस्वला स्त्रियाँ कपड़े धोती हैं और ग्रामीण लोग आबदस्त लेते हैं। यह अमानुषिकता है भी ऐसे स्थानों में, जहां लक्ष्मी का बाहुल्य है, धर्म की दुन्दुभी बजती है और सुधार के दावेदार भी कम नहीं हैं। इसे भाग्य-बल कहें या धनी सुधारकों और सनातनियों की सचाई पर कलंक ! यदि इनमें से एक भी चाहें तो भगवान् ने उन्हें ये कष्ट दूर कर देने के साधन दिये है।

औषधि के सम्बन्ध में भी हरिजनों के कष्ट विशेष गम्भीर हैं। कोसों तक कोई दवाखाना ही नहीं। सैकड़ों मनुष्य दवा-दारु के अभाव में हर साल कराल काल के शिकार हो जाते हैं।

कई स्थानों मे हरिजनो को सोने-चाँदी के ज़ेवर नहीं पहनने दिये जाते, मिठाइयाँ नही बनाने दी जाती कई ऐसी बातें नही करने दी जाती, जिनसे सवर्णों के साथ समानता प्रगट होती हो। उच्च जाति वाले अपने सामने हरिजनों को न सवारी पर बैठने देंगे और न खाट पर।

राजपूताने के हरिजनों की आर्थिक स्थिति भी संतोषजनक नही है। हरिजन किसानों और मेहतरों पर कर्ज़ का भार लदा रहता है। उनकी आय बहुत थोड़ी है। शराब और अकाल उन्हें साहुकार के चंगुल में फंसा देते हैं। इसमें से वे पीढ़ियों तक नहीं निकल पाते। चमारों और रेगरों की हालत ज़रा अच्छी है। परन्तु वे मदिरापान में और विवाह और मृत्यु के अवसरों पर अपव्यय करके गाँठ का पैसा भी खो देते हैं और कर्ज़दार भी हो जाते हैं।

हरिजनों में शराब और मुर्दा मांस खाने का रिवाज़ तो प्रायः सभी जगह है। हाँ, कई स्थानों पर सुधार की वृत्ति भी पैदा हो गई है और वहाँ बहुत से हरिजनों ने ये दोनों बुराइयाँ छोड़ भी दी हैं।

# देशान्तर प्रचार

## श्रि० पं० सत्यदेव वेदालङ्कार की नैरोबी ( ईस्ट अफ्रीका ) की चिट्ठी

आप को यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि मैं १ मई से ईस्ट अफ्रीका की आर्यप्रतिनिधि सभा के नीचे आर्यसमाज का कार्य कर रहा हूँ। मैं मार्च के अन्त में इस प्रदेश में आया था और तभी से वैदिक धर्म का प्रचार प्रारम्भ कर दिया था। १ मई से यहाँ की आर्यप्रतिनिधि सभा ने मेरी सेवाएँ ले ली हैं। इस समय तक मैं केनिया के प्रायः सभी शहरों में घूम चुका हूँ। नैरोबी, नकोरो, एल्डोरेट, काकमेगा, कुसुम्बू, भाका, कम्पाला, जुन्जा, करीचो आदि सभी बड़े बड़े नगरों में भिन्न २ विषयों पर ६० के लगभग लैक्चर दे चुका हूँ। तथा २० के करीब भिन्न २ वैदिक संस्कार भी करा चुका हूँ। इस प्रदेश में वैदिक सिद्धान्तों को सुनने के लिये मनुष्य बहुत लालायित रहते हैं। कई स्थानों पर दिन में दो दो या तीन २ बार भी लैक्चर देने पड़ते हैं। आर्यसमाज नैरोबी के उत्सव पर ईशोपनिषद् की कथा सुनने के लिए हिन्दू भाई बड़ी संख्या में उपस्थित होते थे। नैरोबी के उत्सव की भारत की अच्छी से अच्छी समाजों के साथ तुलना की जा सकती है। उसमें भिन्न २ धर्मों के व्यक्ति भी व्याख्यानों को सुनने के लिये सम्मिलित होते हैं। नैरोबी में आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने वालों की संख्या भी बहुत है। यहाँ के आर्य भाइयों का कार्य क्रियात्मक दृष्टि से होता है। 'सार्वदेशिक' सभा के सदाचार सम्बन्धी नियम को क्रियात्मक रूप अभी तक इसी समाज ने दिया है। प्रत्येक सभासद अपनी आमदनी का एक प्रतिशतक कम से कम आज कल दे रहा है। सदाचार के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त 'सदाचार प्रतिज्ञा पत्र' बनाया गया है। पर्याप्त वाद विवाद के पश्चात् वह साधारण सभा ( General meeting ) में सर्वसम्मति से पास किया गया। यज्ञ करके 'ओं अग्ने व्रतपते व्रतं…' इस मन्त्र की दीक्षा लेकर प्रत्येक सभासद ने हस्ताक्षर कर उस पत्र को भरा है। इस तरह से इस समाज ने 'सदाचार' के आदर्श को आर्यजगत् के सामने रख दिया है। प्रत्येक सभासद को सदाचार पत्र' भरने पर ही सभासद लिया जायगा। साधारण नियमों को मानते हुये इस प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करके ही नया सभासद बनेगा समाज के पुराने प्रत्येक सभासद ने भी इस पर यज्ञ के बाद अग्नि को साक्षी रख कर हस्ताक्षर किया है। सदाचार व्रत की दीक्षा भी मैंने दी, प्रत्येक सभासद को अग्ने व्रतपते ' मन्त्र का उच्चारण करवा तथा अर्थ बता कर, दी थी। इस तरह से इस प्रदेश के आर्य जीवन' को उज्ज्वलतम बनाने में प्रत्येक प्रयत्न किया जा रहा है। इस साल से 'वैदिक संस्कृति' के पर्वों को भी उत्साह से मनाया जा रहा है। आज कल 'कृष्णजन्माष्टमी' उत्साह से मनायी जा रही है। एल्डोरेट मे कुछ दिन पूर्व तक कोई समाज मन्दिर न था। स्थानीय आर्यभाइयों के उत्साह तथा करीब २ एक महीने तक मेरे लगातार प्रचार से आर्यसमाज मन्दिर बन चुका है इसका उद्घाटन २२ सितम्बर को बड़े समारोह से किया जायगा। इस उत्सव के बाद 'मुम्बासा' जञ्जीबार और टांगानिका की तरफ़ आर्य धर्म के प्रचार के लिये चला जाऊँगा। कई स्थानो मे प्रचार के लिये निमन्त्रण भी 'आर्यप्रतिनिधि सभा ईस्ट अफ्रीका' के पास आ चुके हैं। कई स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना की भी सम्भावना है।

# साहित्य-समीक्षा

## कौटिल्य के आर्थिक विचार—

प्रकाशक—भारतीय ग्रन्थमाला' वृन्दावन।

हिन्दी भाषा मे अर्थ शास्त्र पर बहुत कम अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। परन्तु हर्ष की बात है कि गत पन्द्रह सोलह साल से वृन्दावन निवासी श्रीयुत भगवानदास जी केला द्वारा 'भारतीय ग्रन्थमाला' प्रकाशित हो रही है। जिसमें अर्थ शास्त्र सम्बन्धी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। कौटिल्य के आर्थिक विचार ग्रन्थ माला का १९ वाँ पुष्प है। यह ग्रन्थ कौटिल्य के अर्थ शास्त्र का अनुवाद नहीं है। प्राचीन काल में शास्त्रों के निर्माण की शैली सूत्र रूप म थीं जिनका समझना कुछ कठिन था। परन्तु केला जी ने मूल ग्रन्थ के आधार पर से आधुनिक शैली में इस ग्रन्थ की रचना की है। और इसका परिणाम यह हुआ है कि इस कठिन विषय को समझने में सुगमता हो गई है। ग्रन्थ के आरम्भ में कौटिल्य कौन थे, कब हुये इस विषय पर एक निबंध द्वारा प्रकाश डाला गया है।

कौटिल्य के अर्थ शास्त्र के दो हिंदी अनुवाद हमारे देखने में आ चुके परन्तु केला जी की इस पुस्तक में विशेषता यह है कि वह अनुवाद नहीं प्रतीत होता है। मालूम होता है मूल ग्रन्थ पढ़ रहे हैं। ग्रन्थ का विषय कठिन होते हुए भी भाषा बहुत सरल है। थोड़ा सा प्रयत्न करने पर ही अर्थ शास्त्र की बातें आसानी से समझ में आ जाती हैं। विषय प्रतिपादन की शैली बहुत सुन्दर है। केला जी की इस कृति पर हम उन्हें बधाई देते हैं, और आशा करते हैं कि वह इसी तरह अर्थ शास्त्र तथा राजनीति शास्त्र ऐसे कठिन और गम्भीर विषयों पर सरल भाषा में राष्ट्र भाषा हिन्दी का भण्डार सदा भरते रहेंगे।

## उर्दू दैनिक 'तेज' देहली का कृष्णाङ्क—

मूल्य ।=)

लेखों, कविताओं चित्रों और छपाई-सफाई आदि की दृष्टि से इस 'अङ्क' का सम्पादन और प्रकाशन बहुत अच्छा हुआ है। श्री कृष्ण जी के जीवन और भिन्न २ सामाजिक और राजनैतिक विषयों का श्रेष्ठ सकलन किया गया है। बड़े २ नेताओं राजनीति विशारदों, समाज सुधारकों, साहित्यिकों, कलाकारों के सन्देश और रचनाएँ अङ्क में दी गई है। अङ्क संग्रह करने तथा पढ़ने योग्य है। इस अङ्क के सफल सम्पादन के लिये श्री लाला देशबन्धु जी बधाई के पात्र है। क्याही अच्छा होता यदि मुख पृष्ठ पर अंग्रेजी बाला और बच्चे का चित्र न देकर भगवान कृष्ण का चित्र दिया जाता।

## चम चम ( मासिक पत्र ) -

वार्षिक मूल्य २॥)

कला प्रेम प्रयाग

'चम चम' का जुलाई १९३४ का अङ्क हमारे सामने है। इसमें बालकोपयोगी ऐसी पर्य्याप्त सामग्री है जो मनोरंजन पूर्वक उनको ज्ञान वृद्धिमें सहायक होगी।

# बिछुड़ों का मिलाप

१—आर्यसमाज मन्दिर नरमपुर ( बिजनौर ) मे गत १६ जून को एक २१ वर्षीय लतीफ़ नामी एक नव मुस्लिम की शुद्धि की गई।

२—आर्यसमाज सीताराम मे गत अगस्त मास में २ नव मुस्लिम महिलाओं तथा १ पुरुष की शुद्धि की गई।

३—आर्यसमाज इन्दौर में गत ५-८-३४ को एक अन्य की मुसलमान महिला की शुद्धि की गई।

४—गत २७-८-३४ को आर्यसमाज कारिंजा (बरार) में २ नव मुस्लिम महिलाओं की शुद्धि की गई।

५—गत २४ जुलाई को किंग्सटाउन ब्रिटिश गयाना मे श्री० प० अयोध्या प्रसाद जी बी० ए० वैदिक रिसर्च स्कालर के द्वारा ३३ व्यक्तियों की जिनमे अन्य के ईसाई, मुसल्मान, पुर्तगीज़ और नाग्रो सम्मिलित है, शुद्धि की गई। शुद्धि संस्कार श्री० म० मातावादल जी के निवास स्थान पर हुआ और संस्कार में बहुत से स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया।

—:o:—

# महिला-जगत

सम्पादिका—
( श्रीमती विद्यावती विशारदा )

## आन्ध्र देश की स्त्रियां

( ले०—श्री० व्रजनन्दन शर्मा )

किसी भी देश की सभ्यता की जाँच के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि वहाँ की स्त्रियों की हालत देखी जाय। आन्ध्र-देश में स्त्रियों का स्थान उत्तर भारत की स्त्रियों की अपेक्षा उच्च है। उत्तर-भारत के बहुत से लोगों का विचार है कि स्त्रियों को पर्दे में रखना उनसे कोई काम न लेना, उनकी कोई सलाह न लेना ही उनकी इज्जत करना है; पर यह तो बेइज्जती है वे भी परिवार की एक सदस्या हैं। उनको सदस्या का अधिकार प्राप्त होना आवश्यक है। आन्ध्र में यह अधिकार इन्हें प्राप्त है। हरएक काम में उनकी राय ली जाती है। घर के काम में तो उनको कोई रोक टोक है ही नहीं। शादी ब्याह तथा बाहरी कार्यों में भी उनके विचार की प्रधानता रहती है। बीया सब कामों में इनका उचित हाथ रहता है। जीवन निरुद्देश्य नहीं जान पड़ता।

बचपन में भी माता पिता, भाई बहन में कोई भेद नहीं रखते। यहाँ तक कि लड़कियाँ ही अपने भाइयों से ज्यादा प्यार प्राप्त करती हैं। प्रारम्भिक शिक्षा जितनी लड़कों के वास्ते आवश्यक है उतनी ही लड़कियों के वास्ते भी। प्राय प्राइमरी स्कूलों में लड़कियाँ ही अधिक संख्या में रहती हैं। गर्ल्स स्कूलों की संख्या भी अधिक है संगीत अवश्य सिखाया जाता है। मा बाप का ध्यान रहता है कि वह योग्य गृहिणी हो। पर्दा यहाँ है ही नहीं। शादी भी जान पहचान और लड़कियों की खूब देख भालकर होती है, इसलिए लड़कियों को गृह-कार्य में दक्ष बनाना तथा प्रारम्भिक शिक्षा दिलाना एक तरह से आवश्यक हो गया है। लड़कियाँ मायके में खूब काम करती हैं। मैं तो कभी स्त्रियों को बेकार बैठा नहीं पाता हूँ। गृह कार्य में यह खूब दक्ष होती हैं। प्रायः खरीद फरोख्त भी खुद कर लेती हैं। पुरुष जानते भी नहीं कि अतिथि ने कब भोजन तथा स्नान किया।

यहाँ की स्त्रियों का वेष सभ्य तथा सुन्दर होता है। महाराष्ट्रों से इनका पहनावा बहुत-कुछ मिलता है। सिरपर कपड़ा नहीं रहता है, साड़ी १४ हाथ की होती है आँचल पीछे लटकता रहता है, गहने भी पैरों के सिवा सब सोने के ही होते हैं क्योंकि चाँदी का गहना यहाँ कोई नहीं पहनता। पर जैसी बन-ठनकर ये रहती है, वैसा इनका सहज सौंदर्य नहीं होता। यदि इनमें सहज सौंदर्य होता, तो शायद हिन्दुस्तान की सुन्दरता प्रतियोगिता में (Beauty Competition) में ये अव्वल आतीं। गर्म देश के कारण चमड़ा कुछ रूखा (Rough) होता है, पर शारीरिक गठन अच्छा होता है। ये मजबूत भी होती हैं। यहाँ लड़कियाँ प्राय: दस ग्यारह वर्ष में सयानी मान ली जाती हैं। सयानी होने तक लहँगा पहनती हैं—बाद में साड़ी।

स्त्रियों में स्वतन्त्रता काफी है पर उच्छृङ्खलता नहीं है। लज्जाशीलता उचित मात्रा में है। किसी पुरुष के साथ कैसा व्यापार करना चाहिए यह ये खूब जानती हैं। आप किसी अपरिचित के घर भी जाइए, वहाँ आपको ऐसा नहीं मालूम होगा कि आप किसी नई जगह में हैं।

जो पर्दा-प्रथानुयायी सज्जन यह कल्पना नहीं कर सकते हैं कि पर्दा न रहने पर समाज कैसा होगा उन्हें एक बार आन्ध्र प्रदेशों की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

'विशाल भारत'

# ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रंथ अच्छे कागज पर बड़े आकार में हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें:—

| | असली मू० | घटाहुआ मू० |
|---|---|---|
| (१) आर्याभिविनय | ।~) | ।) |
| (२) काशी शास्त्रार्थ | ~) | )॥ |
| (३) सत्यधर्म विचार | ~)॥ | ~) |
| (४) पञ्च महायज्ञ विधि | ~)॥ | ~) |
| (५) आर्योद्देश्य रत्न माला | )॥ | )॥ |
| (६) संस्कार विधि बढ़िया कागज | ॥) | ।=) |
| (७) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया कागज उम्दा छपाई बड़ा आकार | १॥) | १।) |
| (८) व्यवहार भानु | =)॥ | =) |
| (९) वेद विरुद्ध मत खण्डनम् | =)॥ | =) |
| (१०) शिक्षापत्री स्वा० नारायण मतखण्डन | =) | ~) |
| (११) भ्रमोच्छेदन | ~) | )॥ |
| (१२) भ्रान्ति निवारणम् | =) | ~) |
| (१३) गो करुणानिधि | =) | ~)॥ |
| (१४) स्वीकार पत्रम् | )॥ | )॥ |
| (१५) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के | ।) | ≡) |
| (१६) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में | ५) | ४॥) |

# सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

**( १ ) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—**

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यो प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

घटा हुआ मूल्य „ २)

**( २ ) प्राणायाम विधि—**

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य केवल ~), घटा हुआ मूल्य )॥

**( ३ ) दयानन्द लहरी—**

इसमें भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री प० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य ~)॥, घटा हुआ मूल्य ~)

( ४ ) आर्य पर्व पद्धति—

आर्य्य जगत में एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारो के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।=)

( ५ ) आर्यसमाज क्या है:—

यह पुस्तक पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम ए. प्रयाग, द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास मौजूद है। संस्थाओ और आर्य्य विद्वान आदि के १९ चित्र हैं। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।)

( ६ ) दश नियम व्याख्या:—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह 'दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमे आर्यसमाज के दश नियमो की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≡)

( ७ ) ओम्प्रत्यक्षः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यती की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।=)

( ८ ) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानो द्वारा लिखित निबन्धो का अत्युत्तम संग्रह है मूल्य १।) सजिल्द १।।), घटा हुआ मूल्य ।।।) सजिल्द १)

(९) भारत माता का सन्देश—लेखक—श्री भाई परमानन्द जी, मूल्य ।।), घटा हुआ मूल्य ।=), पुस्तक मे पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यता, धर्म ( मजहब ) और राजनीति आदि कतिपय विषयो पर गंभीरता पूर्वक विचार किया गया है।

(१०) ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार मू० ।।), घ० मू० ।=), लेखक श्री पं० स्नातक धर्मदेवजी विद्या वाचस्पति। इस पुस्तक मे ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर विद्वत्तापूर्ण रीति से बहुत सुन्दर विचार किया गया है।

(११) वैदिक सन्ध्या रहस्य—लेखक -श्री महात्मा नारायण स्वामीजी, मू० -)।।, घ० हुआ मू०-) इस पुस्तक मे वैदिक सन्ध्या की बहुत रोचक, खोज पूर्ण, प्रमाणिक और वैज्ञानिक व्याख्या की गई है सन्ध्या के प्रेमियो और स्वाध्याय शील सज्जनो के मनन करने योग्य पुस्तक है।

(१२) आरोग्य दिग्दर्शन—लेखक—श्री महात्मा गांधी, मूल्य ।=), घटा हुआ मूल्य ।) शरीर विज्ञान

और स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में श्री महात्मा जी के स्वयं अनुभूत प्रयोगों का संग्रह। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और पढ़ने योग्य है।

(१३) इज़हारे हक़ीक़त—(उर्दू) लेखक—ला० ज्ञानचन्दजी आर्य्य, देहली। महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य है। मूल्य ॥।=)

(१४) सत्य-निर्णय—उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है, मूल्य १।)

(१५) योग रहस्य—लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, मूल्य ॥)
इस पुस्तक में योग के अनेक रहस्यों को प्रकट करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिनसे कोई भी नया आदमी जिसे रुचि हो, योग के अभ्यासोंको कर सकता है। आत्मिकोन्नति के जिज्ञासुओं को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

(१६) विद्यार्थी जीवन रहस्य—ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी। विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। एक प्रति ।)

(१७) यम पितृ परिचय—लेखक—श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २)
इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१८) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)
पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक में देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(१९) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लगभग ५०० मूल्य १॥)

| | अ० मू० | घ० मू० |
|---|---|---|
| (२०) बंगला अनुवाद आर्य्यसमाज | ।) | =) |
| (२१) शुद्ध बाल मनुस्मृति | ।=) | ।) |
| (२२) वर्ण व्यवस्था | -) | )॥ |
| (२३) जातीयता | ।=) | ।) |
| (२४) वेद में असित शब्द | -)। | -) |
| (२४) " २५ प्रति का | १।) | १।) |
| (२५) शताब्दी वृत्तान्त | १।) | ॥) |

| | अ० मू० | घ० मू० |
|---|---|---|
| (२६) विरजानन्द विजय | ।) | =) |
| (२७) हिन्दू मुसलिम इत्तिहाद उर्दू | ।) | =) |
| (२८) भगवद्गीता | १) | ॥।) |
| (२९) ईशोपनिषद् (ले० महात्मा-नारायण स्वामी जी) | =) | =) |
| (३०) केनोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |
| (३१) कठोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |

32 **Crucifixion by an eye witness:—**
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes.—price As. 6, Reduced price As. 5.

33 **Truth and Vedas—**
It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat." price As. 8, Reduced price A. 6.

34 **Truth Bed Rocks of Aryan culture:—**
The subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As. 10, Reduced price As. 8.

35 **Torch Bearer—**
A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Rs. 1/-

36 **Vedic Teachings—**
This book contains the most authentic replies to the objection raised about the Vedas by Dr. Bhandarkar. The learned author has besides, brought forth the superiority the Vedic Teachings contained.—price Rs. 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

37 **Voice of Aryavarta—**
This little book comes from the pen of Mr. T. L. Vaswani and contains reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching.—price As. 8. Reduced price As. 6.

38 **The daily Prayer of an Arya—**
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya.—price As. 4 only.

39 **The Light of the Vedas—**
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths. price Rs. 1/4/-

40 **Commentary on Ishopanishat—**
Translated by Pt. Ghasi Ram M. A. LL. B.—price As.4.

पुस्तक मिलने का पता—

**कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,**

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

## सन् १६३५ के उपहार !

### १५ सितंबर को प्रकाशित होंगे

### आर्य डायरी

इसमें नय वर्ष आर्यों की प्रतिज्ञा भगवान की स्तुति आर्यों क यज्ञ तथा पत्र के नि य कर्म आर्यों का समय विभाग आर्यसमाज के नियम आयसमाज के सिद्धान्त आर्य समाज का विस्तार आर्यसमाज का काम आर्यसमाज के गुरुकुल आर्यसमाज क कालिज आयसमाज की विशेष घटनाए, सध्या हवन शान्ति पाठ आरती तथा प्रत्यक पृष्ठ पर एक सुनहरी शिक्षा और देसी व अंग्रेजी तारीखे, सूर्य अस्त सूर्योदय नक्षत्र तथा सरकारी अवकाशो की सूची इत्यादि सब बाते दी गई हैं। इस वर्ष की डायरी विशेष उपयोगी होगा फिर भी मूल्य ।-) प्रति डायरी और व्यापारियो का भारी रियायत

### हिन्दी डायरी

इसमें मनुष्य-जीवन का उद्देश्य याद रखने की बात गोपालन की बाते एक दिन के वेतन का नकशा माप तौल की सूची घरेलू नुसखे डाकखान के नियम रेल के नियम सरकारी अवकाश की सूची, हिन्दू त्योहारों का इतिहास प्रत्यक पृष्ठ पर एक सुनहरी उपदेश और अंग्रेजी व देसी तिथियाँ तथा सूर्यास्त सूर्योदय व नक्षत्र आदि सब दिय गय है। यह डायरी अपने ढंग की एक ही होगी। मूल्य वही ।-) प्रति व्योपारिया को भारी रियायत।

### केलेंडर

आर्य केलेंडर इत्यादि पाँच प्रकार के छापे जायेंगे। मोटी तारीख होगी, प्रत्यक क बीच में भिन्न भिन्न ५ प्रकार के चित्र होंगे। पाठकों न हमारे पिछले केलेंडरो का देखा ही होगा। मूल्य में हमने भारी कमी कर दी है ≡) प्रति केलडर वजन लेन पर भारी रियायत।

व्यापारियों को अभी स आर्डर भेजकर प्रतियाँ सुरक्षित कर। लेनी चाहिएँ। १५ सितम्बर स पहिले आर्डर आन पर खास रियायत दी जायगी। पश्चात् नहीं।

मैनेजर, राजपाल एण्ड सन्ज,

आर्य पुस्तकालय सरस्वती आश्रम लाहौर।

नवम्बर १९५४

REG NO L

# सार्वदेशिक



विदेश से ५ शिलिंग सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम०ए० वार्षिक मूल्य

स० सम्पादक —श्री रघुनाथप्रसाद पाठक एक प्रति का ≈)

# विषय-सूची

ओ३म्

# सार्वदेशिक

सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

वर्ष ८ | कार्तिक सम्वत् १९९१ | नवम्बर १९३४ ई० ] [ दयानन्दाब्द ११० | अंक ९

## वेद की शिक्षाएँ

आयुर्मे पाहि प्राणं पाह्यपानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि ।
श्रोत्रं मे पाहि वाचं मे पाहि मनो मे जिन्वात्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ ॥

इस मन्त्र के अन्दर परमेश्वर से आयु प्राण अपान मन और वाणी आदि के साथ मन और आत्मा की रक्षा तथा तृप्ति या शक्ति वृद्धि के लिए प्रार्थना की गई है, जिसका तात्पर्य यही है कि भगवान् की कृपा से हम सब अपनी इन्द्रियों, मन तथा आत्मा की सब प्रकार के पापों और दुर्व्यसनों से रक्षा करते हुए उनकी शक्तियों के विकास में समर्थ हो सकें, क्योंकि यह बात साफ़ है कि दुरुपयोग करने से इन्द्रिय मन तथा आत्मा की शक्तियां क्षीण होती हैं ।

# ❋ सम्पादकीय ❋

## आर्यसमाज का स्थापना दिवस

'आर्य्य समाज का स्थापना दिवस' आर्य्य समाज के स्वीकृत पर्वों मे मे एक पर्व है और यह पर्व प्रति वर्ष चैत्र शुक्ल ५ को पड़ता है। इसी पुण्य तिथि में ऋषि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में सन् १८७५ ई० में अपने हाथों से आर्य्यसमाज की स्थापना की थी, अपना उत्तरा धिकारी नियत किया था, वेद प्रचार का महान् और पवित्र उत्तरदायित्व उसे सौंपा था, आर्य्यों को संगठन और प्रजातन्त्र का क्रियात्मक पाठ दिया था। इस दिन के साथ आर्य्यसमाज के गौरवमय इतिहास का प्रारम्भ होता है अतः यह दिन आर्य्यसमाज के इतिहास में सर्वप्रथम स्थान तथा आर्य्य—मात्र के लिए एक विशेष सन्देश रखता है। आवश्यकता है कि इस दिन उस सन्देश को सुनने औरसुनाने की योजना की जाय और समारोह पूर्वक यह पर्व मनाया जाय।

सार्वदेशिक सभाने इस पर्व के अनुष्ठान में आर्य्यजनता का विशेष रूप मे मार्ग-प्रदर्शन करने और प्रतिवर्ष इस पर्व के प्रोग्राम के निर्धारण करने का निर्णय कर दिया है। यह पर्व आगामि ८ अप्रेल १९३५ को पड़ेगा सार्वदेशिक सभा इस पर्व के प्रोग्राम मे यथासमय आर्य्यसमाजों को सूचित कर देगी। आर्य्यजनता को अभी मे इस पर्व को सफलता पूर्वक मनाने की व्यवस्था कर देनी चाहिए और आर्य्यसमाज के अन्य पर्वों और मुख्यतया ऋषि बोधोत्सव और निर्वाणोत्सव के मुक़ाबले में यह पर्व किसी दशा में भी कम समारोह के साथ न मनाया जाय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सभा ने यह भी निश्चय किया है कि इस दिन आर्य्य समाज में वेद प्रचार के लिये विशेष रूप मे धनसंग्रह का प्रबन्ध किया जाय और वह सब संग्रहीत धन सार्वदेशिक सभा के कोष में भेजा जाय। सभा के इन निश्चयोंका व्यापक रूप से स्वागत होगा, ऐसी हमें आशा है। सभा के धन सम्बन्धी निश्चय का सदैव और सब अवस्थाओं में स्वागत किया जाना चाहिए विशेषतः जब कि वेद प्रचार के लिए सभा में किसी विशेष और स्थिर आय की व्यवस्था न हो और सभा के सामने भारत में आसाम, मद्रास आदि प्रान्तों और पहाड़ी तथा जंगली जातियों में जहां ईसाई और मुसलमान वेग के साथ अपना प्रचार कार्य कर रहे हों और हिंदू जाति के लाल विधर्मियों के चंगुल मे हजारों, लाखों की संख्या में चले गए हों—और चले जा रहे हों तथा विदेशों में प्रचार का आवश्यक और बहुव्ययसाध्य कार्य करनेको हो।

हमारी सम्मति में प्रतिवर्ष आर्य्य समाज के काम की उन्नति विषयक रिपोर्ट Year Book के रूप में प्रकाशित होनी और समाजों में भेजी जानी चाहिए और यह कार्य सार्वदेशिक सभाकी विशेष देख-रेख में संपादित होना चाहिए।

## हैदराबाद पुलीस का अनुचित हस्ताक्षेप

पाठक अन्यत्र इसी अङ्क में हैदराबाद ( दक्षिण ) राज्य में आर्यसमाज की स्थिति के सम्बन्ध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज का प्रेस में दिया हुआ वक्तव्य पढ़ेंगे जिसमें प्रगट किया गया है कि हैदराबाद राज्यान्तर्गत चिटगोपा स्थान पर आर्य-मन्दिर में प्रचार कार्य में निजाम सरकार की अभी हाल की इस उद्घोषित नीति के प्रतिकूल कि निजाम सरकार सब धर्मों के प्रति व्यवहार में निष्पक्ष है" निजाम राज्य की पुलीस ने अनुचित हस्ताक्षेप किया और प्रचार में बाधा डाली तथा पुलीस के विरोध और उसके द्वारा डाली गई रुकावटों के होते हुए भी आर्य प्रचारकों ने प्रचारकार्य किया। चिटगोपा की इस घटनाने निजाम राज्य की पुलीस के व्यवहार के सम्बन्ध में गम्भीरता पूर्वक विचार करने के लिए अवसर प्रदान किया है।

यदि निज़ाम सरकार की पुलीस ने उपर्युक्त नीति को जानते बूझते हुए भी आर्यसमाज के प्रचार को रोकने की अदूरदर्शिता पूर्ण कार्यवाही की है तो कहना पड़ेगा कि यदि चिड़गोपा में कोई आपत्तिजनक स्थिति उत्पन्न हो जाती तो स्पष्टतया उसकी जिम्मेवारी निजाम सरकार की पुलीस पर ही होती। निजाम सरकार का कर्त्तव्य है कि वह अपनी पुलीस पर कठोर नियन्त्रण रक्खे और देखे कि उसकी पुलीस भविष्य में इस प्रकार की कोई भूल तो नहीं करती और उसकी भूल की वजह से निज़ाम सरकार बदनाम तो नहीं होती। यदि पुलीस ने अनजान में निजाम सरकार की नीति को न जानते हुए ऐसी कार्यवाहि की है तो इस प्रकार की कार्यवाहियों को देखते और सुनते हुए क्या यह नहीं कहा जा सकता कि निजाम सरकार की पुलीस को इस प्रकार की कार्यवाही करने और आर्यसमाज के प्रचार कार्य में रोका अटकाने की खुली छुट्टी प्राप्त थी? पुलीस का कर्त्तव्य है कि वह भविष्य में अपने व्यवहार से इस प्रकार की धारणा बनाने का अवसर ही न देवे, इसी में उसका और निजाम सरकार का गौरव है। निजाम सरकार को विदित होना चाहिये कि आर्य्य समाज निजाम राज्य में अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये अब बिल्कुल सजग हो उठा हुआ है।

चिड़गोपा में श्री० म० जनशोकक जी तथा श्री० स्वामी कर्मानन्द जी प्रभृति आर्य महनुभावों ने पुलीस द्वारा डाले गए विघ्नों की परवाह न करते हुए आर्य मन्दिर में प्रचार के अपने अधिकार की



श्री मती महादेवी जी । सुरीनाम

जिन्हों ने ३००० गिल्डर देकर वैदिक धर्म के प्रचारार्थ एक Trust बनवाया है और आशा है कि निकट भविष्य में वह राशि १०००० तक हो जायगी।

जिस बुद्धिमत्ता और नीति से रक्षा की है और जिस साहस से प्रचार कार्य किया है वह न केवल प्रशंसनीय ही है वरन् अनुकरणीय भी है।

## हमारा मद्रास प्रचार

सहयोगी 'इंडियन सोशल रिफ़ार्मर' के २७ अक्टोबर के अङ्क में एक सम्वाद दाता का 'ट्रावनकोर का पत्र' शीर्षक से एक सम्वाद प्रकाशित हुआ है जिस के कुछ अंश इस प्रकार हैं:—

"कुछ नेताओं और नवयुवकों का ध्यान अब हिन्दू धर्म के पुनरुज्जीवन की ओर खिंचने लगा है। गत ३० वर्षों में हिन्दुओं की संख्या में जो भयंकार ह्रास हुआ और ईसाइयों की संख्या में जो आश्चर्य जनक वृद्धि हुई है उसने इस नवीन भाव को जन्म दिया है। इस भाव की जागृति का एक दूसरा तात्कालिक कारण जन-साधारण का बहुसंख्या में ईसाइयत के दायरे में प्रवेश ही है। गत १० वर्षों में इस प्रवेश का रेट ३० व्यक्ति प्रतिदिन के हिसाब से रहा है। आर्यसमाज ने ईसाई धर्म मे दीक्षित हुए हुए हिन्दू भाइयों को शुद्ध करने का प्रशंसनीय यत्न किया है।"

मद्रास प्रान्त में ईसाइयत का जितना व्यापक और गहरा प्रभाव है वह समय २ पर जनता पर स्पष्ट होता रहा है उपर्युक्त आंकड़ों से यह और भी सुस्पष्ट हो जाता है। मद्रास जैसे सुविशाल प्रान्त में, ईसाइयत के गढ़ में आर्यसमाज ने प्रचार का जो काम इस समय तक किया है यद्यपि वह प्रशंसनीय है तथापि इसे मुख्यतः ईसाई मिशन की प्रगतियों तथा उसके प्रभाव के मुक़ाबले में पर्याप्त नहीं कह सकते। मद्रास प्रान्त में आर्यसमाज के ३-४ केन्द्र ईसाई मिशनों के सुविस्तृत जाल के सामने नहीं के बराबर हैं। परन्तु हमें इससे निराश नहीं हो जाना चाहिए। जन साधारण में हिन्दू धर्म की रक्षा का जो भाव जागृत हो रहा है, दलित वर्गों के प्रति जो अधिकांश में ईसाई धर्म के दायरे मे प्रविष्ट होते हैं या हो चुके हैं, भारतवर्ष में जो अनुकूल लहर बह रही है, ईसाई धर्म के प्रति अब जितना कम आकर्षण सर्व साधारण में रह गया है उन सब को देखते हुए समाज-सुधारक समाजों का मार्ग बहुत साफ़ देख पड़ता है।

मद्रास प्रान्त मे आर्यसमाज का जो काम अब तक हुआ या आजकल हो रहा है वह मुख्यतः सार्वदेशिक सभा के अधीन रहा है और इस समय है। सभा अपने परिमित साधनों से मद्रास प्रचार के लिए जो कुछ कर सकती है वह कर रही है। जनता को यदि मद्रास प्रान्त में आर्यसमाज की प्रगतियों को उत्तरी भारत की नाईं-व्यापक और गहरा बनाना अभीष्ट है और अभीष्ट होना चाहिए, तो उसे इस काम पर विशेष ध्यान देना चाहिए और सार्वदेशिक सभा को इस काम के लिए अधिक से अधिक साधन-संपन्न बना देना चाहिए। आर्यसमाज के कतिपय बड़े२ प्रशंसक आर्यसमाज का परिचय देते हुए उसे उत्तरी भारत की सबसे बड़ी श्रेष्ठ और शक्ति-शाली समाज के नाम से सम्बोधित किया करते हैं। हम तो उस दिन की बाट देखते हैं जब आर्यसमाज न केवल उत्तरी भारत दक्षिण भारत, वरन् समस्त भारत और संसार की सर्व श्रेष्ठ और शक्ति शाली समाज के नाम से सम्बोधित होने लगे।

## उपनिवेशों में भारतीय उपदेशक

सहयोगी 'विशाल भारत के अक्टूबर १९३४

के सम्पादकीय स्तम्भों में 'उपनिवेशों में भारतीय उपदेशक' शीर्षक से एक बहुत अच्छी टिप्पणि प्रकाशित हुई है। हम उसे 'सार्वदेशिक' के पाठकों के लाभार्थ यहां उद्धृत करते हैं। जो बातें विदेश में जाने वाले भारतीय प्रचारकों के सम्बन्ध में लिखी गई हैं उनमें से बहुत सी हमारे व्यवसायी प्रचारकों पर पूर्णतया नहीं तो अधिकांश में घटित होती ही हैं। विदेशों की आर्य्य जनता को ऐसे प्रचारकों से सावधान रहना चाहिये। और सार्वदेशिक सभा का प्रमाण-पत्र देख कर ही उन्हें प्लेट फार्म पर खड़ा होने देना चाहिये।

उपनिवेशों में बसने वाले भारतीयों में अपने धर्म और अपनी मातृ-भूमि भारत के प्रति काफ़ी सम्मान और श्रद्धा है, इसीलिए वे भारत से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करते हैं। हमें यह देखकर दुःख होता है कि कुछ अवांछनीय व्यक्ति धार्मिक उपदेशकों का स्वाँग बना कर उपनिवेशों में जाते हैं, और वहां के भारतीयों की श्रद्धा का नाजायज़ फायदा उठाते हैं। ये लोग प्रवासी भारतीयों के सामने अपनी झूठी आत्म-प्रशंसा के पुल बांधकर उन पर रोब जमाते हैं, साथ ही वे भारतीय पत्रों में झूठी और अधझूठी ख़बरें छपाते हैं कि मैंने ऐसा उपदेश दिया, श्रोताओं पर ऐसा प्रभाव पड़ा और मेरा ऐसा स्वागत हुआ, आदि। इस प्रकार यह लोग एक ओर तो प्रवासी भारतीयों को ठगते हैं, और दूसरी ओर भारतीय जनता की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश करते हैं। इस समय दक्षिण-अफ्रिका में ही पांच-छै उपदेशक प्रवासी भारतीयों के उद्धार की आड़ में अपना उद्धार करने की फिक्र में हैं। एक महाशय अपने विषय में लोगों से सर्टिफिकेट लिखाते हैं। उनका तरीक़ा यह है कि वे स्वयं अपने हाथ से अपने लिए सर्टिफिकेट लिखते हैं, फिर अपने किसी चेले की मार्फत उस पर लोगों से दस्तख़त कराकर छपवा देते हैं। एक महाशय ने अपने सर्टिफिकेट में लिखा है—"इतना बड़ा भारतीय विद्वान और उपदेशक इस देश में (दक्षिण-अफ्रिका में) कभी नहीं आया!" जिस दक्षिण-अफ्रिका में स्वर्गीय गोखले के समान राजनीतिज्ञ, श्रीमती सरोजिनी नायडू के समान कवियित्री और राइटआनरेबिल श्रीनिवास शास्त्री जैसा विद्वान वक्ता रह आया हो और जहां महात्मा गांधी जैसे महान्‌पुरुष ने अपने जीवन के अनेक वर्ष व्यतीत किये हों, वहां किसी व्यक्ति का यह दावा धृष्टता की सीमा के भी पार चला जाता है। ऐसे लोग विदेशियों की नजरों में भारत को नीचे गिरानेवाले हैं। हम अपने प्रवासी भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि वे इस तरह के लोगों पर अन्ध-विश्वास न करें। उन्हें चाहिए कि अपने यहां आने वाले उपदेशकों के सम्बन्ध में भारत के किसी विश्वसनीय व्यक्ति या संस्था से पूछताछ कर लिया करें।

## इस्लाम विरुद्ध कांड

'बौम्बे क्रानिकल' के सम्पादक महोदय एक मुस्लिम सज्जन हैं। महाराज नाथूराम के हत्या कांड के विरुद्ध जिन अँगुलियों पर गिने जाने वाले मुस्लिम सज्जनों ने आवाज़ या क़लम उठाई है उनमें से एक आप भी हैं। आपने अपने प्रसिद्ध 'दैनिक' में इसके विरोध में एक लेख लिखा था अब इन्होंने अपने 'दैनिक' में बरेली के एक मुस्लिम सज्जन का इस सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित किया है और इस प्रकार उन्होंने न केवल अपने मुस्लिम वर्ग की ही एक बड़ी सेवा की है वरन् अन्यों की भी की है। इस पत्र के आवश्यक भाग इस प्रकार हैं:—

"मैं अपने नबी की इज़्ज़त की रक्षा के लिए, केवल एक जान दे रहा हूँ। परन्तु मुसलमान इसी काम के लिए लाखों जानें देने के लिए तैयार होंगे।" सरहदी मुस्लिम नवयुवक अब्दुल क़यूम ने ये शब्द उस समय कहे थे जब कराची के सेशन जज ने महाराज नाथूराम की हत्या करने के अपराध में उसे फांसी की सज़ा का हुक्म सुनाया था। ये शब्द इस्लाम के सम्बन्ध में भ्रान्ति उत्पन्न करने वाले हैं। 'धर्म' के नाम में किसी दूसरे धर्म के प्रवर्त्तक का अपमान करना जहां बड़े भयंकर अपराधों में से एक अपराध है, वहां कानून को अपने हाथ में लेने और इस प्रकार का अपराध करने वालों की जान ले लेने की धारणा अत्यन्त ही अत्याचार और तिरस्कार पूर्ण धारणा है। ऐसे मुसल्मान हैं जो इस प्रकार की धारणा में विश्वास रखते हैं। यही धारणा है जो अब्दुल क़यूम के नाथूराम पर घातक आक्रमण और इससे भी बदतर उस धारणा के अब्दुल क़यूम द्वारा समर्थन के लिए ज़िम्मेवार है। यह धारणा इस्लाम की शिक्षाओं और उसके प्रवर्त्तक के आचरण के जो अपने शत्रुओं के प्रति भी दयालु था, और उदार था, विरुद्ध है। सेशन जज ने अब्दुल क़यूम को दण्ड देते हुए कहा कि "किसी भी मुसलमान को, इस्लाम के ज़ाती विधान के अनुसार अपनी इच्छानुसार बर्तने का अधिकार नहीं है।" यदि सेशन जज ने अभियुक्त के वकील की युक्ति के सम्बन्ध में यह बात कही थी तो उन्हें यह भी स्पष्ट कर देना चाहिए था कि 'इस्लाम' प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से अब्दुल क़यूम जैसे व्यक्तियों के दुष्कृत्यों की स्वीकृति देता वा उनका समर्थन करता है, इस्लाम के विरुद्ध इस कथन से ज्यादा भयंकर, और क्या मिथ्या रोप हो सकता है?

सेशन जज के अनुसार अभियुक्त ने महाराज नाथूराम को किसी व्यक्तिगत द्वेष वश नहीं वरन् नबी के प्रति श्रद्धा वश मारा था। अभियुक्त का उद्देश्य भले ही कुछ रहा हो, निश्चय ही उसने इस्लाम धर्म और उस आदर्श के विरुद्ध कार्य्य किया है जिसके लिए अरब का पैग़म्बर जिया और जिसकी उसने शिक्षा दी थी। किसी भी व्यक्ति को जो इस कांड को अक्षम्य नहीं मानता अपने को मुसल्मान कहने का हक़ नहीं है। सचमुच इस प्रकार के जुल्म करने वालों को शहीद स्वीकार करने से बढ़कर इस्लाम की और कोई बड़ी अप्रेषा नहीं हो सकती है।

## 'सियासत' की क्षमा-याचना

'सार्वदेशिक' के गताङ्क में हमने सम्पादकीय स्तम्भों मे लिखते हुए उस घृणित और अत्यन्त अश्लील कविता का ज़िक्र किया था जो लाहौर के उर्दू पत्र 'सियासत' में प्रकाशित हुई थी और जिसमें हिन्दू देवियों पर कमीने आक्रमण किए गये थे और इस सूचना पर भी प्रकाश डाला था कि उक्त पत्र के मालिक और मुद्रक प्रत्येक से पंजाब गवर्नमेंट ने ५००) की ज़मानत मांगी है। अब 'सियासत' के मालिक महोदय ने प्रेस को एक क्षमा-पत्र दिया है। उसे हम उनकी प्रेरणानुसार यहां देते हैं।—

'मैं ४ सितम्बर को प्रातः ७ बजे लाहौर से निकला और २१ सितम्बर को दोपहर के समय वापिस आया। इस बीच में मुझे अमृतसर,

जालन्धर, मेरठ, देहली, शिमला, पंचमढ़ी, बम्बई, पूना इत्यादि जाने का अवसर मिला। मुझे प्रथम बार देहली में मालूम हुआ कि 'सियासत' में कोई ऐसी कविता प्रकाशित हुई है जो हिन्दू भाइयों को बुरी लगी है। शिमला में आकर यह कहानी सुनी और कल अमृतसर में मालूम हुआ कि इस कविता के कारण 'सियासत' मे ज़मानत मांग ली गई है। ज़मानत का कोई हुक्म अभी तक दफ़्तरमें प्राप्त नहीं हुआ और भले ही ऐसा कोई हुक्म आये या न आये मै महान हिन्दू जाति से इस "कविता" के प्रकाशन के लिये क्षमा चाहता हूं। मैंने इस 'कविता' को कल देखा। मेरी दानिस्त में नज़्म बद मज़ाक़ी का नतीजा है और इसको प्रकाशित करके 'सम्पादकीय विभाग' ने हिन्दुओंमे ज्यादा अपना अपमान किया है। परन्तु मुझे यह स्वीकार नहीं कि इस पर हिन्दू धर्म्म पर कोई हमला मौजूद है। मैं समझता हूँ कि किसी गोरीदेवी और रशीदाबेगम जैसी भ्रष्ट स्त्रियों के लिये दोनों जातियों का बदनाम होना हमारी बदनसीबीकी इन्तहा है। इसका इलाज है कि हिंदू या मुसलमान जो स्त्री भी घर मे किसी प्रेमी के साथ निकल जाय उसकी जाति में उसका नाम लेना भी लज्जाजनक समझे। मुझे दुःख है कि कुछ एक हिन्दू समाचार पत्रों के लेखों से उत्तेजित होकर ऐसी घृणित कविता 'सियासत' ने छापी। मैं हिंदू जाति और हिन्दू देवियों का जितना सम्मान करता हूँ उसका अन्दाजा महारानी सीता आदि के जीवन चरित्रों मे जो मेरे क़लम से निकले और 'सियासत' में छपे, लगाया जा सकता है।



स्वर्गीय पं० रामप्रसद जी शुक्ल पारामारिबो—सुरीनाम (डचगायना निवासी) जिन्होंने डच गायना में सबसे प्रथम आर्य्य स० की चर्चा की तथा आ० दिवाकर संस्था में ५०० गिल्डर का दान दिया था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती महादेवी जी ने Trust निर्माण किया है।

मैं फिर अपने हिन्दू भाइयों से बड़े अदब के साथ क्षमा चाहता हूँ कि सियासत में एक ऐसी 'कविता छपी जिसमे उनको दुःख हुआ। मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसी 'कविता' यदि मेरे नोटिस में आती तो हरगिज़ प्रकाशित न होती। सरकार जो चाहे करें मै हिन्दु भाइयो को विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में हिन्दू देवियों के सम्बन्ध मे कोई हृदय विदारक तहरीर 'सियासत' मे प्रकाशित नही होगी। मै हिन्दू पत्र कारों मे प्रार्थना करता हूँ कि वे मेरे इस 'लेख' को अपने मूल्यवान् कालमों में जगह देकर मुझे कृतज्ञ करें।'

हिन्दू धर्म की एक विशेषता उसकी उदार क्षमा प्रवृत्ति है। इस क्षमा-पत्र की मौजूदगी में हिन्दू समाज को अपनी उदार वृत्ति से 'सियासत' के मालिक को क्षमा-प्रदान कर देनी चाहिए। अच्छा होता यदि 'सियासत' के मालिक अपने क्षमा-पत्र में कुछेक विवादास्पद और आपत्ति

जनक बातों को स्थान न देते। हम समझ नहीं सके कि 'शेख का अगवा' नामक घृणित कविता में हिन्दू देवियों पर किए गए कमीने और घृणित आक्षेपों की मौजूदगी में वे इस बात से किस प्रकार इन्कार करने का साहस कर सकते हैं कि हिन्दू धर्म पर जिसमें स्त्रियों की बड़ी धार्मिक महत्ता है आक्रमण नहीं किया गया था। रहा गोरी देवी के सम्बन्ध में। इस क्षमा-पत्र में गोरी देवी के प्रति चरित्र-भ्रष्टता का जो आक्षेप किया गया है वह बिल्कुल ग़लत और अपमान जनक है। गोरी देवी ने एक आततायी मुसल्मान के द्वारा बलात्-भगाए जाने, मुस्लिम गुण्डों के जाल में फँसे रहने और उनके द्वारा सताए, डराए और धमकाए जाने पर भी अपने धर्म और सतीत्व की जिस वीरता से रक्षा की थी और जिसकी प्रामाणिकता फ्रंटियर सरकार के वक्तव्य से हो चुकी है वह संसार पर प्रगट है। फिर रियासत के मालिक सत्य पर पर्दा डालने का व्यर्थ प्रयास क्यों करते हैं?

## वैवाहिक बन्धनों से उपरामता

लाहौरके एक समाचार-पत्रमें एक शिक्षित हिन्दू लड़की की चिट्ठी प्रकाशित हुई है उस चिट्ठीका आशय यह है—

'लड़कों और लड़कियों को अलग २ स्कूल में पढ़ाना व्यर्थ है। दोनों को एक ही साथ एक ही जगह पढ़ना चाहिए। अनाचार वृद्धि से नहीं डरना चाहिए। यदि लड़के और लड़कियां आपस में मिल कर हंसते और खेलते हैं तो इस में कोई हानि नहीं। विज्ञान ने संतान निग्रह के कितने ही तरीके बतला दिए हैं।' कुछ दिन हुए एक और लड़की ने छपवाया था-'जैसे पूंजी पति मज़दूरों का खून चूसते हैं वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों का खून चूसते हैं। दूसरे शब्दों में वे उन्हें विवाह बन्धन में डालकर नष्ट कर देते हैं। तमाम चकले (वेश्यालय) विवाह-बन्धन का कुपरिणाम हैं। यदि विवाह प्रथा उठ जाय तो संसार में एक भी चकला न रहे। यह विवाह-प्रथा मूर्खता पूर्ण और हानिकर भी है।"

ये विचार हमारी उन शिक्षिता कही जाने वाली बहिनो के हैं जिन पर देश और समाज की आशाएं लगी हैं और जिन पर देश-समाज का भाग्य निर्णय आश्रित है। यदि इन बहनो के विचारों को स्वीकार करते हुए उन्हें विवाह बन्धन से मुक्त कर दिया जाय या स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन-यापन की स्वतन्त्रता देदी जाय तो निश्चय ही मनुष्य और पशु-समाज में भेद करना कठिन हो जाय, विवाह की मर्यादा उठा देने से चकले बंद न होंगे किन्तु प्रत्येक घर चकला बन जायगा। जिन देशों में इस प्रकार के विचारों को प्रोत्साहन मिलता रहा है उनकी दुर्दशा उनकी सदाचार-हीनता, जीवन की अशान्ति, जीवन की प्रतियोगिता से हम परिचित हैं और यह भी जानते हैं कि उनमें से बहुत से देश इन विचारों के कारण उत्पन्न हुई परिस्थिति से ऊब कर शान्ति की खोज में हैं और देश और समाज का पुनर्निर्माण कर रहे हैं फिर भी हम यदि कोई सबक़ न सीखें और आंखें बन्द किए हुए इस प्रकार के विचारों को जन्म देने वाली संस्कृति या लहर में बहे चले जावें तो इस से बढ़ कर देश और समाज का और क्या दुर्भाग्य हो सकता है। ये विचार बड़े घृणित हैं हम इन का घोर विरोध करते हैं। पश्चिमी लहर में बहे जाने वाले देश के मुख्यतः पंजाब के नवयुवकों और नवयुवतियों के भविष्य की कल्पना करके हमें बड़ा दुःख होता है। देश के नेताओं का इस ओर विशेष रीति से ध्यान

आकर्षित होना चाहिए। हमें सन्तोष इतना ही है कि ये विचार अभी सीमा के भीतर हैं। यदि लोगों ने इन की उपेक्षा की तो कालान्तर में व्यापक रूप प्राप्त करके इनके कारण जो दुष्परिणाम सामने आयेंगे उन्हें देख और सुनकर रोमाञ्च हो जायगा। फिर भी हमें वैवाहिक कुरीतियों, बाल, अनमेल, वृद्ध विवाह आदिकों का अन्त करने में विशेष यत्न करना चाहिए और विवाह जैसे पवित्र सम्बन्ध को अधिकाधिक पवित्र और आदर्श बनाने और रखने में यत्नवान रहना चाहिए।

## श्री लाला जी की याद

१७ नवम्बर का दिन वह दिन है जिस दिन स्वनामधन्य श्री० लाला लाजपतराय जी ने मानवी लीला संवरण की थी और देश प्रेम की वेदी पर अपने प्राणों की बलि दे कर शहीदों की नामावलि में दिव्य स्थान प्राप्त किया था। किसी वीर की सेवाओं और उपकारों से उपकृत समाज या देश का यह सर्व-प्रथम कर्तव्य है कि वह उस वीर की पुण्य स्मृति में वीर पूजा का अनुष्ठान करे, उसके जीवन, जीवन के मिशन और उन आदर्शों से प्रकाश ग्रहण करे जिन के लिए वह वीर जिया और मरा हो, तथा उस शहीद ने जिस मार्ग का अपने रक्त से निर्माण किया हो उसका अनुसरण करे।

स्वर्गीय लाला जी ने देश और समाज की बड़ी सेवायें की हैं और उन्होंने भारतीय राष्ट्र के निर्माण में बहुमूल्य योग दिया है और अपनी शहादत से देश की स्वतन्त्रता के मार्ग का निर्माण किया है। भारतीय राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह १७ नवम्बर को उस वीर की पुण्य स्मृति में वीरपूजा का अनुष्ठान करे।

स्व० लाला जी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के जन्म जात नेता, प्रसिद्ध वक्ता, उच्चकोटि के साहित्य-सेवी, उत्साही और मौलिक समाज-सुधारक और अच्छे शिक्षा-विशेषज्ञ थे क्या राजनीति में, क्या साहित्य में, क्या समाज-सुधार में क्या शिक्षा में, देश की भिन्न भिन्न अनेक प्रगतियों में उनका प्रवेश था और इन सब में उनकी सेवायें स्मरणीय हैं। निस्सन्देह श्री लाला जी का व्यक्तित्व एक संस्था थी। उनके व्यक्तित्व की तसवीर को हम जिस ओर से देखते हैं, उधर से ही उस में हमें एक नवीन स्फूर्ति, नया जीवन और भव्यता दीख पड़ती है।

श्री लाला जी के जीवन का एक अच्छा बड़ा भाग आर्यसमाज में व्यतीत हुआ था। आर्यसमाज के उन



स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी

के ऊपर असंख्य उपकार थे। दीनबन्धु सी० एफ० एण्डरूज् के शब्दों में आर्यसमाज ने ही उन्हें मौलिक समाज सुधारक, और राजनीति विशारद बनाया और सब से ज्यादा उन्हें पीड़ित समाज का मित्र बनाया था। लाला जी ने आर्यसमाज की और मुख्यतः दलित-समाज की जो सेवायें कीं, वे विशेष स्थान रखती हैं। यद्यपि वीरगति को प्राप्त होने से बहुत पहले श्री लाला जी की जीवन धारा बदल गई थी और वे आर्य समाज के कार्य क्षेत्र से क्रियात्मक रूप से दूर हो गए थे फिर

जी वे जीवन-पर्यन्त ऋषि दयानन्द को अपना गुरु मानते और घोषणा करते रहे थे। आर्यसमाज के प्रति उनका अटूट प्रेम था और आर्यसमाज के गौरव की रक्षा के लिए वे सदैव उद्यत रहते थे। जब १९२४ में म० गाँधी ने आर्यसमाज की अनुचित समालोचना की थी तो लाला जी ने सुदूर जर्मनी से उस समालोचना का विरोध किया था। आर्यसमाज के प्रति उन की निष्ठा और त्याग के बहुत से उदाहरण पेश किए जा सकते हैं।

उन्होंने दलितों की सेवा लगभग निरन्तर २५-३० वर्ष पर्यन्त की और इस सेवा में अपना समय, अपना पुरुषार्थ और अपना धन भी खर्च किया था। देश और आर्यसमाज को अपने इस वीर पर विशेष अभिमान होना चाहिये क्योंकि उसने अपने आचरण से इन दोनों की ख्याति को बहुत बढ़ाया था और उनका निर्वाण-उत्सव भारतीयमात्र को बड़े उत्साह और समारोह के साथ मनाना चाहिये।

देहली की 'अछूतोद्धार' कमेटी लाला जी की पुण्य स्मृति में १० से १७ नवम्बर तक 'अछूत-सप्ताह' मना रही है।

सप्ताह का प्रोग्राम हमारे सामने है। प्रोग्राम अत्यन्त रोचक और रचनात्मक है। हम इस सप्ताह की सफलता की कामना करते हैं और आशा करते हैं कि जन-साधारण इस सप्ताह को सफल बनाने के लिये अछूतोद्धार कमेटी को पूरा २ सहयोग देगा।

## शंसनीय निश्चय

समाचार मिला है कि संयुक्त प्रान्त की सरकार ने लड़कियों के लिए प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य कर दी है और इसके सम्बन्ध में आवश्यक हिदायतें जारी कर दी हैं।

संयुक्त प्रान्तीय धारा-सभा का यह निश्चय प्रशंसनीय है आशा है कि अन्य प्रान्तों की धारा सभाएँ संयुक्त प्रान्तीय धारा सभा का इस सम्बन्ध में अनुकरण करेंगी।

## आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का कार्यालय अग्नि की भेंट

हमारे सामने आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के मन्त्री श्री० बा० उमाशंकर जी वकील का 'प्रेस' के नाम एक वक्तव्य है जिसमें उन्हों ने यह दुःख जनक समाचार दिया है कि संयुक्त प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा के दफ्तर में फ़तहपुर में ता० २७—१०—३४ को रात्रि के समय आग लग गई और प्रतिनिधि सभा का रिकार्ड फ़र्नीचर इत्यादि अग्नि की भेंट हो गए यद्यपि सभा के कैशबुक इत्यादि हिसाब के काग़ज़ात बच गए हैं। उपर्युक्त समाचार से आर्य जनता को विशेष दुःख होगा। यह दुर्घटना इस बात का तक़ाज़ा करती है कि इस मामले में पूरा २ अनुसन्धान किया जाय।

## कटक में पशुबलि का निषेध

कटक से यह हर्ष समाचार मिला है कि ब्राह्मणों के साथ वाद-विवाद करने और प्रभावशाली हिन्दुओं से परामर्श कर लेने के बाद रणपुर (उड़ीसा) के शासक ने एक घोषणा के द्वारा देवी देवताओं के सामने पशुओं की बलि निषिद्ध ठहरा दी है। हम इस घोषणा का हृदय से स्वागत करते और इसके लिए रणपुर के शासक को बधाई देते हैं। धर्म के नाम पर होने वाली इस प्रकार की अमानुषिक कुप्रथाओं का जितनी जल्दी अन्त हो उतना ही अच्छा। इसी में मानवता के गौरव की रक्षा और समाज का कल्याण है।

---

# मूर्तिपूजा का प्रचार कैसे बढ़ा ?

( लेखक—
श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज )

भारतवर्ष में मूर्तिपूजा का इतना प्रचार कैसे हुआ ? न तो वेद उसे विहित मानते हैं, न उपनिषद् और न दर्शनों में उसका विधान पाया जाता है। फिर इस प्रचार का कारण क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर कौटिलीय अर्थ शास्त्र के पढ़ने से मिलता है। उस समय यह ( मूर्तिपूजा ) राजा के कोष की आय वृद्धि के लिए फैलाई जाती थी यह बात उस अर्थ शास्त्र से साफ़ तौर से प्रकट हो जाती है। इस अर्थ शास्त्र में लिखा है कि धन कमाने के लिए राज्य की ओर से मूर्तिपूजा का प्रचार निम्न भांति करना चाहिए:—

( १ ) "किसी भी पाखंड (धर्म पंथ) के संघ का धन या ऐसा देवधन जिसे वेद पढ़े हुए ( श्रोत्रिय ) न भोगते हों, कृत्यकार ( हथकंडों में उस्ताद ) लोग यह कह कर खज़ाने में पहुँचा देवें कि हम ने वह धन किसी ऐसे के यहां रक्खा था जो मर गया, या ऐसे घर में रक्खा था जो जल गया"। यह एक बात हुई अब दूसरी सुनिए:-

(२) "देवताध्यक्ष दुर्ग और राष्ट्र के देवताओं का जितना धन हो उसे एकत्र करके कोष बनालें और वैसे ही ( राजकीय कोष में ) ले आवें।" तीसरी बात बड़ी मनोरंजक है:—

( ३ ) "रात ही रात में कहीं पर देवमन्दिर या चितास्तूप या कोई सिद्ध स्थान या कोई अद्भुत घटना खड़ी करके वहां ( तीर्थ ) यात्रा और समाज ( मेला ) लगा देवे और उनसे धन कमावें"। और सुनिए:—

( ४ ) "यदि चैत्य या बाग़ के वृक्ष में बिना समय फूल फल आ जावें तो देवता का वहां आ जाना प्रसिद्ध करें।" इस से भी बढ़कर अगला साधन है:—

( ५ ) "वृक्ष ( के खोखले भाग ) में किसी मनुष्य को छिपाकर उसके द्वारा राक्षस का भय दिखला कर, सिद्ध का स्वांग बनाये हुये लोग, पुर और देशवासियों के सुवर्ण से, उस का प्रतीकार करावें।" इसके सिवाः—

( ६ ) "सोना भेंट चढ़ाने पर, सुरंग वाले कुएँ में नाग दिखलावें जिस का सिर बँधा रहे श्रद्धालुओं को नाग की प्रतिमा में, जिसमें भीतर छेद हों, या मन्दिर या समाधि के छेद में, या बल्मीक ( चींटी या दीमक के भिट्ट ) के छेद में प्रत्यक्ष नागका दर्शन करावें, पहले उसे ( नागको ) खिला सुस्त बना देवें"। अन्त की बात बड़े मज़े की है:—

( ७ ) "जो श्रद्धावान ( तात्पर्य अंध विश्वासी से है ) न हों ( और क्यों और कैसे आदि का प्रश्न करें तो ) उनके आचमन और छींटा देने के पानी में कोई ( नशे का ) रस मिला कर ( बेहोश होने पर) देवता का कोप बतावें या किसी लावारिस को सांप से कटवाकर अशकुन मिटाने के

लिए शान्ति के बहाने से कोष में धन इकट्ठा करें। (कौटिलीयं अर्थ शास्त्रम् पृष्ठ २४४ (द्वितीय संस्करण) प्रकरण ६० कोशाभि संहरणम्)।

जिस प्रकार कृषि आदि पर कर लगाने से राज्य को आय हुआ करती है उसी प्रकार चन्द्रगुप्त के ज़माने में मूर्ति पूजा का भी एक विभाग था जिसमे राजा के कोष में उपर्युक्त ढंगों से आय हुआ करती थी। जो छल और कपट की बातें धन संग्रह करने के लिए ऊपर लिखी गई हैं आज भी वे किसी न किसी रुप में पैसा बटोरने के लिए प्रचलित हैं। उन सब के आविष्कारक कौटिल्य महोदय ही हैं, शायद इसीलिए इन का नाम विष्णुगुप्त के सिवा, गुण कर्मानुकूल कौटिल्य भी रक्खा गया था। अस्तु—इन बातों के प्रचार से जितना अंध विश्वास बढ़ा और जितना देश वासियों का अनिष्ट हुआ कदाचित कौटिल्य महाराज उस समय इसका अन्दाज़ा न कर सके होंगे अन्यथा अपनी ही संतान के मार्ग में इस प्रकार से कांटे न बोते—फिर भी एक बात इसमें प्रशंसा की पाई जाती है कि, जो धन वेद के विद्वानों के काम में आता हो उस का किसी भी प्रकार से अपहरण नहीं करना चाहिए, जिस से स्पष्ट है कि आचरण वेद विरुद्ध होते हुए भी वेद का मान उस ज़माने में भी किया जाता था।

# सृष्टि की समस्या

( ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम० ए०,
चीफ जज टिहरी )

गत श्रीमद्दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी के अवसर पर 'आर्य्य विद्वत सम्मेलन' में विद्वान लेखक ने 'पंचकोश और सूक्ष्म जगत्' शीर्षक निबन्ध पढ़ा था। निबन्ध अत्यन्त विद्वत्ता तथा खोजपूर्ण है। हम इस अङ्क में निबन्ध के 'सृष्टि समस्या' शीर्षक को उद्धृत करते हैं। यह निबन्ध अंग्रेज़ी और हिन्दी के पुस्तक रूप में छप गया है। —सम्पादक

ऋग्वेद का एक मन्त्र इस प्रकार है: —

"को अद्धा वेद क इह प्रवोचत कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः। अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आ बभूवः॥"

ऋ० अ० ६ व० १७ मं० ६

यहाँ कौन जानता है, कौन कह सकता है कि यह विविध प्रकार की सृष्टि कहाँ से आई? देव भी इस की रचना के पीछे से हैं। तो कौन जानता है कि यह सृष्टि कैसे हुई?

जो प्रश्न इस मन्त्र में ऐसी स्पष्टता से किया गया है, वह किसी न किसी रूप में प्रत्येक मनुष्य के मन मे— चाहे वह मूर्ख हो या पंडित हो—उठता रहता है, हर एक धर्म्म को इसका उत्तर देना आवश्यक है। यहूदी, ईसाई और मोहम्मदी मत इसका उत्तर यह देते हैं कि यह सृष्टि केवल ईश्वर की आज्ञा से अभाव से भाव में आई; और जब प्रलय का समय आवेगा, तो फिर सदा के लिए अभाव में लीन हो जायगी। इस सृष्टि से पहिले कोई सृष्टि न थी और न इसके पीछे फिर कोई होगी।

## अभाव से भाव

अभाव से किसी वस्तु की उत्पत्ति विज्ञान (Science) और युक्ति के विरुद्ध है। विज्ञानसे जाना जाता है कि जो वस्तु अब है, वह पहले भी किसी न किसी रूप में अवश्य थी। एक छोटे से बीज से बड़ा वृक्ष हो जाता है, परन्तु उस वृक्ष में जितने परमाणु हैं, वे सब पहले वायु, जल और पृथ्वी के रूप में वर्तमान थे। उस वृक्ष की लकड़ी को जला दिया जावे, तो थोड़ी सी भस्म रह जाती है, परन्तु उसके शेष परमाणु धूम रूप से वायु मे मिल जाते हैं। उनका अभाव नहीं होता। हमारे शास्त्रों का यही सिद्धान्त है। सांख्य दर्शन में कहा है —

"नाऽवस्तुनो वस्तु सिद्धिः" (सांख्य सूत्र ७८)

अर्थ—जो पदार्थ नहीं है उससे कोई पदार्थ नहीं बन सकता।

गीता मे यह सिद्धान्त और भी स्पष्ट शब्दों में बतलाया गया है:—

'नासतो विद्यते भावोनाऽभावो विद्यते सतः।
उभयोरपि दृष्टोन्तस्त्वनयोस्तत्वदर्शिभिः॥"

(गीता अ० श्लोक १६)

अर्थ—जो पदार्थ नहीं है, उसका भाव नहीं हो सकता, और जो है, उसका अभाव नहीं हो सकता।

तत्वदर्शियों ने इन दोनों के सार को समझा है।

## सृष्टि का विकास

प्राकृत विज्ञान (Physical science) से यह बात सिद्ध हुई है, कि इस सृष्टि का विकास परमाणुओं से हुआ है, और इसकी रचना में बहुत समय लगा है। विज्ञान वेत्ताओं (Scientists) के अनुसार आकाश में जो असंख्य तारागण रात्रि के समय दिखलाई देते हैं वे ( थोड़े से ग्रहों (Planets) को छोड़ कर ) सब बड़े बड़े सूर्य्य हैं, जिनमें से बहुत से हमारे सूर्य्य से भी बहुत बड़े हैं। जिस प्रकार यह पृथ्वी और मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर आदि ग्रह हमारे सूर्य्य के अधीन होकर उसकी परिक्रमा करते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक सूर्य्य के चारों ओर और पृथ्वी के समान अनेक लोक लोकान्तर घूमते हैं, जो बहुत दूरी के कारण हमको यहां से दिखाई नहीं देते। हर एक सूर्य्य को उन ग्रहों सहित जो उसकी परिक्रमा करते हैं, सूर्य्य मण्डल (Solar system) कहते हैं। आकाश में हमारे सूर्य्य मण्डल जैसे और उस से भी बड़े अनगिनत सूर्य्य मण्डल हैं।

विज्ञान (Science) के अनुसार प्रत्येक सूर्य्य मण्डल आरम्भमें एक वायु का गोला (Nebula) था, जिसका केन्द्र वह सूर्य्य और परिधि वहां तक थी, जहाँ तक उसका दूर से दूर ग्रह है। एक गोला अपनी धुरी पर घूमता था। सहस्त्रों वा लक्षों वर्ष पीछे, घूमने से उसके परमाणु पास पास आए, तो उनके संघर्ष से वह गोला अग्निरूप हो गया, जैसा कि अब केन्द्र सूर्य्य है। कुछ समय पीछे सृष्टि नियमों के अनुसार इस गोले के बाहरी भाग अलग होकर छोटे-छोटे गोले बन गये, और वह केन्द्रीय सूर्य्य की उसी धुरी पर परिक्रमा करते रहे। इस प्रकार ग्रहों की रचना हुई। यह ग्रह केन्द्रीय भाग की अपेक्षा बहुत छोटे होने के कारण ठण्डे होते गए, परन्तु पृथ्वी के समान ठोस (Solid) होने से पहले यह बहुत समय तक जल रूप (Liquid-state) में रहे, अर्थात् उनमें सोना, चांदी, लोहा, पत्थर आदि जो पदार्थ हैं। वे यद्यपि इतने उष्ण नहीं थे कि उनमें अग्नि के समान चमक हो, तो भी वे तरल अवस्था State of Frosion में थे। पृथ्वी के गर्भ में अब भी अग्नि रूप वा द्रव रूप पदार्थ हैं, जो ज्वालामुखी पर्वतों से निकलते हैं और उन्हीं के कारण भूकम्प होते हैं। ज्यों-ज्यों ग्रहों की गर्मी निकलती गई; वे अन्तत पृथ्वी (Solid) होगए। उसके पीछे उनमें औषधि, अन्न, बनस्पति और फिर मत्स्य, कच्छप, कीट, पशु आदि जीव पैदा हुए। पीछे मनुष्य पैदा हुए।

## प्राचीन ग्रन्थों में सृष्टि विकास

ऊपर लिखे सिद्धान्त को योरोप में लगभग १०० वर्ष हुए सबसे पहले Laplace (लापलेस) नामक विद्वान् ने सिखाया, परन्तु हमारे प्राचीन प्राचीन शास्त्रों में यह सिद्धान्त पहले से ही पाया जाता है। तैत्तिरीय उपनिषद् की ब्रह्मानन्द वल्ली में उसका संक्षिप्त से इस प्रकार वर्णन है:—

"तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः,
आकाशाद् वायुः वायोरग्निः, अग्नेरापः।
अद्भ्यः पृथवी, पृथिव्या ओषधयः,
ओषधिभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः रेतसः, पुरुषः" ॥
तैत्तिरीय २ । १

अर्थ—उस परमात्मा से पहले आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायुसे अग्नि, अग्निसे जल, जलसे पृथिवी, पृथिवीसे ओषधियां ( अर्थात् जड़ीबूटी आदि ), ओषधि से अन्न (बनस्पति आदि), अन्न से जीव और जीवसे पीछे मनुष्य हुआ।

## आकाश से स्थूल पदार्थों की उत्पत्ति

कुछ लोग आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी को पंच तत्व कहते हैं, परन्तु वास्तव में उनका ठीक नाम पंच महाभूत हैं। अर्थात् वे पांच मुख्य अवस्थाएं प्राकृत पदार्थों की हैं, जो दृश्य जगत में पाई जाती हैं। अंग्रेजी विज्ञान (Physical science) में प्राकृत पदार्थों की तीन अवस्थाएं बतलाई गई हैं, अर्थात् १ वायव्य (Gaseous), २ तरल वा द्रव (Liquid), और ३ दृढ़ वा ठोस (Solid) पंच भूत रूपी विभाग उसी प्रकार का है परन्तु उससे अधिक पूर्ण है। आग्नेय (Igneous) अवस्था वायव्य और जल ( अथवा तरल ) के बीच की अवस्था है। इन चार अवस्थाओं का वर्णन ऊपर लिखे सृष्टि विकास के वर्णन में आचुका है। पांचवी अवस्था अर्थात् आकाश (Ether) शेष चारों अवस्थाओं से सूक्ष्मतर और वायव्य की पहली अवस्था है। इसका ज्ञान पश्चिमीय विद्वानों को थोड़े ही समय से हुआ है। अब विज्ञानवादी इस बात को मानने लगे हैं, अन्य प्राकृत पदार्थ आकाश (Ether) से उत्पन्न हुए। परमाणुओं के विषय में अब अधिकतर यह माना जाता है कि वे (Electrons) इलैक्ट्रौन से बने हैं। इलैक्ट्रौन के सम्बन्धमें इंगलिस्तान के सुप्रसिद्ध विज्ञान के आचार्य Sir oliver Lodge (सर औलीवर लौज) अपने पुस्तक 'प्राण और प्रकृति' (Life and Matter) में इस प्रकार लिखते हैं—

The only surmise which at present holds the field is that they are knots, or twists, or vortices, or some sort of either static or kinetic modifications of the ether of space. ( Page 15 )

अर्थ—अब तक जो विचार अधिक माना जाता है, वह यह है कि ये ( अर्थात् परमाणु ) आकाश वा ईथर (Ether) की ग्रन्थियों वा उसके स्थिर वा जंगम किसी प्रकार के परिवर्तन रूप हैं।

---

# भारतीय समाज में प्रचलित बुराइयां
## और
# उनका इलाज

( श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति बंगलौर )

( गताङ्क से आगे )

### ( २ ) अस्पृश्यता का रोग

जन्म सिद्ध जाति का ही एक फल यह अस्पृश्यता या अछूतपन का रोग है। वेद में सर्वत्र ४ ही वर्णों का वर्णन है। मनुस्मृति में भी चार वर्ण बताते हुए 'नास्ति तु पञ्चमः।' कोई पञ्चमवर्ण नहीं है ऐसा अ० १० श्लो० ४ में स्पष्ट ही कह दिया है। वेद में पञ्चजन शब्द का कई स्थानों पर प्रयोग पाया जाता है पर उसके दो अर्थ हैं। एक तो शूद्रों के 'सच्छूद्र' 'असच्छूद्र' ऐसे दो भेद करने पर मनुष्य समाज के पांच विभाग कहे जा सकते हैं अथवा जैसा कि यास्क मुनि कृत निरुक्त में बतलाया गया है पञ्चजन से तात्पर्य ४ वर्णों और निषाद अथवा जंगली से है।

'निषण्णमस्मिन् पापकम् ।' निरु० ३ । २ । ५ ॥

जिसके अन्दर पाप मानो जमा हुआ हो ऐसे पापी पुरुष को भी 'निषाद' के नाम से कहा जा सकता है चाहे उसका जन्म किसी भी कुल में हुआ हो। वेद में पञ्चजनों का मिलकर भगवान् की स्तुति और अग्नि होत्र करने का विधान है। उदाहरणार्थ निरुक्त में ही ऋगवेद १०। ५४। ३ का निम्नलिखित मन्त्र उद्धृत किया गया है—

तदद्य वाचः प्रथमं मंसीय येनासुराँ अभि देवा असाम। ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्चजना मम होत्रं जुषध्वम् ॥

इस मन्त्र का भावार्थ यह है कि जिस श्रेष्ठ वेद वाणी के द्वारा देव लोग असुरों पर विजय करते हैं उसी वाणी के द्वारा उत्तम अन्न का सेवन करते हुए और यज्ञिय अर्थात् पवित्र बनते हुए हे पञ्चजनो! सबके सब मनुष्यो तुम परमेश्वर की स्तुति करो। पञ्चजन के अन्दर यदि पञ्चम वर्ण की थोड़ी देर के लिये कल्पना मान भी ली जाये तो भी इस प्रकार पांचों वर्णों को मिलकर भगवान् की स्तुति करनी चाहिए। यह वैदिक आदेश बताता है कि किसी वर्ण को अस्पृश्य न मानना चाहिये। हमें सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिए, जो सब प्राणियों में परमात्मा को और परमात्मा को सब प्राणियों में देखता है वह कभी किसी से घृणा नहीं करता।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
( यजु० ३६।१८ )

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानु पश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥
( यजु० ४० । ६ )

ऐसा विधान करने वाले वेदों में अस्पृश्यता के लिये कोई भी आधार पाया जाता है यह कहने का किसी कट्टर से कट्टर सनातन धर्मी तक ने साहस नहीं किया। कुछ अर्वाचीन स्मृतियों के प्रमाण पेश कर दिए जाते हैं जिनके विषय में यहां इतना कहना पर्याप्त है कि वेद विरुद्ध होने के कारण वे इस विषय में अमान्य हैं, साथ ही स्मृतियों में जिन लोगों के साथ सामाजिक व्यवहार का निषेध किया गया है उनकी कोई विशेष जाति नहीं पर वे ऐसे लोग हैं जिनका उपनयनादि संस्कार २४ वर्ष तक भी नहीं हुआ और जो सदाचार से च्युत हो गये हैं। उदाहरणार्थ चांडाल का लक्षण करते हुये अत्रि स्मृति में कहा है—

क्रियाहीनश्च मूर्खश्च, सर्वधर्मविवर्जितः ।
निर्दयः सर्वभूतेषु, विप्रश्चाण्डाल उच्यते ॥

अर्थात् वह ब्राह्मण कुलोत्पन्न पुरुष भी जो यज्ञादि क्रिया रहित मूर्ख अधार्मिक और भूतदया से रहित है उसी को चाण्डाल कहते हैं। मनु ने भी निम्न श्लोक में उपर्युक्त बात का ही निर्देश किया है—

अनार्यता निष्ठुरता, क्रूरता निष्क्रियात्मता ।
पुरुषं व्यञ्जयन्तीह, लोके कलुषयोनिजम् ।
मनु० १ । ५८ ॥

यहां यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि समाज को सुरक्षित रखने के लिये और अधार्मिकों को पुनः धर्म मार्ग पर लाने के लिये शास्त्रकारों ने सामाजिक बहिष्कार के साधन को कुछ समय के लिए काम में लानेकी आज्ञा दी थी। इस प्रकारके बहिष्कृत पुरुषोंको भी फिर प्रायश्चित्त कराकर शुद्ध कर लिया जाता था और उनकी सन्तान को पतित नहीं समझा जाता था। जैसे कि पहले दिखाया जा चुका है।

जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः श्वपाक्याश्च पराशरः॥

इत्यादि पुराणों के श्लोकों के अनुसार व्यास मुनि के पिता पराशर एक चाण्डाली स्त्री के और स्वयं व्यास एक मल्लाह की लड़की के पुत्र थे। पर उन दोनोंको कोई भी अस्पृश्य नहीं समझता। ऐसे ही अन्य सैकड़ों उदाहरण मतंग ऋषि आदि के प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इसलिए अस्पृश्यता के वेदादि सत्य-शास्त्र विरुद्ध होनेमें सन्देह नहीं।

वर्तमान समय में भी अस्पृश्य कहलाने वाले लोगों के गोत्र और उनकी उपजातियों के नाम देखने से पता लगता है कि इन में से बहुतों का सम्बन्ध द्विजों के उच्च कुलों से है। उदाहरण के तौर पर इन में से कइयों के विश्वामित्र, काश्यप आदि गोत्र हैं। गुजरात, बम्बई की तरफ़ के अस्पृश्यों की अभी तक भी गायकवाड़, त्रिभुवन, भौंसले, यादव वा जादव, चौहान, काले, खरे, सौलंकी, प्रमार, आदि जातियां हैं। यह स्पष्ट है कि इन में से चौहान, प्रमार, सोलंकी इत्यादि राजपूतों की जातियों में ही इन का किसी कारण से पतन हुआ था ऐसा प्रायः अब माना जाता है कि युद्ध में हारे हुए सैनिकों को मुसलमान विजेता ज़बर्दस्ती भंगी इत्यादि के कामों में लगा लिया करते थे। और अस्पृश्यता की उत्पत्ति कैसे भी हुई

हो इसमें संदेह नहीं हो सकता कि इसका परिणाम आर्यजाति के लिए बड़ा ही हानिकारक हुआ है। भारत की जनसंख्या को देखने से पता लगता है कि सन् १८८१ में जहां हिन्दुओं की संख्या कुल आबादी में ७४ प्रति शतक थी वहां १९११ में वह बढ़ने के स्थान से ५ प्रतिशतक घट कर ६९ प्रतिशतक रह गई और १९२१ में १ फीसदी और घटकर संख्या ६८ प्रतिशतक ही रह गई। यह घटती कैसे हुई इस के विषय में ज़्यादह विचार करने की आवश्यकता नहीं। जिन लोगों को अछूत मान कर हिन्दू लोग कुत्ते बिल्लियों से भी बुरा व्यवहार करते हैं, दक्षिण भारत के ब्राह्मण जिनकी दृष्टि से भी अपने तथा अपने देवी देवताओं को भ्रष्ट मानते और ग्राम सड़कों पर चलने तक के अधिकार से कई स्थानों पर उन्हें वञ्चित रखते हैं, वही लोग ईसाई पादरियों के चंगुल में फँस जाते हैं और तब बड़े बड़े टीकाधारी पण्डितों से भी निःसंकोच हाथ मिलाने का अधिकार पा लेते हैं। अस्पृश्य जातियो के ईसा मूसा के नाम तक को न जानते हुए ईसाई मत की शरण में आने वा Conversion का यह सिलसिला दक्षिण भारत में अभी तक चल रहा है। यद्यपि आर्यसमाजादि के यत्नों से उस का ज़ोर अब बहुत कम हो गया है। हमारे हिन्दू भाइयों की यहां मूर्खता नहीं तो क्या है कि जब तक एक व्यक्ति राम कृष्ण और हिन्दू देवी देवताओं को मानने और चोटी धारण करने वाला गोरक्षक हो तब तक तो उसे अछूत कहकर उसे दो फ़र्लांग के अन्दर आने की आज्ञा न दें और जब वही आदमी चोटी कटवा कर मुसल्मान वा ईसाई हो जाए तब उस के साथ खुशी से हाथ मिलालें। यह वस्तुतः आत्मघातक प्रथा है इस का जितनी जल्दी हो सके अन्त करना चाहिए। भारत के प्रसिद्ध विद्वान् और देशभक्त लोकमान्य तिलक ने १९१८ में अखिल भारतीय हरिजन उद्धार सम्मेलन ( All India Depressed Class Mission Conference ) में भाषण करते हुए ठीक कहा था कि "It is a sin against God to say that a person is untouhable."अर्थात् यह कहना कि एक आदमी अस्पृश्य है भगवान के विरुद्ध एक पाप करना है क्योंकि वह भी भगवान् का ही पुत्र है *। ब्राह्मणों तथा उच्च जाति के लोगों का कर्तव्य है कि इन अस्पृश्य कहलाने वाले भाइयों के अन्दर अपवित्रता, मद्य, मांस सेवनादि जो बुरे दोष आगए हैं उनको पहले दूर करने का यत्न करें। उनके बालकों की शिक्षा और आर्थिक उन्नति के लिए प्रयत्न करें उन्हें ईश्वर भजन इत्यादि की आदतें डालने को कहें, ऐसा प्रेमपूर्वक करने से निश्चय है कि कुछ ही वर्षों में अस्पृश्यता का रोग हमारे समाज से उठ जाएगा। यदि सौ दो सौ आदमियों को इस तरह अस्पृश्य समझकर हमारे हिन्दू समाज ने अलग कर दिया होता तो भी कोई बड़ी चिन्ता

---

* देखो Anti-untouchability Compaign—the Report of the Depressed Class Mission Conference held in Bombay 1918 under the presidency of the Gaekwarh the Maharaja of Baroda.

की बात न थी, पर जब इस बात को ध्यान में रखते हैं कि इनकी संख्या ५॥ करोड़ से कम नहीं तो हमें इस अस्पृश्यता की भारी सामाजिक बुराई को दूर किए बिना हिन्दू समाज का भविष्य बड़ा ही अन्धकार पूर्ण दिखाई देता है। जो समाज अपने पैरों को खुद ही परे काटकर फैंक दे वह कैसे देर तक सुख पूर्वक जी सकता है? अपने ही भाइयों को सदा के लिए दासता की जंजीरों में बाध कर रखने में जो समाज लज्जित नहीं होता वह किस मुख से स्वराज्य का नाम ले सकता है? इसलिए धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक प्रत्येक दृष्टि से समाज संरक्षण के लिए अस्पृश्यता के कलङ्क को दूर करना हमारा आवश्यक कर्तव्य है। अच्छी संगति में न रहने और धार्मिक शिक्षा के नितान्त अभाव से जो दुर्व्यसन इन दलित जातियों के अन्दर कई सदियों से आ गए हैं उसके लिये भी उच्च जात्याभिमानी लोग ही ज़िम्मेवार हैं। दलितोद्धार के कार्य मे पर्याप्त सफलता जो उत्तर भारत में प्राप्त हुई है वह इस बात का प्रमाण है कि कुछ ही वर्षों में ये लोग सब बातों में उच्च जातियों के लोगों का मुकाबला करने में समर्थ हो जायेंगे और तब हमारा समाज भी अबकी अपेक्षा अधिक दृढ़ हो जाएगा नहीं तो मुसलमान और ईसाई इन्हें हड़प कर जाएंगे। [क्रमश]

# वैदिक स्वाध्याय मञ्जरी

## ( दैनिक स्वाध्याय )

लेखक—
( प्र० स्नातक धर्मदेव जी,
सिद्धान्तालङ्कार विद्यावाचस्पति बंगलोर )

( गताङ्क से आगे )

(२६) ओ३म् मेधां सायं मेधां प्रातर्मेधां मध्यन्दिनं परि । मेधां सूर्यस्य रश्मिभिर्वचसा वेशयामहे ॥

अथर्व ६ । १०८ । ५

शब्दार्थः— हम सब ( मेधाम् ) सत्य का धारण करने वाली विवेक बुद्धि को ( सायम् ) सायंकाल ( मेधाम् ) विवेक बुद्धि को ही ( मध्यन्दिनं परि ) दोपहर के समय ( मेधाम् ) मेधा को ( सूर्यस्य रश्मिभिः ) सूर्य की किरणों के साथ ( वचसा ) उत्तम वचनों से ( वेशयामहे ) अपने में प्रविष्ट कराते हैं ।

पद्यानुवादः—

मेधा को आविष्ट कराते, अपने में हम सायंकाल ।
मेधा को मध्याह्न काल में, मेधा ही को प्रात काल ॥
सूर्य किरण के साथ वचन से, मेधा का करते आह्वान ।
शुभ विवेक युत होकर जिससे, हम पावें सच्चा ही ज्ञान ॥

(२७) ओ३म् श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धयाहूयते हविः । श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसावेदयामसि ॥

ऋ० १० । १५१ । १

( श्रद्धया ) श्रद्धा से ही ( अग्निः ) बाह्य और आन्तरिक ज्ञान रूपी अग्नि ( समिध्यते ) जलाई जाती है ( श्रद्धया ) श्रद्धा से ही ( हविः हूयते ) आहुति दी जाती है—हवन किया जाता है तथा दान दिया जाता है । हम ( वचसा ) अपने वचन से ( श्रद्धाम् ) श्रद्धा=श्रत्-सत्य की धारण शक्ति को ( भगस्य ) ज्ञान और धर्म रूप ऐश्वर्य के ( मूर्धनि ) मस्तक—माथे पर ( आवेदयामसि ) प्रकट करते हैं ।

पद्यानुवाद —

ज्ञानाग्नि दीप्त श्रद्धा से हो, श्रद्धा से ही सब हवन करें ।
श्रद्धा ही धर्म का मस्तक है, इस आशय के हम वचन कहें ॥

(२८) ओ३म् श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि । श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥

ऋ० १० । १५१ । ५

शब्दार्थः—( प्रातः ) प्रातः काल हम श्रद्धाम् श्रद्धा—सत्य धारण करने की शक्ति की (हवामहे) प्रार्थना करते हैं ( मध्य दिनं परि ) दोपहर को ( श्रद्धाम् ) श्रद्धा को ही पुकारते हैं ( सूर्यस्य निम्रुचि ) सूर्य अस्त होने के समय ( श्रद्धाम् ) हम श्रद्धा का ही स्मरण करते हैं ( श्रद्धे ) हे श्रद्धा देवि ( इह ) इस लोक में ( नः ) हमें ( श्रद्धापय ) श्रद्धा से युक्त कर दे ॥

पद्यानुवाद—

श्रद्धा देवी का आवाहन, करें नित्य हम प्रात काल ।
श्रद्धा का मध्याह्न काल में, श्रद्धा का ही सायं काल ॥

श्रद्धा को ही धारण करते, सूर्य अस्त के भी हम काज।
श्रद्धे हम में बस जाओ तुम, काटो सारा माया जाल॥

(२९) ओ३म् दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

यजु० ३६। १८

शब्दार्थः—( दृते ) हे अज्ञानान्धकार नाशक प्रभो (मां दृंह) मुझे दृढ़ बना (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणी ( मा ) मुझे ( मित्रस्य चक्षुषा ) मित्र की दृष्टि से ( समीक्षन्ताम् ) देखें ( अहम् ) मैं ( सर्वाणि भूतानि ) सब प्राणियों को ( मित्रस्य चक्षुषा ) मित्र दृष्टि-प्रेम से ही देखूं हम सब ( मित्रस्य चक्षुषा ) मित्र की दृष्टि से आपस में समीक्षामहे ) देखें।

पद्यानुवाद —

हे अविद्या के विनाशक हैं दृढ़ मुझको बना।
प्राणि सब ही प्रेम से, देखें मुझे ऐसा बना॥
मैं भी सारे प्राणियों पर, मित्र भाव सदा रखूं।
मित्र दृष्टि सभी रखें हम, प्रार्थना यह ही करूं॥

(३०) ओ३म् दृते दृंह माऽज्योक्तेसन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्॥

यजु ३६। १९

शब्दार्थः— ( दृते ) हे अज्ञान और पाप का नाश करने वाले प्रभो ( मा ) मुझे ( दृंह ) दृढ़-मजबूत बना ( ते सन्दृशि ) तेरे दर्शन में (ज्योक्) देर तक ( जीव्यासम् ) जीता रहूं ( ते सन्दृशि ) तेरे दिव्य दर्शन करते हुए ही ( ज्योक् ) देर तक ( जीव्यासम् ) जीता रहूं।

पद्यानुवाद —

पाप नाशक दृढ़ बना दे, तू मुझे करके दया।
देर तक जीता रहूँ, दर्शन तेरा करता हुआ॥
साक्षी तुझको जानकर ही, काम मैं सारे करूं।
शक्ति मुझको दे दयामय, दुःखियों के दुःख हरूं॥

---

# हमारी आयुर्वेदिक चिकित्सा

[ लेखक—
कविराज रत्नाकर आयुर्वेद शिरोमणि ]

भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा का बहुत बड़ा महत्व है। इसने आज तक संसार का जितना उपकार किया है उतना किसी दूसरी चिकित्सा से नहीं हुआ। इतिहास के प्रारम्भ काल से लेकर ईसा की दसवीं शताब्दि तक यही एक ऐसी चिकित्सा थी जो अनवरत समाज की सेवा करती रही। विश्व के प्राचीन इतिहास मे आयुर्वेद की अतुल सेवायें स्वर्णाक्षरो में लिखी जाने योग्य हैं। प्राचीन भारतवासियों की तो इस पर इतनी श्रद्धा थी कि वे चिकित्सकों को भगवान का प्रतिरूप मानते और उसी प्रकार पूजते थे। इस का सब से स्पष्ट प्रमाण यही है कि आज तक चरक और धन्वन्तरि आदि आयुर्वेद के प्रारम्भिक आचार्य भारतीय समाज में भगवान के अवतार माने जाते हैं। वैदिक युग में जब इस चिकित्सा पर ग्रन्थ रचना हुई तो 'वेद' से अधिक प्रतिष्ठा किसी दूसरे ज्ञान को प्राप्त न थी, किन्तु इस चिकित्सा शास्त्र को वेदों की समकक्ष प्रतिष्ठा देने के लिए ही भारतीय आचार्यों ने इस का नाम 'आयु शास्त्र' या 'आयु दर्शन' न रख कर 'आयुर्वेद' रक्खा। और वस्तुतः यह वेदों की समकक्ष प्रतिष्ठा पाकर ही समाज में पूजा का भाजन बना। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का भी उत्कृष्ट साधन समझा जाकर मानवीय जीवन का अलौकिक अवलम्ब माना गया इसी लिये प्राचीनकाल में विद्वान् अन्यान्य शास्त्रों के साथ आयुर्वेद अध्ययन करते थे। उच्चकोटि के विद्यालयों में आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वान् इस विषय की शिक्षा बिना किसी शुल्क के दिया करते थे। इस के साथ ही बड़ी २ रसायन शालाओं में क्रियात्मक (Piactical) रूप से निदान एवं औषधि-निर्माण का काम सीखना भी आवश्यक होता था। वर्तमान काल में अधिकांश नाड़ी पर हाथ रख कर एकाध पुड़िया दे देना मात्र ही बस नहीं था। इस विषय के आचार्यों ने आयुर्वेदिक चिकित्सा को आठ हिस्सों मे बांट कर प्रत्येक के लिए अलग २ ग्रन्थ और प्रयोग शालायें निर्माण की थीं। वे आठों हिस्से इस प्रकार थे—१ शल्य (Surgei\) २—शालाक्य (Tieatment of diseases of paits situated above the clavicles.) ३—कायचिकित्सा (general diseases) ४—भूत विद्या (demoniacal) ५—कौमार भृत्य (Management of childien) ६—अगद तन्त्र (The doctime of anti dotes) ७—रसायन तन्त्र (Remedics-pieseiving vigoui etc) ८—वाजीकरण तन्त्र (On the strengthening of verile powei etc) इस प्रकार आठ भागो में विभक्त होने के कारण आयुर्वेद अष्टाङ्ग कहा जाता है। इन आठों अङ्गों को भली प्रकार पढ़ने के बाद किसी सुयोग्य आचार्य की अनुज्ञा के अनन्तर ही कोई वैद्य सर्वसाधारण की चिकित्सा करने का अधिकारी समझा जाता था। जो इस प्रकार बिना पढ़े लिखे चिकित्सा करने का दुस्साहस करते थे उन्हें चरक और सुश्रुत आदि प्राचीन ग्रन्थों में छद्मचारी, चोर, प्राणहारी और धूर्त जैसी उपाधियों से सुशोभित किया गया है। सुश्रुत संहिता में तो आजकल की भाँति वैद्यराज होने का जन्मसिद्ध दावा करने वालों के लिये प्राणवध का दण्ड विधान किया

गया है—

यस्तु कर्मसु निष्णातो धार्ष्ट्याच्छास्त्रबहिष्कृतः ।
सत्सु पूजां नाप्नोति वधं चार्हति राजतः ॥

सुश्रुत १,४,४६

इस के द्वारा सहज ही जाना जा सकता है कि प्राचीन भारत में वैद्य की जिम्मेदारी कितनी बड़ी थी । इसी कारण उस समय के चिकित्सक बहुत विद्वान् और अपने विषय के पूरे ज्ञाता होते थे, तभी तो उनकी प्रतिष्ठा थी, और समाज मे पिता के समान पूज्य कहे जाते थे । धीरे २ लोग इस उत्तरदायित्व की अवहेलना करते गए और आयुर्वेद को केवल पैसा कमाने का साधन बनाकर अपनी और साथ २ आयुर्वेद की प्रतिष्ठा को भी ले डूबे । अब तो यह दशा है कि यदि पढ़िकल भी पढ़ने लिखने मे मन्द और जड बुद्धि हुये तो माधव-निदान की पञ्चलक्षणी और भाव प्रकाश हिन्दी टीका खरीद कर ही 'वैद्यराज' और 'भिषगाचार्य' बन बैठते हैं । वस्तुतः यह प्रवृत्ति जितनी बुरी है उससे कहीं अधिक हानिकार है ।

चरक संहिता के पढ़ने से ज्ञात होता है कि पहले आयुर्वैदिक परिज्ञान के लिए बड़ी २ प्रयोग शालायें स्थापित थीं जिन में दूर २ से मंगाई हुई अलभ्य जड़ी बूटियां संग्रहीत होती थीं, और प्रत्येक रोगों पर उनके वैज्ञानिक परीक्षण विद्यार्थी और आचार्य मिलकर किया करते थे । इसी प्रकार की एक भारी रसायनशाला दक्षिण पाञ्चाल की वैभवशालिनी प्रसिद्ध काम्पिल्य राजधानी में थी । जहां बहुत से विद्यार्थी अध्ययन के लिए रहा करते और गङ्गा के पवित्र वन में से औषधियों का संग्रह करते थे । इस विश्वविद्यालय और रसायन शाला के आचार्य अमरकीर्ति भगवान्-'पुनर्वसु आत्रेय' थे । जो हमारे सुप्रसिद्ध चरक शास्त्र के रचयिता हैं । यह काम्पिल्य राजधानी आज भी फर्रुखाबाद ज़िले में है । परन्तु अब वह राजधानी छोटा सा 'कम्पिल' गांव है, जहां कृषकों के श्रम से खोदने पर आज भी तत्कालीन महलों और किलों की शिलायें और भग्न एवं जर्जर दीवारों के चिन्ह तत्कालीन रसायनशाला और उस के अमरकीर्ति आचार्य की स्मृति को पुनर्जीवित करते रहते हैं । परन्तु आज न वे आचार्य हैं, और न उनके शिष्य अग्निवेश जैसे आयुर्वेद प्रिय सच्चे विद्यार्थी ।

यद्यपि आयुर्वेद का एक बड़ा साहित्य नष्ट भ्रष्ट हो गया है, और वे अमूल्य ग्रन्थ आज हमे उपलब्ध नहीं हो सकते जिनका केवल नाम ही आज हमें याद है । इसका प्रधान कारण यही है कि हमारी अयोग्यता और उदासीनता के कारण समय ने हमें इस योग्य ही न रक्खा कि अपने प्राचीन आचार्यों की वह वसीयत हम सम्हाल सकते । जो कुछ साहित्य आज हमें उपलब्ध है यदि उसी को मनोयोग से सींचा और पल्लवित किया जाय तो उस मे ही सब कुछ विद्यमान है, परन्तु हमने अपनी अयोग्य वृत्तियों द्वारा उसे भी न कुछ के बराबर कर रक्खा है । अन्यथा आयुर्वेद का आश्रय लेकर उत्पन्न हुई नवीन और अल्प वयस्का चिकित्सायें समाज में समादृत होकर आयुर्वेद को तिरस्कार की दृष्टि से कैसे देखने लगतीं । एलोपैथी को ही लीजिये, ईसा की सत्रहवीं शताब्दी तक वह एक नङ्गी भिखारिन थी, परन्तु आज वह चिकित्साओं की रानी बनने का अहंकार कर रही है । यह बात दूसरी है कि वह समाज के स्वास्थ्य के लिए निर्दोष सिद्ध हुई या नहीं हुई । उसके अभ्युदय से हमें यह पाठ तो सीखना ही चाहिये कि अपनी चीज़ की प्रतिष्ठा यदि हम स्वयं नहीं करते तो दूसरे उसे आदर की निगाह से क्यों देखें ? आज हमारे

सामने वह वक्त है जब औषधों वालों ने अपने महल खड़े कर लिये, और हम अपना महल गिराकर झोपड़ा भी क़ायम न रख सके। माना कि प्राचीन युग में चिकित्सा की उन्नत करना राजकीय कर्तव्य समझा जाता था, और राजसंस्थायें उसे पालन करती थीं। आज एलोपैथी को भी वही सौभाग्य प्राप्त है परन्तु जिस प्रकार हम अपने स्वार्थ के लिये जाति बिरादरी के झगड़ों को अब तक चिपटाये रहे, पुराणों की गप्प गाथाओं को रटते रहे, और गुरुडम के रूढ़िवादी निष्फल सिद्धान्तों के प्रचार में अपना समय नष्ट करते रहे, उसी प्रकार यदि आयुर्वेद के ग्रन्थ साहित्य को ही सचिन्त होकर सम्हाले रखते तो भविष्य में आने वाली महत्वाकांक्षी सन्तान को इतना पतित और निराशा ग्रस्त समय न देखना पड़ता।

आयुर्वेद की सबसे अधिक महत्व की बात यह है कि उसके मौलिक सिद्धान्त इतने अटल हैं कि तीनों कालों में भी उनमें कोई फ़र्क नहीं आ सकता। वे जैसे दृढ़ और सच्चे पहले थे वैसे ही आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। दूसरी चिकित्साओं के अनेक सिद्धान्त बने और बन बिगड़ गए, और सम्भव है कि आगे भी उनमें फेरफार होगा। परन्तु आयुर्वेद के सिद्धान्त ऐसे वैज्ञानिक आधार पर क़ायम हैं कि उनमें फेरफार की कभी गुन्जाइश ही नहीं। जब तक संसार है तब तक जीवन संचालन के लिये वायु, अग्नि और जल की उपादेयता को कोई अन्यथा सिद्ध नहीं कर सकता, और इसीलिए वात, पित्त, और कफ का मौलिक चिकित्सा सिद्धान्त अटल सत्य रहेगा। प्राचीन आचार्यों की खोज और वैज्ञानिक उन्नति की बदौलत आज हमें चिकित्सा के मौलिक सिद्धान्तों के बारे में कुछ नहीं करना है, किन्तु जो करना है वह यही है कि उन्हें पल्लवित किया जाय और उनकी वैज्ञानिक व्याख्या, क्रिया के द्वारा समाज के सामने रक्खी जावे। रोगों के निदान और चिकित्सा पर जो लिखा गया है उसे पल्लवित करना चाहिये और जो लिखने से रह गया है उसे क्रम पूर्वक वैज्ञानिक ढंग से लिखना और कार्य में लाना चाहिये। प्लेग हैज़ा मुआक, मोतीझरा आदि रोग प्राचीन भारतीय समाज में नहीं थे, और यदि थे भी तो नहीं के तुल्य। इसी लिए इन रोगों पर प्राचीन ग्रन्थों में नहीं के बराबर लिखा गया है। परन्तु अब तो समाज में यही बीमारियां हमारी दुर्बलताओं के कारण सबसे अधिक हैं, अतएव सपूत होने की लज्जा रखने के लिए ही हमारा कर्तव्य है कि हम उन पर विशेष खोज करें, उनके वास्तविक कारण जानें, उनकी अचूक चिकित्सायें, जड़ी-बूटियां खोज निकालें, और अपने आयुर्वेदिक साहित्य को पूर्ण होने का गौरव प्रदान करें। अनेक विशेष २ चिकित्सालय खास २ रोगों के लिए स्थापित कर के उनकी उचित चिकित्सा, भोजन, वायु, और देश का समुचित परीक्षणों द्वारा निर्णय करके यदि हमारे आधुनिक वैद्य, समाज और साहित्य का कल्याण करें तो बड़ा काम हो सकता है। एलोपैथी के परीक्षणों के लिए 'सेनीटोरियम' कुत्ते के इलाज वाले हास्पिटल कितने ही खुले हैं, और उनसे बड़ा काम और नाम एलोपैथी का हो रहा है। क्या ही अच्छा हो कि हम भी इस प्रकार के परीक्षणों के लिए समाज-हित को दृष्टि में रखकर अनेक औषधालय स्थापित करें। कुत्ते काटने का इलाज करने के लिए जिस प्रकार एलोपैथी के औषधालय हैं उसी प्रकार यदि हम सांप काटने के इलाज का औषधालय स्थापित करें तो समाज का कितना

# शतांश

(ले०—श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग)

कई वर्ष हुए जब आर्य्यसमाज के उपनियमों को सुधारने का प्रश्न उठा तो मैंने भी एक लम्बा लेख 'आर्य्य मित्र' में दिया था जो संभवतः सार्वदेशिक सभा की फायल में होगा। मैंने उस में यह प्रस्ताव किया था कि शतांश का नियम हटाकर प्रत्येक आर्य्य सभासद के लिए ।) मासिक चन्दा अनिवार्य कर दिया जाय। स्वभावतः यह बात जनता को पसंद न आई और न केवल संयुक्त प्रान्तीय आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने ही; किन्तु अन्यों ने भी इस प्रस्ताव को रद्दी की टोकरी में डाल दिया।

यह मनोवृत्ति स्वाभाविक थी। क्योंकि जब आर्थिक कठिनाइयां हो रही हों तो चन्दे के घटाने का प्रस्ताव कौन सुन सकता है? मैं कम से कम १७ वर्ष से प्रान्तीय वृहत् सभा में निरन्तर यह शिकायत सुन रहा हूँ कि लोग शतांश नहीं देते और यदि इस नियम का कड़ा पालन किया जाय तो आर्थिक कठिनाइयां दूर हो सकती हैं।

मैं अपना शतांश नियमित रूप से देता रहा हूँ; परन्तु मेरे अनुभव ने मुझे यही बताया कि शतांश का नियम धन सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर नहीं करेगा किन्तु बढ़ा देगा। मैंने जब स्थानिक समाज में दो एक बार अपने विचार प्रकट किए तो लोगों ने कहना आरम्भ किया कि मैं व्यर्थ ही पचड़ा लगा रहा हूँ। अतः जब नवम्बर १९३३में संयुक्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा की अंतरंग में यह प्रश्न उठा तो मैं चुप हो गया और नियमके कड़ाई के साथ पालन के लिए जो धाराएँ प्रस्तावित हुयीं उन सब को पास होजाने दिया। सभा से आज्ञायें निकल गयीं। समाजों ने यथाशक्ति उन का पालन आरंभ कर दिया। सभासदों को नोटिस दे दिया गया कि अमुक तिथि तक या तो शतांश दें या अलग हो जायें। २८ जुलाई १९३४ की अन्तरंग में मेरठ में उपधारायें भी पास होगयीं अर्थात् किसी सभासद की आय निश्चित् करने में क्या क्या नियम लागू होगें। सारांश यह है कि ज़ंजीरों को जहां तक बन सका कड़ा कर दिया गया। अब कोई कड़ी ढीली नहीं है। सब पेंच कसे जाचुके हैं। भागने की कहीं गुञ्जायश नहीं है। ।

समाजों ने इस वर्ष के अनुभव से कुछ न कुछ नतीजा निकाल लिया होगा और जो अब तक सोते रहे वह वर्ष के अन्त में ठीक ठीक निश्चय कर सकेंगे। मेरे सामने तो एक प्रश्न है वह कि आर्थिक कठिनाइयां घटीं या बढ़ीं?

अब तक क्या होता था? १००) मासिक में

---

भला हो। इस सब कार्य के लिए धन की इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी मन की, और मनोयोग की। इच्छा में बल होना चाहिये रास्ता स्वयं निकल आवेगा*।

---

* यह लेख गुरुकुल वृन्दावन में स्थापित लेखक समाज की लेखमाला के अन्तर्गत समझा जाय। —लेखक

कम आय के लोग अपना शतांश देते रहे थे। पहले ऊपर के वह २) से अधिक कभी नहीं देते थे। वकीलों, जमींदारों, व्यापारियों की आय निर्धारित न थी। जो उन्होंने दे दिया वही शतांश समझ लिया जाता था। जो वेतन भोगी थे उन की आय तो सभी जानते थे और उन से शतांश ले लिया जाता था।

अब क्या हुआ? मन्त्रियों ने सभा की आज्ञा से विज्ञापन निकाला कि या शतांश पाई पाई का हिसाब लगा कर दो, या २५०) देकर जीवन मुक्त हो जाओ या समाज छोड़ो। इसका क्या प्रभाव पड़ा? मुझे जहां तक सूचना मिली है इसके तीन परिणाम हुए:—

( १ ) कुछ ऐसे लोगों ने जिनकी आय ५००) तक पहुँचती है शतांश देना स्वीकार कर लिया; परन्तु समाज के अन्य सब कामों के लिए चंदा देने से इन्कार कर दिया। अर्थात् न समाज की संस्थाओं को देंगे, न विशेष उत्सवों को देंगे, न विशेष अपील पर कुछ देंगे, परन्तु ऐसों की संख्या भी अधिक नहीं

( २ ) शायद किसी ने २५०) देकर भी जान छुड़ा ली हो।

( ३ ) बहुत सों ने कह दिया कि महाशय अपना वोट का अधिकार घर रखिये और शहद लगा कर चाटा कीजिए। मैं दस या पाँच रुपए मासिक नहीं दे सकता। न मैं वोट देना चाहता हूँ न लेना, मेरा नाम रजिस्टर से अलग कर दीजिए।

इस प्रकार या तो मासिक चन्दा बढ़ा नहीं, या यदि कुछ बढ़ा तो अनुपात से ऐसे चन्दों को ले बैठा जिनके आधार पर ही समाज के अनेकों काम चलते हैं।

नतीजा क्या हुआ? समाज के समासदों की जन संख्या घट गई और विशेष कर वह लोग जो कुछ उच्च कक्षा में गिने जाते हैं और जिनसे समाज को कभी २ पचास-पचीस मिल जाते थे अलग हो गए। समाज की संस्थायें इन्हीं लोगों के चन्दों से चल रही हैं। जो २०) मासिक समाज को तो दे देगा परन्तु आप उससे उत्सव पर १०) या किसी संस्था के लिए १) मासिक नहीं मांग सकते। न उससे यह आशा कर सकते हैं कि अपने पास से व्यय करके सभा के वृहद्-अधिवेशन या अन्तरंग सभा की बैठकों में सम्मिलित हो सके। मैं आप से पूछता हूँ कि क्या समाज को लाभ हो रहा है। यदि धन अधिक आता और जन कम हो जाते तो भी मैं उस को लाभ न गिनता परन्तु अब धन भी कम और जन भी कम तो क्या कहा जाय। मेरा अपना विचार तो यह है १० आदमियों से १००) मासिक चन्दा उतना अच्छा नहीं जितना ३०० आदमियों से ७५) क्योंकि जब जन अधिक होंगे तो बार बार हमारी आवश्यकताओं को देखते २ और सुनते२ कुछ न कुछ पिघलेंगे ही और बहुत सों का हाथ लगने से छप्पर उठाना सुगम हो जायगा। परन्तु आर्य्यभाइयों की यह बात अपील नहीं करती। वे सोने की मुर्गी से आज ही सब अंडे ले लेना चाहते हैं। यदि मिल जायें तो मैं भी खुश हूं, परन्तु मिलते तो नहीं। हाथ मलते रह

आना पड़ता है।

अब हम सभाओं में बैठते हैं, कहते हैं कि अब सरकार ४) प्रति शतक तक इनकम टैक्स ले लेती है तो हमको १) प्रति शतक चन्दा क्यों न मिलेगा। परन्तु हम भूल जाते हैं कि टैक्स और चन्दे में कितना भेद है हम समझते हैं कि जैसे इनकम टैक्स आफ़िस का बाबू अपने दफ्तर में बैठा-बैठा लाखों रुपया वसूल कर लेता है उसी प्रकार हमारा मंत्री बाबू भी समाज के कार्यालय में बैठा-बैठा सब रुपया वसूल कर लेगा। परन्तु हम भूल जाते हैं कि इनकम टैक्स क्लर्क की पीठ पर बड़ी-बड़ी सेनायें और पुलिस है। हमारा मंत्री! इसका तो यह हाल है कि:—

इस सादगी पर आपके क़ुर्बान जाइये।
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं॥

शायद आप समझते हों कि हमारा सामाजिक संगठन इतना दृढ़ है कि वह तोपों का काम करेगा। यदि ऐसा है तो जाने दीजिये। मैं झूठा! परन्तु मन के लड्डू तो न बांधिये। आर्य्य समासद् होने के लिए जितना अधिक चन्दा देना होगा उतने ही समासद् कम बनेंगे। संसार की सभायें चन्दे को घटाना चाहती हैं जिससे उनकी आय भी बढ़ जाये और प्रभाव भी। परन्तु हम चन्दे को बढ़ायेंगे चाहे प्रभाव रहे या न रहे।

अब ज़रा एक और तमाशा देखिये। शतांश का नियम लागू करने में कितनी कठिनाइयां हैं! मंत्री के पास गुप्तचर हों जो वकीलों और दुकानदारों की आय की पड़ताल किया करें। मुझे मालूम है कि एक ज़मींदार महाशय ने लिख दिया कि मेरी जायदाद संयुक्त परिवार ( Joint family ) की है। मेरे भाग में १००) मासिक से अधिक नहीं पड़ता। मैं १) से अधिक नहीं दे सकता। दूसरे महाशय किसी दफ़्तर में हैं, उन्होंने भी लिख दिया कि मैं भी संयुक्त परिवार का सदस्य हूँ। मेरी आय इस प्रकार से १५) से अधिक नहीं आती। मैं ।) ही दूँगा। अब चलिए! फैसला कीजिये। प्रतिनिधि सभायें और सार्वदेशिक सभायें कोर्ट स्थापित करें फिर यदि वोट पर झगड़ा होजाय जैसा कि अधिकांश में होना सम्भव और स्वाभाविक है तो माल की कचहरियाँ अलग चाहियें और फौजदारी की अलग।

फिर एक बात पर तो ध्यान ही नहीं दिया। शतांश का नियम लोगों को आय छिपाने और झूठ बोलने के लिए बाधित करता है। उपदेशक कह सकता है कि झूठ बोलने वालों को समाज से निकाल दो। परन्तु साधारण मनुष्य जानता है कि झूठ की भी श्रेणियां हैं। सहज झूठ और असहज झूठ। सफ़ेद झूठ, काला झूठ और भूरा झूठ! जो नियम किसी को झूठ बोलने के लिये अवसर देता हो वह उतना ही त्याज्य है जितना झूठ स्वयं त्याज्य है। फिर कौन किस को निकालेगा।

मेरा अपना विचार यह है कि दान के लिये तो आय का अनुपात बांधा जा सकता है। क्योंकि दान अनिवार्य नहीं होता। जो जितना पुण्य चाहे वह उतना दान दे। परन्तु जो शुल्क वोट देने के अधिकार से सम्बन्ध रखता है वह प्रत्येक समासद् के लिए एक ही होना चाहिए, और

# देशान्तर प्रचार

## श्री पं० अयोध्याप्रसाद जी बी. ए. रिसर्च-स्कालर की ट्रीनीडाड की चिट्ठी

कृपा पत्र तिथि १९—७—३४ सं० ८४० का कल ३—९—३४ को प्राप्त हुआ। साथ में थोमस कुक एण्ड सन्स लिमिटेड का १००० डालर का ड्राफ्ट सं०-× D ६२०–२११ भी प्राप्त हुआ।

धन के सम्बन्ध में मैंने अपने पूर्व पत्रों ही में सूचित किया है कि जब तक मैं दक्षिण अमेरिका तथा वेस्ट-इन्डीज़ द्वीप-पुञ्ज में प्रचार करूंगा। तब तक मुझे धन की आवश्यकता नहीं है।

यूनाइटेड स्टेट्स से इस ओर आकर इतना समय लगा-देने में बहुत लाभ हुआ है। मैंने अपनी स्कीम में पूर्व ही लिखा था कि U S. A में प्रचार की व्यवस्था करने से दक्षिण अमेरिका तथा वेस्ट इन्डीज़ में बसे हुए भारतीय जनता के धर्म का संरक्षण हो सकेगा तथा नीग्रो आदि जाति के लोगों में भी आर्य्यसमाज का विस्तार होगा। परमात्मा की कृपा से मैं उक्त उद्देश्य में सफलीभूत हुआ हूँ। डच गायना तथा बृटिश-गायना में स्थाई प्रचार की व्यवस्था का प्रबन्ध कर दिया है और इस बात की पूर्ण आशा रखता हूँ कि वह दिन बहुत दूर नहीं जब उक्त दोनों देशों में आर्यसमाज का बोलबाला हो जायगा। जब से ट्रीनीडाड मे उतरा हूँ इस बात की चिन्ता है कि इस द्वीप में किस प्रकार आर्य्य-समाज का दृढ़ केन्द्र बनाने मे समर्थ बनूँ। यदि इस द्वीप में आ० स० का दृढ़ केन्द्र बन गया तो निश्चय है कि समस्त वेस्ट इन्डीज के द्वीपों मे आर्य्य-समाज का झण्डा फहराया जायगा। अभी तक तो मेरे ३—४ ही व्याख्यान हुए हैं। द्वीप के समस्त मुख्य मुख्य स्थानो का दौरा इसी सप्ताह से आरम्भ करूंगा परन्तु इन ३—४ व्याख्यानों से आशा हो रही है कि इस द्वीप में भी आर्य्य-समाज स्थापन करूंगा। इस द्वीप की परिस्थिति बृटिश गायना तथा डच गायना की अपेक्षा विचित्र है। सूचनार्थ कुछ लिखता हूँ:—

(१) इधर की अपेक्षा इस द्वीप में भारतीयों की संख्या सब से अधिक है जिनमें अब भी हिन्दू ही अधिक हैं।

(२) उधर की अपेक्षा शिक्षा भी यहाँ अधिक है।

(३) उधर की अपेक्षा धनवान तथा प्रतिष्ठित भारतीय भी यहाँ अधिक हैं।

(४) मातृ भाषा हिन्दी का ह्रास इस द्वीप में भी बृटिश गायना के सदृश है, यदि अभी से कोई प्रबन्ध नहीं किया गया तो १, २ पीढ़ी में मातृ भाषा हिन्दी का

---

उसकी मात्रा इतनी कम होनी चाहिये कि किसी को आय की कमी के कारण अलग न रहना पड़े। ऐसा करने से समाज का सार्वजनिकत्व भी स्थापित रहता है और समाज को हर प्रकार के मस्तिष्कों मे लाभ उठाने का भी अवसर मिलता है, मैं समझता हूँ कि आर्य्यसमाज कभी केवल शतांश से काम न चला सकेगा और न शतांश का यथोचित पालन ही हो सकेगा। अतः या तो ।) मासिक चन्दा अनिवार्य करना चाहिए या कोई फारमूला निर्धारित करना चाहिए।

———

सर्वथा लोप हो जायगा।

(५) हिन्दू और मुसलमानों में मुसमानों की संख्या लगभग २५ हज़ार होगी। हिन्दू एक लाख से ऊपर होंगे परन्तु हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों में अच्छा संगठन है। बहुत स्थानों पर मसजिदें बनी हुई हैं जिनमें उर्दू, अरबी तथा फारसी पढ़ाने की व्यवस्था है। हिन्दुओं के भी बहुत से मन्दिर यत्र तत्र बने हुए हैं परन्तु उनमें शिक्षा आदि की कोई व्यवस्था नहीं। सबसे बड़ी मसजिद गोकुल मियाँ नामक एक मुसलमान की बनाई हुई है जो इस द्वीप में सबसे बड़े धनाढ्य समझे जाते हैं।

(६) ईसाइयों का यहां बहुत ज़ोर है लगभग ½ हिन्दू ईसाई बन चुके हैं और बनते ही जाते हैं। गायना में तो आर्य समाज का प्रचार हो जाने से ईसाइयों की प्रगति प्रायः रुक ही गई है पर यहां पर आर्यसमाज के न होने से कोई रुकावट नहीं हुई है। यदि ऐसी ही अवस्था विद्यमान रही तो हिन्दी भाषा के सदृश धीरे धीरे हिन्दुत्व का नाम और चिन्ह तक मिट जायगा।

(७) हिन्दुओं की अवस्था अत्यन्त ही शोचनीय है। एक तो इनमें शिक्षा की कमी है, दूसरे जितने सुशिक्षित और प्रतिष्ठित हिन्दू रहे सब ईसाई बन चुके हैं। नई पीढ़ी के नवयुवक सुशिक्षित होकर हिन्दू धर्म से विमुख हो रहे हैं। पंडित कहलाने वालों की संख्या भी यहां पर्याप्त है। परन्तु उनकी विद्या वर्णमाला की १ली २री पोथी तक ही है परन्तु भागवत बाँच लेते हैं, सत्य नारायण की कथा कह लेते हैं और पूजा पाठ करा लेते हैं। भारत में तो कथा पुराण कह कर हमारे पंडित पर्याप्त धन नहीं कमा सकते पर इस द्वीप में भागवत की कथा बांच कर २० हज़ार डालर तक सहज में कमाने वाले पंडित विद्यमान हैं जो संस्कृत के श्लोक तक को नहीं पढ़ सकते।

(८) साधारण कोटि के हिन्दू ग़रीब हैं उनकी ग़रीबी का एक कारण यह भी है कि जब किसी ने २००, १०० डालर कमाई और किसी बाबा जी को विदित हुआ तो उससे भागवत की कथा कहलाते हैं बस सब कमाई खींच ली। धन बचाने का एक उपाय यही है कि चाहे तो ईसाई हो जाय या मुसलमान हो जाय या इन दिनों जैसी कि कहीं २ आर्यसमाज की चर्चा होने लग पड़ी है अपने को आर्यसमाजी कह दें।

(९) आर्यसमाजी भी बनने का प्रथम चिन्ह है 'नमस्ते' करने लगना परन्तु ऐसे लोगों के जीवन में कठिनाई है। सनातनी इन्हें अकेला पाकर पीट देते हैं। हां ईसाई या मुसलमान हो जाय तो फिर किसी का भय नहीं है।

(१०) ईसाइयों की वृद्धि का एक कारण यह भी है कि बहुत से हिन्दू यहां तक कि ब्राह्मण कहलाने वाले लोग भी जिनके बच्चे उत्पन्न होकर मर जाते हैं वे नवजात बालक को गिरजाघर में ले जाकर Baptised करा देते हैं कि बच्चा ज़िन्दा रहे। हिन्दू इस बात को सहन कर सकते हैं परन्तु वे इस बात को सहन नहीं कर सकते कि उनमें से कोई 'नमस्ते' कहलाने वाला बन जाय।

(११) गली गली, कूँचे कूचे में Salvation Army तथा अन्य ईसाई संस्था की ओर से सन्ध्या समय प्रचार की व्यवस्था है जिस में सैकड़ों हिन्दू सम्मिलित होते हैं और प्रचारार्थ दान भी देते हैं। एक दो आर्य नवयुवकों ने जब इसी प्रकार मार्ग प्रचार करने का आयोजन किया तो लोगों ने उन पर ढेले बरसाने शुरू किए। वहां मार्ग प्रचार करना ही बन्द हो गया।

(१२) ब्राह्मण कहलाने वाले लोग अत्यन्त ही आचरण भ्रष्ट हैं, मद्यपान करना, अभक्ष्य मांस खाना, व्यभिचार करना एक साधारण बात है। प्रत्येक ब्राह्मण के हज़ारों शिष्य हैं। जिनकी कमाई उनके जीवन का आधार है। गुरुडम प्रथा का जोरों से प्रचार है।

(१३) हिन्दुओं की ऐसी शोचनीय अवस्था होने ही के कारण शायद यहाँ के लोगों की धारणा है कि यह एक Cosmopolitan देश है जहां सब धर्म के लोग मेल मिलाप से रहते हैं परन्तु ईसाई हिन्दुओं को ईसाई बनाते ही जाते हैं तथा मुसलमान भी तबलीग से बाज़ नहीं आते। जब मैंने यहां के सुशिक्षित और प्रतिष्ठित हिन्दुओं से मिल कर इस बात की चर्चा की कि Port of spain नगर में, जो इस द्वीप की राजधानी है, यहां एक आर्यसमाज स्थापित किया जाय तो यह उत्तर मिला कि चूंकि यह द्वीप Cosmopolitan है यहां आर्यसमाज की स्थापना से परस्पर मेल मिलाप में भेद पड़ जायगा। मेरे विचार में तो यह मनोवृत्ति भविष्यत् में हिन्दुओं के ह्रास का ही मूल कारण बनेगी।

(१४) आर्यसमाजी नाम से ही हिन्दुओं को इतनी चिढ़ है कि जब से मैं इस द्वीप में उतरा हूँ, मुसलमान ईसाई आदि लोग तो मुझसे मिलने जुलने के लिए आते रहते हैं परन्तु कट्टर पन्थी कोई पास नहीं फटकता। उन्हें इस बात का आतङ्क हो गया है कि शायद मैं इस द्वीप में उनकी रोज़ी पर कुठाराघात करने आया हूँ। चेलों को बहकाते रहते हैं कि मेरे व्याख्यानों में न जावें। अभी तक जो तीन व्याख्यान हुए उनका ब्यौरा ये है:—

(१) पहला व्याख्यान तो हिन्दू मुसलिम स्कूल में।

(२) दूसरा व्याख्यान St Joseph church मे Rev Mr. Brown यहां के Member हैं। यह मुझ से मिलने आये थे और वैदिक धर्म पर वार्तालाप कर बड़े प्रसन्न हुए। यह English man हैं। इनके विचार बड़े उदार हैं, यह बाइबिल को ईश्वरीय वाणी तथा मसीह को ईश्वर पुत्र नहीं मानते। वैदिक सिद्धान्तों को, यथा आवागमन आदि को—पसन्द करते हैं। इन्होंने स्वयं मेरे पास आकर इस बात का निमन्त्रण दिया कि मैं Beauties of Vedic Religion विषय पर व्याख्यान दूं।

(३) तीसरा व्याख्यान Globe Theatre मे Port of spain में हुआ इस थियेटर के मालिक गाकुलमियां के पुत्र हैं। यहां व्याख्यान मुसलिम नवयुवकों के प्रबन्ध से India's Contribution to the cultural Evolution of mankind विषय पर हुआ।

आज रात को St Fernando में मुस्लिम-लिट्रेरी सोसाइटी की ओर से चौथा व्याख्यान है।

आप इसी से अन्दाजा लगा सकते हैं कि हिन्दुओं की मनोवृत्ति कैसी है तो भी मुझे इस बात की पूर्ण आशा इतने अल्प काल ही में हो रही है कि मैं इस द्वीप में अवश्य ही आर्यसमाज को दृढ़ बना कर जाऊंगा। व्याख्यान के अन्त में जो लोग प्रश्न करते हैं और मेरे उत्तर से जो उन्हे प्रसन्नता होती है इससे मैं अपने कार्य के भविष्यत का अनुमान भली प्रकार कर सकता हूं। नीग्रो लोगों में भी मेरी चर्चा हो रही है। वे भी मेरे व्याख्यानों का प्रबन्ध करेंगे। अभी मैं इन परिणामों पर पहुँचा हूँ—

(१) इस द्वीप में आर्यसमाज का दृढ़ केन्द्र थोड़े परिश्रम से बन सकता है।

(२) यहां केन्द्र बन जाने से समस्त वेस्ट इंडीज़ द्वीप-पुंज में आर्य्यसमाज का विस्तार हो जायगा।

(३) आर्य्यसमाज के लिए यह द्वीप अत्यन्त ही उपयुक्त क्षेत्र है।

(४) थोड़े परिश्रम से हजारों ईसाई बने हुए हिन्दू वापस आजयेंगे।

(५) नीग्रो जाति के लोग भी आर्य्य जाति मे सम्मिलित हो जायंगे तथा—

(६) मुलाटो ( गोरी और काली जाति की सन्तान ) तथा कुछ गोरे लोग भी आर्य्यसमाजी बन सकते हैं।

यहां से प्रचार आदि की सुव्यवस्था कर मैं शीघ्र न्यूयार्क के लिए प्रस्थान करूंगा।

× × ×

## पोर्तुगीज ईस्ट आफ्रिका में वैदिक धर्म प्रचार

गत २३ अगस्त के "आर्यमित्र" मे डब गावना के श्री महेश सिंह रामदीन आर्य की एक चिट्ठी छपी है जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि और प्रचारक पं० अयोध्या प्रसाद जी की इसलिये शिकायत की गई है कि "पंडित जी ने श्री मेहता जी के प्रचार के सम्बन्ध मे केवल २, ३ पंक्तियाँ लिखकर अपनी अत्यन्त प्रशंसा की है जो कि उचित न था"। मेहता जी की प्रशंसा का जो कार्य अपूर्ण रह गया था उसे श्री महेश सिंह ने पूरा कर दिया है। पता नहीं कि यह महाशय कौन हैं और इस विषय पर उन्हें लिखने की आवश्यकता प्रतीत क्यों हुई? सार्वदेशिक सभा ने "विदेशों में आर्यसमाज" नाम की जो पुस्तक प्रकाशित की है उसमें डच गावना के आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं की नामावली छपी है, किन्तु उस सूची में श्री महेश सिंह रामदीन आर्य का नाम नदारद है। इससे इतना तो स्पष्ट है कि यह आर्य महाशय वहाँ के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ताओं में से नहीं हैं। खैर, डच गावना के सम्बन्ध में हमें कुछ कहना नहीं है किन्तु जिस बात के लिये पं० अयोध्या प्रसाद जी की शिकायत की गई है उससे भी बढ़कर मेहता जी के प्रति हमारी शिकायत है। पं० अयोध्या प्रसाद जी ने तो मेहता जी के सम्बन्ध में दो चार पंक्तियाँ लिख भी दी हैं परन्तु मेहता जी जब स्वयं अपनी प्रशंसा लिखने बैठते हैं तो यह भूल ही जाते है कि उनके सिवा और भी कोई प्रचारक है।

ता० २४ मार्च के 'आर्य मित्र" में महता जैमिनी जी का एक लेख 'मारक़ुईस में प्रचार" शीर्षक छपा है। उस में महता जी ने अपनी और अपने शिष्य श्रीराम भारती की अथवा श्रीराम भारती ने अपनी और अपने गुरु जी की प्रशंसा में जो कुछ लिखा है उससे वस्तु स्थिति पर यथार्थ प्रकाश नहीं पड़ता। एक जगह आप लिखते हैं कि "इनको छोड़ कर और कोई भारतीय उपदेशक आज तक यहां नहीं आया।" इतने ही से आप को सन्तोष नहीं होता है इसी बात को आप फिर उसी लेख में दोहराते हैं "पोर्तुगीज राज्य में इन से पहले कोई उपदेशक प्रचार करने नहीं आया"। इस वक्तव्य को पढ़ कर भारत समाज के सदस्यों के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। महता जी जैसे वयोवृद्ध उपदेशक को इस प्रकार आत्म प्रशंसा मे लीन हो जाना उनकी पद-मर्यादा के योग्य प्रतीत नहीं होता। यहां और भी उपदेशक आचुके हैं और उन्होंने महता जी की अपेक्षा अधिक कार्य किया है। महता जी केवल अपने छोटे बड़े व्याख्यानों की गणना करा सकते हैं। इसके अतिरिक्त और कोई ठोस कार्य तो उनके हिस्से में आता ही नहीं।

यहां के भारत समाज ने आर्यसमाज के ही सब नियमों को अंगीकृत किया है। यह एक रजिस्टर्ड संस्था है जिसके २०० से अधिक सभासद हैं। वैदिक धर्म का प्रचार करना ही भारत समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस के अधीन एक पाठशाला भी है जिस में बालकों को मातृ भाषा और आर्य संस्कृति की शिक्षा दी जाती है। प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री केशव जी माधव जी वर्मा की प्रेरणा से २१ वीं जुलाई १९३२ में समाज की स्थापना हुई थी और १६३३ में उसका प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया था। उस अवसर पर समाज ने यह निश्चय किया था कि बाहर के किसी प्रसिद्ध नेता को यहां पधारने के लिये आमन्त्रित किया जाय, तदनुसार दक्षिण आफ्रिका के श्री भवानी दयाल जी संन्यासी को यहाँ बुलाया गया। स्वामी जी के आगमन और उपदेश से यहाँ जो जागृति उत्पन्न हुई वह अभूतपूर्व है। स्वामी जी केवल तीन सप्ताह यहाँ ठहर सके और उसके बाद दक्षिण आफ्रिका में भीषण राजनीतिक परिस्थिति उत्पन्न हो जाने के कारण वहाँ की कांग्रेस की ओर से तार पर तार आने लगे और टेलीफोन के द्वारा सन्देश पर सन्देश। विवश होकर स्वामी जी को यहाँ से प्रस्थान कर देना पड़ा।

स्वामी जी का प्रचार और कार्य भारत समाज के ही नहीं परन्तु मोजाम्बीक के हिन्दुओं के इतिहास की एक चिर स्मरणीय घटना है। इसलिये नहीं कि आपने तीन सप्ताह में लगभग २० व्याख्यान दिये, इस लिये भी नहीं कि आपने अनेक यज्ञ कराये और २१ मनुष्यों को यज्ञोपवीत दिये, बल्कि इसलिये कि आपने वर्णसंकरों की शुद्धि का श्रीगणेश किया। इस प्रदेश में बहुत काल से हिन्दू लोग निवास करते हैं; उनमें से अनेकों ने यहां की देशी स्त्रियों से सम्बन्ध जोड़ लिया है। उनसे जो सन्तान उत्पन्न हुई वह हिन्दुओं के लिये एक कठिन समस्या बन गई। हिन्दूजाति के अन्दर उनको जगह नहीं मिल सकी, इसलिये वे ईसाई और मुसलमानों को सौंप दिये जाते थे। इस प्रकार यहाँ के हिन्दुओं के सैकड़ों बच्चे ईसाई और मुसलमानों की शरण में चले गये। आज उनकी संख्या हजारों तक पहुँच गई है। स्वामी जी ने भारत समाज को इस कार्य के लिये तैयार किया और स्वयं लगभग एक दर्जन वर्णसंकरों की शुद्धि करके उनके लिये वैदिक धर्म का दरवाज़ा खोल दिया। आज तो भारत समाज किसी को भी शुद्ध करके धर्म की गोद में आश्रय देने को तैयार है। स्वामी जी का यह कार्य पोर्तुगीज़ ईस्ट आफ्रिका के हिन्दुओं के इतिहास का एक अमर अध्याय है।

मेहता जी दो सप्ताह भारत समाज के मेहमान रह गये हैं। उन्होंने जो कुछ प्रचार किया है उसके लिये हम उनके कृतज्ञ हैं। हमने उनको प्रशंसा-पत्र देकर भी अपनी कृतज्ञता का प्रकाश किया है किन्तु उनका यह कथन सर्वथा असत्य है कि वे प्रथम उपदेशक हैं जिन्होंने पोर्तुगीज ईस्ट आफ्रिका में प्रचार किया है। दक्षिण आफ्रिका जानेवाले अनेक राजनितीक नेता और धर्म प्रचारक अपने उपदेशों से यहाँ की जनता को कृतार्थ कर चुके हैं। हमें भारी आश्चर्य है कि मेहता जी एक वयोवृद्ध व्यक्ति होते हुए भी आर्यपत्रों में इतनी निराधार और असत्य बातें कैसे लिख सकते हैं। भारत समाज ने महताजी को प्रशंसा पत्र देकर उचित कार्य किया है अथवा अनुचित, मेहताजी की प्रवृत्ति देखकर और उनके वक्तव्य को पढ़कर इस प्रश्न पर भी हम विचार करने लग गये

# दलितोद्धार

## सीलोन में गुलामी की प्रथा

जो मनोवृत्ति 'अस्पृश्यता' के लिए जिम्मेवार है, वही वा उससे मिलती जुलती मनोवृत्ति 'दास-प्रथा' के लिए भी जिम्मेवार है। इस मनोवृत्ति की कालिमा का किंचित् आभास सहृदय पाठकों को हो जाय इसी उद्देश्य से हम 'सीलोन मे गुलामी की प्रथा' का विवरण देते हैं।—सम्पादक।

भारत के रजवाड़ों मे लौंडी, बांदी और गोले या दास दासियों की भयंकर दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। इसी प्रकार अकाल-पीड़ित व्यक्तियों द्वारा अन्न या नाममात्र के मूल्य पर बेचे हुए लड़के-लड़कियां भी जहां-तहां ग़ुलाम बनकर जैसे तैसे अपना जीवन बिता रहे हैं और उनकी दुर्दशा की ओर किसी का ध्यान तक नहीं आता। लाचार बेचारों को गुलामी की असह्य यंत्रणाएँ सहते हुए जीवन समाप्त कर देना पड़ता है। यह प्रथा भारत के लगभग सभी प्रान्तों में प्रचलित है। यहां से पकड़ कर या धोखा देकर फिजी, मारिशस या अफ्रीका में भेज देने वाले कुलियों का जीवन भी ग़ुलामों से किसी भी प्रकार अच्छा नहीं कहा जा सकता। अफ्रीका के हब्शियों को

---

हैं। हम मेहता जी से अन्त मे इतना ही प्रार्थना करना चाहते हैं कि वे आत्म प्रशंसा का धन्धा छोड़ दें—यह वृत्ति उपदेशक के लिये उचित नहीं है।

बी० जे० पटेल, मंत्री भारत समाज

( आशा है कि श्री० जैमिनि महता जी इस सम्बंध मे अपनी स्थिति को स्पष्ट करेंगे और "आर्यपत्र' भ्रमात्मक समाचारो विशेषत विदेश प्रचार सम्बन्धी समाचारों की प्रामाणिकताके सम्बन्धमे अपनी जिम्मेवारी को अनुभव करेंगे )।—सम्पादक, 'सार्वदेशिक'

× × ×

## श्री गोपेन्द्रनारायणजी की श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के नाम फिजी की चिट्ठी

ईश्वर की कृपा से इस द्वीप में आर्य-समाज का प्रचार शनैः शनैः हो रहा है। शिक्षा सम्बन्धी कार्य से आर्यसमाज की धाक यहाँ की जनता तथा राज्य पर जमी हुई है। सैकण्ड्री शिक्षा के लिए भी इस गुरुकुल मे प्रबंध कर दिया गया है। इससे इस द्वीप के विद्यार्थियों को न्यूज़ीलैण्ड आदि देशों में जाने की आवश्यकता नही रही। भारतवर्ष से और विद्यार्थी शिक्षित होकर आ जाने से कार्य मे विशेष सहायता मिलेगी।

भारतीय सभ्यता की ओर यहाँ के नवयुवक ध्यान देते है और सार्वजनिक कार्यों में विशेष भाग लेते है, स्थान स्थान पर नई-नई संस्थाओं अथवा सभाओं का खुलना इसका प्रमाण है। रहन-सहन तथा स्वास्थ्य में भी वृद्धि हुई है और आशा की जाती है कि निकट भविष्य में इसका फल और अच्छा होगा।

गोपेन्द्रनारायण 'पथिक'
मुख्याध्यापक गुरुकुल
लाटोका (फ़िजी)

---

गाय-बैल आदि पशुओं की तरह आज भी हम हाट-बाज़ारों में बिकते देख सकते हैं। इन बेचारों का अपना निजी कोई अधिकार नहीं होता।

भारत के उपनिवेश सीलोन या लंका में भी गुलामी की प्रथा मौजूद है, किन्तु उसका स्वरूप इतना भीषण नहीं है। सीलोन में पालन पोषण के लिए बालक-बालिकाओं को 'एग्रिमेंएट कंट्राक्ट' की शर्त पर तो नहीं, पर किराए पर अवश्य लिया जाता है और बेचारे दरिद्र तथा भूखों मरते हुए लोग अपने बाल-बच्चों को पढ़ा लिखा कर गुलामी के बन्धन में डाल देते हैं।

किरायानामा सही होने के वक्त माँ-बाप या अभिभावक लोग एक खासी रक़म नज़राने के रूप में लेते हैं और अपने बच्चों की अभिभावकता उनके बालिग़ होने तक के लिए दाम देने वालों को सौंप देते हैं। माता-पिताओं का कहना है कि हम केवल पेट के लिए ही ऐसा करते हैं। मगर उन बेचारे बालक-बालिकाओं का जीवन महान् कष्टकर हो जाता है। अपने मालिक (अभिभावक) के घर उन बेचारों को सुबह से शाम तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। आधे पेट खाकर रहना पड़ता और ज़रा-सी भूल-चूक या ग़फ़लत होने पर कठोर-से-कठोर दण्ड भोगना पड़ता है।

अभी कुछ समय पहले सीलोन के प्रसिद्ध अंग्रेज़ी पत्र 'टाइम्स आफ सीलोन' में कुछ ऐसे अदालती मामले प्रकाशित हुए हैं, जिनमें इस तरह के किराये पर लिए हुये लड़के-लड़कियों को मालिकों द्वारा निर्दयता पूर्वक बेतों से पीटे जाने गरम लोहे से दागे जाने और उनकी उँगलियों में आल्पीनें या सुई चुभाने की शिकायतें की गई हैं। कहीं कहीं तो आँखों में मिर्चें लगाकर कष्ट देने की घटनायें भी घटी हैं।

उन बेचारों से कठिन परिश्रम लिया जाकर भी खाने के लिए सड़ा बुसा अन्न, और वह भी बहुत कम, दिया जाता है। वेतन या अन्य रूप में तो उन्हें एक पाई भी नसीब नहीं होती।

इसी तरह उन लोगों की और भी कई कष्ट-कथायें प्रकाशित हुई हैं, जिन्हें पढ़ कर मन में यही संदेह होता है, कि लंका जो किसी समय राक्षसों का देश माना जाता था, वह निरी कवि कल्पना ही नहीं थी। क्योंकि आज भी वहाँ इस प्रकार के राक्षसी स्वभाव वाले पूँजीपतियों की संख्या कम नहीं है।

एक दफ्तर के क्लर्क के यहां दस साल का एक लड़का इस शर्त पर गुलाम बनाकर रखा गया कि उससे किसी काम में भूल होने पर उस की गर्दन पर एक भारी पत्थर रखकर उठक-बैठक कराई जायगी। एक दिन लड़के की ग़ल्ती पर वह सज़ा दी भी गई। मगर मालिक को इतने ही से सन्तोष नहीं हुआ और उसने उस लड़के की उँगलियों में आल्पीनें चुभोकर उसे बाँध दिया था। यहाँ तक कि अन्त में दियासलाई सुलगा कर उस जलती हुई सलाई से उसके हाथ को दाग दिया। पुलिस को जब यह ख़बर मिली, तो उसने उस क्रूर राक्षस स्वामी को अदालत में खड़ा कर दिया। उसके अत्याचारों पर विचार

हो कर अन्त में न्यायाध्यक्ष ने उसे सौ रुपए जुर्माना और तीन सप्ताह के कठिन कारावास की सज़ा सुना दी। अदालत में उस लड़के के शरीर पर ३० ज़ख्म दिखलाए गये थे।

इसी प्रकार दस बरस की एक बालिका दासी को उसकी मालकिन ने बुरी तरह बेतों से पीट कर अपना क्रोध शांत करना चाहा; किन्तु इतने से भी जब उसे सन्तोष नहीं हुआ, तो उस बालिका के शरीर पर खौलता हुआ तेल डालकर उसे रस्सी से बाँध दिया और ऊपर से एक काठ का कीड़ा छोड़ दिया।

तीसरी एक दस साल की बालिका-दासी को खंभे से बांध कर उसके मालिक ने बेतों से पीटते हुए उसे बेदम कर दिया। इसके बाद उसके पांव में रस्सी बांध कर खिड़की से नीचे औंधा लटका दिया। तीन दिन--तीन रात उस बेचारी को उसी दशा में रखा गया और खाने को एक दाना भी अन्न का नहीं दिया गया।

पांच वर्ष की अवस्था की एक दासी को उस की मालिकिन ने बर्तन फोड़ देने के अपराध पर उसका गाल गर्म लोहे से दाग दिया, पर इतने पर भी अदालत ने कोई प्रत्यक्ष गवाह न पाकर अपराधिनी मालिकिन को निर्दोष क़रार दे दिया!

आठ-दस वर्ष के एक बालक नौकर (दास) को उसके मालिक ने यह काम बतलाया था कि वह उसके प्यारे कुत्ते को दोनों वक्त भात खिला दिया करे। किन्तु वह बेचारा एक बार का चावल उसे खिलाता और दूसरी बार का ख़ुद खाकर अपना पेट भरता था। इस अपराध पर उसे मालिक ने बुरी तरह बेतों से पीटकर बेहोश कर दिया। पुलिस ने उसके बदन पर पन्द्रह ज़ख्म देखे। अदालत ने उस लड़के को ग़ुलामी के बन्धन से मुक्त करके पिता के घर भेज दिया और उस इक़रारनामे को ग़ैरक़ानूनी बतला कर रद्द कर दिया।

इसी प्रकार के और भी कई मामलों में दास-वृत्ति करने वाले कई बालक-बालिकाओं को अदालत ने ग़ुलामी से छुड़ाकर उनके माँ-बाप के सुपुर्द कर दिया और साथ ही यह हिदायत भी दे दी कि अगर फिर कभी इस तरह लड़के-लड़कियों को किराये पर दोगे, तो जेल की सज़ा दी जायगी।

किन्तु उन असंख्य अत्याचार-पीड़ितों में अदालत तक जाने वालों की संख्या तो इनीगिनी ही है। इसीलिए यहां अभी एक 'शिशु-रक्षा समिति' बनाई गई है। इसकी स्थापना के समय यहां के गवर्नर की पत्नी लेडी टामसन ने बतलाया, कि यह अकेली पुलिस या समिति के बस की बात नहीं है, कि वे इन असंख्य अत्याचार-पीड़ितों की शिकायतों का पूरा-पूरा पता लगा कर अपराधियों को सज़ा दिलवा सकें।

सीलोन की आबादी ५० लाख के लगभग है। किन्तु प्रत्येक गृहस्थ के घर या दुकान पर अथवा कारखाने में जितने भी नौकर हैं वे सभी कम उम्र के लड़के-लड़कियां हैं। जो माता-पिता अपने बच्चों को इस तरह बेचने या किराये पर दे डालते हैं, वे स्वयं भी अपने घर काम-काज के लिए सस्ते दामों पर अन्य ग़रीब लोगों के बच्चों

# बिछुड़ों का मिलाप

१—गत २५ सितम्बर १९३४ को शाहत गढ़ (सागर सी० पी०) मे स्वामी प्रकाशानन्द जी के उद्योग से ३ नौमुसलिमों की जो भोपाल में १० वर्ष पूर्व मुसलमान हो गए थे शुद्धि की गई।

२—आर्यसमाज उझयानी ने गत २६ २७ सितम्बर को २ नव मुसलिमो की शुद्धि की।

३—गत २७—९—३४ को गुरुकुल झौरली (मेरठ) में २ नव मुसलिमों की शुद्धि की गई। दोनों नवयुवक भाई भाई हैं। कलना-कांठव से मुसलमान हो गए थे।

४—गत ६—१०—३४ को एक नव मुस्लिम का शुद्धि आर्यसमाज सदर बाज़ार अम्बा ओगोई (निज़ाम राज्य) में हुई।

५—गत १—१०—३४ को आर्यसमाज नजीबाबाद (बिजनौर) में एक जन्म के मुसलमान परिवार को शुद्धि की गई। ७—१०—३४ को एक नव मुस्लिम स्त्री का शुद्ध किया गया।

६—आ० स० रायबरेली यू० पा०) मे गत कृष्णोत्सव के अवसर पर एक नव मुस्लिम देवी की शुद्धि की गई।

७—गत १ अक्टोबर सन् १९३४ को आ० स० बड़ओई में एक नव मुस्लिम की शुद्धि हुई जो १ वर्ष

---

को खरीद लेते हैं।

हाल ही में इस दास-प्रथा की रोक के लिए एक नया क़ानून बनाया जा रहा है। इसमें यह प्रथा दूर तो नहीं होगी, पर इसकी उचित व्यवस्था अवश्य हो सकेगी। सात साल से कम उम्र के बालक से कोई भी कुछ काम नहीं ले सकेगा। काम का समय निश्चित हो जायगा एक बार में केवल ४ घंटे। देखें, यह व्यवस्था कहाँ तक काम देती है। 'हरिजन सेवक'

## जाटव चमार मुसलमान होने से बचे

## श्रद्धानन्द ट्रस्ट का सराहनीय कार्य

कुछ दिन हुए समाचार पत्रो मे यह सूचना प्रकाशित हुई थी कि एटा (U. P.) के जाटव चमारों ने उच्च जातियों के हिन्दुओं के दुर्व्यवहार से तङ्ग आकर मुसलमान बनने का निश्चय किया है। २५ अक्टूबर सन ३४ ई० की तारीख इस कार्य के लिए नियत भी हो चुकी थी। इस बात की सूचना मिलने पर श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से पं० जगतकुमार जी 'अमर' सिद्धांत भूषण तथा पं० रामलाल जी भजनोपदेशक को वस्तु स्थिति की जांच करने तथा चमारों को उनके अधिकार दिलाकर मुसलमान होने से बचाने के लिए एटा भेजा गया था। उपरोक्त उपदेशकों को अपने उद्देश्य में अपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। क्योंकि एटा के हिन्दुओं ने चमारों की सब मांगें स्वीकार करली हैं इसलिए चमारों ने मुसलमान बनने का विचार छोड़ दिया है।

# सामाजिक जगत्

## वर की जरूरत

श्री पं० अयोध्याप्रसाद जो रिसर्च स्कालर जो सार्वदेशिक सभा की ओर से अमरीका में प्रचार कर रहे हैं, उनकी पन्द्रह वर्षीया कन्या के लिए एक सुयोग्य वर की ज़रूरत है। कन्या हिन्दी, गणित और कुछ अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त, गृह कार्य्य में दक्ष और कताई बुनाई आदि करने में निपुण रूपवती और नम्र स्वभाव वाली है। अविवाहित युवा पुरुषों को ही प्रार्थना पत्र भेजना चाहिए।

—मन्त्री

सार्वदेशिक सभा, देहली।

## उपदेशक पद के प्रार्थियों को सूचना

जिन आर्योपदेशकों के प्रार्थना पत्र सार्वदेशिक सभा में उपदेशक पद पर कार्य करने के संबंध में आवे हैं उन्हें यदि सभाकी ओर से कोई उत्तर न मिले तो समझ लेना चाहिए कि उनका प्रार्थना-पत्र स्वीकृत नहीं हुआ है।

—मन्त्री

सार्वदेशिक सभा, देहली।

## महाराज नाथूरामजी के वध पर आर्य्य जगत का क्षोभ-प्रकाश

१—महाराज नाथूराम का जो वध अदालत जुडीशियल कमिश्नर सिन्धकी में हुआ है उस पर आर्य्य-समाज खुदागंज अत्यन्त खेद प्रकट करता है।

२—श्रीमान् गवर्नर महोदय बम्बई प्रान्त से प्रार्थना करता है कि अपराधी को दण्ड

पूर्व किन्हीं कारणों से मुसलमान हो गए था।

८—आ० स० बोका गो कान नाथ ( यू० पी० ) मे गत १४—१०—३४ को एक मुसलमान की शुद्धि की गई।

९—गत ३० सितम्बर १९३४ को गढ़ी रुस्तम ग्राम ( मथुरा ) में मलकानों के ९१ परिवार जिनमें लगभग ६० व्यक्ति थे शुद्ध होकर अपनी राजपूत बिरादरी में सम्मिलित हुए। यह शुद्धि संस्कार भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली के कतिपय पदाधिकारियों के तत्वावधान में हुआ।

१०—श्री लाला देवी सहाय जी जो सर शादीलाल जी के भाई है मुसलमान हो गए थे। उनके मुसलमान हो जाने पर मुसलमानों ने बहुत लम्बे चौड़े इश्तहारात दिए थे। और मुसलमान अखबारों में लिखा गया था कि सर शादीलाल पर कई लाख का दावा किया जायगा। वह ठीक १ महीने के बाद १४-१०-३४ को अपने धर्म में वापस आगए हैं। रिवाड़ी में उन्हें शुद्ध किया गया। शुद्धि संस्कार श्री स्वामी स्वतन्त्रानंद जी महाराज आचार्य दयानंद उपदेशक विद्यालय लाहौर के तत्वावधान में हुआ।

११—गत १८—९—३४ को आर्य समाज कृष्णपुरा लाहौर में १ जन्म की मुस्लिम स्त्री की शुद्धि की गई।

——

के अतिरिक्त उस वध में भाग लेने वालों को उचित दण्ड दिया जावे।

३—श्रीमान् कमिश्नर महोदय सिन्ध से प्रार्थना करता है कि अपराधी को दण्ड देने के अतिरिक्त उस वध में भाग लेने वालों की अच्छी तरह खोज करके उचित दण्ड दिया जावे।

४—अपनी शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा से भी प्रार्थना करता है कि उस वध में भाग लेने वालों की गवर्नमेंट द्वारा खोज लगाकर दण्ड दिलाया जावे।

मन्त्री आर्य्य-समाज
खुदागंज
ज़ि० शाहजहांपुर

## आर्य्य-समाज दारेसलाम का प्रस्ताव

१—आर्य्य-समाज दारेसलाम की आज ता० २०—१०—३४ की साधारण सभा शहीद महाराज नाथूराम जी की एक दुष्ट मुसलमान अबदुलक़य्यूम द्वारा किए गये हत्या कांड को अति घृणा की दृष्टि से देखती है और ईश्वर से प्रार्थी है कि वह मृतक की आत्मा को शान्ति देवे तथा सम्बन्धियों को इस दुःख के सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

२—यह सभा आर्य्य सार्वदेशिक सभा तथा आर्य्य रक्षा समिति से विनय पूर्वक आग्रह करती है कि आर्य्य-समाज के प्रसिद्ध व्यक्तियों पर बार-बार होने वाले ऐसे घातक आक्रमणों को रोकने के लिए उपाय सोचें।

मंगलराम
मंत्री आर्य्य-समाज

## श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय

२४ अगस्त सन १९३४ को श्रावणी के अवसर पर देहली में 'श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय' की स्थापना की गई, विद्यालय का कोर्स ५ वर्ष का है। प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों की योग्यता कम से कम हिन्दी मिडिल की अवश्य होनी चाहिये। इसमें व्याकरण, अष्टाध्यायी, महाभाष्य दर्शन शास्त्र तथा वेद वेदाङ्गों के अतिरिक्त श्री भगवान दयानन्द कृत समस्त ग्रन्थों का अध्ययन शङ्का समाधान सहित कराया जायगा। विद्यार्थियों से किसी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जायगा, भोजन आदि विद्यालय की ओर से दिया जायगा। इस साल केवल २० विद्यार्थियों के लिए स्थान है। जो महानुभाव अपने बच्चों को प्रविष्ट कराना चाहें उनको निम्न लिखित पते पर पत्र व्यवहार करना चाहिए।

राजेन्द्रनाथ शास्त्री आचार्य
दयानन्द वेद विद्यालय पच कुइयाँ
रोड नं० १, नई दिल्ली।

## आर्य विद्वान कृपया ध्यान दें

सत्यार्थ प्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में स्वामी जी ने लिखा है कि-राजा प्रजा से चुना जावे।

क्या ऐसे उदाहरण आर्य जाति के इतिहास से प्राप्त होते हैं। जिससे प्रजा द्वारा चुने हुए राजा होने का समर्थन हो।

इस प्रश्न का उत्तर कृपया इतिहास के विद्वान देवें।

मन्त्री, आर्य-समाज बहमोई

# चिटगोपा (निज़ाम हैदराबाद) में आर्यसमाज

## प्रचार कार्य में पुलिस का अनुचित हस्तक्षेप

### श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक सभा का प्रेस को वक्तव्य

गत २८-१०-३४ को म० बंसीलाल जी एडवोकेट हाई कोर्ट, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम हैदराबाद आर्य समाज के प्रचारार्थ चिटगोपा गये थे। उन्हों ने आर्य समाज मन्दिर में प्रचार कार्य करना चाहा परन्तु पुलीस ने निज़ाम सरकार की आर्य समाज से सम्बन्धित अभी हाल की घोषणा के प्रति कूल आर्य समाज के प्रचार में अनुचित हस्ताक्षेप किया और रुकावट डाली। पुलीस ने जो हुक्म दिया और उसे जो उत्तर दिया गया उसका विवरण निम्न प्रकार है:—

> **नाथूराम स्मारक भवन कराची**
>
> धर्म के शहीद नाथूराम की बलिदान स्मृति को अमर बना देने के लिये 'आर्य्य समाज कराची नाथूराम-स्मारक भवन' जो आर्य्य समाज कराची के लिए आर्य्य मन्दिर का काम देगा, बनाना चाहता है। इस काम के लिए उसने एक लाख रुपए की अपील निकाली है। अपील प्रत्येक धर्म्म प्रेमी के लिए ध्यान देने योग्य है। प्रत्येक धनी-मानी सज्जन यथोसंभव शीघ्र अधिक से अधिक देने की कृपा करें जिससे भवन शीघ्र निर्मित हो सके।
>
> नारायण स्वामी

#### सब इन्सपेक्टर पुलीस चिटगोपा का हुक्म आर्यसमाज के नाम

आप को सूचित किया जाता है कि आज से आप लोग कोई धार्मिक या साम्प्रदायिक भाषण चिटगोपा ख़ास या उसके इर्द गिर्द में न करें। यदि कोई तक़रीर किसी क़स्बे में करनी हो तो मोमनाबाद अदालत से ज़ाब्ते के अनुसार आज्ञा प्राप्त करें। जब तक आज्ञा प्राप्त न हो जावेगी तब तक किसी मज़हब व मिल्लत के किसी शख़्स को तक़रीर न करने दी जावेगी।

#### म० बन्सीलालजी का उत्तर

आपका हुक्म मिला जिसमें आर्य समाज मन्दिर में मेरे धार्मिक भाषण की मनाही की गई है। कोई क़ानून या हुक्म आर्य समाज मन्दिर के धार्मिक व्याख्यान का निषेध नहीं करता। आप का हुक्म हमारे धार्मिक अधिकार में अनुचित हस्ताक्षेप है जिसका पालन नहीं किया जा सकता। —सूचनार्थ

इस हुक्म की एक प्रति सार्वदेशिक सभा में भेज कर मैं उसे सूचना दे रहा हूँ कि आर्य समाज मन्दिर

केमीतर चिटगोपाले विरुद्ध धार्मिक उपदेशादिसे मुझे रोका गया है और मैं इस आर्डर का उल्लंघन कर रहा हूँ। आगे का समाचार मालूम होता रहेगा। उचित कार्य्यवाही की जावे।

## श्री म० बन्सीलाल जी को मोमिनाबाद की कोतवाली से प्राप्त हुआ उत्तर

पुलीस ने आप को अदालत के हुक्म के मुताबिक सूचना दी है कि आप साम्प्रदायिक या धार्मिक भाषण न दें जो कार्य्यवाही आप को करनी हो वह आप अदालत में कर सकते हैं। यदि आप इस के विरुद्ध कार्य्यवाही करेंगे तो इस के ज़िम्मेदार आप होंगे और आप के विरुद्ध जल्दी की कार्य्यवाही की जायगी।

## श्री म० बन्सीलाल जी का उत्तर

आप को सूचना दी जाती है कि मैंने न तो साम्प्रदायिक भाषण दिया न भाषण, देता हूँ और न देने का विचार रखता हू। मैं आर्य्यसमाज मन्दिर मे, धार्मिक उपदेश अपने भाइयों को देता हूं और वह भी वैदिक धर्म की सीमाओं के भीतर। इस दशा में किसी कानून या उचित आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता। यदि आप मेरा आर्य्य समाज मन्दिर में धर्मोपदेश होने से भी इन्कार करते हैं तो यह हुक्म अनुचित है हमारे धार्मिक अधिकारों में अनुचित हस्ताक्षेप है, और इस का पालन नहीं किया जा सकता। सूचनार्थ—

## पुलीस का म० बन्सीलालजी को उत्तर

आपको पुलीस ने निजी स्थिति में हुक्म नहीं दिया है बल्कि महकमा अव्वल तालुकेदारी व ज़िला की आज्ञानुसार दिया गया है। आप को जो कुछ आपत्ति हो आप प्रशंसित महकमा में पेश कर सकते हैं। पुलीस हुक्म की तामील के लिए मजबूर है।

## श्री म० बन्सीलालजी का उत्तर

आर्य्यसमाज मन्दिर आर्यों के धार्मिक कार्यों व उपदेश आदि के लिए चौबीसों घन्टे आज़ाद है। यही अमल हमारे आक़ा व वली का है। श्रीमान् तालुकेदार साहब ने कोई हुक्म मेरे नाम जारी नहीं किया और न मालूम क्या हुक्म दिया है। मुझे प्रधान सार्वदेशिक आर्य्यप्रतिनिधि सभा देहली का हुक्म है कि हमारे मेमोरियल के जवाब में हकूमत (निजाम) ने जो घोषणा की है उस घोषणा में वर्णित नीति के अनुसार आर्य्य समाज में उपदेश के लिए कोई हुक्म या क़ानून बाधक नहीं होगा। इस लिए खिलाफ़ क़ानून धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं छीनी जासकती। यदि पुलीस क़ानून विरुद्ध कोई कार्य्यवाहि मेरे विरुद्ध करेगी तो वह जिम्मेवारी से बरी नहीं हो सकती। आपका हुक्म अनुचित है और इसका पालन नहीं किया जा सकता। -

श्री म० बन्सीलाल जी के इस अन्तिम पत्र का उत्तर पुलीस की ओर से नहीं दिया गया परन्तु पुलीस के अफ़सर समाज मन्दिर में आकर प्रचारमें रुकावट डालते रहे लेकिन इससे प्रचार नहीं रुका।

हिन्दू जनता में पुलीस के इस हस्ताक्षेप से बहुत असन्तोष फैल रहा है। बड़े दुःख की बात है कि हैदराबाद राज्य की पुलीस ने राज्य की हिन्दू प्रजा मे एक बार फिर असन्तोष और बेचैनी उत्पन्न की। मेरे मन्त्री जी ने निज़ाम सरकार का इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि उनकी उद्घोषित नीति के विरुद्ध उन्हीं की पुलीस जा रही है।

नारायणस्वामी

# महिला-जगत

सम्पादिका—
( श्रीमती विद्यावती 'विशारदा' )

## नारी-अपहरण की विभीषिका

भारतमें जबसे सिनेमा और छाया-चित्रों का प्रचार हुआ है, तबसे इस पवित्र भूमि में न जाने कितने प्रकार के दोष उत्पन्न होने लगे हैं। यों तो स्वास्थ्य विज्ञान की दृष्टि से फिल्मों का देखना हानिकारक है ही, किन्तु इसके साथ ही नैतिक आचार विचार पर भी इसका बड़ा ही घातक प्रभाव पड़ता है। अभी उस दिन की बात है कि दिल्ली में एक सम्भ्रान्त युवक चोरी के अभियोग मे गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया था। विचार पति के पूछने पर उसने कहा कि अंग्रेज़ी फिल्मो को देखकर मैंने चोरी करना सीखा। फिल्म में दिखाया गया था कि किस प्रकार आसानी से किवाड़ के पल्लो को हटाकर चोर दुकान मे प्रवेश करता और माल-असबाब लेकर फिर उन्हें यथा-स्थान चिपका देता है। इसी प्रकार एक ही नहीं, अनेक दुर्गुण इन फिल्मों से उत्पन्न होते हैं।

फ़िल्म-प्रदर्शन के परिणाम स्वरूप ही हमारे देश में अपहरण जैसा भयङ्कर रोग घुस गया है। आये दिन कितने ही ऐसे छायाचित्र दिखाये जाते हैं जिनसे भाव नाएं दूषित और गर्हित हो जाती है। हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि सभी फिल्म बुरे ही होते है, किन्तु यह बात ध्यान में रखने की है, कि नैतिक पतन-मूलक दृश्यों का प्रभाव दर्शकों के हृदय पर बहुत शीघ्रता से पड़ जाता है। फलतः गुणों को न ग्रहण कर वे दोषों को ही अपनाते हैं। इसका कारण यह है कि हंसस्वाभ से स्वस्थ गुणग्राही व्यक्तियों का अभाव है और इस अभावका कारण है, देशमें उत्तम शिक्षाका अभाव।

संवाद पत्रों में नित्यप्रति अप्राप्तवयस्क बालक-बालिकाओं और युवतियों के अपहरण के समाचार देखने में आते हैं। इस भीषण अपहरण के आखेट बनाये जाते हैं, मुख्यत हिन्दू। उनकी कन्याएं और युवती स्त्रियाँ फुसलाकर या डरा धमका कर उड़ा ली जाती हैं। अपहरणकर्ता उन्हें सुन्दर आभूषण देने, सुन्दर और मनोहर स्थानों को दिखाने, अच्छे वस्त्र और सुखमय स्थान का प्रबन्ध करने, स्वेच्छानुकूल भोजन कराने का लोभ दिखा कर अथवा हत्या कर डालने की धमकी देकर अपने माया-जाल में फंसा लेते है। इस प्रकार फंसने वाली लड़कियाँ अथवा युवतियाँ साधारणतः सुन्दर होती हैं। उनके आसानी से अपहरणकारी गुण्डो के मायाजाल में फस जाने का कारण होता है ननद, भौजाई, मां बेटी या सास पतोहू में झगड़ा अथवा उनके प्रति घरवालो का दुर्व्यवहार।

इन अपहरणकारियो की कोई जाति नहीं है। हिन्दू तथा मुसलमान दोनो ही जातियों के कुछ गुण्डे इस कार्य को अपनाये हुए है किन्तु अधिक संख्या मुसलमानो की ही है। उनमें कुछ गुण्डे ऐसे है जो अपनी पैशाचिक काम वासना का तृप्ति के लिये ऐसा करते हैं और कुछ व्यावसायिक दृष्टि से करते हैं। वे अपहृत अज्ञान बालिकाएं पञ्जाब और सिन्ध का ओर ले जाकर बेच डाली जाती है। इस व्यवसाय से अपहरणकारियों को ख़ासा लाभ ही होता है। 　　　( क्रमशः )

× 　　　× 　　　×

# दान दिये धन ना घटे !

## पंजाब अनाथ संरक्षिणी सभा लाहौर

के आधीन

## पंजाब केन्द्रिय अनाथालय रावीरोड लाहौर

प्रसिद्ध आर्यनेताओं की कार्यकारिणी सभा द्वारा सञ्चालित हो रहा है।

प्रधान—

**श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज**

आचार्य

दयानन्द उपदेशक विद्यालय।

मन्त्री

**श्री लाला बोसाराम रिटायर्ड स्टोरकीपर,**

N. W R लाहौर।

इस अनाथालय में लगभग १०० लड़के लड़कियां सदा रहते हैं जिनको हिन्दी शिक्षा के अलावा दर्जी, तरखान, जिल्दसाजी हारमोनियम, मोटर ड्राइवरी, कम्पोजिटरी और कई ऐसे दस्तकारी के काम सिखलाने का प्रबन्ध किया जाता है जिससे कई बालक अनाथालय से निकल कर अपनी २ जीविका कमा रहे हैं। योग्य लड़कों को उच्च शिक्षा दी जाती है। इसलिये दानी पुरुषों से प्रार्थना है कि वह वर्तनवस्त्र, भोजन, नकदी के रूप में जो भी सहायता देंगे खुशी से स्वीकार होगी ताकि अनाथ बच्चों का भली प्रकार पालन पोषण हो सके। अनाथालय की सालाना रिपोर्ट मुफ्त मंगवा कर पढ़ें।

निवेदक –

**मन्त्री,**

पंजाब केन्द्रीय अनाथालय रावीरोड, लाहौर।

# ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों के प्रचारार्थ बहु संख्या में ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बड़े सभी ग्रंथ अच्छे कागज पर बड़े आकार मे हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहियें:—

| | असली मू० | घटाहुआ मू० |
|---|---|---|
| (१) आर्याभिविनय | ।–) | ।) |
| (२) काशी शास्त्रार्थ | –) | )॥ |
| (३) सत्यधर्म विचार | –)॥ | –) |
| (४) पञ्च महायज्ञ विधि | –)॥ | –) |
| (५) आर्योद्देश्य रत्न माला | )॥ | )॥ |
| (६) संस्कार विधि बढ़िया कागज | ॥) | ।=) |
| (७) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढ़िया कागज उम्दा छपाई बड़ा आकार | १॥) | १।) |
| (८) व्यवहार भानु | =)॥ | =) |
| (९) वेद विरुद्ध मत खण्डनम् | =)॥ | =) |
| (१०) शिक्षापत्री स्वा० नारायण मतखण्डन | =) | –) |
| (११) भ्रमोच्छेदन | –) | )॥ |
| (१२) भ्रान्ति निवारणम् | =) | –) |
| (१३) गो करुणानिधि | =) | –)॥ |
| (१४) स्वीकार पत्रम् | )॥ | )॥ |
| (१५) महर्षि संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रंगीन चित्रों के | ।) | ≡) |
| (१६) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में | ५) | ३।) |

# सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

## (१) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यों का त्यों प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

घटा हुआ मूल्य „ २)

## (२) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमें प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियों को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बड़ी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य केवल –), घटा हुआ मूल्य )॥

## (३) दयानन्द लहरी—

इसमे भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दों में किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री प० मेधाव्रत जी कविरत्न हैं। मूल्य –)॥, घटा हुआ मूल्य –)

( ४ ) आर्य पर्व पद्धति—

आर्य्य जगत मे एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक का प्रत्येक आर्य-परिवार में रखना आवश्यक है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।≈)

( ५ ) आर्यसमाज क्या है:—

यह पुस्तक पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम ए प्रयाग, द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास मौजूद है। संस्थाओं और आर्य विद्वान आदि के १९ चित्र हैं। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।)

( ६ ) दश नियम व्याख्या:—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह 'दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमे आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≥)

( ७ ) ओम्प्रत्ययः—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यती की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।≈)

( ८ ) वैदिक सिद्धान्तः—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानो द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है मूल्य १।) सजिल्द १।।), घटा हुआ मूल्य ।। ) सजिल्द १)

(९) भारत माता का सन्देश—लेखक—श्री भाई परमानन्द जी, मूल्य ।।), घटा हुआ मूल्य ।≈), पुस्तक में पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यता धर्म ( मजहब ) और राजनीति आदि कतिपय विषयो पर गंभीरता पूर्वक विचार किया गया है।

(१०) ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार मू० ।।), घ० मू० ।≈), लेखक श्री पं० स्नातक धर्मदेवजी विद्या वाचस्पति। इस पुस्तक मे ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर विद्वत्तापूर्ण रीति से बहुत सुन्दर विचार किया गया है।

(११) वैदिक सन्ध्या रहस्य—लेखक श्री महात्मा नारायण स्वामीजी, मू० -)।।, घ० हुआ मू० -) इस पुस्तक में वैदिक सन्ध्या की बहुत रोचक, खोज पूर्ण, प्रमाणिक और वैज्ञानिक व्याख्या की गई है सन्ध्या के प्रेमियों और स्वाध्याय शील सज्जनों के मनन करने योग्य पुस्तक है।

(१२) आरोग्य दिग्दर्शन—लेखक—श्री महात्मा गांधी, मूल्य ।≈), घटा हुआ मूल्य ।) शरीर-विज्ञान

और स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में श्री महात्मा जी के स्वयं अनुभूत प्रयोगों का संग्रह। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और पढ़ने योग्य है।

(१३) हमारे हकीकत—(उर्दू) लेखक—ला० ज्ञानचन्दजी आर्य्य, देहली। महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थो के सम्बन्ध मे जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक मे कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिससे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य मे स्थान पाने योग्य है। मूल्य ॥।≈)

(१४) सत्य-निर्णय—उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है, मूल्य १।)

(१५) योग रहस्य—लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, मूल्य ॥)
इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यों को प्रकट करते हुए उन विधियो को भी बतलाया गया है जिनसे कोई भी नया आदमी जिसे रुचि हो, योग के अभ्यासोंको कर सकता है। आत्मिकोन्नति के जिज्ञासुओं को यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए।

(१६) विद्यार्थी जीवन रहस्य—ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी। विद्यार्थियो के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। एक प्रति ॥)

(१७) यम पितृ परिचय—लेखक—श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २)
इस पुस्तक मे 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रो की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनो के पढने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१८) दयानन्द सिद्धान्त भास्कर—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)
पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयो पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तको व पत्र व्यवहार तक मे वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग ११ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिस किसी विषय मे भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक मे देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(१९) आर्य्य सिद्धान्त विमर्श—प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धो का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानो ने गम्भीर विषयो पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियो के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लगभग ५०० मूल्य १॥)

| | अ० मू० | घ० मू० | | अ० मू० | घ० मू० |
|---|---|---|---|---|---|
| (२०) बंगला अनुवाद आर्य्यसमाज | ।) | =) | (२६) विरजानन्द विजय | ।) | =) |
| (२१) शुद्ध बाल मनुस्मृति | ।=) | ।) | (२७) हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद उर्दू | ।) | =) |
| (२२) वर्ण व्यवस्था | -) | )॥ | (२८) भगवद्गीता | १) | ॥) |
| (२३) आर्तीयता | ।=) | ।) | (२९) ईशोपनिषद् (ले० महात्मा- नारायण स्वामी जी) | =) | =) |
| (२४) वेद में असित शब्द | -)। | -) | (३०) केनोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |
| (२४) " २५ प्रति का | १।) | १।) | (३१) कठोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |
| (२५) शताब्दी वृत्तान्त | १।) | ॥) | | | |

32 **Crucifixion by an eye witness:—**
This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes.—price As. 6, Reduced price As. 5.

33 **Truth and Vedas—**
It is an excellent exposition and translation of "Vibhrat" price As 8, Reduced price A. 6.

34 **Truth Bed Rocks of Aryan culture:—**
The subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal.—price As. 10, Reduced price As. 8.

35 **Torch Bearer—**
A biographical sketch of Swami Dayanand.—price Rs. 1/8/- Reduced price Rs. 1/-

36 **Vedic Teachings—**
This book contains the most authentic replies to the objection raised about the Vedas by Dr. Bhandarkar. The learned author has besides, brought forth the superiority the Vedic Teachings contained.—price Rs 1/12/-, Reduced price Rs. 1/4/-

37 **Voice of Aryavarta—**
This little book comes from the pen of Mr. T L Vaswani and contains reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching.—price As 8. Reduced price As. 6

38 **The daily Prayer of an Arya—**
This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya.—price As. 4 only.

39 **The Light of the Vedas—**
It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras. A book worth presenting to people of alien faiths. price Rs. 1/4/-

40 **Commentary on Ishopanishat—**
Translated by Pt. Ghasi Ram M. A. LL. B.—price As.4.

पुस्तक मिलने का पता—

**कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,**

श्रद्धानन्द बाजार, देहली।

प० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिन्टिंग प्रेस' कूचा घासीराम देहली मे प्रकाशित हुआ।

आर्यसमाजों, प्रचारक-संस्थाओं और व्यापारियों की सुविधा के लिये

# सन् १९३५ के उपहार

## प्रकाशित हो गये !

**शीघ्र मँगाइए ! अन्यथा पछताना पड़ेगा !!**

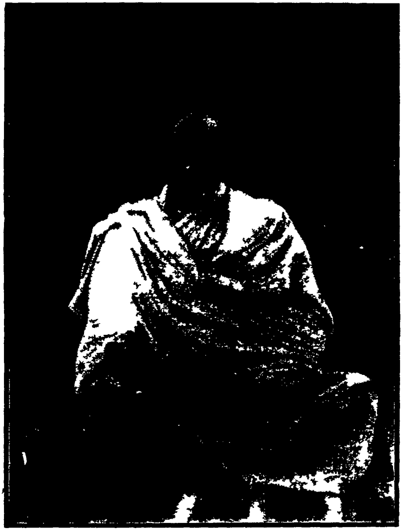
इस वर्ष के उपहार आर्य्य संसार ने बहुत पसन्द किए हैं। 'मूल्य ठीक है', 'चीज़ सुन्दर है', 'आपका प्रयत्न सराहनीय है' '[illegible] समाज की जानकारी तथा दैनिक व्यवहार में आने योग्य ज्ञान का खजाना और अपूर्व कोष है।' इत्यादि वाक्य चिट्ठियों में लिखे आते हैं। प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक व्यापारी काफी संख्या में इकट्ठा मंगा कर भली प्रकार प्रचार कर सके इस लिए निम्न लिखित दर निश्चित किया गया है इच्छुकों को शीघ्र मंगाना चाहिये —

| आर्य-डायरी हिन्दी | | कलेंडर | |
|---|---|---|---|
| १ से ६ तक लेने पर | -) प्रति | १ से ६ तक लेने पर | ≡) प्रति |
| ७ से १२ | ।)॥ प्रति | | |
| १३ से २५ | ) प्रति | ७ से २४ तक | =)॥ प्रति |
| २६ से ५० | ≡)॥ प्रति | २५ से ५० तक | =)। प्रति |
| ५१ से ९९ | ≡। प्रति | ५१ से १०० तक , | = प्रति |
| १०० से १५० | ≡) प्रति | | |
| १५० से ऊपर रेल भाड़ा माफ तथा | ≡) प्रति | इससे ऊपर लेने पर रेल भाड़ा भी माफ। | |

नोट — (१) एक प्रति डायरी मंगाने के लिए ॥ के टिकट आने चाहिएँ
(२) ६ प्रति तक कलेंडर मँगाने के लिए भी पहिले टिकट आने आवश्यक हैं।

**आर्य्य पुस्तकालय सरस्वती आश्रम, अनारकली, लाहौर।**

बलिदान-अंक




वार्षिक मूल्य २) | सम्पादक—प्रो० सुधाकर एम० ए० | विदेश से ५ शिलिंग

एक प्रति का ≈) | स० सम्पादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक | इस प्रति का ≈)


अथर्ववेद ←——→ सामवेद

# विषय-सूची

ओ३म्

# सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष ८ | मार्गशीर्ष सम्वत् १९९१ | दिसम्बर १९३४ ई० ] [ दयानन्दाब्द ११० | अंक १०

## वेद की शिक्षाएँ

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य परिष्टुतिः॥

—यजुर्वेद।

भावार्थ—बुद्धिमान, महान् ज्ञानी तथा योगी पुरुष उस अद्वितीय जगत्कर्ता ज्ञानी ईश्वर की ही श्रेष्ठ स्तुति मन और बुद्धि द्वारा अच्छे प्रकार किया करें।

# ❋ सम्पादकीय ❋

## श्रद्धाञ्जलि

इस वर्ष "श्रद्धानन्द-बलिदान-दिवस" देशी कलैंडर के अनुसार पौष कृष्णा ४ तदनुसार २४ दिसम्बर १९३४ को पड़ेगा। सार्वदेशिक सभा ने इस पर्व्व के अनुष्ठान के सम्बन्ध में समस्त आर्य्य समाजों को आवश्यक निर्देश सदैव की नाई एक सरक्यूलर के द्वारा जारी कर दिये हैं। सभाने समाजों को प्रेरणा की है कि इस दिन वे अधिक से अधिक संख्या में विधर्मियों की शुद्धि करें और उन की सूचना सार्वदेशिक सभा के कार्य्यालय को देवें। आशा है कि आर्य्यसमाजें उन निर्देशों का यथावत पालन करेंगी।

स्वामी श्रद्धानंदजी की 'बलिदान-जयंती' प्रति वर्ष एक खास संदेश के साथ आती है और खास विशेषताओं से प्रकाशमान् रहती है। वह संदेश आर्य्यसमाज के प्रति अटूट और विशुद्ध प्रेम का सन्देश है और आत्मोत्सर्ग की विमल ज्योति से दीप्तिमान है। आओ हम श्रद्धानन्द जी की बलिदान जयन्ती के पवित्र अवसर पर उस सन्देशको सुनें और उस ज्योतिको अपने जीवनों में धारण करें।

श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी का आर्य्यसमाज के प्रति गहरा और अटूट प्रेम था और उसका सब से बड़ा जीता जागता सबूत आर्य्यसमाज के लिए उनका पवित्र-बलिदान है। आर्य्यसमाज के लिए उन्होंने घर बार छोड़ा, वकालत छोड़ी और अपनी जायदाद सम्पत्ति आर्य्यसमाज के अर्पण की। गुरुकुल काङ्गड़ी की स्थापना की और उस की उन्नति में अपने को मिटाया। आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, सार्वदेशिक सभा की और भिन्न २ समयों में भिन्न २ रूप में समाजकी सेवा की, खूब सेवा की। हिन्दू महासभा में गए तो वहां भी आर्य्यसमाज के आदर्शों को साथ ले कर गए और वहां से निकले तो आर्य्यसमाज के आदर्शों की रक्षा के निमित्त ही। कांग्रेस में देश-सेवा के लिए गए तो वहां भी आर्य्यसमाज के प्रेममें उन्मत्त होकर गए और वहां से निकले भी तो उसी प्रेम के उन्माद में। ग़रज़ कि जहां रहे या जहां गए वहां—आर्य्य समाज के ही हो कर रहे। दलितोद्धार का काम किया तो वह भी आर्य्य भावना के अनुकूल ही किया। अन्त मे शुद्धिका पौधा लगा कर उसे अपनी शक्ति और पुरुषार्थ से सींचते रहे और अन्त में उसे अपने खून से सींचकर अमरपदको प्राप्त हुए। निस्संदेह आर्य्यसमाज के लिए उनका प्रेम अनुकरणीय था।

स्वामी जी का जीवन, त्याग, तप और

बलिदान का जीवन था। निष्काम सेवा, निर्भीकता साहस कर्त्तव्य परायणता, परिश्रम शीलता उनके जीवन में कूट कूट कर भरी थी। जो ठीक मानते थे वही करते थे, दूसरे चाहे प्रसन्न हों या अप्रसन्न। इसकी उन्हें परवा नहीं होती थी। इन सब गुणों ने उन्हें आर्यसमाज और देश क विशेष पुरुषों की पंक्ति में ला कर खड़ा कर दिया था। आओ हम स्वामी जी के आर्य समाज क प्रति विशाल प्रेम को समझें, उसे अपने जीवनों में धारण करें, उसका ससार को परिचय दें उनके जीवन के मिशन की महत्ता को देखें उनके बनाए हुए और बताए हुये मार्ग का अनुसरण करें, उन के बलिदान क गौरव को अनुभव कर और प्र माश्रु पूर्ण नेत्रों के साथ उस पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पण करें

स्वामी जी की इस बलिदान जयन्ती के उपलक्ष में 'सार्वदेशिक के पाठकों क हाथ में यह बलिदान अङ्क' आता है। समय और स्थान की कमी के होते हुए भी हम हम जैसा कुछ बना सके हैं वह पाठकों क सम्मुख है। हम उन सब ही महानुभावोंके कृतज्ञ हैं जिनकी रचनाएँ और सन्देश हमें प्राप्त हुए है विशेषतः अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के सौजन्य से हमें इस अङ्क की ज़रूरी सामग्री प्राप्त हुई है।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान श्री प० घासीराम जी की मृत्यु के सम्बन्ध मे श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के जो शोकोद्गार प्रेस मे आए हैं हम उन्हे यहां उद्धृत करते है—

## श्री पं० घासीराम जी एम० ए०, एल० एल० बी०, वकील की हृदय विदारक मृत्यु

आर्य जगत को यह दुःखद समाचार ज्ञात हो चुका है कि आज श्री प० घासीराम जी इस ससार मे नहीं हैं। प० घासीरामजी आर्य समाज के गिने चुने विद्वानों में एक थे। उनकी मृत्यु से न केवल आर्य समाज को एक विद्वान की गंभीर विद्वत्ता से वंचित होना पड़ा, अपितु मेधावी जगत को भी एक उत्कृष्ट व्यक्ति को खो देने से हानि उठानी पड़ी। वे न केवल संस्कृत और आंगल भाषा क पण्डित थे किन्तु फार्सी, उर्दू और हिन्दी के भी प्रवीण ज्ञाता थे। उन्होंने अंग्रेज़ी, हिन्दी, उर्दू आदि भाषाओं में अनेक उपयोगी ग्रन्थों की रचना की है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का संस्कृत से अंग्रेज़ी अनुवाद तथा ऋषि दयानन्द का विस्तृत और खोज पूर्ण जीवन चरित्र आदि ऐसे ग्रन्थ नहीं जिन की उपयोगिता शीघ्र समाप्त हो सके। यह अमिट साहित्यिक सपत्ति है जिसे चिरकाल तक आगामि

नसलों के नर नारी लाभ उठावगे। वे बड़े जिन्दा दिल थे उनकी वक्तृताएं उनके लेख प्रायः मनोरञ्जक होते थे। एक बार की घटना है कि यू० पी० कौंसिल के प्रधान श्रीयुत सीताराम जी के सम्मानार्थ मेरठ के नागरिकों ने एक सभा संगठित की। प० घासीराम जी से पहले जितने वक्ता आये वे सभी नियमानुसार वेदी पर जहां राय बहादुर सीताराम खड़े थे उनके सम्मुख खड़े हुए और उनका यशगान किया। जब प० घासीरामजी की बारी आई तो वे वक्तृता देने के लिए ला० सीताराम के पीछे खड़े हुए और प्रगट किया कि सब लोग ला० सीताराम की बड़ाई उनके सामने करते हैं परन्तु मैं उनकी बड़ाई उनके पीठ पीछे करूंगा। उनके इस मनोरञ्जक चुटकले से सभी सभा के सदस्य हंस पड़े। प० घासी राम जी की आयु केवल ६१ वर्ष की थी उनका जन्म संवत् १८२६ अर्थात् सन् १८७० ई० में हुआ था। उनका जन्म का नाम, मेरठ में उनके घर उनकी जन्म पत्री देखने से ज्ञात हुआ "एकाधिपति" था। उनके पिता की इससे पहली सन्तानें प्रायः नष्ट होती रही थीं इसी लिए उनके पिता ने उस समय प्रचलित विचारानुसार, उनका नाम घासी राम रखवाया जिससे उनका नाम खराब समझ कर यम के दूत उनको जल्द न तलब करें। अस्तु। प० जी की मृत्यु से अकथनीय हानि देश की हुई। वे उत्तम विचार वाले और निस्पृह व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु भी उनके गुणों के अनुरूप ही हुई। वे मृत्यु से बहुत पहले शान्त चित्त थे। ठीक मृत्यु के समय उनके चेहरे और विशेष कर आंखों से बड़ी तेजस्विता प्रगट होती थी और होंठों में मुस्कराहट। इसी स्थिति में ओ३म् ओ३म् करते हुए वे संसार से रुखसत हो गए। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।



(श्री प० घासीराम जी मृत्यु शय्या पर)

## अमेरिका प्रचार

सहयोगी 'प्रकाश' ने अपने २१ नवम्बर के अंक में श्री० पं० अयोध्या प्रसादजी के अमेरिका में प्रचार सम्बन्धी शानदार कार्य का वर्णन करते और अमेरिका को वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अत्यन्त उपयुक्त और उपजाऊ क्षेत्र बतलाते हुये आर्य जनता से अपील की है कि वह अमेरिका में आर्य-समाज के कार्य को बड़े पैमाने पर और स्थिर रूप से चलाने के लिए सार्वदेशिक सभा को पूरी पूरी आर्थिक सहायता दे।

हम सहयोगी की इस अपील का बड़ा जोरदार समर्थन करते हैं। सार्वदेशिक सभा ने श्री० पं० अयोध्याप्रसादजी को कम से-कम निरन्तर २ वर्ष पर्यन्त अमेरिका में रखकर वैदिक धर्म का प्रचार कराने का निश्चय किया हुआ है। आशा है कि २ वर्ष के इस अरसे में अमेरिका में आर्य-समाज स्थापित और सुव्यवस्थित हो जायगा। इस २ वर्ष के व्यय का लगभग ५००) मासिक के हिसाब से १२००) का अन्दाजा किया गया है। इस १२०० ) की राशि में से लगभग ४०००) श्री० दानवीर सेठ जुगल किशोरजी बिड़ला ने कृपापूर्वक देने का वचन दिया हुआ है और वे अपने वचन को पूरा कर रहे हैं। अमेरिका के समीपवर्ती उपनिवेशों यथा ब्रिटिश तथा डच गायना में जहाँ बड़ी संख्या में भारतीय बसे हुये हैं सभा को तत्काल २ उपदेशक भेजने हैं। उन पर भी मोटे तौर पर २००) मासिक व्यय होगा। सभा की 'विदेश प्रचार निधि' में लगभग ७५०००) है, उसका सूद मद्रास प्रान्त में प्रचार में व्यय होरहा है। अतः इस धन का विदेश प्रचार पर व्यय होना ठीक नहीं है। अमेरिका इत्यादि में प्रचार के लिए धन की व्यवस्था विशेष रूप से आर्य जनता को करनी है। इसके लिए सभा ने यह योजना की है कि बड़े बड़े धनी मानी आर्य नर नारी ५००, ५००) सभा को प्रदान कर उसके आजीवन सदस्य बनें जैसा कि इस समय तक ६ आर्य सज्जन बन भी चुके हैं। और सर्वसाधारण और आर्य-समाजें इस विशेष कार्य के लिये अपना-अपना भाग देना पुनीत कर्त्तव्य समझें। सभा ने समस्त आर्य समाजों से सहायता की अपील करते हुए चाहा है कि प्रत्येक बड़े समाज को तो इस काम के लिये कम से कम १००) अवश्य सभा को देना चाहिए। आशा है कि आर्य जनता और समाजें इस सम्बन्ध में अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगी। भारतीय आर्य जनता यह न समझे कि विदेशों के आर्य और हिंदू भाई इस दिशा में अपने कर्त्तव्य से बेखबर हैं। वे अपने कर्त्तव्य को भली भांति अनुभव करने लगे हैं। उनमें आदर्श, प्रकाश और उत्साह की ज्योति जागृत करनी है। जिस मात्रा में ये तीनों चीजें भारत से समुद्र की लहरों पर होती हुई उन तक पहुँचेगी उसी मात्रा में वे उनमें जागृत होंगी और एक दिन वह आयगा जब वे लोग आपको किसी विशेष त्याग के लिए कष्ट नहीं देंगे। जिन आर्य-समाजों वा प्रतिनिधि सभाओं में विदेश प्रचार के लिए धन पड़ा हो उनका मुख्य कर्त्तव्य है, कि वह इस सुनहरे अवसर से लाभ उठावें सभा के निर्णय पर उचित धन राशि रक्खें और उसका अधिक से अधिक सदुपयोग करें जिन धनी मानी दानवीर हिन्दुओं को उपनिवेशों में जहाँ हिन्दू संस्कृति का बिल्कुल ह्रास हो चुका है और जहाँ दिन पर दिन भयंकर ह्रास हो रहा है हिन्दू संस्कृति की रक्षा अभीष्ट हो वे मैदान में आगें और अपने धन की थैली सभा के सामने खोल दें। 'सहयोगी प्रकाश' और उसके साथ

सर्वसाधारण को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जनता इस सम्बन्ध में अपने कर्तव्य को वेग से अनुभव करने और सहायता का हाथ बटाने लगी है। और सहायता का यह रूप धन और साहित्य दोनों प्रकार का है।

## पुलीसके विरुद्ध भीषण अभियोग—

पाठक अन्यत्र इसी अङ्क में 'सिन्ध औब्ज़र्वर' के २२ नवम्बर १९३४ के अङ्क का 'पुलीस के व्यवहार के सम्बन्ध में आश्चर्यजनक रहस्यों का भण्डा फोड़' शीर्षक उद्धरण पढ़ेंगे। इस उद्धरणके अनुसार गत १८ नवम्बर को मुसलमानोंकी एक निहत्थी टोली जिसमें एक देवीको सशस्त्र पुलीस के पहरे में से सब डिवीज़नल आफ़ीसर के कैम्प के पास से बलात् देवी की इच्छा के विरुद्ध पकड़ कर ले गई। इस देवी के सम्बन्ध में यद्यपि विस्तृत समाचार हमारे सामने नहीं हैं तथापि उपर्युक्त समाचारों के प्रकाश में यह निश्चयपूर्वक कहा जासकता है कि देवी मुसलमान थी और आर्य्य समाज द्वारा उसकी इच्छा पर वह शुद्ध की गई थी और उसके सगे सम्बन्धी उसकी शुद्धि के प्रबल विरोधी थे और समझाने बुझाने या ज़बरदस्ती से उसे अपने यहाँ वापस ले जाने के लिए तय्यार थे। जिस प्रकार हिन्दू स्त्रियां और पुरुष ईसाई और मुसलमान बनते हैं उसी प्रकार आर्य्य समाज शुद्धि द्वारा उन्हें शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाता और अन्य धर्मावलम्बियों यथा अन्य के ईसाइयों और मुसलमानों आदि को शुद्धि द्वारा वैदिक धर्म्म में दीक्षित करता है। धर्म्म परिवर्तन की राज्य की ओर से आज्ञा है इस लिए तमाम शुद्ध हुआ कानून द्वारा रक्षणीय हैं। इस दृष्टि से आर्य्य समाज में दीक्षित नर-नारी रक्षणीय हैं। परन्तु 'सीता रोड' की दुर्घटना ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आर्य्यसमाज में दीक्षित होने वाले कानून की दृष्टि में रक्षणीय नहीं हैं। यदि रक्षणीय होते तो क्या सशस्त्र पुलीस के पहरे में मुसलमानों की तो क्या कोई भी देवी की ओर आँख उठा सकता था और क्या पुलीस की गोलियों की बौछार में से देवीको ज़बरदस्ती ले जानेका किसी को साहस हो सकता था? आर्य्यसमाज की यह शिकायत है जिस को ज़ोरदार शब्दों में वह पेश करता है।

कहा जा सकता है कि पुलीस ने देवी की रक्षा के लिए अपनी सी सब कुछ की भीड़ को डराया धमकाया और गोली तक चलाई। हर प्रकार का उसने यत्न किया परन्तु फिर भी भीड़ पर काबू न पा सकी। पुलीस के पक्ष के इस समर्थन को मानने के लिए हमारा मन नहीं चाहता। यह इस लिए कि पुलीस ने लगभग ५० गोलियाँ चलाईं और केवल १ आदमी मरा और अन्य किसी के कोई ख़ास चोट न लगी, स्वयं पुलीस के भी भीड़ के हमले से कोई चोट न आई। यदि पुलीस ईमानदारी से अपने कर्त्तव्यका पालन कर रही होती तो यह कैसे संभव हो सकता था कि केवल १ आदमी ही मरता या सम्बन्धित पार्टियों में से अन्य किसी भी व्यक्ति के कोई बड़ी चोट न लगती। इसलिए प्रतीत होता है कि पुलीस ईमानदारी से अपना फ़र्ज़ अदा नहीं कर रही थी और उसने जान बूझकर देवी को मुसलमानों के हवाले कर दिया था। उपर्युक्त कथन को ज़रा देर के लिए मान भी लिया जाय तो कहना पड़ेगा कि पुलीस के इस व्यवहार ने पुलिस विभाग को बहुत ज़्यादा कलंकित किया है और शायद ही पुलिस के इतिहास में ऐसे कलङ्क की कालिमा देख पड़े। यदि वह पुलीस इतनी निकम्मी थी कि वह एक निहत्थी भीड़ से एक देवी को जो उसके रक्षण में थी रक्षा नहीं

[illegible] पुलिस [illegible] निष्पक्षतापूर्वक [illegible] यह आवश्यक है कि उसे [illegible] दिया जाय।

यद्यपि मैजिस्ट्रेट के इलाके पर ही देवी को किसी [illegible] के व्यवहार में शामिल किया गया था और शायद इसका यह इरादा था कि देवी को समझाने बुझाने की कोशिश की जाय और यदि वह अपने को [illegible] के साथ जाना पसन्द करे तो उनके साथ भेज दिया जाय। और शायद इसी कारण से उसने [illegible] में मुकदमे की सुनवाई, न रखकर [illegible] जैसी छोटी जगह पर रखी थी। मैजिस्ट्रेट की यह गलती थी विशेषतः उस दशा में जबकि इस मामले में साम्प्रदायिक उत्तेजना बहुत फैली हुई थी। मैजिस्ट्रेट की दूसरी गलती या अनुचित कार्य केस को मुल्तवी कर देना था। इन गलतियों को जरा देर के लिए उपेक्षा की दृष्टि से देखा भी जाय तो उसके उस व्यवहार को जो उसने, देवी को पुलिस के कब्जे में से छीनकर भगा जाने, और पुलिस के उसे वापस लाने में असमर्थ होकर वापस लौटने पर भीड़ के प्रति दिखलाया है क्षमा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। उसका कर्तव्य था कि वह काफी संख्या में पुलिसमैन साथ लेकर भीड़ का पीछा करता और देवी को उसके कब्जे में से छुड़ाकर दम मारता। प्रतीत होता है कि देवी के [illegible] जाने को वह कोई महत्व की बात नहीं समझता था।

[illegible] भीड़ के सम्बन्ध में हम कहेंगे कि [illegible] के मुसलमानों के [illegible] है जहाँ [illegible] पुलिस [illegible] से [illegible] जाय।

यदि कोई कानून की मैजिस्ट्री अपने कर्तव्य का पालन न करे या न कर सके तो किस प्रकार व्यवस्था बनाए रक्खी जा सकती है, किस प्रकार कानून की महत्ता की, उसके सौन्दर्य की रक्षा की जा सकती है और किस प्रकार निष्पक्ष रूप से न्याय के उद्देश्य पूरे हो सकते हैं? यह मामला ऐसा है जिसके सम्बन्ध में पूरी २ छानबीन होनी चाहिए। आवश्यक छानबीन के बाद सिन्ध के अधिकारियों को इस सम्बन्ध में प्रेस को एक वक्तव्य देना चाहिए। सिन्ध [illegible] का रक्षक पुलिस के सिपुर्द है यदि पुलिस [illegible] और [illegible] इसी प्रकार का [illegible] दिखाई [illegible] रहा तो वस्तुतः सिन्ध के गैर मुस्लिम अल्पसंख्यक के लोग अपने को बड़ी निस्सहायावस्था में पायेंगे।

## पं० वंशीधरजी पाठक का वियोग

बड़े दुःख के साथ लिखा जाता है कि गत १२ जनवरी सन् १९३४ को बरेली के प्रसिद्ध आर्य्य-कार्य्यकर्त्ता श्री पं० वंशीधर जी पाठक हम सब से सदैव के लिए जुदा हो गए। श्री स्व० पं० जी आर्य्यसमाज के अच्छे उपदेशक थे, उन्होंने आर्य्य-समाज की बड़ी सेवा की थी। हम श्री पं० जी के परिवार के प्रति उनके इस दुःख में हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं और दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

## श्री पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार ध्यान दें

[illegible] 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' के [illegible] दिसम्बर के अङ्क में सम्पादकीय स्तम्भों में 'समाज सुधार का

परीक्षण' शीर्षक से पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार के उस भाषण के हवाले से विचार किया गया है जो उन्होंने आर्यसमाज लाहौर के गत उत्सव पर एक व्याख्यान में 'विवाह नियोग, और तलाक' के विषय पर दिया था। उक्त सहयोगी के अनुसार पं० जी ने नियोग को 'तलाक' के विकल्प के रूप में अधिक स्वीकार योग्य ठहराया है। पं० जी की इस धारणा पर रिफ़ार्मर के सम्पादक महोदय ने आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखा है कि शायद पण्डित जी के मस्तिष्क में 'तलाक' का विषय ज्यादा स्पष्ट नहीं है और अपनी निजी सम्मति प्रकट की है कि 'तलाक' की समस्या का सन्तानोत्पत्ति के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके प्रयोग का समर्थन मुख्यतया असफल विवाहों की समस्या के हल के लिये ही किया जाता है। आगे चल कर सम्पादक जी ने पं० बुद्धदेव जी की गोर छेने विष-यक क़ानून की अनभिज्ञता की ओर संकेत करते हुए लिखा है कि इस क़ानून की विद्यमानता में नियोग की कुमक्वीवल सम्बन्धी दलील नहीं ठहर सकती।

यदि श्री पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की पोज़ीशन उपर्युक्त विषयों के सम्बन्ध में उस पोज़ीशन से भिन्न है जो 'सहयोगी सोशल रिफ़ार्मर' ने अपने सम्वाददाता के सम्वाद के आधार में ग्रहण की है और यदि उन्होंने अभी तक उसे सुस्पष्ट न किया हो तो हम निवेदन करेंगे कि वे उसे स्पष्ट कर देवें। हम यह भी निवेदन करेंगे कि यदि वे 'सार्वदेशिक' के द्वारा स्पष्ट करना पसन्द करेंगे तो 'सार्वदेशिक' के कालम इस काम के लिए उनके निर्णय पर होंगे।

## आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त का कार्यालय

श्री० पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रधान ने 'सभा के कार्यालय का मसला और मेरे प्रस्ताव' शीर्षक लेख में जो 'आर्यमित्र' के २९ नवम्बर १९३७ के अङ्क में प्रकाशित हुआ है अन्यान्य प्रस्तावों के अतिरिक्त प्रतिनिधि सभा के कार्यालय के सम्बन्ध में २ प्रस्ताव किए हैं। उनमें से एक प्रस्ताव यह है कि उक्त सभा का कार्यालय किसी बड़े नगर में स्थिर रूप से रहे। स्थान के सम्बन्ध में विचार विनिमय की सुविधा के लिए उन्होंने प्रान्त के ४—५ बड़े २ नगरों का भी निर्देश कर दिया है। और दूसरा प्रस्ताव यह है कि सभा का कार्यालय एक अध्यक्ष के अधीन रहा करे। यह अध्यक्ष वैतनिक और अवैतनिक दोनों में से कोई हो सकता है। श्री० उपाध्याय जी के उपर्युक्त प्रस्तावों से स्पष्ट है कि इस समय प्रतिनिधि सभा के कार्यालय का स्थान स्थिर नहीं है और इसी वजह से सभा का कार्यालय मन्त्री महोदय के साथ २ घूमता फिरता रहता है। और कार्यालय का रूप स्थिर नहीं है। यह भी स्पष्ट है प्रतिनिधि सभा की शासन-कड़ियाँ बिखरी हुई होंगी। अवश्य ही शासन सूत्र पर अस्थिर कार्यालय की वजह से स्थिर कार्यालय की अपेक्षा ज्यादा व्यय, ज्यादा समय और ज्यादा श्रम खर्च होता होगा। हमारी दृष्टि में संयुक्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि जैसी बड़ी सभा के हैडक्वार्टर्स का स्थिर न होना प्रतिनिधि सभा के गौरव के अनुरूप नहीं है। प्रतिनिधि सभा की शासन-शक्ति-सामञ्जस्य में यह एक बड़ी त्रुटि है। अकेली संयुक्त प्रान्त की सभा और उसके अधीनस्थ समाजों ने इस त्रुटि की उपेक्षा की हो इसका बहुत ज्यादा अनुभव न किया हो और यदि अनुभव किया हो तो इसे दूर करने का प्रयत्न न किया हो। परन्तु फ़तहपुर की दुर्घटना के प्रकाश

में अब अधिक समय तक इस त्रुटि की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

श्री० उपाध्याय जी के दोनों प्रस्ताव महत्वपूर्ण और स्वागत करने के योग्य हैं। प्रतिनिधि सभा को अविलम्ब उन पर विचार करके उन्हें क्रिया में परिणत करने का यत्न करना चाहिए और यथासम्भव उसे अपने सब विभागों को स्थिर हैडक्वार्टर्स में स्थित करने और एक दूसरे को पारस्परिक सम्पर्क में लगे रखने और लाभान्वित होने देने का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार उसका प्रभाव केन्द्रीभूत होगा और जनता को अधिकाधिक सुन्दर रूप में दृष्टि गोचर होगा। आर्य्य-समाजों को इस काम में प्रतिनिधि सभा को पूरी २ सहायता देनी चाहिए।

इन प्रस्तावों के क्रिया में परिणत करते समय हमारी सम्मति में कार्यालय के स्थान के चुनाव में प्रान्त में स्थान की केन्द्रीय स्थिति सर्वोपरि होनी चाहिए।

## आर्यसमाज के उपनियमों का संशोधन

आर्य्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य्यसमाज के उपनियमों के संशोधन का विषय जो गत ३-४ वर्ष से सार्वदेशिक सभा में विचारार्थ प्रस्तुत था उसका अन्तिम निर्णय आगामी जनवरी मास में हो जायगा। पहले उपनियमों के संशोधन का मसविदा सार्वदेशिक सभा की ५-६ जनवरी को होने वाली अन्तरङ्ग में अन्तिम विचारार्थ पेश होगा और इस के बाद २५ जनवरी को सभा के साधारण अधिवेशन में उस पर आवश्यक विचार होगा। तत्पश्चात २६ जनवरी को समस्त आर्यों की एक विशेष कान्फ्रेन्स में जो इसी काम के लिए आर्यसमाज बाजार देहली के अर्द्धशताब्दी महोत्सव के अवसर पर उत्सव-पंडाल में सुबह के ८ बजे से रक्खी गई है सभा के संशोधनों पर अन्तिम मुहर लग जायगी। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने एक विशेष सरक्यूलर के द्वारा आर्य्यसमाजों को प्रेरणा की है कि वे अपने सदस्यों को इस कान्फ्रेन्स में शरीक होने के लिए प्रेरित करदें। आशा है कि उस कान्फ्रेन्स में अधिक से अधिक आर्य्य भाई पधारेंगे और विचार में योग देंगे।

## हैदराबाद की पुलीस और आर्य्य कान्फ्रेंस

रियासत हैदराबाद में जिस 'आर्य्य कान्फ्रेन्स' के होने की समाचार-पत्रों में चर्चा छिड़ी थी, उसके सम्बन्ध में हमें यह जान कर दुःख हुआ है कि हैदराबाद रियासत के पुलीस-विभाग ने उसके करने की आज्ञा देने में अपनी असमर्थता प्रगट की है और असमर्थता का कारण यह बतलाया है कि 'कान्फ्रेन्स पोलीटिकल है।'

यह तो स्पष्ट ही है कि आर्य्यसमाज की ओर से होने वाली कान्फ्रेन्स विशुद्ध धार्मिक या सामाजिक ही हो सकती थी राजनैतिक नहीं। क्योंकि आर्य्यसमाज का वर्तमान राजनीति से कोई सम्बन्ध न रहा है और न है फिर इस प्रकार की सामाजिक, कान्फ्रेन्स को 'पोलीटिकल' कहना निश्चय ही बड़ा आश्चर्य जनक है। पता नहीं कि निज़ाम राज्य की पुलीस के कोष में 'पोलीटिकल' शब्द का अर्थ क्या है? यदि 'पोलीटिकल' शब्द का अर्थ वही है जो निज़ाम की पुलीस ने इस केस में लगाया है तो यह कोष बड़ा ख़तरनाक है कम से कम आर्य्यसमाज के लिए तो है ही। आर्य्य जनता को हैदराबाद में आर्य्यसमाज के प्रचार के लिए इस कोष का संशोधन कराने का दृढ़

कराने में विशेष बलवान होना चाहिए और इसे बदलवा कर दम लेना चाहिए। यदि 'पोलीटिकल' शब्द के अर्थ के प्रति निज़ाम की पुलीस ने अपनी शिक्षा सम्बन्धी अयोग्यता का परिचय दिया है तो निज़ाम जैसे प्रमुख राज्य में ऐसी अयोग्य पुलीस का होना राज्य के लिए कलङ्क है और राज्य का फ़र्ज़ है कि वह इसे तत्काल धोदे।

## आर्य्य गजट से ज़मानत की मांग

पंजाब सरकार ने अभी हाल में सहयोगी 'आर्य्य गज़ट' के जो आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र है एक मुख्य लेख के कारण जो इस के २८ अक्टूबर के अङ्क में प्रकाशित हुआ है प्रकाशक और मुद्रक प्रत्येक से १०००) की ज़मानत माँगी है। इस सम्बन्ध में 'सहयोगी' प्रकाश ने 'आपत्ति जनक' कहे जाने वाले लेख की आलोचना पूर्वक अपने सम्पादकीय स्तम्भों में बहुत अच्छा प्रकाश डाला है उसे हम यहां उद्धृत करते हैं:—

'हमने उस मज़मून को बार २ पढ़ा है और पढ़ने के बाद हमारा यह ख़याल है कि ज़मानत का मतालबा जायज़ नहीं। हमारे सहयोगी ने 'मज़हब के नाम पर क़त्ल' की मज़म्मत करते हुए उसे एक नापाक फ़ेल ठहराया है किसी जमाअत या तबक़े को ज़िम्मेवार नहीं ठहराया है बल्कि जिन मुसलमानों ने ऐसे नापाक फ़ेल के लिये प्रोत्साहन दिया है या सहानुभूति प्रकट की है उन्हें शर्मिंदा करने के लिए इशारतन यह बताने की कोशिश की है कि उन्होंने ग़ैर मुसलमानों की दृष्टि में अपने मज़हब को बदनाम किया है और अपने मज़हब से शत्रुता की है।'

इस विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि पंजाब सरकार का 'ज़मानत' का मतालिबा युक्तियुक्त नहीं है। हमारी सहयोगी के साथ इस सम्बन्ध में पूर्ण सहानुभूति है। और उसने ज़मानत फ़न्ड के लिए जो अपील की है उसका हम समर्थन करते हैं।

## ईसाई और दलितोद्धार

'संयुक्त प्रान्तीय ईसाई कान्फ्रेन्स' की स्वागत समिति के प्रधान की हैसियत से मि० ई० बी० डेविडने अपने भाषण मे महात्मा गांधी के 'दलितोद्धार' आन्दोलन की चर्चा करते हुए प्रगट किया कि 'मेरी सम्मति में यह आन्दोलन ऐसा निर्दोष नहीं है जैसा कि यह प्रगट किया गया है परन्तु यह आन्दोलन उस आन्दोलन के सदृश देख पड़ता है जो ईसाई मिशनों की प्रगतियों को निर्मूल करने के लिए चलाया गया हो।' मि० डेविडने आगे चलकर अपनी स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा 'मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि 'अस्पृश्यता' ऐसी समस्या नहीं है जिस का हिन्दू समाज पर प्रभाव न हो परन्तु चूंकि इस कार्य्य (दलितोद्धार) के मार्ग-प्रदर्शक 'ईसा' के अनुयायी हैं इसलिए उन्हें निर्बाध रूप में बिना किसी प्रचंड बाधा और प्रबल विरोध के यह काम करते रहने देना चाहिए।'

हम समझ नही सके कि महात्मा गांधी के 'हरिजन-आन्दोलन' ने किस प्रकार ईसाई मिशनों के कार्य्य को निर्मूल किया या इस समय कर रहा है। शायद प्रधान महोदय अछूत कहे जाने वाले भाइयों को अपने बाड़े की भेड़ और उनमें प्रचार का अपना एकमात्र अधिकार समझते हों और इसी अधिकार पर

आघात की वजह से वे चिन्तित और व्याकुल हुए या हो रहे हों। यदि ऐसा है तो यह उनका भ्रम है और हिन्दुओं और अछूतों में जो जागृति इस समय हो रही है उसे देखते हुए तो कहना पड़ेगा कि उन का यह भ्रम बहुत भारी है।

## ह्वाइटपेपर और ईसाइयत

'ह्वाइटपेपर' के सुधारों का समर्थन करने वाले बहु संख्यक अंग्रेजों में शायद ही किसी ने इतना उत्साह प्रदर्शित किया हो जितना मैनचेस्टर के 'बिशप ने। मैनचेस्टर की एक कान्फ्रेंस में बोलते हुए 'बिशप' महोदय ने फ़रमाया कि भारतीय नागरिकों का हित ब्रिटेन और मुख्यतः 'ईसाई चर्च' की एक बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। इसके आगे ब्रिटिश साम्राज्य के नाम से परमात्मा के राज्य की रक्षा के नाम में उसने ईसाई नागरिकों के रूप में भारतीय समस्या का मुक़ाबिला करने के लिए लंकाशायरवालों को अपील भी की। उसी 'बिशप' ने 'पार्लियामेन्टरी कमेटी' की रिपोर्ट के सम्बन्ध में घोषणा की कि बतौर ईसाइयों के उन्हें देखना चाहिए कि रिपोर्ट के प्रति उनका रुख़ ईसा के शिष्यों के अनुरूप ही हो।"

यद्यपि उपर्युक्त सम्वाद में ईसाइयों के जिस रुख़ की चर्चा की गई है उसका इस में उल्लेख नहीं देख पड़ता तथापि इस रुख़ के अब तक के अनुभव के आधार पर यही कहा जा सकता है कि वह रुख़ वही या उससे मिलता जुलता ही होगा जो साम्राज्य लोलुप ईसाई कहे जाने वाले राष्ट्रों का ईसा की विश्व-प्रेम और भ्रातृ-भाव आदि की उज्ज्वल शिक्षाओं से कोसों दूर मानव-समाज के प्रति रहा है और जिन के द्वारा ईसा की भव्य मूर्ति ख़ूनी और डरावनी मूर्ति के रूप में कुटिल राजनीति के कारण परिवर्तित कर दी गई है। वह रुख़ हृदय हीनता, अन्याय अत्याचार, स्वार्थ-परता और मनुष्य समाज को दासता में रखने का है।

यदि हमारा अनुमान ठीक है तो हम परमात्मा से इन साम्राज्य लोलुप राष्ट्रों और उनके कर्णधारों को सद् बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

## हत्यारे को बचाने का यत्न

कराची के महाराज नाथूराम जी के हत्यारे अब्दुल क़यूम को, जिसे फांसी की सज़ा हो चुकी है और जिसकी अपील भी उच्च न्यायालय से ख़ारिज हो चुकी है, बचाने के लिए मुसलमानों द्वारा जो संगठित यत्न हुआ या इस समय हो रहा है उसका कुछ विवरण इस प्रकार है.—

'हत्यारे अब्दुल क़यूम की सफाई और सहायता के लिये मुसलमानों की ओर से एक फ़न्ड इकट्ठा किया जा रहा है और फन्ड को कराची तक ही सीमित न रख क्रियात्मक रूप में एक 'आल इन्डिया फ़न्ड' का रूप दिया जा रहा है। इस फ़न्ड के संचालकों का एक डेपुटेशन पंजाब भी पहुचा था। इसके साथ ही हिन्दुस्तान टाइम्ज़ के एक लेख से यह भी मालूम हुआ है कि लाहौर के एक अंग्रेज़ी दैनिक पत्र में 'आलमगीर' के उपनाम से किसी ने एक पत्र छपवाया है जिसमें अब्दुल क़यूम के अपराध तथा इस प्रकार के अपराधों के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक विचार करने के बाद यह सम्मति प्रगट की गई है कि "ताजीरात हिन्द में इस प्रकार का संशोधन होना चाहिये कि अब हत्या करने वाले की मंशा ज़ाती दुश्मनी न होकर धार्मिक हो तो उसे

प्राण दण्ड न दिया जाय।" उक्त दैनिक पत्र ने अपने सम्पादकीय लेख में इस सम्मति का समर्थन करते हुए यह राय भी प्रकट की है कि मुसलमानों को भारत में नगर २ में ग्राम २ में सभा करके यह प्रस्ताव पास करना चाहिये कि 'ग़ाज़ी अब्दुल कयूम' को क्षमा प्रदान की जाय। और इसी आशय के एक प्रार्थना पत्र पर अधिक से-अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराके उसे वायस राय की सेवा में भेजा जाय। अंजुमन इस्लामिया के प्रेज़ीडेन्ट शेख सिदीक हुसेन ने कई दिन पहले वायस राय को इस आशय का तार भेजा था कि हत्या करने के अपराध में अब्दुल कयूम को जो फांसी की सज़ा हुई है उसके सम्बन्ध में वायस राय महोदय भारतीय मुसलमानों के एक डेपूटेशन से मिलने की आज्ञा दें। तार में यह भी कहा गया था कि मुसलमान बड़े उद्विग्न हैं। वायस राय के प्राइवेट सेक्रेटरी ने इस तार का उत्तर दिया है कि वायस राय ऐसे मामले में वकालत नहीं सुना करते और न व्यक्तियों से ही मिला करते हैं। लिखकर जो दिया जायगा या समय के भीतर २ जो दरख्वास्त पहुंचेगी उस पर यथोचित विचार किया जायगा।' आशा यही है कि वायसराय से दया प्रार्थना ज़रूर की जायगी। कई दिन पहले बादशाह जार्ज पंचम के सबसे छोटे पुत्र का विवाह जिस राजकुमारी मेरीना के साथ हुआ है अब्दुल कयूम की बीबी ने उनके पास तार भेजकर उनसे प्रार्थना की है कि आप अपने शुभ विवाह के उपलक्ष में मेरे पति की फांसी की सज़ा रद करा दें।"

गत नवम्बर के 'सार्वदेशिक' के अङ्क में हमने 'ओरने क्रानिकल' में प्रकाशित एक समझदार मुस्लिम भाई के लेख के सारांश को उद्धृत किया था। उस उद्धरण के मुख्य २ भाग इस प्रकार हैं—

'इस्लाम प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से अब्दुल कयूम जैसे व्यक्तियों के दुष्कर्मों की स्वीकृति देना वा उनका समर्थन करता है।' इस्लाम के विरुद्ध इस कथन से ज्यादा भयङ्कर और क्रूर मिथ्यारोप हो सकता है

अभियुक्त का उद्देश्य भले ही कुछ रहा हो, निश्चय ही उसने इस्लाम धर्म्म और उस आदर्श के विरुद्ध कार्य किया है जिसके लिये अरब का पैग़म्बर जिया था, और जिसको उसने शिक्षा दी थी। किसी भी व्यक्तिको जो इस काण्डको अक्षम्य नहीं मानता, अपने को मुसलमान कहने का हक़ नहीं। सचमुच इस प्रकार के जुल्म करने वालों को शहीद स्वीकार करने से बढ़कर इस्लाम की और कोई बड़ी कुसेवा नहीं हो सकता।"

हमें आशा थी कि इस तथा इस प्रकार की शुभ-सम्मति वा चेतावनी से मुस्लिम समाज की आँखें खुलेंगी और वह अब्दुल कयूम जैसे व्यक्ति से जिसके दुष्कृत्य से सभ्य समाज की दृष्टि में इस्लाम और उसके पैग़म्बर के आदर्श और शिक्षाएँ कलङ्कित हुई हैं, घृणा करेगा और भविष्य में इस प्रकार के दुष्कर्मों से इस्लाम कलुषित न हो, इस उच्च भाव को सामने रखकर ऐसे कृत्य को अधिक से अधिक निरुत्साहित करेगा। परन्तु मुस्लिम समाज की ओर से हत्यारे अब्दुल कयूम को बचाने के लिए जो संगठित यत्न किया जा रहा है और जिसका कुछ आभास ऊपर की पंक्तियों में मिलता है, उसे देखते हुए हमारी आशा दुराशामात्र ही थी, और हम यह कहने के लिए बाधित होते हैं कि उपर्युक्त प्रकार के सतपरामर्श वा चेतावनी का मुस्लिम समाज के उस

भाग की दृष्टि में जा हत्यारे को बचाने का यत्न कर रहा है—कोई मूल्य नहीं है, और हत्यारे को फाँसी के तख्ते से बचा लेना ही दीन इस्लाम की बड़ी से बड़ी सेवा है और इस प्रकार मुस्लिम समाज प्रत्यक्ष रूपसे इस प्रकार के कार्यों के लिये प्रोत्साहन दे रहा है। हम जानते हैं कि यह सब कुछ उन धर्मान्ध मुल्ला और मौलवियों के इशारे पर किया जा रहा है जिनको इस्लाम की अपेक्षा अपनी ज्यादा फिक्र है। समझदार मुस्लिम भाइयों का कर्त्तव्य है कि वे मैदान में आएँ और उनकी इस प्रकार की हरकतों के विरुद्ध ज़बरदस्त आवाज उठाएँ और इस्लाम की बड़ी से बड़ी सेवा करें।

परन्तु इस मामले में अधिकांश समझदार मुसलमानों ने जो चुप्पी साधी है उसे देखते सुनते हुए हमें विशेष आशा नहीं होती फिर भी उनके एक विशेष कर्त्तव्य और जिम्मेवारी की ओर ध्यान आकर्षित कर देना हम अपना फर्ज समझते हैं, और उसी का पालन कर रहे हैं।

गवर्नमेंट का कर्त्तव्य है कि वह इस उठते हुए बवंडर को व्यापक और उग्र रूप धारण न करने देवे और इसका एक मात्र साधन उपाय यही है कि हत्यारे को शीघ्र से शीघ्र फांसी के तख्त पर लटका दे।

## इराक़ में आर्य्य समाज

हमें इस समाचार से दुःख हुआ है कि इराक़ (अरब) की मुस्लिम सरकार ने 'अर्बी प्रेस' और मुल्लाओं के आन्दोलन के फल स्वरूप इराक़ में वैदिक धर्म के प्रचार के विरुद्ध अकारण ही जिहाद शुरू कर दिया है। अर्बी अख़बार जिस प्रकार आर्य्य-समाज के विरुद्ध जहर उगल रहे है और जो मांग इराक़ सरकार से कर रहे हैं उसका परिचय पाठकों को बग़दाद के एक प्रसिद्ध अर्बी समाचारपत्र के निम्न उद्धरण से मिल जायगा। 'हम इराक बल्कि सारी दुनिया के मुसलमानों के नाम पर इराक की मुसलमानी हुकूमत से यह मता लिबा करते हैं कि इस अजनबी जमाअत (आर्य समाज) को जो इजाजत दी गई है उसे वापस ले लिया जाय और इन खतरनाक चन्द आदमियों को यहाँ से चले जाने का हुक्म दे दिया जाय और इसके बाद किसी अजनबी का कोई अञ्जुमन या मजलिस कायम करने की इजाजत न दी जाय।"

इस आन्दोलन का फल यह हुआ है कि बग़दाद के शासक ने आर्य्य समाज बग़दाद को जो सरकारी आज्ञा से अपना मन्दिर बनवा रहा था, मन्दिर बनाने से रोक दिया है। और आर्य्य-समाज के शान्त कार्यकर्त्ताओं को बगदाद के शासक के विरुद्ध यह शिकायत करने का मौका दे दिया है कि बगदाद में हिन्दुओं (आर्यों) के धार्मिक सामाजिक और नागरिक अधिकार उस प्रकार सुरक्षित नहीं हैं जिस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों के हैं और इराक की गवर्नमेण्ट मुल्ला मौलवियों और अर्बी प्रेस के प्रभाव में है। इराक गवर्नमेण्ट का कर्त्तव्य है कि वह इस मामले में बाहरी और भीतरी पथ भ्रष्ट करने वाले प्रापैगैन्डा से ऊपर उठती हुई वस्तु स्थिति को समझने का यत्न करे और अपनी प्रजा के एक उन्नत भाग के उचित धार्मिक और नागरिक अधिकारों की रक्षा करती हुई अपने विरुद्ध किसी प्रकार की शिकायत का अवसर न देवें और उस धार्मिक सहिष्णुता और उदारता का परिचय देवे जिसकी भारत से भिन्न मुस्लिम जगत और मुस्लिम शासकों से अपनी गैर मुस्लिम प्रजा के

प्रति आशा की जा सकती है।

आर्य्य समाज का कर्तव्य है कि वह उचित सूत्रों के द्वारा इराक़ की गवर्नमेन्ट को वस्तु स्थिति से पूर्ण परिचित करावे जिससे आर्य्य समाजकी वास्तविकस्थिति की अनभिज्ञताके कारण उससे आर्यसमाजके विरुद्ध कोई भयंकर भूल न होजाय पर यदि इतना कर देनेके बाद भी आर्य्य-समाज के हितों पर कुठाराघात हो या उसके हित ख़तरे में हों तो उसे उनकी रक्षा के लिए प्राणपण से सत्रद्ध होना चाहिये।

## सरकार ध्यान दे

इराक़ में आर्य समाज के विरुद्ध अर्बी प्रेस में जो आन्दोलन चल रहा है उसकी आड़ में भारतीय मुस्लिम प्रेस आर्य्य-समाज को जिस अत्यन्त आपत्ति जनक रूप में पेश कर रहा है उसका दिग्दर्शन लाहौर के 'पैग़ाम-ए-सुलह' नामक अखबार के ७ नवम्बरके एक उद्धरण से भली भाँति हो सकता है। वह उद्धरण इस प्रकार है:—

'ताज़ा अरबी डाक से मालूम होता है कि इराक़ में आर्यसमाजियों ने जो फ़िरना अंगेज़ी शुरू की थी इराक़ी पब्लिक और इराकी अखबारात को इसका बहुत बड़ी हद तक अहसास हो चुका है अब यह हक़ीक़त उनकी नज़रों में पोशीदा नहीं रही है कि आर्य-समाज एक इत्तिहाद-दुश्मन और शरारत पेशा गिरोह है जिस की ज़िन्दगी का एक बहुत बड़ा मकसद इस्लाम दुश्मन और मुस्लिम आज़ारी है।

हम सरकार का ध्यान 'पैग़ाम ए-सुलह' के उपर्युक्त उद्धरण की ओर आकर्षित करते हुए उस से प्रश्न करना चाहते हैं कि क्या इस प्रकार का कुत्सित प्रचार आर्य्य समाजियों के हृदय को ठेस पहुँचाने वाला नहीं है? यदि है तो क्या वह इस प्रकार के दूषित प्रचार को रोकने के लिए तत्काल कोई उचित कार्यवाही करेगी?



**श्रद्धानन्द बलिदान भवन देहली।**

यह वह भवन है जिसमें श्री० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का
२३ दिसम्बर १९२६ को अब्दुल रशीद नामक एक धर्मान्ध
मुसल्मान द्वारा वध हुआ था। श्री स्वर्गीय स्वामी
जी की पुण्य स्मृति में सार्वदेशिक सभा ने इस
भवन को क्रय कर लिया है।

[illegible] प्रिंटिंग प्रेस देहली।

# ईसाइयों का संस्कृत भाषा प्रेम

[ लेखक—
श्री नारायण देव सिद्धान्त भूषण, हिन्दी प्रभाकर ]

यह तो सर्व विदित है कि समस्त भारत में संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित जितने हैं, उनमें से अधिक दक्षिणी ही हैं। संस्कृत भाषा के केन्द्र काशी में भी कितने ही दाक्षिणात्य संस्कृतज्ञ रहते हैं। यदि स्वदेश पक्षपात दोष मुझ पर न लगाया जाय तो मैं यह निस्संकोच कहूँगा कि सरस्वती देवी के जितने दास इस रम्य भूमि हैं—केरल में हैं—उतने अन्य प्रान्तों में नहीं। शायद ही कोई गांव मिले जहां संस्कृत जानने वाला कोई न हो। मेरे लेख का विषय यहां के संस्कृतज्ञ या संस्कृत ग्रंथकारों के बारे में लिखने का नहीं फिर कभी विद्वानों के सम्मुख इस को उपस्थित करूंगा। अब सिर्फ ईसाइयों और संस्कृत प्रेमी हरिजनों के विषय में लिखता हूं।

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि उत्तर भारत में जिस प्रकार हिन्दू-मुसलमानों के बीच उर्दू हिन्दी के बारे में वाद विवाद है उस प्रकार यहां के हिन्दू तथा ईसाइयों के मध्य में नहीं है। यही कारण है कि जहां तहां संस्कृत पढ़ाने वाले ईसाई सज्जन और ईसाई विद्यार्थी देखे जाते हैं।

एक समय था जब कि सुरभारती ब्राह्मणों और क्षत्रियों की गोद में क्रीड़ा करती थी कुल परम्परा से वे इसकी रक्षा करते थे। लेकिन आज कल जिनके पास कुछ रुपये पैसे हैं वे अपने पुत्रों को अङ्गरेज़ी पढ़ाते हैं—अङ्गरेज़ीदां बनाते हैं। मैं अङ्गरेज़ी भाषा का विरोधी नहीं हूँ लेकिन अपने पूर्वजों की संपत्ति को गवांकर दूसरों की संपत्ति प्राप्त कर अकड़ना बुद्धिमानी नहीं कही जायगी। श्री पूज्य महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का भी यही सिद्धान्त था। अंग्रेज़ी की लहरें तो सारे भारतवर्ष में किलोलें कर रही हैं लेकिन मद्रासी तो इन लहरों में सराबोर ही हो गए। ऐसी परिस्थिति में भी हरिद्वार, ऋषीकेश, काशी, लाहौर आदि स्थानों के क्षेत्रों में निवास कर कितने ही विद्यार्थी देव वाणी की आराधना करते हैं। लेकिन हमारे दक्षिण में इसकी सुविधा नहीं। मन्दिरों की पूंजी तो कुछ गवर्नमेण्ट के आधीन और कुछ स्वामी लोगों के। यहां संस्कृताध्येता कुछ ब्राह्मणों की सन्तान हैं और बाक़ी ग़रीब हरिजन लोग। जिनकी बुद्धि कुछ तेज है, जिनके रक्षकों के पास धन है उनके लड़के अंगरजी पढ़ते हैं। जिनसे घर का भी काम नहीं होता जो पढ़ने में सुस्त भी हैं उनको गृहबाधा हटाने के लिये संस्कृत पढ़ने भेजते हैं। उनकी बुद्धि में संस्कृत जैसी भाषा क्योंकर बैठ सकती है।

ब्राह्मणों और कुछ क्षत्रियों को छोड़ कर यहां के निम्न जाति के बालक संस्कृत पढ़ते हैं जिन में बढ़ई, गवाक, नाई आदि शामिल हैं। दो तीन महीने के पूर्व यहां एक संस्कृत और आयुर्वेद विद्यालय खुला है। जिसका मैनेजर एक ईसाई वैद्य है। उनका नाम, इत्तपत्ती मांपरा

है। ये संस्कृत के अच्छे ज्ञाता और वैद्य हैं। काव्यादि अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। मैंने इनसे पूछा कि आपने संस्कृत कैसे पढ़ी तो उन्होंने जवाब दिया कि मेरे पिता जी संस्कृत अच्छी तरह जानते थे, उन्होंने मुझे पढ़ाया है। और मैं संस्कृत और आयुर्वेद की दिल से उन्नति चाहता हूँ। इसलिये यह विद्यालय खोला है। इस विद्यालय में उनका एक लड़का भी पढ़ता है। इस प्रकार कुल परम्परा से संस्कृत पढ़ने वाले आज भी वहां विद्यमान हैं। हमारे गांव के पास एक वृद्ध ईसाई सज्जन रहते हैं जिनकी आयु क़रीब ७० की है ३०-३५ साल से संस्कृत पढ़ाते आ रहे हैं। उनके पढ़ाये हुए कितने ही हिन्दू संस्कृत के पण्डित और वैद्य हैं। इनमें मेरे सहाध्यापक श्रीयुत वी. एन. रामन पिल्लै वैद्य कलानिधि उन्हीं के शिष्य हैं। इस ईसाई सज्जन का नाम 'पत्ती आशान" है। मलयालम् में "आशान" का अर्थ गुरु है। रघुवंश, कुमारसंभव, माघ, किरातार्जुनीय आदि कितने ही काव्य उनको कंठाग्र हैं। आजकल उनकी शक्ति क्षीण हो गई है तो भी चारपाई पर मृगचर्म बिछाकर तकिये के आधार पर बैठ कर बीस पचीस विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। इसके सिवा मालाबार में एक ईसाइयों का संस्कृत विद्यालय भी है जिसको गवर्नमेंट ग्रांट भी देती है। ऐसा कौन देश है जहां ईसाई तक इस प्रकार संस्कृत के लिये तपस्या करते हों। यह स्थाली पुलाक न्याय से एक उदाहरण है। इस प्रकार कितने ही ईसाई ग्रेजुएट हैं जो कि संस्कृत लेकर बी० ए० पास हुए हैं। एक सज्जन समस्त केरल साहित्य परिषद् मासिक पत्रिका के सम्पादक हैं जिनका नाम श्री वो० सी० पत्ती—बी० ए० बी० एल० है। इन्होंने बी० ए० परीक्षा संस्कृत लेकर पास की है। सचमुच इनके हृदय में भाषा और साहित्य के प्रति अगाध प्रेम है जिसके कारण इनमें बहुत से भाषा मर्मज्ञ हैं। यह सुनकर तो पाठकों को आश्चर्य होगा कि मलयालम भाषा का पहला कोष भी एक ईसाई ने लिखा है। अभी हमारे विद्यालय में जहां ४० विद्यार्थी हैं दस ईसाई और पन्द्रह हरिजन हैं बाक़ी नायर लोग। इससे आप समझ सकते हैं कि भाषा के सम्बन्ध में ईसाई और हिन्दुओं में मत भेद नहीं। कुछ दिनों की बात है मैं सरस्वती पढ़ रहा था उस में एक चित्र के नीचे—

फूल खिलें जिस समय विपिन में—
अलि गूँजें पिक गण गावें।
विटप वल्लियाँ हरी भरी हों—
जड़ चेतन सब सुख पावें
क्या उस समय प्रेम को तज कर—
व्रज को भूलेंगे मोहन।
चल निकुञ्ज वन में अवश्य ही—
पावेंगी हम अपना धन।

यह कविता लिखी हुई थी। जो मुझे बहुत पसन्द आई थी मैं इसे अपने एक मित्र को पढ़ कर सुना रहा था। उसी समय एक चालीस पचास वर्ष का आदमी हमारे पास आया और पूछने लगा क्या यह संस्कृत का श्लोक है? मैंने कहा—संस्कृत का नहीं हिन्दी का है। उन्होंने कहा—एक बार

और पढ़ो। मैंने फिर पढ़ा, इस पर वे कहने लगे कि इसमें तो संस्कृत बहुत है। मैंने पूछा आप संस्कृत जानते हैं ? उन्होंने कहा—कुछ २ पढ़ा हूँ। सारी भाषायें तो संस्कृत से ही निकली हैं वह तो देवभाषा है। देखने से मैं उन को हिन्दू समझता था; लेकिन पूछने पर मालूम हुआ कि ईसाई हैं। उन्हों ने किरातार्जुनीय के—"श्रियः कुरूणा मधिपस्य ·········वनेचरा।" और माघ के "श्रियः पतिः श्रीमति··· मुनि हरिः। श्लोक सुनाये, अर्थ बताये। मैं तो आश्चर्य में डूब गया। फिर उन्होंने पूछा—आपने भी कुछ पढ़ा है। मैंने कहा रघुवंश, कुमारसम्भव आदि काव्य पढ़ा हूँ। मुस्कराकर पूछा—आप ने माघ नहीं पढ़ा ? मैंने कहा—नहीं, तो काव्य कहां पढ़ा है, क्योंकि 'काव्येषु माघः कविः कालिदास" ऐसा कहा गया है। मैंने कहा—हमारे विद्यालय की पाठविधि में माघ नहीं था। अब मैं उस को पढ़ने का यत्न करूंगा। उन को धन्यवाद देकर विदा हुआ।

इस प्रकार और प्रान्त के ईसाई मुसलमान भी इसका अनुकरण करें तो भारतवर्ष का कल्याण हो।

भाषा किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं है, जो उस को स्वीकार करते हैं उनकी ही वह क्रीत दासी होती है। जब महात्मा गांधीजी हरिजनान्दोलनके लिए यहां आये थे तो उनको हरिजनों की तरफ़ से एक मंगल-पत्र दिया गया। वह संस्कृत कविता में एक हरिजन का लिखा हुआ था। उन का श्रम अभिनन्दनीय है। उन श्लोकों को लेख के अन्त में लिखूँगा। इस प्रकार केरल के लोग संस्कृत में पूर्वाधिक उन्नति करने में लगे हुये हैं। यहां की कला के अध्ययन के लिये शान्तिनिकेतन और अमेरिका तक के लोग आते हैं। अब दो तीन महीने के बाद विश्वविख्यात नृत्य-कला विदग्ध उदयशङ्कर श्री केरल कला मंडप में आने वाले हैं और यहां की कला का अध्ययन करेंगे। ईश्वर कृपा से केरल की पुरानी महिमा फिर संसार में फैले।

(१)

अस्यातम्यतमः समूहमखिले—
लोके विलोकक्षमः,
स्वातन्त्र्यप्रथितप्रभां विकि—
रयन् भूमृद्दरोर्ध्वस्थितः
संहारी हरिलोकपद्म विपदां—
श्रीगांधि देवो हरिः
कौमात् संप्रति दक्षिणायन—
गतः शान्तोऽप्यतान्तोज्वलः ॥

(२)

सम्यक्ब्रह्मसुसिद्धयोग—
पदवीमानन्दनिष्यन्दिनीं,
प्राप्तो दीनतदुर्गिमवक्षम—
कवन्त्वप्राप्य संप्रत्ययः।
सत्ये नित्यवक्षाः प्रसन्नवदनो—
दीनेषु मानोन्नतः
स्थामेष्वाप्ततरो जयत्व—
विरतं श्री गान्धिदेवो महान् ॥

(३)

हस्ताग्रदनिषिद्धकर्मसचिवं—
तं आतिरक्षापरम्

# ऋषि दयानन्द और कर्णवेध संस्कार

( ले० पं० धर्मदेव शास्त्री, सांख्य योग वेदान्त-तीर्थ "दर्शन भूषण", "दर्शन केसरी", देहरादून )

एक बार किसी आर्य पुरुष ने संस्कारों की व्याख्या के अवसर पर मुझ से कर्णवेध के सम्बन्ध में निम्न शङ्का की थी—

### शंका

यह ठीक है कि कर्णवेध संस्कार मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये परमावश्यक है। अण्डकोष वृद्धि आदि रोगों की निवृत्ति का हेतु है। परंतु संस्कार विधि में इस संस्कार में जिन दो मन्त्रों अर्थात् 'भद्रं कर्णेभिः इत्यादि'—और 'वक्ष्यन्ति वेदा'—इत्यादि का विनियोग ऋषि दयानन्द ने किया है। इनसे इस संस्कार की वैदिकता प्रतीत नहीं होती। इनमें से प्रथम मंत्र में तो आंख, कान आदि अंगों की स्थिरता और श्रेष्ठता की प्रार्थना भगवान से की गई है। दूसरे मंत्र में धनुर्विद्या की प्रवीणता का प्रदर्शन है। इन मंत्रों से कर्णवेध संस्कार का कोई सम्बन्ध नहीं। कर्णवेध क्या है इस प्रकार का कोई भी भाव इनमें नहीं। इस से तो यह प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द ने कर्ण शब्द मात्र को देखकर इनका कर्णवेध संस्कार में विनियोग किया है। कोई विशेष अभिप्राय नहीं। इस प्रकार यह वैदिक संस्कार कैसे हो सकता है जब कि उसका कोई प्रतिपादक वेद मंत्र नहीं।

मुझे इसमें युक्ति युक्तता प्रतीत हुई और गम्भीर विचार करनेका प्रयत्न किया। इस के सम्बन्ध में जो मेरे विचार हैं मैं उन्हें उपस्थित करता हूँ।

---

रक्षं स्पक्षइवाभिजात—
दहनैर्विक्षेप्तुकामः क्षणात्।
अक्षोणैः समरक्षणोपकरणैः—
सत्याइवोत्थापित—
प्रक्षान्ति शरदां शतं विजयतां—
श्री गांधिदेवो महान् ॥

(४)

स्वार्थानामहितार्थंद सुरतर.—
संभर्थिनां सत्पथीः
शान्तश्चातिगभीरसागर—
इवागम्यः परेषामपि।
दीनानेकजनावनैकनिरत—
प्रीतिस्मितार्द्राननः।
सानन्दं जयतादनन्यसुगुण—
श्री गान्धिदेवो महान् ॥

(५)

लोकत्राणपरायणो निजगुणै—
र्मित्राणि कीर्त्यंम्बरा—
न्यन्त सारविवेचना चतुरतां—
चार्यमहार्दस्पृहाम्।
बतुं स्वार्थंअवस्व कतृ
मुचितं यो वा जयत्यद्भुत
प्रागल्भ्याय नमोस्तु गांधि—
महते तस्मै चिर मंगलम् ॥

## समाधान

मेरा यह मत नहीं कि मैं जो कुछ कहता हूँ वह ठीक ही हो सकता है, ग़लत नहीं। विद्वान इस पर विचार करें और जो उपयोगी अंश हो उसे ग्रहण करें। ऋषि दयानन्द ने यह मन में नहीं गढ़ा—इसका आधार कात्यायन गृह्य सूत्र हैं। अन्य संस्कारों के मन्त्रों का विनियोग भी प्राय गृह्य सूत्रों के आधार पर किया है।

वैदिक षोडश संस्कारों कर्णवेध में भी एक है और अन्यों की भांति यह भी उपयोगी है। इस लिये इसका प्रतिपादन भी वेद में होना चाहिए। जिसमे इस सस्कार की उपयोगिता और वैदिकता भी ज्ञात हो सके—जिस प्रकार कि और संस्कारों मे विनियुक्त मन्त्रों से ज्ञात होता है। ऋषि दयानन्द ने कर्णवेध संस्कार में कात्यायन सूत्र के आधार पर जिन उपर्युक्त दो मन्त्रों का विनियोग किया है—वह इस संस्कार के लिए अनुपयुक्त हैं। अतः कर्णवेध संस्कार में विनियोग के लिये निम्न तीन मन्त्र अथर्व वेद काण्ड ६ सूक्त १४१ ( जिसमे ये ही तीन मन्त्र ) हैं ) ही उचित है वे मंत्र ये हैं—

वायु रे ना समाकरत त्वष्टा पोषाय ध्रियताम् ।
इन्द्र आभ्या अधिब्रवद् रुद्रो भूम्ने चिकित्सतु ॥१॥

अर्थात्—इन प्रजाओं को—मनुष्यों को—शरीर का वात दोष जीवन दान दे। स्वस्थ होने के कारण अन्न आदि पुष्टि कारक हों रोग वर्धक नहीं। सद्वैद्य स्वास्थ्य वर्धक चिकित्सा करें।

लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयो कृधि ।
अकर्ता मश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु ॥२॥

अर्थात्—सद्वैद्य लोहे के शस्त्र से दोनों कानों में छिद्र करे। अर्थात्—कर्णवेध संस्कार करें। माता पिता उस संस्कार की अनुमति दें। जिससे उनकी प्रजा स्वस्थ रहे और उन्नति करें।

यथा चक्रुर्देवा सुरा यथा मनुष्या उत ।
एवा सहस्र पोषाय कृणुतं लक्ष्माश्विना ॥३॥

अर्थात्—उच्च-नीच और मध्यम श्रेणी के देव-असुर और मनुष्य के लिये इस कर्णवेध संस्कार को करना चाहिये।

इस प्रकार तीनों मन्त्रों से कर्णवेध संस्कार की वैदिकता और आवश्यकता पर पूरा प्रकाश डाला गया है। इसलिए मेरे विचार में संस्कार विधि में उपर्युक्त दो मन्त्रों के स्थान पर इन्हीं तीन मन्त्रों को विनियुक्त करना उचित है। यदि इस प्रकार स्पष्ट वचन न मिलते तब दूसरी बात थी। ऋषि दयानन्द को अपने अल्प जीवन काल मे बहुत उपयोगी काम करने थे। अतः उन्होंने संस्कारों में विनियोज्य मन्त्रों का निर्धारण प्रायः गृह्य सूत्रों के आधार पर ही किया है और कर्णवेध संस्कार की विधि कात्यायन सूत्रों के अतिरिक्त और किसी गृह्य सूत्र में नहीं मिलती—इस लिए ग़लती रह गई ऐसा प्रतीत होता है। अब विद्वन्मण्डली को इस प्रकार की छोटी २ बातों पर ऋषि की वसीयत के अनुसार विचार करना चाहिए और ऋषि के सिद्धान्तों को—उनकी पुस्तकों को परिमार्जित करना चाहिए। जिस प्रकार कोहेनूर हीरे को खुरद देने के बाद वह और भी अधिक प्रदीप्त हो गया इसी प्रकार ऋषि के ग्रन्थों की भाषा और प्रामाणिकता को भी अधिक परिमार्जित करने से उनकी अधिक उपयोगिता होगी।

# मालाबार के अछूत—
## हिन्दू धर्म छोड़ रहे हैं।

[ ले॰ श्रीयुत ज्ञानी मद्रास ]

निस्सन्देह यह मानना पड़ेगा कि ईसाई मिशनरियों के काम करने के तरीके अत्यन्त दूर दर्शिता पूर्ण हैं। आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व भला अछूतों में काम करने का किसे ख्याल आया था। उस समय दक्षिण भारत की पहाड़ी व जंगली जातियों तथा अछूतों में डेरा लगा कर, शारीरिक सुखों की सर्वथा अवहेलना करते हुये एक तत्परता से कार्य करने का ही यह परिणाम है कि आज लाखों अछूत अपना पुश्तैनी धर्म छोड़ कर ईसा की शरण आ चुके हैं। समस्त भारत की ईसाई जन-संख्या का तीन चौथाई भाग मद्रास प्रान्त में बसता है। और विशेष से उन में ९० प्रति शत संख्या अछूत कहलाने वाले ईसाइयों की है।

× × ×

गत पश्चिमीय महाभारत के पश्चात् से अंग्रेज़ों ने भारत में अपने राज्य की नींव सुदृढ़ करने के लिये जिन नवीन उपायों का अवलम्बन किया है उनमें से अछूतों के प्रति विशेष व्यवहार एक है। उत्तर भारत के गत २५ वर्षों का इतिहास हमारा साक्षी है कि अंग्रेज़ों ने जान बूझ कर मुसलमानों से विशेष प्रेम दरशा कर उन्हें हिन्दुओं के विरुद्ध सचेष्ट किया है जिसका परिणाम आज सारा भारत भुगत रहा है। ठीक वही अवस्था दक्षिण भारत में ब्राह्मण—अब्राह्मण के बीच हुई है। और अब उसी नाटक का तृतीय अंक हमारे सामने है जिसमें अछूत और जाति हिन्दू दिन प्रति दिन परस्पर विरोधी हो रहे हैं। इसी अंक का एक सफल दृश्य दो तीन वर्ष पूर्व लण्डन में दिखाया गया था जब डाक्टर अम्बेदकर किसी भी दशा में में महात्मा गान्धी के साथ सम्मिलित न हुआ था और जिसका परिणाम मैक्डानैल्ड का "कम्यूनल अवार्ड" है।

× × ×

यों तो मुसलमान सदा से काफिरों का अपने मज़हब में लाने के शौकीन हैं मगर जब से उन्हें राजनीति का चस्का लगा है, उनमें संख्या बढ़ाने का शौक़ बहुत बढ़ गया है। संख्या वृद्धि के दो ही उपाय हैं। प्रथम अधिक सन्तानोत्पत्ति और द्वितीय मत परिवर्तन। मुसलमान इन दोनों में ही अग्रसर हैं। मत परिवर्तन के लिये जैसे ईसाईयों ने उच्च जाति हिन्दुओं को छोड़ कर अछूतों की ओर दृष्टि फेरी, वैसे ही मुसलमानों ने भी अपना ध्यान इन्हीं ग़रीबों की ओर किया। और इस विचार का प्रकाशन अनेक स्थानों पर अनेक व्यक्तियों द्वारा हुआ जिनमें मौलाना भाइयों की जोड़ी प्रमुख है। इस समय मुसलमानों की कृपा दृष्टि मद्रास के अगणित अछूतों पर है और वो खुले तौर से अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रयत्न शील हैं।

× × ×

पिछले दिनों की बात है कि स्थानीय "पैरीयन

होस्टेल" में जहां प्रायः अछूत लड़के रहते हैं एक सभा हुई जिसके प्रधान अछूतों के स्थानीय नेता रायबहादुर आर० श्रीनिवास थे। उसमें मिस्टर अब्दुल हमीद, प्रिंसिपल मुहम्मडन कालिज, प्रधान वक्ता थे। उनके भाषण से निम्न शब्द यहां उद्धृत करते है—

"अछूतो को सवर्ण हिन्दू, मन्दिरो अथवा अन्य पब्लिक स्थानों में आने जाने नहीं देते। उनकी सामाजिक व आर्थिक दशा जब तक वो हिन्दू धर्म मे रहेंगे, सर्वथा उन्नत न होगी। एकमात्र उपाय जिससे वो अपनी दशा में आवश्यक परिवर्तन ला सकते है वो यह है कि अछूत हिन्दू धर्म को छोड़कर इस्लाम क़बूल करें। इससे न केवल उनकी सामाजिक उन्नति होगी अपितु आर्थिक दृष्टि से भी सरकार द्वारा उन्हें सहायता मिलेगी।"

× × ×

शायद पाठक समझते होंगे कि एक व्यक्ति के विचार हैं इनका जनसमुदाय पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। परन्तु उन्हें यह जान कर आश्चर्य होगा कि दक्षिण-भारत में बड़े पैमाने पर इन विचारों को फैलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। उत्तर हिन्दुस्तान के अनेक मौलवी अपनी-अपनी जमातो की शाख़ खोल कर वहाँ सगठित रूप से प्रचार कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि गत तीन वर्षों में लगभग साठ हजार अछूत दक्षिण में मुसलमान हुए हैं। और अभी तो उस प्रगति का प्रारम्भ मात्र है। धीरे धीरे इसका प्रभाव यह होगा कि दक्षिणी अछूत स्वयमेव सचेष्ट होकर हिन्दुओं को चुनौती देंगे और हमारी आंखों क सामने हिन्दू धर्म त्याग कर विधर्मी बनेंगे।

× × ×

दक्षिण भारत में मालाबार मुसलमानों का केन्द्र है। सुप्रसिद्ध मोपला-उपद्रव भी यहीं हुआ था। गत कुछ समय से मुस्लिम राजनीतिज्ञ सिन्ध के समान मालाबार को भी पृथक प्रान्त बनाने की चिन्ता में हैं। इसके लिये वो काफी प्रोपेगैन्डा कर रहे हैं। उनकी इस सम्बन्धी स्कीमों में एक यह भी है कि मालाबार के अछूतों को यथाशक्ति मुस्लिम मत में लिया जाय। इस विषय में वो अछूत नेताओं के द्वारा बड़ी होशयारी से कार्य कर रहे है। साम दाम-भेद तीनों उपाय बरते जा रहे हैं। इसी का परिणाम है कि अब मालाबारी अछूत भी हिंदू धर्म छोड़ने की धमकी देने लगे हैं। नीचे के दो उद्धरण हमारे कथन की काफी पुष्टि करेंगे।

मालाबार के अछूतों में २ बड़ी श्रेणियां हैं, जिन्हे इज़हवा और थिया नामों से पुकारा जाता है। इज़हवा लोगों की विशाल केन्द्रीय सभा का नाम है S N. D. P Yogam। पिछले दिनों ऐलपी के समीप इसी योगम् की वार्षिक बैठक थी जिसमें श्रीमान् सी० के० वेला युधन बी० ए० बी० एल० ने अपना भाषण देते हुए निम्न के शब्द कहे:—

"अन्त में, मैं इतना कहूँगा कि हमारी सब तकलीफें इसी कारण हैं क्योंकि हम हिन्दू समाज से सम्बन्धित हैं यहाँ तक कि हमारे परम पूज्य गुरु श्री नारायण जी भी सवर्ण-हिन्दुओं की घृणा तथा अपमानसे न बच सके। इन सब बातों की ओर मेरे इज़हवा भाइयों को गौर करना चाहिये और यदि वो अब भी किसी प्रकार की उन्नति करना चाहते हैं तो फौरन् हिन्दू धर्म व हिन्दू समाज से तलाक़ देकर किसी अन्य मत में प्रवेश करना चाहिए जहां हमारा मान हो।"

अब थिया लोगो के लिये भी उन्हीं के एक नेता

# पुनर्जन्म

लेखिका — कुमारी शान्तादेवी कन्या गुरुकुल देहरादून )

[ अक्टूबर अङ्क से आगे ]

लौकिक कारागार में भ्रम का प्रवेश हो सकता है। परमात्मा की जेल में इसकी भूल कहां संभव हो सकती है? जो डाकू ब्रह्मचारी हो उसे तोते का जन्म एवं जो सिपाही पापात्मा हो उसे चींटी का जन्म मिलता है। इस प्रकार इन लोगों के कुसंस्कार जो पूर्वजन्म में अन्म के पड़े होत हैं उन्हें भोग-योनि ज़बरदस्ती बारम्बार करने पड़ते हैं। जिससे उन को करते २ उनका दिल उकता आता है। प्रतिक्रिया होती है। स्वभावतः घृणा की ज्वाला भभक उठती है जिसमें पाप नष्ट हो जाते हैं। तदनन्तर सत्कर्म की ओर प्रवृत्ति होती है। जैसे कि जो हिंसक प्राणी हैं उन्हें बारम्बार उस मोहावस्था में पड़कर हिंसा करनी पड़ती हैं एवं बारम्बार करने से उन की प्रवृत्ति उस ओर से विमुख होने लगती है एवं अहिंसा भाव का उदय होता है। तत्पश्चात् उसको मनुष्यका जन्म लाभ हो जाता है। पूर्वोक्त बातें पुनर्जन्म की सत्यता को कितनी सुन्दर रीति से सिद्ध करती हैं। तथा, क्योंकि सद्वृत्तियों एवं उत्कृष्ट कर्मों को उन विद्याओं को, जिन का सम्पादन उन्होंने पूर्व जन्म में किया था। कहीं उस भोग-योनिके अज्ञान में पड़ कर समय को उस विशाल परिधि मे निष्क्रिय रहकर सदा के लिए खो न दें इसलिए उसकी रक्षा के लिए करुणामय, निखिलेश उनकी

---

की नसीहत सुनिये —

"अब समय आगया है जब थिया समाज को हिन्दू धर्म से तिलाञ्जलि देनी चाहिये। इसके बाद ही हम आत्म सम्मान तथा सामूहिक उन्नति की ओर पग बढ़ा सकेंगे हिन्दू धर्म उस बिच्छू के समान है जो अपने पकड़ने वाले को ही काटता है। अतएव मेरी (वक्ता की) सम्मति में सब थिया लोगों को चाहिये कि शीघ्रातिशीघ्र हिन्दू कहलाना छोड़कर इस्लाम की शरण लें। यही एक ऐसा धर्म है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रतिष्ठा पूर्वक रह सकता है।"

अंग्रेज़ी में कहावत है कि एक तिनके से हवा का रुख पहिचाना जाता है। यही अवस्था यहां भी समझनी चाहिए।       ×       ×       ×

आज से लगभग १५ वर्ष पूर्व आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, लाहौर की ओर से मालाबार में प्रचार कार्य हुआ था। प्रचारक आये, पाठशालाएं खुलीं, समाजें बनीं, कुछ शुद्धियां भी हुईं। परन्तु पीछे से सब ठन्डा पड़ गया। इस समय मालाबार में कोई प्रचारक नहीं।

श्रीमती सार्वदेशिक सभा ने श्री पूज्य नारायण स्वामीजी की अध्यक्षता में गत अनेक वर्षों से दक्षिण में प्रचार का प्रबन्ध किया है। तामिलनाड, आन्ध्र तथा मैसूर राज्य में कार्य हो रहा है। आवश्यकता है कि शीघ्र ही मालाबार में भी एक समाज केन्द्र खोला जाय। परन्तु कोई भी कार्य धन-जन की सहायता के बिना असम्भव है। हमारी नम्र प्रार्थना है कि यदि जनता की सहायता प्राप्त हो तो अवश्य ही प्रतिनिधि सभा को उपरोक्त कार्य में अग्रसर होना चाहिये।

---

उन विद्याओं को क्रिया रूप में उसी दशा में प्रकट करवाता रहता है जैसा कि मैंने ऊपर उदाहरणों द्वारा बतलाया इस प्रकार पुनः जब वे मनुष्य शरीर धारण करते हैं तब शीघ्र ही उन विद्याओं का उनके अन्तर में विकास हो उठता है। एवं अनेकों गुप्त विद्याओं का विकास पशु योनियों में भी यदि चेष्टा की जाय तो किया जा सकता है। उनके सुप्त ज्ञान जागृत किये जा सकते हैं। बर्लिन का प्रसिद्ध व्यक्ति औस्टल १६०० में एक घोड़ा हैन्स नामक लाया। यह ऐतिहासिक घोड़ा है इस के नाम पर अनेकों पुस्तकें लिखी गई हैं। १६०४ में कमेटी उस का निर्णय करने बैठी, जिसमें एक मनोविज्ञानका (२) शारीरिक शास्त्र का ३) चिड़िया घर के प्रोफेसर भी वहां उपस्थित थे। घोड़ों के डाक्टर भी बुलाए गए। निर्णय किया गया कि यह बात ठीक है। पुनः दूसरी कमेटी बिठाई गई उसने भी कहा कि क्यों एवं कैसे जानता है मालूम नहीं परन्तु बात सत्य है।

एक कुत्ता भी उक्त प्रकार का था। उस का नाम लेक्फ था। वह भी लिखकर उत्तर देता था। उससे प्रश्न किया गया कि शिशिर ऋतु किसे कहते हैं? उसने प्रत्युत्तर दिया जिसमें सेबों का आधिक्य होता है। एक घोड़े से प्रश्न किया गया। वह सोचता था परन्तु निकालता न था। उसके स्वामी ने उसे भर्त्सना प्रदान की परन्तु वह चुप। यह देख जब सवाल देखा गया तो अशुद्ध था। यहां तक उसकी प्रतिभा का विकास हो चुका था? तोते के लिए प्रसिद्ध है कि वह रट लेता है? समझता नहीं! अर्थ नहीं लगा सकता। शब्दों की सार्थक रचना करली वस्तुतः क्लिष्ट है। एक मनुष्य ने, एक तोते से कहा सीढ़ी, अल्मारी, चढ़। उसने सीढ़ी अल्मारी है चढ़ो और किताब ले आओ पूरा वाक्य सार्थक कर दिया फिर उसे केवल रटने वाला क्योंकर कहा जा सकता है।

बिना शिक्षण के यह वाक्य श्रृंखला बनाने की क्षमता कैसे हुई। चेतना में पूर्व जन्म के सस्कार अचेतन हो रहे थे—ठेस लगाते ही जाग उठे! यह बात भी पुनर्जन्म को सिद्ध करती है।

परमात्मा न्याय-निधि एवं करुणा की अनुपम निधि है। यही कारण है कि उसने कितनी ही पाप की राशियां क्षमा की हों तो उसका तात्पर्य यह नहीं कि पापों की विशाल काय पर्वत श्रृंखला को देखकर पुण्यों की नन्हीं आकृति को वे विस्मृति—सागर में डुबा दें। अथवा ध्यान न दें। ऐसा करने से पापी मनुष्य कभी भी पुण्य पथ की ओर प्रवृत्त नहीं हो सकता। उसकी अधोगति की वेगमती उच्छृंखल सरिता के अनियमित प्रवाह को, प्रतिक्रिया की चट्टान कहीं भी रोक नहीं सकती। उसके सम्मुख होते ही वह स्वयमेव चकनाचूर हो जाये। क्योंकि यह भावना कि पुण्यकर्म सम्पादन करने से भी मुझे प्रतिफल मधुर न मिलेगा—उसे उन्नति पथ पर अग्रसर न होने देगी निरुत्साह और निराशा के प्रबल झोके उसे बढ़ने न देंगे। अतएव निखिलेश की न्याय—व्यवस्था में कितना ही पापी

क्यों न हो परन्तु यदि किसी विषय में उसने निपुणता लाभ की है तो वह नष्ट नहीं हो सकती। उसके लिये भी पुनर्जन्म की असीम आवश्यकता है। और वह पाप फल भोग करता हुआ भी अपने पुण्य की मधुरता का आस्वादन करता है। यदि उसने अधिकाधिक पापमय जीवन यापन किया है तो उसका मलिन आवरण उसकी आत्मा के विशुद्ध रूप को ढक लेता है। उसके निवारण करने के लिये परमात्मा ने भोग योनि की रचना की है। जिसमें उनसे पापचेष्टा को ज़बरदस्ती बारम्बार करवाया जाता है और इतना अधिक कि उन्हें उसके प्रति अरुचि, घृणा, ग्लानि, और विरक्ति की भावनायें आकर विचलित कर डालती हैं। और उसकी आत्मा पाप-मल से निवृत्ति पाकर विमल हो जाती है। पुनः उन्हें पवित्र मानव-देह प्राप्त होजाती है। यदि किसी न किसी विद्या में पूर्णता प्राप्त की है परन्तु पाप-कृतियां भी निःसीम की हैं तो वह पशु-पक्षी आदि जिस भी योनि के योग्य होता है उसमें चला जाता है—एवं घोड़ों कुत्तों, चींटियों के अन्दर से जो विविध विद्याओं के विकास दृष्टिगोचर होते हैं वे इसी के परिणाम हैं। किसी के कर्म में रेखागणित, किसी के कर्म मे इञ्जनियरी का आभास मिलता है। वह उनके संस्कार को दृढ़ रखने के लिये है। जिससे वे पाप-योनि की घोर यवनिका के पड़ जाने पर अपने पवित्र संस्कारों को विस्मृत न कर दें। अपितु ऐसी अविवेकमयी अवस्था में भी करते चले जायें। एवं पाप-फल भोग लेने पर फिर उसको मनुष्य जीवन में उपयोगी बना सके। इसमें उसकी शक्ति परमात्मा की इस अनूठी चमत्कृति के साथ जागृत रक्खी जाती है। किसी को शङ्का हो सकती है कि यह कैसी बात है कि पाप-कृत्य बलात् कराने से उसके वह संस्कार मिट जाते हैं एवं अच्छे कर्म करते रहने से संस्कार स्थिर रहते हैं। उसका उत्तर यह है कि सुकर्म करते रहने से किसी को उसके प्रति घृणा के भाव नहीं उत्पन्न होते। अपितु एक प्रकार के अपूर्व उत्साह, उमंगों की तरंगें, उमड़ पड़ती हैं—हर्ष से अन्तर आन्दोलित हो उठता है—देह में रोमाञ्च होने लगता है। परन्तु ज़बरदस्ती अथवा स्वेच्छा से भुगवाये एवं भोगे हुये पाप के कर्म एवं कर्म-फल उनके प्रति असीम वैराग्य की लहर पैदा कर देते हैं। पापी का हृदय उससे मुक्ति पाने के लिये छटपटा उठता है, और वह उन्हें परित्याग कर देता है। और जो मनुष्य का मनुष्य में अन्तर है विषमता उसी पाप पुण्य के परिणाम स्वरूप में खिलती दिखलाई दे रही है। यदि किसी मनुष्य की उसके कर्म्मानुसार मृत्यु हो गई उसने विद्या विशेष में विलक्षणता प्राप्त की थी परन्तु उसे क्रियात्मक रूप में अभी न ला सका था तो दूसरे जन्म में उसके संस्कार शीघ्र जागृत हो उठेंगे। जिसके अनुसार आज स्मृति-भेद स्पष्ट उदाहरण है। यहां पुनर्जन्म तो आशावादी बनाता है। पापों से अरुचि, भय उत्पन्न करता है। कर्म-फल के लिये पुनर्जन्म की सत्ता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। नहीं तो विश्व में भीषण प्रलयंकारी वीभत्सता ताण्डव-

नृत्य करने लगेगी। दुर्बलों के चीत्कार से नित्य वसुमती वसुन्धरा एवं गगन-मण्डल कांपता दिखाई देगा। पिशाच एवं दानवों के अत्याचारों से ससागरा पृथ्वी हिल जायेगी। पाप का गहरा स्याह अञ्चल, पुण्य के वक्षःस्थल पर गिरकर उसे सदैव के लिये ढक लेगा। दया, प्रेम, सौहार्द की सुकुमार भावना तड़प-तड़पकर जान दे देगी। आशा का अस्तित्व ही विश्व से उड़ जावेगा। परन्तु पुनर्जन्म का विशाल साम्राज्य ऐसा होने दे यह असम्भव है। भगवान् वेद—"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः" की मधुर वर्षा उसी की मृदुल स्थापना जतलाते हुये कर रहे हैं। संसार में यदि यत्किञ्चित् शान्ति का, धर्म का, सत्य का अटल साम्राज्य छाया है—आविष्कारों की मधुर भीड़ लगी हुई है,—अज्ञान की नींद मिट रही है, ज्ञान की ज्योति जगमगा रही है, उत्कर्ष का समुद्र लहरें मार रहा है। लक्ष्य आकाश का चुम्बन कर रहे हैं—आदर्श हिमगिरि की धवल चोटियों को लज्जित करने के लिये बढ़ रहे हैं तो वह पुनर्जन्म की ओजस्विनी शक्ति का मंगल परिणाम है! इन सबके मौन संगीत में किसकी माधुरी फूट फूट कर निकल रही है, किसका स्वर गूंज रहा है, किसके सौन्दर्य की अविरल धारा प्रवाहित हो रही है? एकमात्र पुनर्जन्म की! पुनर्जन्म की!! पुनर्जन्म की!!! क्योंकि इसी में तो अखिलेश की आर्तिहारिणी न्याय-व्यवस्था अपने संपूर्ण सौन्दर्य के साथ झांकियां ले रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपने लावण्य की सारी सुधा इसी में उंडेल दी है। संसार का समूचा उल्लास उसकी ही सत्ता पर खड़ा थिरक रहा है।

[ समाप्त ]

# भारतीय समाज में प्रचलित बुराइयां
## और
# उनका इलाज

( श्री प० धर्म्मदेव जी विद्यावाचस्पति बंगलोर )

( गतांक से आगे )

## ( ३ ) पात्रापात्र-विवेकहीन दान

तीसरी बड़ी भारी सामाजिक बुराई जो भारतीय समाज में प्रचलित है वह पात्रापात्र का विवेक किए बिना दान करने और धन का दुरुपयोग करने की है। भारत में दान करने वालों की कमी नहीं है। भिखमंगों को पालने के लिए हजारों धर्मशालाएं बन चुकी हैं और बनती जा रही हैं। दिन रात खाना पीना और सोना यही जिनका काम है ऐसे साधु नाम को कलंकित करने वाले भिखमङ्गों का पेट भरनेके लिए भारत के दानवीरों की थैलियों का मुंह खुला रहता है, पर राष्ट्रीय संस्थाओं को दान करते समय १०, १५ रु० से अधिक निकालते हुए उन्हें संकोच होता है। शिव और विष्णु के मन्दिरों के निर्माण करने में लाखों रु० खर्च करते हुए इन दानवीरों को कुछ अनुभव नहीं होता, पर राष्ट्रीय विद्यालय अनाथालय ब्रह्मचर्याश्रमादि में दान देने के लिए कहें तो कोरा जवाब दे देते हैं कि हमारी सहानुभूति नहीं। भारत के सभी भागों में महन्त लोग लाखों करोड़ों रु० की आमदनी के मन्दिरों के स्वामी बने बैठे हैं पर वह सारा धन सिवाय ब्राह्मणों को प्रीति भोज खिलाने के किसी परोपकार के कार्य में प्रायः खर्च नहीं होता। राष्ट्रीय कार्य कर्त्ताओं को सदा धन के अभाव की शिकायत रहती है। हिन्दुओं के तो जीवन भर की कमाई विवाह के अवसर के लिये और नाच तमाशों में खराब करने के वास्ते रहती है। यह अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। जातीय धन इस प्रकार दिन प्रतिदिन नष्ट हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को सत्पात्र देश काल का विचार कर के दान देने का निरन्तर उपदेश दिया जाए तब किसी राष्ट्रीय संस्था को धनाभाव की शिकायत न रहेगी क्योंकि भारत में धनियों की और दानियों की कमी नहीं है। दान कहां करना चाहिये इस बात को जानने वालों की कमी है।

( क्रमश: )

# आत्म तत्त्व

( श्री महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज )

आत्म तत्व की शिक्षा वेद से लेकर निम्न से निम्न श्रेणी के संस्कृत ग्रंथ में किसी न किसी रूप में अवश्य मिलती है। इस का कारण क्या है? क्यों इस शिक्षा को इतना महत्व दिया गया? जो विद्वान आर्य्य जाति की प्राचीन शिक्षा में त्रुटि ही देखने के अभ्यासी हैं, वे तो उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर यह दे देते हैं कि आर्यों ने सब को दुनिया छोड़कर जंगल में जाने का रास्ता बताया और फल यह हुआ कि मुल्क हाथ से जाता रहा परन्तु जो इस प्रकार का अभ्यास नहीं रखने वे गंभीरता के साथ इस प्रश्न पर विचार करते हुए महत्व पूर्ण परिणाम पर पहुँचते हैं। सब से पहले यह बात समझ लेने के योग्य है कि आर्य्य जाति का धर्म लोक और परलोक दोनों की उन्नति से पूरा होता है। वेद में जहां ईश्वरोपासना का विधान है उसके साथ साथ चक्रवर्ती राज्य प्राप्त करने की भी शिक्षा दी गई है और इस लोक और परलोक की पूर्त्ति के साधन धर्म की पूर्त्ति आत्म तत्व से हुआ करती है। जब तक मनुष्य मृत्यु से भयभीत रहता है वह लोक और परलोक दोनों में से किसी की भी सिद्धि नहीं कर सकता और मृत्यु से निर्भीकता का कारण आत्म तत्व ज्ञान ही होता है आत्म तत्व के समझ लेने से यह बात समझी जा सकती है।

## आत्म तत्व

हम शरीर हैं या आत्मा इस प्रश्न का हल करना ही आत्म तत्वज्ञान कहलाता है। उपनिषदों में बतलाया गया है और अच्छा विवरण देकर बतलाया गया है कि हम शरीर नहीं अपितु आत्मा हैं और मनुष्य जब अपने को आत्मा समझा करता है तब समझ लेता है कि—

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावक।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

( गीता )

अर्थात् जब मैं आत्मा हूँ तब बड़ी से बड़ी मशीनगनें मेरा कुछ नहीं कर सकतीं, अग्नि मुझे जला नहीं सकती, पानी मुझे बहा नहीं सकता और हवा मुझे सुखा नहीं सकती।

इसी लिये ऋग्वेद में कहा गया है कि:—

"न मृत्यवे अवतस्थे कदाचन" ॥

अर्थात् मैं कदापि नहीं मर सकता। मनुष्य मात्र को वेद ने शिक्षा यह दी है कि उन्हें समझना चाहिये कि आत्मा होने से मृत्यु उनका कुछ नहीं कर सकती। मृत्यु से भय उन्हें होना चाहियें जो अपने को शरीर समझते हैं।

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि।
गृह्णाति नरोऽपराणि ॥ इत्यादि।

अर्थात् जिस प्रकार मनुष्य फटे पुराने कपड़ों को उतार कर नये वस्त्र पहन लिया करता है। इसी प्रकार आत्मा जीर्ण शरीर रूपी फटे पुराने वस्त्रों को उतार कर नवीन शरीर रूपी नये वस्त्रों को ग्रहण कर लिया करता है। कभी

# हवन की उपयोगिता

( ले०—राज्यरत्न श्री आत्माराम जी अमृतसरी )

पूज्य श्रीमंत बड़ौदा नरेश श्री ने हमसे अपने राजमहल में आने पर कहा था—"जब हम बंगाल में गए थे हमने एक ब्राह्मो मिशनरी से सुना था कि आर्यसमाजी लोगों की एक ही बात अच्छी नहीं अर्थात् वह हवन करके अग आग की पूजा करते हैं। आप हवन सम्बन्धी जो कहना चाहें कहें जिस से आपकी पोजीशन तथा अन्य बातें हमें मालूम हो सकें।"

महाराज की उपर्युक्त आज्ञा पाकर उनकी सेवा में नम्रता पूर्वक निवेदन किया गया कि अंगरेजी के भारी विद्वान उक्त ब्राह्म मिशनरी सज्जन का यह कथन ठीक नहीं। यदि वह महानुभाव संस्कृत के पण्डित होते अथवा आर्यसमाज के जन्मदाता वेदज्ञ महर्षि दयानन्द जी के हवन मन्त्रों सम्बन्धी अर्थों को देख सकते तो वह ऐसा न कहते। आज से कदाचित् चालीस वर्ष पूर्व स्वनामधन्य कवि सम्राट रवीन्द्र नाथ टैगोरजी के सगे भ्राता स्वर्गीय श्री बलेन्द्रनाथ जी टैगोर पंजाब पधारे थे, और हमें लाहौर में मिले थे। उन्होंने आर्यसमाज मन्दिर में भाषण देते हुए कहा था कि हम आदि ब्रह्मसमाजी और आर्यसमाजी एक हो सकते हैं क्योंकि हम में कुछ भेद नहीं। अब तक हमने अवश्य यह सुन रक्खा था कि आर्यसमाजी हवन की अग्नि की पूजा हाथ जोड़ कर करते हैं, परन्तु पूज्य स्वामी दयानन्द जी के ग्रन्थ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पढ़ने से हमारा भ्रम दूर हो गया। अस्तु, श्रीमानों की पवित्र सेवा में बलपूर्वक

---

किसी को नहीं देखा गया कि फटे पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्रों को ग्रहण करते हुए वह दुःखी होता हो, इसके विपरीत प्रसन्न होते तो सभी देखे जाते हैं। फिर पुराने और जीर्ण शरीर को छोड़ते समय क्यों किसी को दुखी होना चाहिए। यही आत्मतत्व है और इसी शिक्षा के भीतर मृत्यु से निर्भीकता का भेद निहित है। हां इसमें अभी एक प्रश्न और भी शामिल होने को है, उसके सम्मिलित होजाने से यह शिक्षा पूर्ण तौर से प्रकट होजायगी—वह प्रश्न यह है! कल्पना करो कि एक मनुष्य अभी स्वस्थ है उस का शरीर भी अभी जीर्णशीर्ण नहीं हुआ है और उसकी आयु भी अभी केवल ३० वर्ष ही की है तो यदि ऐसा पुरुष कर्त्तव्य के अनुरोध से अपने इस अच्छे खासे शरीर रूपी वस्त्र को उतार देता है तो क्या वह इसमें कुछ घाटे में रहेगा? उपनिषद् का उत्तर यह है कि नहीं! क्यों? इस लिए कि उसका शरीर रूपी वस्त्र ३० वर्ष का इस्तैमाली है यदि इतने पुराने और इस्तैमाली वस्त्र के बदले बिलकुल नया और एक दिन का भी जो इस्तैमाली नहीं है, ऐसा शरीर रूपी वस्त्र मिलता है तो कौन कह सकता है कि वह पुरुष घाटे में रहेगा—अस्तु। इस आत्म तत्व के इस प्रकार समझलेने से मनुष्य सर्वैव निर्भीक रहता है और उसकी यह निर्भीकता ही उसे लोक और परलोक दोनों की सिद्धि का कारण बनती है।

निवेदन करूंगा कि जितने भी हवन के मन्त्र 'पञ्च महा यज्ञविधि' तथा अन्य 'संस्कारादि' ऋषिकृत ग्रन्थों में हैं, उन सब के अन्त में 'मम' शब्द नहीं आता, किन्तु 'स्वाहा' शब्द आता है, जिसके अर्थ शुभ क्रिया के हैं अतः हम यह अग्नि के पूजक नहीं। इसके अतिरिक्त हवन यज्ञ विज्ञानमूलक भी है, जैसा कि अंग्रेजी विश्वकोष इसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका (Encyclopedia Brittanica) के नवीन संस्करण में स्वास्थ्य (Hygeine) के वर्ग में Fire अर्थात् आग को भारी कीटाणु नाशक तथा वायुशोधक लिखा है। आग जलाकर हम उसमें सुगन्धित और विनाशक (Sweet scented disinfectant) पदार्थ डालते हैं। जैसे कपूर, चन्दन, गूगल, लोबान, केसर, नीम के पत्ते बालछड़, अगर, काश्मीरी धूप आदि सभी पदार्थ कीटाणुनाशक (Germ Killer) हैं। इंगलैंड के अनेक नामी डाक्टरों के नाम इसकी पुष्टि में दिये जा सकते हैं।

इतना ही नहीं किन्तु संसार के सब वैज्ञानिक तथा डाक्टर उक्त सिद्धान्त को जानते हैं और वह भी हमारी तरह उपयुक्त सामग्री को सुगन्धित और रोगनाशक (Sweet Scented Disinfectant) कहते हैं। बड़ौदा के भूत पूर्व सचिव श्रीयुत सेडन महोदय जिस समय श्रीमन् के हरिजन बोर्डिङ्ग हाउस में, बीस वर्ष पूर्व निरीक्षण के लिये आए थे, तो मैंने उनको बताया था कि हरिजन छात्र बड़ौदा के इस बोर्डिङ्ग हाउस में हवन करते हैं। हवन के सब पदार्थ बिना कूटे हुए उनको सुँघाए और दिखाए और उनको यह भी कहा कि यह हमारी सुगन्धि रोग कीटाणुनाशक सामग्री (Sweet Scented Disinfectant) हैं तो उन्होंने भी इसे स्वीकार करते हुए कहा, निस्संदेह यह बात ठीक है। आज कल जर्मनी के एक नामी डाक्टर तथा वैज्ञानिक ने Highly scented Cones का आविष्कार किया है और जो भारतवर्ष में सर्वत्र लाखों रुपयों की प्रतिवर्ष बिकती हैं। इसकी डिब्बी के ऊपर लिखा रहता है कि मच्छर, पिस्सू, खटमल आदि इसके सुगन्धि युक्त धूप रूपी धूम्र से नहीं आ सकते। मैंने इसको परीक्षण जलाकर किया है और उसका उपयोग उपर्युक्त जन्तुओं के नाश करने में ठीक ही सिद्ध हुआ है। क्या हवन का यह एक रूप नहीं है और उससे हवन की उपयोगिता सिद्ध नहीं होती। हवन में घी भी तो डाला जाता है, जिसके विषय में पैरिस के नामी डाक्टर हैफकिन साहब जिन्होंने प्लेग के टीके का आविष्कार किया है, अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि क्लोरीफाइड वटर, जिसको भारतवर्ष में घी कहते हैं, रोग कीटाणुनाशक है।

नीम के पत्ते तथा गिलोय भी, जिन्हें हवन में डाला जाता है, भारी विषनाशक हैं मलेरिया ज्वर इनके धुएं से भाग जाता है। वैद्य लोग कुनेन की जगह नीम की लकड़ी अथवा टहनी का काढ़ा पिलाकर रोगी को चंगा कर देते हैं और गिलोय भयंकर ज्वर को दूर कर देती है। गुड़ और शक्कर का भी हवन सामग्री में प्रयोग होता है। अमरीका के नामी डाक्टर इन्हें तथा इनके धुएं को टेफीवर (ज्वर विशेष) का नाशक बतलाते हैं। हवन सामग्री के सुगंधियुक्त, रोगनाशक, मिष्ट और पुष्टिकारक पदार्थ सभी विषनाशक हैं। जौ का धुआं भी मच्छर भगाता है, और चावल तथा खीलें, जिनका विवाह समय होम होता है, छाती के रोगों को दूर करते हैं। इंजेक्शन की जगह हमारे वैद्य ऋषि हवन धूम्र

से रोगी को चंगा कर सकते थे।

मैं जब श्रीमान् के इस कमरे में आया तो मैं सच कहता हूं मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कोई दृढ़ आर्य-समाजी श्रीमानों के कमरे में हवनकुंड घुमा गया है। जितनी हवन की आवश्यकता श्रीमानों ने समझी और उसकी पूर्ति की है उतनी कोई भी आर्य-समाजी कब और कहां करता है। श्रीमानों की आज्ञा है कि प्रत्येक कमरे में दिन मे कई बार चांदी का धूपदान—जिसमे सेर भर चन्दन, सेर भर गूगल और सेर भर लोबान जलाया जाय—फेरा जावे। श्रीमान् योरोप में अनेक बार फिर आये हैं, अतः आप स्वयं जानते हैं कि वहां के डाक्टर अब गन्धक जलाना छोड़कर कपूर तथा चन्दन जलाने का व्रत ले रहे हैं। जिस कमरे में फिनाइल छिड़का हो वहां की दुर्गन्ध भारी सिर पीड़ा कर देती है। यही बात फिनाइल की गोलियों के सम्बन्ध में भी है, परन्तु नीम का पानी छिड़कने में तथा नीम के पत्ते किताबों तथा कपड़ों में रखने में यह दोष नहीं। गुरुकुल वृन्दावन में रहते हुए हम नीम का उक्त प्रयोग कर चुके हैं। अमृतसर में जब प्रथम बार प्लेग आया था, तो हमने अपनी हवेली के तीनों खंडों और मंज़िलों में एक बृहद् अखंड हवन एक मास भर, जब उसकी ज़रूरत थी, जारी रक्खा और ईश्वर कृपा से हवन से हम घर को रोगकीटाणु-रहित कर सके थे, यह बात हम पर भली भांति सिद्ध हो चुकी है। हमारे परिवार में कई प्राणी थे, और मैं भी उसमें रहा परन्तु कोई रोगी नहीं हुआ न प्लेग के चूहे मकान में आये। इसे वहां के सब हिन्दू तथा अन्य लोग जानते हैं और हवन की उपयोगिता के वह सब जीवित साक्षी हैं। इस सिद्ध प्रयोग ने अमृतसर में हवन का भारी प्रसार कर दिया।

श्रीमानों ने सुना होगा कि बंगभूषण स्वर्गीय श्री बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी महोदय ने एक लाख रुपया सरकार को दान में दे रक्खा है कि वह गावों मे मच्छर वाले घरों में मछेरियां ( Mosquito Nets ) दानार्थ बांटें। उनका यह दान बड़ा उत्तम है। पर ऋषिकाल में प्रत्येक घर में हवन होने से उक्त मछेरियों की ज़रूरत न होती थी। स्नान से पहले यदि मनुष्य सरसों का तैल मलकर स्नान करे तो उस मनुष्य के पास रात या दिन को मच्छर नहीं आ सकते। इसलिये हवन यज्ञ के प्रचार से देश के भारी रोग हम दूर कर सकते हैं, यह हमारा निजी अनुभव तथा तर्क के अतिरिक्त योरोप का भी विज्ञान हमारी पुष्टि कर रहा है। दयानन्द जन्म शताब्दी के महोत्सव पर मथुरा मे दो लाख मनुष्यों का नगर कई दिवस तक बसा रहा था; परन्तु पूज्य महात्मा श्री नारायण स्वामीजी ने भारी हवन यज्ञ का प्रबन्ध किया था, जिसके प्रभावस्वरूप वहां कोई भी ऐसे संक्रामक रोग, जिनके ऐसे मेलों में फैलने की सम्भावना रहती है, नहीं फैल पाये। अतः वहां पर उपस्थित अनेक दर्शक भारतीय नेताओं ने हवन के लाभ स्वीकार किये और इसी प्रकार गत वर्ष १९३३ के अक्तूबर मास में एक विशाल यज्ञ ऋषि निर्वाण-अर्द्धशताब्दी के अवसर पर अजमेर में होता रहा। इस अवसर पर उपस्थित पुरुषों की जनसंख्या सभी लोग एक लाख स्वीकार करते हैं, अतः इतने भारी मेले में और निर्वाण अर्द्धशताब्दी के आर्यनगर में भी बृहद् हवन के कारण कोई संक्रामक रोग नहीं फैला। इससे प्रत्यक्ष तथा अनुभवसिद्ध पुष्ट प्रमाण और क्या दिया जा सकता है।

यदि दस सहस्र रुपये उक्त यज्ञ में अजमेर में खर्चे हुए तो लाख की बस्ती पर प्रति मनुष्य दो आने ही तो

पड़े। यदि हम इसकी जगह सहस्रों रुपयों का फेनाइल भी व्यवहार में लाते तो संक्रामक रोगों की तो आशङ्का नहीं थी, परन्तु उसकी जगह सिर पीड़ा का विचित्र प्रसाद लेकर तो भाप्री घर को आते हो।

अमरीका के नामी डाक्टर तथा योगी डेविस साहिब लिखते हैं कि मनुष्य का ईश्वर ने नाक रूपी आ देवता ( Augel ) दे रक्खा है वह यदि उसके अनुकूल चले तो कभी बीमार नहीं हो सकता। किसी वैज्ञानिक के जाने से पूर्व हमारा नाक हमें बतला देगा कि यहां की वायु दुर्गन्धमय है अतः उस जगह। वेद का निम्न मन्त्र ५ ज्ञानेन्द्रिय, छटे मन और सातवीं बुद्धि को प्रमाद रहित ऋषि ( Infallıole guides ) कह रहा है यही डेविस का मत है।

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदम-प्रमादम्। ( यजु० अ० ३४ मन्त्र ५५ )।

# अखिल भारतीय आर्यकुमार-सम्मेलन

## प्रधान

## रायसाहब श्री मदनमोहन जी सेठ का भाषण

गत नवम्बर मासमे मेरठ नगरमे आर्यकुमार-सम्मेलनका अधिवेशन बडे समारोह और बड़ी सफलताके साथ मनाया गया था। उस अवसर पर श्री सेठजी ने सभापति पदके आसनसे जो भाषण दिया था उसका सार यहा दिया जाता है—स०

कुछ दिनों से आर्यकुमार सभाओं का संगठन बहुत ढीला हो गया है। कितनी आर्यकुमार सभायें बन्द हो गई', कितनी ही नाम मात्र की हैं और कुछ सभायें ऐसी हैं जो अपनी शिरोमणि परिषद् के आदेशों का उचित रीति से पालन नहीं करतीं। परिणाम स्पष्ट है आर्य कुमार सम्मेलनों में आर्यकुमार सभाओं के बहुत थोड़े प्रतिनिधि पहुँचते हैं। मैं पूछता हूँ कि आज इस सम्मेलन में जिसे अखिल भारतीयता की उपाधि दी गई है, प्रतिनिधियों की तादाद शोचनीय नहीं है? क्या हमारे इस मन्दोत्साह की प्रशंसा की जा सकती है? क्या इतने अल्प प्रतिनिधित्व से हम अपने उद्देश्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं? मेरी प्रार्थना है कि सबसे पहले आप अपने संगठन को उन्नत बनावें, निर्जीव सभाओं को सजीव करें मरी हुई सभाओं को जिलावें और नयी नयी सभायें खोलें—ग्राम ग्राम और नगर नगर में ऐसी आर्य सभाओं की स्थापना होनी चाहिये जो अपनी शिरोमणि सभा का आदेश पालन करने के लिये प्राणपण से तैयार रहे। मैं देखता हूँ विद्यार्थी वृन्द में आर्य समाज के प्रचार के लिये न तो आर्य समाज प्रयत्नशील हैं और न आर्य कुमार सभाएँ। इस उदासीनता या उपेक्षा के कारण शिक्षा केन्द्रों के छात्र वैदिक धर्म की ओर अग्रसर नहीं हो रहे हैं। नवयुवक विद्यार्थियों में एक विचित्र और अरुचिकर लहर चल पड़ी है जिसे अधार्मिक या ईश्वरहीन लहर कहें तो अनुचित न होगा इसके लिये आर्यकुमारों, आर्यसमाजों के नेताओं और कार्य कर्त्ताओं के सहयोग से ऐसी प्रचार व्यवस्था करनी चाहिये जिससे नवयुवक समाज वैदिक धर्म की महत्ता को समझ कर आर्य समाज की ओर अग्रसर हों। यह कार्य अवश्य श्रम तथा धनसाध्य है, परन्तु इसके बिना काम नहीं चल सकता। आर्य कुमारों में बहुत से विद्यार्थी हैं, उन्हें अपनी शिक्षाओं की दुर्घट घाटियों में होकर निकलना पड़ता है। ऐसे भाई अवकाश हीनता का उज्र पेश कर सकते हैं। परन्तु 'जहाँ चाह वहाँ राह' की लोकोक्ति प्रसिद्ध है। अगर धर्म का प्रश्न वास्तव में सब से ऊंचा और बड़ा है तो उसके लिए हमें सब से पहले अवकाश निकालना पड़ेगा। आर्यसमाज के वर्त्तमान नेता भी किसी समय विद्यार्थी रहे हैं, परन्तु वे अपनी पढ़ाई के दिनों में भी यथेष्ट धर्म सेवा करते रहे। साधु महात्माओं का सत्संग करने और उनके उपदेश सुनने और धार्मिक स्वाध्याय करने से आर्यकुमारों में प्रगति शीलता की खूब वृद्धि हो सकती है। हमें दूसरों पर वाणी से प्रभाव डालने के लिए उतना चिन्तित नहीं होना चाहिए जितना कर्म से शिक्षा देने के लिए। मैं समझता हूँ अगर हमारे आर्यकुमार, संगठन, स्वाध्याय, सत्संग और स्वावलम्बन से काम लें तो वे बड़ी से बड़ी कठिनाई को आसानी से दूर कर सकते हैं। नवयुवकों में अक्षय-शक्ति भण्डार

होता है या होना चाहिए। नहीं हो तो यह बड़े दुःख की बात है। हां उन्हें अनुभव करने के लिए वयोवृद्ध विद्वानों से परामर्श करना पड़ेगा। शक्ति और अनुभव का सम्मेलन होना ही सफलता का भी गणेश है। आर्य-समाज में रूढ़िवाद पर बहुत कम कुठाराघात हुआ है। इसके लिए तरुणों के उच्चोत्साह की बड़ी आवश्यकता है। नवयुवक सामाजिक क्रांति करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। जो काम आज पचासों वर्षों में भी नहीं हुआ उसे प्रतिज्ञाबद्ध नवयुवक एक साल के भीतर कर सकते हैं। वर्णव्यवस्था का कैसा विकृतस्वरूप है। लेखनी और वाणी द्वारा भले ही गुण कर्म की पुष्टि की जाती हो परन्तु इस विषय मे क्रियात्मकता को बहुत कम स्थान दिया गया है। वही बिरादरियाँ हैं और वही रीति-रिवाज हैं। क्या आर्यकुमार अपने शक्तिभण्डार को रूढ़िवाद का गढ़ गिराने में नहीं व्यवहृत कर सकते? हिन्दू जाति के पुण्य-पादप को रूढ़ियों की अमर बेल ने घेर रक्खा है, जिससे उसका विकास बिलकुल रुक गया है। आर्य-कुमारो! इस जाति की रक्षा का भार तुम्हारे ऊपर है तुम अपनी जाति-जननी का सङ्कट दूर कर किसी पर अहसान नहीं करोगे, बल्कि अपने ऋण से किसी अंश तक उऋण हो सकोगे। कर्तव्य पालन में निर्भयता की बड़ी आवश्यकता है। झूठे लोकापवाद और निरर्थक निंदा के रोड़े उठाकर फेंक दो। निर्भय सिंह के समान कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ चलो। तुम्हें चाहिए क्या? हृदयों मे साहस और परम प्रभु परमात्मा का आशीर्वाद। जिन वीरों के हृदय में यह पवित्र भाव आ जाते हैं वे संसार में बड़े से बड़ा काम कर सकते हैं। इन्हें न मृत्यु का भय होता है और न लोक निन्दा का खटका। वह पहिले अकेला आगे बढ़ता है और फिर थोड़े दिनों बाद उसके सैकड़ों सहस्रों अनुयायी बन जाते हैं। आर्यकुमारों मे सेवा भाव की खूब अधिकता होनी चाहिए। इस सेवा भाव की जिसकी बिना किसी प्रकार के प्रतिफल की आकांक्षा किये, लोक-कल्याण कामना के लिये आवश्यकता है। आर्य कुमारों का सेवा भाव दीन दुखियों, अनाथ अबलाओं और पीड़ित-निस्सहायों की रक्षा के लिये होना चाहिए। उनकी सेवा का उपयोग देश, धर्म और समाज के लिये हो, तभी गौरव की बात है। आर्य-समाज की आधारशिला तप और त्याग पर रक्खी है। सेवा का सच्चा आदर्श ही उसका लक्ष्य है। आज तप और त्याग की कमी से अथवा निःस्वार्थ सेवा की उपेक्षा से आर्य समाज की जो शोचनीय दशा हो रही है, मैं चाहता हूँ कि आपका सच्चा धर्म प्रेम उस का अन्त करदे। सेवा के सुरम्य उपवन में शासन की उग्र आग लगी हुई है। आर्यकुमारो! तुम उससे अलग रहना और उसकी ओर देखना भी नहीं—तुम तो जाति के सच्चे सैनिक हो। सैनिक का काम कर्तव्य पालन में डटकर उद्देश्य सिद्ध करना है। लोग कहते हैं कि हम धर्म पर मर जायंगे, जाति पर प्राण गंवा देंगे। मै कहता हूँ मर जाना आसान है, परन्तु धर्म या देश के लिये कष्ट सह कर जीवित रहना बड़ा कठिन है। मैं आप लोगों को जीवित रहने के लिये कहता हूँ। परन्तु यह जीवन मृत्यु से प्रतियोगिता करने वाला न हो, उस में जागृति के पूरे और स्पष्ट लक्षण होने चाहिये। भाइयो! आप लोगों से कदाचित् भारतीय ग्रामों की दशा छिपी हुई नहीं है। आप चाहें तो अपने उद्योग द्वारा करोड़ों ग्रामीण मूक भाइयों के दुःख दूर कर सकते हैं। आखिर आपको अपनी पढ़ाई

छिनाई से कभी कभी अवकाश मिलता ही है। क्या आप इस छुट्टी में ग्रामों में जाकर अपने इन अबोध और सीधे सादे भाइयों की दशा नहीं सुधार सकते? याद रहे, सच्चा भारतवर्ष ग्रामों ही में रहता है। भारतीयता की उज्ज्वल ज्योति इन झोंपड़ियों ही में जलती है। वे स्वयं अपने लिए कुछ नहीं सोच सकते परन्तु दूसरे लोगों के शुभ भावनामय सच्चे उपदेश उनके हृदयों पर अवश्य असर करते हैं। आप लोगों के थोड़े से उद्योग द्वारा लाखों करोड़ों ग्राम भाई वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे आ सकते हैं। मैं चाहता हूँ कि हमारी आर्यकुमार सभाएँ ग्राम प्रचार के महत्वपूर्ण प्रश्न पर अवश्य विचार करें और ग्रामों के लिए उन प्रचार के साधनों को अवश्य जुटावें जो उनके लिए उपयुक्त हो सकते हैं।

बन्धुओ! कदाचित् इस युग में अब मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं कि सदाचार और सादगी भारतीय संस्कृति के मुख्य लक्षण हैं। हम दूसरों के गुणों को तो ले सकते हैं परन्तु किसी के चकाचौंध में आकर हमें अपनी सस्कृति को कभी न भूलना चाहिये। हमारे आचार्य ऋषि दयानन्द ने आर्य संस्कृति को जीवित रखने के लिये कितना भागीरथ प्रयत्न किया। अहिंसा के अवतार महात्मा गान्धी भारतीयता के पक्के समर्थक और भक्त हैं। आर्यसमाज तो विशुद्ध आर्य-संस्कृति की प्रचारक संस्था है। ऐसी दशा में हमें एक क्षण के लिए भी अपनी संस्कृति से अलग न होना चाहिए। हमें अब तक इस रूप में जीवित रखने वाली हमारी यह संस्कृति ही है। दुर्भाग्यवश आज एक लहर चल रही है वह है धर्म और ईश्वर के बहिष्कार की। जो विवेक बुद्धि से हाथ धोकर ईश्वर और धर्म के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। उनकी अवस्था दयनीय है। वे वैदिक धर्म की वास्तविकता को नहीं समझते। उनकी आँखों के आगे सदैव सम्प्रदायवाद के कीटाणु कुलबुलाते से रहते हैं और इन्हीं को वे धर्म का प्रकृत रूप समझ बैठते हैं। ऐसे भ्रमवाद से नवयुवकों को सदैव बचना चाहिये और उसकी वृद्धि में सहायक होना पाप समझना चाहिये जो धर्म पराई स्त्री को माता के समान समझने की शिक्षा देता है, जिस धर्म में दूसरे के धन या अधिकारों को हड़प जाने की पातकों में गणना की गई है और जो धर्म मनुष्य ही नहीं किन्तु भूतमात्र को आत्मवत् समझने के लिये कहता है उसकी निन्दा करना अविवेकपूर्ण कार्य है। ऐसे विवेक प्रमाद से आर्यकुमारों को स्वयं बचकर दूसरों को भी बचाना चाहिये।

आशा अंकुर नवयुवको! मैं पहले ही कह चुका हूं कि यह समय व्याख्यानबाज़ी का नहीं काम करने का है। मैं आपको कोई नवीन योजना नहीं बता सकता। हमारे आचार्य ने हमारा क्षेत्र इतना व्यापक और विशाल बना दिया है कि उसमें हम यथारुचि चाहे जितना कार्य्य कर सकते हैं। ऐसा कौनसा आन्दोलन है जिसका बीज आधुनिक युग के सबसे बड़े विधाता ऋषि दयानन्द ने वपन नहीं किया। आर्यसमाज में रह कर कौनसा उपयोगी कार्य्य है जो नहीं किया जा सकता। काम की कमी नहीं, काम करने वालों की कमी है। मेरी प्रबल अभिलाषा है कि इस कमी की पूर्ति हमारे आर्य-नवयुवकों द्वारा की जावे। ऋषि दयानन्द ने गर्भ से लेकर मरण पर्यन्त मनुष्य के लिये कर्तव्य निर्देश किया है। व्यक्तिगत कर्तव्योंसे लेकर स्वराज्य प्राप्ति और मुक्ति लाभ तक का मार्ग बताया है। फिर समझ में नहीं आता कि लोग आर्य समाज से क्यों उदासीन होते जाते हैं। मेरी राय

में, जैसा कि ऊपर कहा गया; आर्यसमाज में जीवन जागृति और तप त्याग के भाव कम होने ही से शिथिलता का प्रवेश हो रहा है। इस शिथिलता को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की आवश्यकता है।

केवल एक प्रस्ताव मैं विशेषरूप से आपके सम्मुख उपस्थित करता हूँ वह यह है कि एक ऐसे सुयोग्य उपदेशक की आयोजना की जाय जो वर्ष में एक एक दो दो मास यूनीवर्सिटी और कालिज केन्द्रों में रह कर वहां के विद्यार्थी समुदाय को आर्यसमाज और आर्यकुमार सभाओं की ओर खींचे। छुट्टियों के समय में प्रति वर्ष एक छोटीसी व्याख्यान माला तय्यार करें और उसे उक्त यूनीवर्सिटी और कालिज केन्द्रों में देवे। इससे दो विशेष लाभ होंगे एक यह कि विद्यार्थी नवयुवक आर्य समाज और कुमार सभाओं की ओर खिच कर सभासद बनेंगे जिससे कुमार सभायें उन्नति को प्राप्त होंगी। दूसरे यह कि अच्छा साहित्य भी तय्यार होता जायगा। मैं आप से अनुरोध करूंगा कि आगामी वर्ष में इस कार्य पर आप बल दें और इसमें सफलता प्राप्त करें। यदि ऐसा हुआ तो वस्तुतः बड़े सौभाग्य की बात होगी। वैदिक धर्म आशावाद का धर्म है उसमें निराशावाद के लिये कहीं गुञ्जाइश नहीं। जो निराशा निशा में बैठ कर 'किं कर्तव्य विमूढ़' बन जाते हैं, वे वैदिक धर्म के सेवक नहीं कहे जा सकते। वेद भगवान् हमें अन्तिम श्वास तक आशावादी तथा कर्मवीर बने रहने का आदेश देते हैं। परम प्रभु परमात्मा पुरुषार्थी पर अपनी पीयूष-धारा का स्रोत बहाते हैं। हमें भी परमात्मा पर अटल विश्वास रखते हुये कर्तव्य पालन करना चाहिये। नवयुवकों की सफलता के लिये तो यह अमोघ औषधि है। आगे, व्रतपति परमात्मा के समक्ष कर्तव्य पालन का व्रत धारण करें, जिससे हम में कार्य्य करने की अभूत-पूर्व क्षमता का उदय हो और हम साँसारिक मोह माया त्याग कर धर्म, समाज और राष्ट्र की सेवा में सर्वात्मना संलग्न हो सकें।

# सामाजिक-जगत्

## मद्रास "आर्य्य-मुस्लिम" मुकद्दमे के संक्षिप्त समाचार

(१) मद्रास नगर में श्रीमती सार्वदेशिक सभा के आधीन गत कई वर्षों से प्रचार हो रहा है। इस समय नगर में चार समाजें हैं। उनमें से एक ट्रिप्लिकेन विभाग में पाइक्राफट्स रोड पर है। प्रति शनिवार समाज मन्दिर मे प्रचार होता है और प्रति रविवार ट्रिप्लिकेन के समीप समुद्र किनारे। दूसरी जगह अर्थात् समुद्र किनारे की सभा बहुत जनप्रिय हो गई है। प्रति इतवार ५०० से १००० तक जनता एकत्रित हो जाती है।

(२) दो सितम्बर १९३४ को इतवार था। और यथा नियम आर्यसमाज की सभा समुद्र किनारे चल रही थी। लगभग ४०० गज की दूरी पर उसी दिन और उसी समय मुसल्मानों ने भी एक सभा की जिस का उद्देश्य एक ईसाई पादरी द्वारा लिखी पुस्तक, जिस मे इस्लाम की समालोचना थी का विरोध करना था। उस सभा में २० हजार के करीब मुसल्मान इकट्ठे हुए थे और अनेकों के हाथों में डण्डे व भाले थे।

(३) मिस्टर आरुल सबइन्स्पैक्टर पोलिस की शहादत के मुताबिक़ 'मैं आर्यसमाज की सभा में खड़ा था। लगभग पौने सात बजे शाम, जब सभा जारी थी, कुछ मुसल्मानों ने सभा में ऊधम मचाना शुरू किया। मैंने मुसल्मानों को बहुत मना किया परन्तु वो नहीं रुके।" इसके कुछ ही क्षण बाद आर्यों की सभा का लैम्प टूट गया और अंधेरे में चारों ओर भगदड़ मच गई।

(४) कुछ समय बाद पोलिस ने स्थल पर पहुँच कर लोगों को खदेड़ा। उसी वक्त पता लगा कि एक अब्दुल रहीम नामक युवक-मुसल्मान रत पर लहूलुहान पड़ा है और प्राण निकलने क क़रीब हैं। थोड़ मिनटों बाद वह मर गया और उसे पोलिस ने डी० ९ स्टेशन पर भेज दिया। १५ २० व्यक्ति—हिन्दू मुसल्मान घायल हुए और वो हस्पताल पहुँचाये गए।

(५) चन्द मुसल्मान मिल कर रात को ८॥ बजे आर्यसमाज ट्रिप्लिकेन के एक सभासद् श्री कण्णन के घर पहुंचे और उसे खूब मारा पीटा तथा प्रयत्न किया कि वो अब्दुल रहीम की मृत्यु का उत्तर दायित्व अपने सिर पर लेले। जब उसने स्वीकार न किया तो उसे घसीट कर पोलीस स्टेशन पर ले गये और वहां गिरफ्तार करा दिया।

इसके पश्चात् ट्रिप्लिकेन समाज के मन्त्री तथा अन्य ८-१० प्रमुख समासदों के घरों की तलाशियां हुईं और उन्हें गिरफ़्तार भी किया गया। लिखने की आवश्यकता नहीं कि हमने शीघ्र ही उन सब के लिये ज़मानत का प्रयत्न कर उन्हें छुड़ा लिया। केवल श्री कण्णन को पोलीस कमिश्नर ने ज़मानत पर छोड़ने से इन्कार किया क्योंकि

उनके कथनानुसार श्री कन्नन के विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण मिल गये थे।

अस्तु, दस दिनों की रिमैण्ड के बाद अन्यों को तो प्रमाण न मिलने के कारण छोड़ दिया, परन्तु श्री कन्नन को फोर्थ प्रैज़िडैन्सी कोर्ट में धारा ३०४ के अनुसार परीक्षार्थ भेज दिया। उक्त कोर्ट में हमने तीन वकीलों को नियुक्त किया, परन्तु सफ़ाई की दलीलें हाईकोर्ट के लिये महफ़ूज़ रक्खीं।

(६) २१ नवम्बर को मुक़द्दमा "सैशन्स" में हाईकोर्ट पहुंचा। पोलीस ने न जाने क्या सोच कर धारा ३०४ को ३०२ मे तबदील कर दिया। अब श्री कन्नन के जीवन-मरण का प्रश्न था और उसके साथ आर्यसमाज की प्रतिष्ठा का। हमने स्थानीय सर्वोत्कृष्ट बैरिस्टर श्रीयुत नूजैयण्ट ग्राण्ट को इसके लिये नियुक्त किया। उसकी रियायती फ़ीस १०००) रु० (एक हज़ार) नियत हुई। जूरी निश्चित हुए। ५ अंग्रेज़ और ४ हिन्दू थे। जस्टिस पाण्डुरंग राउ जज थे। पोलीस की ओर से सरकारी वक़ील और अपनी तरफ़ से उपरोक्त बैरिस्टर। हमारे बैरिस्टर ने निहायत हुशियारी मे विरोधी साक्षियों को तोड़ डाला और अन्त में "आर्ग्यू" करते हुए जूरी को कायल कर दिया कि अभियुक्त सर्वथा निर्दोष है। जज भी जूरी मे सहमत हुआ और अभियुक्त निर्दोष करार देकर सोमवार ता० २६ को छोड़ दिया गया।

श्रीयुत कन्नन को प्रोसैशन में आर्यसमाज लाया गया और वहां सब सभासद उससे प्रेम पूर्वक मिले लघ्वाहार के बाद श्रीयुत कन्नन तथा उसके भाई को स्वास्थ्य लाभ के लिये मद्रास से बाहिर पोटर में भेज दिया।

(७) इस मुक़द्दमे में लगभग १५००) रु० कुल व्यय हुआ जिसका अधिक भाग स्थानीय सज्जनों द्वारा ही प्राप्त हुआ।

समाप्त करने मे पूर्व मैं श्री पूज्य नारायण स्वामी जी प्रधान सार्वदेशिक सभा का आर्य-समाज, मद्रास की ओर से हार्दिक धन्यवाद करता हूँ, जिन की सहायता तथा सहानुभूति से हमें इस मुकद्दमे में आशा व उत्साह पूर्वक कार्य करने की शक्ति मिली।

— के० शास्त्री

# पुलिस के विरुद्ध भीषण रहस्यों का भण्डाफोड़

## सीता रोड ( सिन्ध ) में गोली वर्षा और उसके पश्चात्

राहुजा केस गत १८ नवम्बर को राहुजा ग्राम से २ मील दूर सीता रोड पर सबडिवीज़नल मैजिस्ट्रेट की अदालत में शुरु हुआ। श्रीमूलचंद और आसन्दास सफ़ाई के वकील और मि० हाजीखां मुद्दई के वकील मौजूद थे। वह स्त्री जो मुख्य अभियुक्त थी सेठ खेमचन्द तथा अन्य दो आर्य्यसमाजियों के साथ सक्खर से आकर अदालत में उपस्थित हुई। यद्यपि कोर्ट में उपस्थित होने के लिए वह बाध्य नहीं थी। यह सुना जाता है कि मेहर का वकील मि० मंगतराम सक्खर गया था और सेठ खेमचन्द जी को कोर्ट में हाज़िर होने के लिये रज़ामन्द कर लिया था।

मुक़दमे के शुरु होने से पूर्व मि० मंगतराम वकील तथा एक दो अन्य ज़मीदारों की प्रेरणा पर सेठ खेमचन्द जी ने स्त्री को उसके सम्बन्धियों से भेंट करने के लिये प्रेरित कर दिया। सेठ खेमचन्द जी से उन लोगों ने यह भी वायदा करा लिया कि यदि वह स्त्री अपने रिश्तेदारों के साथ जाना चाहेगी तो उन्हें कोई आपत्ति न होगी।

### सम्बन्धियों से भेंट

मैजिस्ट्रेट के हुक्म से वह स्त्री अन्य स्त्रियों के साथ एक पृथक् कमरे में भेजदी गई। और उस कमरे में स्त्री का पति तथा बच्चे आदि भी चले गये। जब भेंट हो रही थी तो पुलिस उस कमरे की चौकसी कर रही थी। भेंट के लिए २० मिनट दी गई थीं परन्तु भेंट में आधा घन्टे से ज़्यादा वक्त ले लिया गया और इस बीच में स्त्री के रिश्तेदारों ने अपने पति के पास चले जाने के लिये उससे अनुनय-विनय की। भेंट के दौरान में बहुत से आदमी उस कमरे के चारों ओर घूम रहे थे और आधे घन्टे में यह संख्या लगभग ३०० तक हो गई थी। कुछ मौलवी भी कमरे के पास पहुँच गये थे और वे भी स्त्री को उपदेश दे रहे थे। इसके तत्काल बाद श्री हाजीखां ने अदालत से प्रार्थना की कि वह स्त्री से प्रश्न करे कि हिन्दुओं के सम्पर्क में आने से पूर्व स्त्री से पूछा जाय कि वह कहां जाना पसन्द करेगी। सरिश्तेदार के सुपुर्द स्त्री से यह प्रश्न करने और मि० हाजीखां का सन्तोष करने का काम किया गया। जब स्त्री से वकील हाजीखां की उपस्थिति में सवाल किया गया तो उसने उत्तर दिया कि मैं हिन्दुओं के पास जाऊँगी। इस के बाद कोर्ट के हहाते में बड़ी भीड़ जमा हो गई और अल्लाहो अकबर' के नारों से कोर्ट के काम में बाधा पड़ने लगी और मजिस्ट्रेट ने भीड़ को हटाने का हुक्म दे दिया। मौलवियों के उपदेशों के परिणाम स्वरूप मुस्लिम भीड़ का रुख धमकी पूर्ण हो गया और वह खुले तौर पर हिन्दुओं को धमकाने और उन्हें गाली देने लगी। लगभग

दो बजे मि० हाजीखां की इस प्रार्थना पर कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है, केस किसी दूसरी तारीख पर मुल्तवी कर दिया जाय। केस १४ नवम्बर के लिये मुल्तवी हो गया।

## अपहरण

शाम के पौने चार बजे के लगभग १६ सशस्त्र पुलिस के सिपाहियों के पहरे में स्त्री अदालत के अहाते से चली परन्तु वास्तविक अभियुक्त खेमचन्द और एक पुलिस इन्सपैक्टर भी साथ साथ चले। जब लोग स्टेशन को जाते समय रलवे लाइन को जिसके बिल्कुल निकट मैजिस्ट्रेट का कैम्प था पार करने लगे तो मुसलमानों की एक भीड़ ने जो बिल्कुल निहत्थी थी, पुलिस पर हमला कर दिया और स्त्री को छीनकर भाग गये। पुलिस इन्सपेक्टर ने गोली चलाने का हुकम दे दिया। इसके फलस्वरूप राहूजा के एक आदमी की जो स्त्री का निकट सम्बन्धी था और रेलवे में नौकर था मृत्यु हो गई। यह बताया जाता है कि ५० से ऊपर गोलियां खर्च हुईं और सिवाय १ आदमी के किसी के भी कोई भारी चोट नहीं आई। यह भी कहा जाता है कि पुलिस ने स्त्री को छुड़ाने का सच्चा प्रयत्न नहीं किया। स्त्री मुकाबला कर रही थी मदद के लिए चिल्ला रही थी और ज़बरदस्ती ले, जाई जा रही थी। मि० मूलचन्द पुलीस की उदासीनता देखकर पुलीस को भीड़ को पकड़ने के लिये चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था। सुनते हैं पुलिस पर इसका भी कोई प्रभाव न हुआ। यह विश्वास किया जाता है कि मि० मूलचन्द ने मजिस्ट्रेट से इस बात की बड़ी भारी शिकायत की है।

लोक-मत यह है कि वह स्त्री छीनी नहीं बल्कि पुलीस द्वारा सौंप दी गई है। पुलिस इन्सपेक्टर ने जो शाम के ५ बजे लौटा मजिस्ट्रेट को रिपोर्ट दी कि सबइन्सपेक्टर भीड़ का पीछा कर रहा है और सबइन्सपेक्टर रात के ८ बजे खाली हाथ लौट आया। डिस्ट्रिक्टसुपरिन्टेन्डेन्ट यह खबर पाते ही सीता रोड को रवाना हो गया।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को हैड कार्टर पर लौटना पड़ा है और उसने सबडिवीज़नल मैजिस्ट्रेट से फोन पर बात चीत की है।

यह भी सुना जाता है कि इन्सपेक्टर मुअत्तिल कर दिया गया है परन्तु अभी तक प्रमाणित सूचना प्राप्त नहीं हुई है। आस पास के गावों में आतङ्क छाया हुआ है और इस आशय के तार आ रहे हैं। कलक्टर और सुपरिन्टेन्डेन्ट स्थिति का मुकाबला करने का भरसक यत्न कर रहे हैं।

( सिन्ध औब्ज़र्वर २२-११-३४ )

नोट—यह देवी मुसलमान थी और आर्य्य-समाज ने इसे शुद्ध किया था।

# श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

## प्रधान सार्वदेशिक सभा का हैदराबाद के सम्बन्ध में प्रेस-वक्तव्य

"सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने निज़ाम की सरकार को जो आवेदन पत्र दिया था उसके उत्तर में निज़ाम की सरकार ने गत अगस्त मास में एक प्रेस-वक्तव्य के द्वारा घोषणा की थी कि "हैद्राबाद राज्य में किसी धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों के मार्ग में रुकावट डालने का प्रश्न नहीं है और निज़ाम की सरकार अपनी प्रजा के प्रति व्यवहार में, भले ही वे किसी धर्म व सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखते हों, निष्पक्ष रही है।" इस घोषणा के बाद ऐसी आशा करना स्वाभाविक था कि आर्य्यसमाज का धार्मिक कार्य्य बिना किसी रुकावट के करने दिया जायगा और निज़ाम की पुलिस आर्य्योपदेशकों के प्रति विषम व्यवहार नहीं करेगी, विशेषतः भाषण की स्वतन्त्रता और आर्य्यसमाज के मन्दिरों और अन्य धार्मिक स्थानों में सभाएं करने के अधिकार के सम्बन्ध में।

निज़ाम सरकार की इस घोषणा के तत्काल बाद आर्य्य नेताओं की एक मंडली इस घोषणा के तथ्य की जांच के लिए हैद्राबाद गई। मुझे यह देख कर सन्तोष हुआ था कि हैद्राबाद के अधिकारियों ने उन धार्मिक प्रवचनों पर जो उन्होंने वहां दिए थे कोई रुकावट नहीं डाली थी इससे क्रोध व असन्तोष के भाव जो निज़ाम की पुलिस की पहली ज़्यादतियों के कारण आर्य्य-सामाजिक क्षेत्रों में भड़के हुए थे वे एक बड़ी सीमा तक शान्त हो गए थे।

नेताओं की हैद्राबाद से वापसी पर उपर्युक्त आशय का एक वक्तव्य मैंने प्रेस को दिया था। परन्तु मुश्किल से कुछ ही हफ्ते व्यतीत हुए थे कि निज़ाम राज्यान्तर्गत चिटगोपा और महाराजगंज से निज़ाम की पुलिस द्वारा आर्य्यसमाज के जलसों पर पाबन्दियां लगाने के समाचार आने लगे। इसके फलस्वरूप इस थोड़े से अर्से में राज्य के आर्य्यसमाज के कतिपय कार्य्यकर्त्ताओं को पुलिस की अवैध आज्ञाओं का उल्लंघन करने के लिए एक से अधिक बार मजबूर होना पड़ा और सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा को पुलिस के इस अवांछनीय रुख की ओर जो घोषणा की भाषा और भाव के नितान्त विरुद्ध था निज़ाम सरकार का ध्यान आकर्षित करना पड़ा।

मुझे प्रसन्नता है कि हैद्राबाद राज्य के उच्च राज-कर्मचारियों ने बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का परिचय दिया है क्योंकि अभी हाल में जो हैद्राबाद से समाचार मिला है वह आशा जनक है।

अब वहां पुलिस के बिना किसी हस्तक्षेप के आर्य्य मन्दिरों में धार्मिक उपदेश हो रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि भविष्य में कोई ऐसी बात नहीं होगी जो निज़ाम सरकार और आर्य्य-समाज के सद्भाव को दूषित करने वाली सिद्ध हो सके।

# देशान्तर-प्रचार

## ट्रीनीडाड में वैदिक धर्म

### श्री पं० अयोध्या प्रसाद जी की चिट्ठी

अभी तक मेरे व्याख्यानों का प्रबन्ध अधिकतर ईसाईयों की ओर से ईसाईयों ही की सभाओं में होता रहा हैं। १, ४ व्याख्यान मुसलिम सभाओं में हुए। यहां के हिन्दुओ म एक नवयुवक दल यत्र-तत्र स्थापित है जो पौराणिक बाबाजी लोगों के पाखण्ड से तंग आकर उनमे अलग रह कर हिन्दू जाति का सुधार करना चाहत है। कट्टर सनातनी कहलाने वाले लोग इनके विरुद्ध हैं। इस नवयुवक दल ने मुझको अपनाया हे और मेर व्याख्यानों का प्रबन्ध भी बहुत स्थानों मे अपने हाथ में लिया है तथा एक दो स्थानो में तो इन्होंने खुल्लमखुल्ला इच्छा प्रकट की है कि अपनी सस्था का नाम आर्य्य समाज रख दिया जावे। आशा है कि बहुत शीघ्र कतिपय स्थानों में आर्य्य समाज की स्थापना हो जावेगी और चेष्टा करने पर हज़ारों की सख्या में ईसाई आर्य्य समाज में सम्मिलित हो जावेंगे।

जो नवयुवक पढ़ लिख गये हैं उन्हे सत्य नारायण की कथा तथा भागवत आदि की कथा मे रुचि नहीं होती। बस वे ईसाई बन जाते हैं। ईसाई मत का प्रचार इस उपनिवेश में डच गायना तथा बृटिश गायना की अपेक्षा बहुत ही अधिक है। उन उपनिवेशों में तो यत्र तत्र आर्य-समाज के प्रचार हो जाने से ईसाईयों की प्रगति मे रुकावट हो गई है परन्तु इस द्वीप मे आर्य्य समाज की अब तक कोई संस्था कहीं स्थपित नहीं है। हां कतिपय शिक्षित लोगों में आर्य्य-समाज की चर्चा है जिसके द्वारा यह लोग ईसाई होने से बच गय हैं। ईसाई हो जाना इस उपनिवेश मे एक साधारण बात है। जितने भी पढ़े लिखे तथा प्रतिष्ठित हिन्दू रहे उनमें अधिकांश ईसाई हो गये। यहां की Legislative Council में एक ही हिन्दुस्तानी सदस्य हैं जिनका नाम Honourable सरय तिलकसिंह है। वे भी ईसाई ही है और आश्चर्य्य तो यह है कि अपने स्थान की सनातन धर्म सभा के प्रधान भी हैं।

२६ सितम्बर की रात्रि को हिन्दू मुस्लिम स्कूल के सेक्रेटरी मिर्ज़ा सुहराबखां के उद्योग से स्कूल भवन में Transmigration of the soul ( पुनर्जन्म ) विषय पर व्याख्यान हुआ। यह मिर्ज़ा साहिब यहां के Young Muslims के नेता हैं। व्याख्यान का उद्देश्य यह रहा कि मुसलमान और ईसाई आकर इस बात का फ़ैसला कर लें कि वैदिक धर्म का आवागमन का सिद्धान्त Logical है या नहीं। सुनाये व्याख्यान के अन्त मे जो प्रश्नोत्तर हुये उसका यह परिणाम हुआ कि लोगों को निश्चय हो गया कि आवागमन का सिद्धान्त न केवल Religious dogma

( साम्प्रदायिक विश्वास ) है परन्तु तर्क तथा विज्ञान पर निर्भर है। मि० सुहरावर्दी ने मुझसे इच्छा प्रकट की कि अब वह वैदिक धर्म ग्रहण कर लेंगे। उन्होंने मांस भक्षण का सर्वथा परित्याग कर दिया है। आर्य्य समाज का मन्दिर बनाने के लिए एक महोदय ने ज़मीन देने का वचन दिया है तथा मि० सोहरावर्दी ने अपनी शक्ति के अनुसार मन्दिर बनाने के लिए धन देने का वचन दिया है। ईसाई मत के प्रचारक अधिकांश में वे लोग हैं जो स्वयं अथवा उनके माता पिता ईसाई हो गए थे। मेरे प्रश्नोत्तरों को सुन कर उनकी भी श्रद्धा ईसाई मत पर से दूर होती जा रही है। इस देश में जो हिन्दू अध्यापक होना चाहते हैं उन्हें प्रथम बपतिस्मा लेना पड़ता है। यदि कोई हिंदू किसी को नमस्ते करे तो कट्टर पन्थी उसे पीट देते हैं परन्तु जब कोई नीग्रो नमस्ते करता है तो उससे कोई चूं तक नहीं करता क्योंकि नीग्रो लोग शरीर में बलवान होते हैं। बहुत से नीग्रो ने नमस्ते करना सीख लिया है। मैं जहां कहीं व्याख्यान देता हूँ नीग्रो जाति के लोग बहुत संख्या में उपस्थित होते रहते हैं।

यदि इस द्वीप में जाकर आर्यसमाज का प्रचार किया जाय तो डेढ़ लाख हिन्दुस्तानियों में से अधिक आर्य समाज में सम्मिलित होजायेंगे तथा नीग्रो जाति के लोगों में से भी कई सहस्र आर्य समाजी बन जायेंगे। ईसाई भी सहस्रों की संख्या में लौट आवेंगे तथा मुसलमानों में से कुछ संख्या आर्य-समाजी बनेगी। यह द्वीप आर्य-समाज के लिये अत्यन्त ही उपयुक्त क्षेत्र है।

आपको यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि इस द्वीप में Mrs. Sheridan नामिका एक American महिला रहती है जिनके पति एक Estate के मालिक हैं। इन देवी जी की रुचि धार्मिक विषय में बहुत ही रहती है। इन देवी ने एक दिन मुझको अपने यहां निमंत्रित किया और कहने लगीं कि आप इस द्वीप में Vedic Church की स्थापना करें। मैं उसकी सदस्या बनूँगी तथा योग दान दूँगी परंतु मेरे लड़के लड़कियों को वैदिक धर्म विषयक शिक्षा प्रदान करने का भी प्रबन्ध कर जाइये। वह महिला न्यूयार्क की रहने वाली हैं और अच्छी विदुषी हैं।

---

## आवश्यक सूचना

विदेश प्रचार सम्बन्धी जो लेख, समाचार और सूचनाएँ इत्यादि हमारे पास सार्वदेशिक में प्रकाशनार्थ आते हैं उनमें से ऐसे भी होते हैं जो भाषा और भाव की दृष्टि से न केवल अस्पष्ट ही होते हैं वरन् जो उन बातों का Repetition दुहराव मात्र होते हैं जो सार्वदेशिक में स्थान पा चुकी होती हैं या जिन की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में हमें सन्देह होता है। इस लिए ऐसे मैटर को सार्वदेशिक में स्थान नहीं दिया जाता। श्री० पं० गिरजा दयालु जी का एक लेख 'दक्ष गायना' के प्रचार के सम्बन्ध में हमें मिला है। वतः इस लेख से जनता को अधिक लाभ पहुँचने की संभावना नहीं है इसलिये दु:ख है हम उसे प्रकाशित करने में असमर्थ हैं।

"सम्पादक सार्वदेशिक"

# शुद्धि-समस्या

श्री प्रिंसिपल देवीचन्द जी होशियारपुर निवासी ने अक्तूबर ३४ की शुद्धि-पत्रिका, में "क्या हिन्दू धर्म्म तबलीगी धर्म्म है" शीर्षक से एक खोज पूर्ण लेख लिखा है। लेख में शुद्धि के सम्बन्ध मे कतिपय ऐतिहासिक साक्षिया प्रकाश मे लाई गई हैं। उन्हीं में से हम कतिपय साक्षियों को उद्धृत करते हैं:—

शिवाजी महाराज के ज़माने में, उनकी माता जीजीबाई और उनके गुरु समर्थ रामदास जी की आज्ञा से मुसलमानों को हिन्दू बनाया जाता था। एक नियमानुसार शुद्धि-सभा स्थापित थी। जिसका प्रधान बापूराय था। पेशवाओं की डायरी में इसके सम्बन्ध में विस्तार से लिखा है। शिवाजी के ज़माने में निम्बालकर, पामर, गङ्गाधर, गुलगारिनी, तुलाजी, भट्ट, जोशी आदि मरहटा ब्राह्मणों को जो भूल से मुसलमान हो गये थे, नियम पूर्वक शुद्ध करके हिन्दू बनाया गया था। और शिवाजी ने शाही फ़र्मान (राजाज्ञा) निकाला था कि "जो शुद्ध शुदा हिन्दुओं से बद सलूकी करेगा उसको सरकार की ओर से दण्ड दिया जायगा।"

यहां तक कि शिवाजी ने क्रियात्मक उदाहरण स्थापित करने के लिये अपने कुटुम्ब की एक कन्या का—शुद्ध शुदा हिन्दू से विवाह भी कर दिया था जिससे इन लोगों के प्रति घृणा का भाव दूर हो जाय।

मुसलमानों के शासन काल में भी हिन्दुओं के अन्दर से तबलीग (शुद्धि) का माद्दा बिल्कुल नष्ट नहीं हो गया था। अगर मुसलमान बादशाहों के समय में तबलीग (शुद्धि) कम होती थी, तो इसका बड़ा कारण यह था कि मुसलमान बादशाहों ने यह हुक्म दिया था कि जो हिन्दू किसी मुसलमान को शुद्ध करेगा उसको मौत की सज़ा दी जायगी। ऐसे सख़्त क़ानून की मौजूदगी में तबलीग (शुद्धि) करना कोई आसान काम नहीं। मगर शाबाश हिन्दुओं की जवानमर्दी और शुजाअत (वीरता) पर जो कि ऐसे कड़े कानून को तोड़ कर भी मुसलमानों को हिन्दू बनाते रहे। देखो सफ़ा १८१ से १८५ तक किताब मौसूमा The caliples and their non-muslim subjects (Tuition कृत)

१—देहली के तख़्त पर अलाउद्दीन खिलजी के बाद मुबारिक शाह बैठे, मुबारिक शाह की गुजरात के एक हिन्दू नौजवान के साथ मोहब्बत थी। वह Mahtar महतर था जो कि भंगी कहलाते हैं। इस को मुसलमान बनाया गया था। और उसको खुशरूखां हसन का नाम दिया गया था। इसका बादशाह पर इतना प्रभाव बढ़ गया था कि आख़िर वह बादशाह को महल में क़त्ल करने में कामयाब हुआ। इसने फिर अपना नाम नसरुद्दीन ख़ुसरोशाह रक्खा इसके बाद जो कुछ हुआ वह बरनी के शब्दों में बयान किया जाता है।

"Preparations were made for Idol worship in the palace Idols were set up. It was khusro's-desire to increase the power and import-ance of tne Hindus rejoiced boast-ing tnat Delhi has come under Hindu rulc and Muslims had been driven away and dispersed ( बरनी तारीखफ़ीरोज़ शाह सफ़ा ४०४-४१२ ) ।

खुसरो हिन्दू बनने के बग़ैर मूर्ति स्थापित नहीं कर सकता था । अगर हिन्दू इसको न अपनाते तो वह किस तरह से फ़ख्र कर सकते थे, और कह सकते थे कि देहली हिन्दू हुकूमत के मातहत आगया है । उसकी तबदीली मज़हब के साथ उन हज़ारों हिन्दुओं की भी तबदीली मज़हब वाक़ै हुई थीं, जो कि मुसलमान बनाये गये थे । और जिन को गुजरात से बुलाकर उसने अपनी फौज में भर्ती किया था ।

१—ज़ान-उल-आब्दीन ने काशमीर में सन् १४२४ से सन् १४६० ई० तक हुकूमत की । उसने ब्राह्मणों को आज्ञा दी कि वह उन हिन्दुओं को जो ज़बरदस्ती साबिक़ बादशाह से मुसलमान बनाये गये थे, वापिस हिन्दू धर्म में ले लें । जिस का नतीजा यह हुआ कि काश्मीर में हज़ारों मुसलमान शुदा हिन्दुओं को वापिस हिन्दू धर्म में लिया गया । बाज़ मुसलमान इतिहास लेखक ज़ान-उल-आब्दीन की इस फ़राख दिली पर इतने हैरान हैं कि उन्होंने यहां तक लिखा है कि वह असल में हिन्दू था । और एक योगी ने अपनी रूह उस के अन्दर प्रवेश की हुई थी । देखो खुलासतुल तवारीख सफ़ा ३८८-३८९ ।

३—शाहजहां को अपनी हुकूमतके दसवें वर्ष में मालूम हुआ कि सरहिन्द के रहने वाले एक हिन्दू मुसम्मी दलपतराम ने कई एक मुसलमान औरतों को हिन्दू बना लिया है । और उनके हिन्दु-आना नाम रख दिये हैं । क़ाज़ी ने शिकायत की । शाहजहां ने दलपत राम को हुक्म दिया कि तुम इस्लाम कुबूल कर लो । मगर उसने इन्कार कर दिया । जिस पर वह क़त्ल किया गया । देखो बादशाहनामा ।

४—औरंगज़ेबके ज़माने की एक और मिसाल मिलती है । होशियारपुर का एक हिन्दू मुसल-मान हो गया था जो जालन्धर में देर तक रहता रहा । बाद में वह फिर हिन्दू बनाया गया । इस के विरुद्ध औरंगज़ेब के पास शिकायत हुई और वह क़ैदखाने में डाल दिया गया । इस पर होशियारपुर के हिन्दुओं ने हड़ताल की । देखो इन्शाये-हमीउद्दीन सफा ६१ ।

५—एक और उदाहरण इस क़िस्म का मौह-म्मद सईक़ की सुबह सादिक़ में मिलता है । शेरशाह के अहद हुकूमत में पूरनमल हाक़िम क़िला रामसेन ने कई मुसलमान औरतों को हिन्दू बना लिया था । जिस बिना पर शेरशाह ने पूरन-मल पर हमला किया ।

# दलितोद्धार

## दक्षिण अफ्रिका में अस्पृश्यता निवारण

### श्री० दीनबन्धु सी० एफ० एण्डरूज़ के विचार

जोहान्सवर्ग, दक्षिण अफ्रिका, की हाल की एक सभा में एक सज्जन ने मुझ से पूछा, कि भारत की 'अस्पृश्यता' का क्या अर्थ है। मैंने तुरन्त जवाब दिया, कि बिल्कुल वही चीज़ जो कि यहाँ दक्षिण अफ्रिका में है; दक्षिण अफ्रिका में जिसे 'रंगभेद' (कलर बार) या वंश भेद (रेस्यल सेग्रीगेशन) कहते हैं, उसी घृणित भावना को भारतवर्ष में 'अस्पृश्यता' के नाम से पुकारते हैं।

महात्मा गांधी जी जब अपने हिंदू धर्म पर लगे अस्पृश्यता के कलंक को मिटाने के लिये अनशन कर रहे थे, मेरे मन में ज़ोरों से यह विचार उठा, कि सचमुच उनके इस कार्य के साथ मैं तबतक वास्तविक सहानुभूति न दिखा सकूंगा, जबतक कि मैंने अपने ही ईसाई धर्म पर लगे 'रंग-भेद' के इस काले धब्बे को धो डालने का सच्चा प्रयत्न नहीं किया। इसलिये मैंने गांधी जी को जब इस विषय में लिखा, तो मुझे यह उत्तर मिला, कि—'निस्संदेह आप का विचार बिल्कुल सही है।" उन्होंने यह भी लिखा, कि मुझे सन्देह है कि रंग भेद मिटाने का प्रयत्न सम्भवतः हमारे अस्पृश्यता-निवारण के कार्य से कहीं अधिक मुश्किल है।

ईश्वर को धन्यवाद है, कि दक्षिण अफ्रिका से लौटने पर मैं इतना कह सकता हूँ, कि यहाँ भारत में अस्पृश्यता-निवारण का जो काम हुआ है उसके मुकाबले में कुछ अंशों में, वहाँ हमारा रंगभेद निवारण का प्रयत्न बहुत अच्छा रहा। नेटाल में, जिसे 'रंग-विद्वेष' का एक मज़बूत गढ़ कहना चाहिये वहाँ अभी हाल में ही ईसाई धर्म ने एक बड़ा अच्छा काम किया है। दो काउन्सिलें वहाँ बनादी गई हैं— एक का नाम तो 'इण्टर रेस्यल काउन्सिल' है और दूसरी का, इण्डो-यूरोपियन काउन्सिल।' यह तो आप लोग जानते ही हैं, कि वहाँ 'श्वेतांग श्रमिक' नीति (व्हाइट लेबर पालिसी) बरती जाती है— इस दुष्ट नीति के अनुसार हिन्दुस्तानी या अफ्रिकन किसी भी काले आदमी को लगे-लगाये काम से हटाकर उसके स्थान पर किसी बेकार गोरे को नियुक्त कर देते हैं! मरीट्ज़बर्ग की इण्डोयूरोपियन काउन्सिल को रंगभेद की इस निंदनीय नीति के खिलाफ आवाज़ उठानी पड़ी है। नेटाल के बिशप श्री लेनार्ड की अध्यक्षता में, उक्त काउन्सिल ने सर्व सम्मति से निम्न लिखित प्रस्ताव पास किया है:—

'चूँकि हमें विश्वास होगया है, कि इस देश

की सुख समृद्धि 'अविभाज्य रीति' से ही संभव है,

चूंकि हमारे हिन्दुस्तानी और अफ्रिकन नागरिक भाइयों की आर्थिक समृद्धि के होने से श्वेताङ्ग लोग भी सुखी और समृद्ध होंगे;

चूंकि यूरोपियन-इतर जातियों का सुख-संतोष एक ऊंचे-से-ऊंचा राजनीतिक लाभ है;

चूंकि अन्य जातियों की उन्नति और समृद्धि के प्रति इस द्वेषपूर्ण कुत्सित मनोवृत्ति की दक्षिण अफ्रीका की संस्कृति पर बड़ी घातक प्रतिक्रिया होगी;

चूंकि सार्वजनिक एवं घरू मामलों में—आर्थिक स्वार्थ-भावना से भी पर—'न्याय' की प्रधानता ही उत्तम नागरिकता और नैतिकता का मूलाधार है,

चूंकि सामाजिक, राजनीतिक और अन्तर्जातीय आदि सभी बातों में भ्रातृत्व के सिद्धान्त को अमल में लाने के लिए ही ईसाई धर्म का जन्म हुआ है;

और चूंकि आज हमें भविष्य के लिए इन दो सभ्यताओं—एक तो नैतिकता के सिद्धान्त पर स्थित, और दूसरी छल कपट के आवरण से ढकी और अत्याचार के बल पर खड़ी -में से तुरन्त किसी एक को चुन लेना है,

इसलिए मरीट्जबर्ग की हमारी यह इन्डो-यूरोपियन संयुक्त काउन्सिल तमाम ईसाई चर्चों से अनुरोध करती है कि वे अपने जातिगत प्रश्नों पर सामान्य हित और सामान्य नागरिकता की दृष्टि से ही विचार किया करें।

इस उद्देश्य सिद्धि के लिये काउन्सिल की राय है कि समय-समय पर ऐसी सभायें की जायें, जिनमें ईसाइयों के कर्त्तव्य-पालन से सम्बन्ध रखने वाले जातिगत मसलों पर विचार किया जाय।

काउन्सिल इस सिद्धान्त को निश्चित कर देना चाहती है कि जब किन्हीं नागरिकों—खास-कर यूरोपियन लोगों—की मांगों का असर राष्ट्र के दूसरे वर्गों पर पड़ता हो, तो उन वर्गों को अपनी राय ज़ाहिर करने का मौक़ा मिले, और ईमानदारी से उस पर यथेष्ट विचार किया जाय।

हम अपील करते हैं कि हमारी संयुक्त काउन्सिलों में, जो कि ईसाई धर्म की भ्रातृत्वपूर्ण सहयोग की भावना का विभिन्न जातियों के बीच प्रचार करना चाहती है, अधिक-से-अधिक नये सदस्य शरीक हों। इस काउन्सिल को आशा है कि हमारी ईसाई धर्म-समाजें अवश्य हमें ऐसे उदार सदस्य देंगी।

# साहित्य-समीक्षा

**ऋग्वेद का बंगला अनुवाद मण्डल १—**

अनुवादक श्री प० दीनबन्धु जी वेद शास्त्री मूल्य १।। लेखक म, आर्य्य समाज कलकत्ता के पते से प्राप्य ।

ऋषि दयानन्द की प्रचारित शैली के अनुसार यह अनुवाद बंगला में में प० दीनबन्धु जी वेद शास्त्री ने बड़े परिश्रम और योग्यता म किया है। बंगला भाषा में इसकी बड़ी कमी थी। प्रसन्नता की बात है कि शास्त्री जी के यत्न स इस कमी की पूर्ति का सूत्रपात हुआ है। यह आशा है कि अधिक म अधिक बंगला जानने वाले पुरुष भी इस ग्रंथ को खरीदेंगे—

**वैदिक धर्म प्रवेशिका—**

श्री विष्णु मित्र जी बी॰ ए० लिखित—मूल्य ।) लेखक म डी० ए० वी॰ हाई स्कूल नई, देहली के पत से प्राप्य

लेखक ने सरल और रुचिकर भाषामें वैदिक धर्म सम्बन्धी प्रारम्भिक आचार भाग को इस प्रवेशिका में अंकित किया है—इस में पञ्च यज्ञादि अनेक उपयोगी कृत्यों का विधान है—पुस्तक विद्यार्थियों के बड़े काम की है।

**बाल वेदामृत—**

लेखक श्रीयुत किशोरीलाल जी गुप्त एम० ए०, साहित्य वाचस्पति, मूल्य ।≈) गोविन्द ब्रदर्स एण्ड कम्पनी अचल रोड अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

बालकों के लिये उन्हीं को सम्बोधन करके, वेद मन्त्रों और अंगरेज़ी की, छोटी २ कहावतों के आधार पर, बोल चाल की सरल और बालोपयोगी भाषा में, लेखक ने इस ग्रंथ में अनेक उपयोगी शिक्षाओं का समावेश किया है। पुस्तक वास्तव में बालकों के बड़े काम की है।

**इसबातुलतनासुख —**

आवागमन की सिद्धि करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। श्री पं॰ लेखराम जी आर्य्यमुसाफ़िर ने अपने जीवनकाल में आवागमन विषय पर एक बड़ा ग्रन्थ रचा था। उनके जीवनकाल में तो किसी का साहस उत्तर देने का हुआ नहीं। उनकी मृत्यु के अनेक वर्षों के बाद एक सज्जन मौलाना मुहम्मद हार्रू ने उस ग्रंथ पर कुछ आक्षेप करके अपनी किताब का नाम 'इबतालुलतनासुख' (आवागमन का खंडन) रक्खा—यह आलोचनान्तर्गत पुस्तक उसी का जवाब है। पुस्तक बड़ी योग्यता से लिखी गई है और प्रत्येक आक्षेप का उत्तर बड़ी उत्तमता से अत्यन्त मधुर भाषा में दिया गया है।

पुस्तक उर्दू भाषा में है मूल्य ॥≈) है पुस्तक के लेखक म० लक्ष्मी नारायण समासद आर्य्य समाज अमरोहा हैं और उन्हींसे प्राप्त हो सकती है। पुस्तक बहुसंख्यामें प्रचारित होने के योग्य है।

(५) (क) The Inner man and Other lectures on Aryan Philosophy by P. Ganga prasad M. A Chief Judge Tehri ( Garhwal )

(ख) पंचकोश और सूक्ष्म जगत्

लेखक तथा अनुवादक श्री पं० गंगाप्रसाद एम० ए० प्रकाशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा यू०-पी० मूल्य अंगरेजी का ।≈) और हिन्दी के अजिल्द का ≈) है। अंगरेजी पुस्तक आर्य्य-समाज मद्रास तथा हिन्दी पं० शिवदयालु अधिष्ठाता ट्रैक्ट विभाग आर्य्य-प्रतिनिधि सभा यू० पी० मेरठ से प्राप्य।

दूसरी पुस्तक ( हिन्दी ) पहली ( अंगरेजी ) पुस्तक के आधार पर लिखी गई है और अन्त में कुछ परिवर्तन भी हुआ है।

दोनों पुस्तक सुपाठ्य हैं। जिन लोगों को वैदिक साहित्य की दृष्टि से अपने शारीरिक सत्ता पर विचार करने का कभी अवसर प्राप्त नहीं हुआ उनके लिये तो ये बड़े काम की चीज है परन्तु जिन लोगों ने विचार भी किया है उनके लिये पुस्तक अत्यन्त रुचिकर है। पुस्तक में पंचकोश, तीन शरीर प्रकृति के २४, सांख्य प्रदर्शित विकार उनका शरीरों और कोशों से क्या सम्बन्ध है। ये सब बातें पुस्तक में बड़ी उत्तमता और विद्वता से दिखाई हैं। तुलनार्थ थियोसोफी के मन्तव्यों के दे देने से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। पुस्तक अध्यात्मजगत् के प्रत्येक विद्यार्थी के पढ़ने और मनन करने के योग्य है।

नारायण स्वामी

!——

ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका—

( प्रकाशक—आर्य्य-साहित्य मण्डल अजमेर )

मूल्य ।≈)

ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका' का उपर्युक्त संस्करण हमारे सामने है। शुरू में श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस ग्रंथ रत्न का मूल्य ५) था। और वर्तमान में इस सस्ते संस्करण के प्रेस में आने से पूर्व इसका मूल्य १।) था। इस सस्ते संस्करण को निकालकर साहित्य-मंडल ने आर्य-समाज के प्रति अपनी महत्वपूर्ण सेवाओं मे वृद्धि की है और मंडल इस दिशा में अधिकाधिक प्रोत्साहन का अधिकारी है। उपयोगी और सात्विक साहित्य के सस्ते प्रचार की जो मांग उत्तरोत्तर आर्य्य-समाज में बढ़ रही है और जिस गति से उसकी पूर्ति की जा रही है उसे पुस्तक प्रकाशकों को उपेक्षा की दृष्टि से और विशेषतः 'वैदिक यन्त्रालय' को जहाँ तक ऋषि कृत ग्रंथों के प्रकाशन का सम्बन्ध है, कभी नहीं देखना चाहिए।

सत्य निर्णय—

लेखक—श्री० ला० ज्ञानचन्द्रजी आर्य्य।
प्रकाशक—श्री प्रधान सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली।
मूल्य ।)

सन् १६२४ में महात्मा गान्धी ने अपने प्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक 'यंग इण्डिया' के २६ मई के अङ्क में 'हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य' उसके मूलहेतु और उनकी चिकित्सा' के शीर्षक से लिखते हुए 'ऋषि दयानन्द और आर्य्यसमाज' के सम्बन्ध में अपनी सम्मति का प्रकाश किया था और ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज पर निम्न आक्षेप किए थे:—

(१) स्वामी दयानन्द ने संसार के सब से बड़े अधिक सहनशील और उदार हिन्दू धर्म्म को संकुचित बना डालने का यत्न किया है।

(२) उन्होंने सत्य का ही पक्षपात करने का दावा किया है परन्तु ऐसा करते हुए उनसे (दयानन्दजी से): जैनधर्म्म, इस्लाम, ईसाई और स्वयं हिन्दु धर्म्म के अर्थ का अनर्थ हो गया है।

(३) ऐसे महान सुधारक का लिखा हुआ निराशा-जनक ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) मैंने नहीं पढ़ा।

(४) यद्यपि वह स्वयं मूर्ति भंजक थे तौभी उनके प्रयत्न का फल सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में मूर्ति-पूजा की स्थापना हुई है क्योंकि उन्होंने वेद के एक २ अक्षर को ईश्वर स्वरूप बना दिया है।

(५) इस समय के विज्ञान के हर एक तथ्य को वेद से सिद्ध करने की चेष्टा की है।

(६) आज आर्य्यसमाज की जो प्रतिष्ठा है वह मेरी-अल्प बुद्धि में सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षा के कारण नहीं वरन् उसके प्रवर्त्तक के महान् उदात्तशीलता के कारण है।

(७) जहां २ आप आर्य्यसमाज को देखेंगे वहां २ जीवन और तत्परता दिखाई देगी। ऐसा होते हुए भी संकुचित दृष्टि और विवाद-प्रिय-स्वभाव होने के कारण अन्यान्य सम्प्रदाय के मनुष्यों के साथ और जब वह न मिलें तो आपस में झगड़ा करते हैं।

(८) मेरी राय में तो ईसाइयों की तरह दूसरे मज़हब वालों को भ्रष्ट करके अपने धर्म्म में मिला लेने की विधि हिन्दू धर्म्म में है ही नहीं। ऐसा मालूम होता है कि इस बात में आर्य्य-समाजियों ने ईसाइयों का अनुकरण किया होगा।

ये आक्षेप निस्सन्देह राजनैतिक लक्ष्य को सामने रख कर मुसल्मानों को खुश करने, आर्य्य-समाज को हिन्दुओं की सहानुभूति से वंचित रखने और इस प्रकार हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की स्थापना के आन्तरिक उद्देश्य से किए गए प्रतीत होते थे। ये आक्षेप न केवल आर्य्यों की दृष्टि में ही निर्मूल, अतिशयोक्ति और अन्याय पूर्ण थे वरन् गैर आर्य्यसमाजियों की दृष्टि में भी अनुचित और अत्याचार पूर्ण समझे गए थे। हिंदुओं के बड़े बड़े समझदार नेताओं, विद्वानों और पत्रों ने भी उन आक्षेपों के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी, परंतु चूँकि महात्मा गांधी

देश के एक उच्च कोटि के नेता हैं, सर्वसाधारण पर उनका जादू का प्रभाव है, सर्वसाधारण उनके अनन्य भक्त हैं, उनके शब्दों और विचारों का व्यापक और गहरा प्रभाव है इसलिए उन नेताओं और पत्रों के आक्षेपों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए वह व्यक्ति प्रसन्न तो हो सकता है परन्तु सन्तुष्ट नहीं हो सकता जो महात्माजी के सर्वसाधारण में प्रभाव से भली भाँति परिचित हो और जो यह अनुभव करता हो कि जब तक महात्मा जी की आलोचना पर गंभीर तथा विस्तृत उन्हीं की धारणाओं और लेखों के आधार पर तर्क और बुद्धि संगत विवेचन न किया जाय, सर्वसाधारण के सामने सत्य को रखने का यत्न न किया जाय, स्वयं महात्माजी को तथा सर्वसाधारण को उन भूलों के मानने के लिए अपने विवेचन से मजबूर न कर दिया जाय तब तक सर्व साधारण के हृदय में से भ्रम का दूर होना कठिन है।' ऐसे ही व्यक्तियों में से श्री ला० ज्ञानचन्द्र जी आर्य्य हैं! इन आलोचनाओं के विरुद्ध प्रेस में जो वक्तव्य आये उन से वे प्रसन्न तो हुए परंतु संतुष्ट न हुये और उन्होंने स्वयं उन आक्षेपों की विस्तृत जाँच का काम कर्त्तव्य की प्रेरणा पर अपने ऊपर लिया। बड़े परिश्रम से, बड़े व्यय पर मसाला इकट्ठा किया। महात्मा गांधी के भिन्न २ विचारों पर विचार करने के लिए 'यंग इण्डिया' आदि की फायलें जुटायीं और बड़ी सुंदर रीति से जाँच पड़ताल की। इसी जाँच पड़ताल के परिणाम स्वरूप प्रस्तुत ग्रंथ है। इस पुस्तक के लेखन प्रकाशन में श्री लालाजी ने जिस उत्साह और परिश्रम शीलता का परिचय दिया है, वह सराहनीय है और जिस उत्तमता से महात्मा जी द्वारा लगाए गए आक्षेपों का उन्हीं के वक्तव्यों और अपनी प्रबल युक्ति और प्रमाणों के आधार पर खण्डन किया गया है वह पढ़ते ही बनता है।

हम लाला जी की कठिनाइयों को अनुभव करते हैं। महात्मा जी के वक्तव्य प्रायः परस्पर विरोधी होते हैं साधारण पाठकों के लिए उनके किसी निश्चित मत पर पहुँचना टेढ़ी खीर है। बड़े २ दिमाग भी परेशान हो जाते हैं फिर उस लेखक की कठिनाइयों को न पूछिए जो महात्मा जी के मतों की जाँच पड़ताल के लिए लिखने बैठे, सत्य पर पहुँचने की कोशिश करे, खींचातानी के दोष से मुक्त रहना और समालोचना के उत्कृष्ट असूलों का निर्वाह करना चाहे। इस पुस्तक में स्थान २ पर महात्मा जी के विभिन्न वक्तव्यों के आधार पर महात्मा जी के वास्तविक आशय को ग्रहण करने और उसे प्रकाश में लाकर उन पर निर्दोष आलोचना की जो सफल चेष्टा की गई है वह प्रशंसनीय है कहीं पर भी खींचातानी से काम नहीं लिया गया और समालोचना के उत्कृष्ट असूलों का पालन किया गया है। हमें यकीन है कि लेखक के निकाले हुए परिणामों से न केवल महात्मा जी को सहमत होना पड़ेगा वरन् सर्व साधारण को भी—

हमने पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ा है। हम कह सकते हैं कि जिस उद्देश्य को सामने रख

कर यह पुस्तक लिखी गई है उस में लेखक बहुत सफल हुए हैं। हम चाहते हैं कि यह पुस्तक महात्मा जी पढ़ें और सर्व-साधारण में इसका ख़ूब प्रचार हो।

इस पुस्तक की कई विशेषताएँ हैं। उन में से कुछ इस प्रकार हैं:—

(१) जो कुछ लिखा गया है वह भली भांति सोच समझ कर, विषय में प्रविष्ट होकर, युक्ति और तर्क के आधार पर, प्रमाण दे दे कर लिखा गया है।

(२) अपने पक्ष के मंडन और महात्मा जी की भूलों के निर्देश में शिष्टाचार की भली भांति रक्षा कीगई है।

(३) पुस्तक तर्क पूर्ण है फिर भी उसकी भाषा शिष्ट और निर्दोष है।

(४) वैदिक सिद्धान्तों का भली भांति खोज-पूर्ण रीति से प्रतिपादन किया गया है। शुद्धि, महात्मा जी का हिन्दू-धर्म, मूर्तिपूजा आदि विषयों का विवेचन बड़ी खोज और विद्वत्ता के साथ किया गया है। और सब में लेखक की स्वाध्यायशीलता, ज़िन्दा दिली और उत्कृष्ट तर्क भली भांति प्रतिबिम्बित होते हैं।

महात्मा जी के एक आक्षेप पर विचार करते हुए लेखक महोदय ने महात्मा गांधी और स्वामी दयानंद के हवाले मे राजनैतिक लीडर और सुधारक पर तुलनात्मक विचार करते हुए एक भविष्य वाणी की है या दूर से देख पड़ने वाले सत्य की ओर महात्मा जी का ध्यान निम्न शब्दों में आकर्षित किया है:—

'जिस समय आप ( महात्मा गांधी जी ) धार्मिक क्षेत्र में आयेंगे और जब आपको मज़हबों के विचारों और आचारों को युक्ति की कसौटी पर परखना पड़ेगा तो उनकी भूलों और दोषों को स्पष्टतया बतला कर उन्हें दूर करने के लिए भी वैसा ही प्रयत्न करना पड़ेगा जैसा कि आप राजनैतिक क्षेत्र में गवर्नमेन्ट की भूलों व दोषों की जांच करते हुए उनके दूर करने की चेष्टा करते हैं। जिस समय आप ऐसा करेंगे उस समय मज़हबों के मानने वालों की दृष्टि में आपकी वर्तमान विशाल-हृदयता सहिष्णुता, और ऐक्य-प्रियता, युद्ध-प्रियता, या कलह-प्रियता, बन जायगी, जैसी कि आज आपकी दृष्टि में आर्य्य-समाज और उसके प्रवर्तक की बन रही है।"

क्या लेखक की यह भविष्य वाणी 'महात्मा जी के संगठित' हरिजनोद्धार आन्दोलन में आज-कल देवघर आदि की घटनाओं से सत्य प्रमाणित नहीं होती?

ऐसी ही बहुत सी सचाइयां पुस्तक में प्रगट की गई हैं जिनको आज महात्मा जी प्रकाश रूप में न सही अप्रकाश रूप में स्वीकार करते होंगे या भविष्य में स्वीकार करेंगे।

निस्सन्देह श्री लाला जी ने यह पुस्तक लिखकर जहाँ महात्मा गांधी जी के प्रति उपकार किया है वहां आर्य्य-समाज की बड़ी सेवा की है। और वे आर्य्य-जगत् के बधाई के पात्र हैं।

इस पुस्तक का उर्दू संस्करण भी पहले ही छप चुका है उसका मूल्य १।) है। श्री० लाला जी

की इच्छा है कि इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भी प्रकाशित हो। यह इच्छा बड़ी सामयिक है, देखें श्री० लालाजी की यह इच्छा हमारे सामने अमली रूप में कब आती है ?

इस पुस्तक से सम्बन्धित बड़े बड़े आर्य्य-नेताओं, विद्वानों, उपदेशकों और साहित्यकों, की सम्मतियाँ पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट के रूप में दी गई हैं।

## अखिल भारतीय श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट देहली की वार्षिक रिपोर्ट

( १—४—३३ से ३१—३—३४ तक )

"अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट देहली" का वार्षिक विवरण हमारे सामने है। प्रशंसित ट्रस्ट के निम्न ३ उद्देश्य हैं:—

(१) हिन्दू संगठन।

(२) शुद्धि।

(३) दलितोद्धार।

इन तीनों उद्देश्यों की, ट्रस्ट ने कार्य्य-विवरणान्तर्गत वर्ष में जो पूर्ति की है उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

### हिन्दू संगठन

यद्यपि ट्रस्ट ने हिन्दू संगठन की कोई रूप रेखा अभी तक निश्चित नहीं की हुई है तथापि हिन्दू महासभा के सहयोग पूर्वक इस वर्ष ट्रस्ट ने इस दिशा में कार्य्य किया। इस वर्ष अलवर स्टेट, बहावलपुर स्टेट, हांसी तथा अन्य स्थानों पर उपद्रव हुए, हिन्दुओं पर अन्याय और अत्याचार हुए। ट्रस्ट ने आवश्यक जाँच पड़ताल और रक्षा के कार्य्य में धन जन दोनों प्रकार से हिन्दू महासभा का हाथ बटाया।

हिन्दुओं की शारीरिक गठन के लिए ट्रस्ट के तत्वावधान में 'आर्य्य-भारतीय व्यायाम-शाला' स्थापित की गई और इसकी भिन्न २ शाखाएँ खोलीं गईं। इन शालाओं में लगभग १०० छात्र व्यायाम की शिक्षा प्राप्त करते रहे। इस व्यायाम-शाला का व्यय 'हिन्दू-सेवा संघ' की ओर से होता रहा और इसके प्रारम्भिक व्यय के लिए श्री० दानवीर, सेठ जुगल किशोर जी बिड़ला ने २००) प्रदान किए।

### हिन्दू सेवा संघ

देहली में हिन्दुओं की बेकारी की समस्या के हल के उद्देश्य से यह 'संघ' स्थापित किया गया है। बेकारी के इस भयङ्कर जमाने में इस प्रकार के संघों का जितना स्वागत किया जाय थोड़ा है। इस दृष्टि से ट्रस्ट का यह प्रयत्न श्लाघनीय है। इस संघ ने मुख्यतया हिन्दुओं को आर्थिक सहायता देकर उन्हें कारबार में डालने के उद्देश्य को सामने रखकर कार्य्य किया है और संघ की इच्छानुसार भिन्न २ पेशों यथा तांगों, कपड़ों की फेरी, फलों की फेरी, वार्निंग फैक्टरी, साबुन आदि के चलाने के लिए १०५७, इस वर्ष में उधार के रूप में बेकारों को दिया है। इस संघ की ओर से हिन्दू विधवाओं को वजीफे, वृद्ध-वृद्धा तथा निस्सहाय व्यक्तियों को सहायता दान रूप में १४४) के लगभग दी गई। संघ का

यह कार्य्य बहुत श्रेष्ठ और रचनात्मक है।

इस संघ का व्ययभार मुख्यतया श्री बिड़ला जी के ऊपर है और वे ३००) मासिक इसे सहायता देते रहे हैं। हम चाहते हैं कि ऐसे संघ बहु संख्या में देश में खुलें और उनके उद्देश्य और ज्यादा उदार रहें।

## जंगली जातियों में प्रचार

छोटा नागपुर में पहाड़ी और जंगली जातियों में प्रचार की व्यवस्था की गई और राम और कृष्ण का नाम लेने वाले बहु संख्यक भाइयों को ईसाइयों के चंगुल में जाने से बचाया गया।

इस प्रचार-कार्य्य को स्थिर और अधिक क्रियात्मक रूप देने के उद्देश्य से खूंटी नामक स्थान में 'श्रद्धानन्द-आश्रम' खोला गया है। इस आश्रम में मुंडा और उरांव जाति के बालक निवास करते हैं जिन्हें हिन्दू सभ्यता तथा हिंदू संस्कृति की शिक्षा दी जाती है।

बिहार के गत भूकम्प के समय तथा अन्यान्य बाढ़ आदि मुसीबतों के समय ट्रस्ट की ओर से पीड़ितों की सहायता का शानदार कार्य्य हुआ।

## शुद्धि

इस वर्ष ४८७ ईसाई तथा २२ मुसलमान अर्थात् ५०९ विधर्मियों की शुद्धि की गई।

## दलितोद्धार

चूंकि 'हरिजन-सेवक संघ' दलितोद्धार का कार्य्य कर रहा है इसलिए ट्रस्ट की प्रगतियां इस दिशा में विशेष रूप से नहीं प्रेरित की गयीं फिर भी देहली तथा देहली के आस पास के ग्रामों मे दलितों को सफाई, शराब न पीने तथा मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों के न खाने की शिक्षा दी जाती रही।

## आर्थिक अवस्था

इस वर्ष ट्रस्ट को ६८५०॥)। की आय तथा इस के मुक़ाबिले में ५१६१=)। व्यय हुआ।

श्रद्धानन्द ट्रस्ट के कार्य्य के उपर्युक्त विश्लेषण की विद्यमानता में हम कह सकते हैं कि यह कार्य्य आशाजनक और सुन्दर है। इस विश्लेषण से यह भी स्पष्ट है कि ट्रस्ट के अधिकारियों के समय और पुरुषार्थ के अधिक भाग का दैनिक कार्य्य ( Routine work ) पर दुरुपयोग न होकर ट्रस्ट के रचनात्मक कार्य्य पर सदुपयोग हुआ है इस के लिए ट्रस्ट के अधिकारी तथा विशेषतः मन्त्री महोदय श्री ला० नारायणदत्त जी तथा पं० धर्म्मवीर जी वेदालङ्कार विशेष बधाई के पात्र हैं।

# महिला-जगत

सम्पादिका श्रीमती विद्यावती जी विशारदा

भारतवर्ष में भिन्न २ समुदायों में महिलाओं की जो कानूनी स्थिति है क्रमश, उस पर 'सार्वदेशिक' के स्तम्भों में प्रकाश डाला जाय गा। आशा है हमारे पाठक उससे लाभ उठायेंगे। नीचे के लेख में पार्सी महिलाओं की स्थिति के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। —सं०

## भारतीय स्त्रियाँ और कानूनी सुधार

( ले०—श्री ऐस ऐस पटकर, भूतपूर्व जज बम्बई हाईकोर्ट )

भारतवर्ष के मुख्य समुदाय १ हिन्दू २ मुसलमान ३ बौद्ध, ४ जैन, ५ सिक्ख, ६ ईसाई, ७ पारसी, ८ जंगली और अन्य समुदायों का समूह है। संख्या की दृष्टि से हिंदू समुदाय सर्व प्रथम स्थान रखता है। भारत की समस्त जन संख्या में ६८ प्रतिशत हिंदू २२ प्रतिशत मुसलमान, ३ प्रतिशत बौद्ध १॥ फीसदी से कुछ अधिक ईसाई, १ प्रतिशत सिक्ख, जंगली जातियां २॥, जैन, पारसी और यहूदी और दूसरे अन्य संख्यक समुदाय शेष २ प्रतिशतक हैं। हिंदू, मुसलमान और बौद्ध समुदाय अपने खास कानूनों द्वारा शासित होते हैं। पारसी, और ईसाई उत्तराधिकार के सम्बन्ध में सन् १९२५ के भारतीय उत्तराधिकार एक्ट की धारा ३९ के द्वारा शासित होते हैं। परंतु पारसी लोग विवाह और तलाक के सम्बंध में सन् १८६५ के पार्सी विवाह और तलाक एक्ट की धारा १५ के अनुसार शासित होते हैं। और ईसाई लोग १८७२ के ईसाई विवाह के तथा १८६९ के तलाक कानून के द्वारा शासित होते हैं। जंगली और सीमा प्रान्तीय समुदाय अपने २ रीति रिवाजों के द्वारा शासित होते हैं विशेष अवस्थाओं में जैन और सिक्ख साधारण कानून के द्वारा शासित होते हैं।

### पार्सी कानून

विवाह और तलाक के सम्बन्ध में पार्सी और ईसाई कानून प्राय एक जैसे हैं। इन कानूनों के अनुसार बहु विवाह दण्डनीय है। स्त्री को अपने पति को तलाक देने का अधिकार है। पार्सी स्त्री विवाह के समय अथवा उसके बाद मुकद्दमा दायर करने की तिथि तक पति की विक्षिप्तता के आधार पर और पति के स्वाभाविक कारणों से विवाह का भोग करने की असम्भावना के आधार पर भी सम्बन्ध विच्छेद के लिये अदालत की शरण ले सकता है। वह पति के ७ वर्ष पर्यन्त गैर हाजिर रहने की दशा में भी विच्छेद का दावा कर सकता है। वह पति के दुराचारी होने व दूसरी शादी कर लेने या दो वर्ष या उससे अधिक समय तक अत्याचार वा परित्याग मिश्रित दुराचार के आधार पर भी विच्छेद की मांग कर सकती है। वह अत्याचार या शारीरिक दण्ड या पति के प्रकाश रूप में वेश्या को घर में ले आने पर भी कानूनी विच्छेद की प्रार्थना कर सकती है। विवाह सम्बन्धी झगड़ों के निर्णय के लिये पार्सियों की अपनी खास अदालतें होती हैं। उनके प्रतिनिधि सब पार्सी होते हैं। बहु विवाह पार्सियों में लुप्त प्राय है। स्त्री उत्तराधिकार के सम्बन्ध



मृत्यु शय्या पर लेटे हुए श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज।

चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, देहली।

# धर्मवीर श्री० स्वामी श्रद्धानन्द जी की

## पुण्य स्मृति में................ !

स्वनामधन्य श्री० स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की 'पुण्य स्मृति' में जो सामग्री यथा—सन्देश, संस्मरण और श्रद्धाञ्जलियाँ—हमें मुख्यतया अखिल-भारतीय-श्रद्धानन्द-ट्रस्ट देहलीके संयोजक मन्त्री श्री पं० धर्म्मवीरजी वेदालङ्कारके सौजन्यसे प्राप्त हुई है उसे हम सम्पादित रूपमें अपने प्रेमी पाठकों के सामने रखते हैं—स०

### श्री० म० नारायण स्वामी जी महाराज प्रधान सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन त्याग तपस्या और पुरुषार्थ का जीवन था। उन्होंने वकालत करते हुये जितना काम आर्य्य-समाज का किया कठिनता से सारा समय लगाकर कोई उतना काम कर सकता हो।

उनके जीवन का मुख्य कार्य्य गुरुकुल की स्थापना था इसके लिये उन्होंने अपनी आयु के अनेक बहुमूल्य वर्ष व्यय किये थे। उन्होंने गुरुकुल न केवल खोला ही किन्तु उसे सफल बनाकर दिखला दिया। उनके जीवन के अन्त के कार्य्य शुद्धि, संगठन और दलितोद्धार थे। उन्होंने इन कार्य्यों को सफलता पूर्वक चलाने का यत्न किया। उनका अछूतोद्धार कांग्रेसी ढंग का नहीं था किन्तु आर्य्य-समाज के ढंग का। एक अछूत का उद्धार होने पर वह खान-पान विवाह आदि सभी बातों का अधिकारी बन जाता था। अनेक आर्य्य-पुरुषों ने अछूत कन्याओं से विवाह किया है।

शुद्धि का काम वह था जिसके लिये उनका बलिदान हुआ। इनके इस प्रकार के बलिदान से उनके जीवन को चार चांद लग गये। स्वामी श्रद्धानन्द जब से ऋषि दयानन्द से दीक्षित हुये तब से मृत्यु पर्यन्त उनका जीवन आदर्श और अनुकरणीय जीवन था। उनके उज्ज्वल चरित्र से अनेक शिक्षाएँ उचित रीति से ली जा सकती हैं और लेने का यत्न करना चाहिये।

---

में। जब कोई पार्सी विधवा पत्नी और बच्चे छोड़ कर मरता है तब उसकी सम्पत्ति उस विधवा पत्नी और बच्चों में इस प्रकार बंट जाता है कि प्रत्येक बच्चे का हिस्सा विधवा के हिस्से से दूना और उस विधवा का हिस्सा प्रत्येक पुत्री के हिस्से से दूना होता है। इस प्रकार पार्सी स्त्री को अपने पुत्र के हिस्से से आधा और पुत्री को अपने पिता की Inestate सम्पत्ति में से अपने भाई के हिस्से से चौथाई भाग मिलता है। पार्सी बहिन को अपने दूसरे भाइयों के साथ २ अपने भाई की जायदाद में से हिस्सा मिलता है उस दशा में जब कि मृत भाई Inestate और निस्सन्तान मरता है भले ही वह अपने पीछे विधवा-पत्नी छोड़े। अन्तिम दशा में निस्सन्तान विधवा अपने पति की आधी जायदाद प्राप्त करती है। पार्सियों में सम्मिलित परिवार की प्रथा नहीं है। आमतौर से पार्सी लोग अपनी विधवा पत्नियों और पुत्रियों के लिए अपनी वसीयत के द्वारा व्यवस्था कर जाते हैं।

## "श्रद्धाञ्जलि"

[ ले०—श्री चन्द्रमणि पाठक शास्त्री ]

येषां जीवितमेव साहसयुतं, शान्तिप्रदं, नैतिकम्।
चरणौ यो धृतवान्मृगेन्द्रमूर्धनि निर्भीकतायां सदा॥
विघ्नानां शतकैर्निरुद्धमपि यः कार्यञ्च कृतवान् मुदा।
आसीच्छ्रद्धानन्दमहोदयः सुकर्मा भारतभुवो भूषणम् ॥१॥

भावार्थः—श्री पूज्य श्रद्धानन्दजी भारत भूमि के भूषण थे। उनका जीवन, तपस्वी, साहसी, शान्तियुक्त और नैतिक जीवन था। वे निर्भीक थे—निर्भीकता में उन्होंने मानों सिंह के मस्तक पर चरण रख दिये। अनेक विघ्नों के मार्ग में पड़ने पर भी वे घबराते न थे प्रत्युत शान्तिपूर्वक उस कार्य को करके ही छोड़ते थे॥१॥

क्रीडोपयोगि स्वशैशवं सुमृदुलं विद्यार्जने नीतवान्।
कौमारञ्च सदोपकृतावगमयत् सामाजिके यौवनम्॥
वार्धक्येऽपि जहौ न शुद्धिकार्यं धन्यं तदीयं बलम्।
आत्मानं विदितोऽपि तत्फलमहो! मृत्योर्मुखेऽपातयत् ॥२॥

भावार्थः—खेलने-कूदने के योग्य बचपन को उन्होंने पढ़ने में व्यतीत किया। कुमारावस्था को परोपकार में व्यतीत किया। "शुद्धि कार्य" के पुरस्कार को कदाचित् जानते-पूछते हुये भी, बुढ़ापे में भी उन्होंने "शुद्धि कार्य" को न छोड़ अपने को मृत्यु के मुख में डाल दिया।२॥

औदार्यादिगुणैर्विभूषितं, बलयुतं चासीत्तदीयं मनः।
मरणात्किञ्चित्पूर्वमेव हतकं तोयं हि योऽपाययत्॥
हा! औदार्यविभाकरोऽसमयं दुर्दिनइवास्तं गतः।
हृतरत्नमिव मेदिनीं हि मन्ये मरणेन तस्य ध्रुवम् ॥३॥

भावार्थः—उनका हृदय औदार्य्यादि दिव्य गुणों से विभूषित था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि मरने से कुछ ही क्षण पूर्व अपने घातक को जल पिलवाया। शोक! असमय में ही दुर्दिन की भांति वह उदारतादि गुणों का सूर्य्य सदा के लिये अस्त हो गया। निश्चय ही मानों पृथ्वी का कोई अमूल्य रत्न खोगया॥३॥

यद्यपि नाधुनास्ति वपुषा लोके महात्मा हि सः।
चरितं तस्य लिखन्ति स्वर्गभित्तौ देवाङ्गनाः करनखैः॥
किम्पुरुषा अपि तद्विहारभूमौ गायन्ति चोच्चस्वरैः।
श्रीच्छ्रद्धानन्दमहोदयस्य चरितं गायन्तु सर्वे जनाः ॥४॥

भावार्थः—यद्यपि वह महात्मा आज शरीर से इस विनश्वर संसार में नहीं है परन्तु देवाङ्गना (देवस्त्रियां) स्वर्ग की दीवार पर हाथ के नाखूनों से उसके सुन्दर चरित्र को लिखती हैं। और किन्नर भी अपनी विहार भूमिमें उच्च स्वर से उसका चरित्र गान करते हैं। उसी महानुभाव श्रद्धानन्दका चरित्र सब लोक सर्वदा गायें॥४॥

## श्री डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर

हमारे देश में जो लोग सत्य-ग्रहण करने के अधिकारी हैं, और जिनमें उस व्रत के प्राणपण से पालन करने की शक्ति है उनकी संख्या बहुत कम है। इसीलिये देश की यह दुर्गति है। जहां पर इस प्रकार का चित्त-दैन्य है, वहां स्वामी श्रद्धानन्द के सदृश वीर की मृत्यु कितनी शोकावह है, इसके वर्णन की कोई आवश्यकता नहीं। इसमें एक बात है। जिनकी मृत्यु जितनी ही अधिक शोचनीय हो, उसी परिमाण में उनका चरित्र और प्राण की महत्ता प्रकट होती है। इतिहास में यह दिखलाई पड़ता है कि जो पुरुष अपना सर्वस्व अर्पण करके कल्याण व्रत को ग्रहण करते हैं, उन्हीं के ललाट में अपमान और अपमृत्यु विजय का टीका लगा देती है। महापुरुष आते हैं प्राण को मृत्यु के ऊपर विजयी करने के लिये, हमारे सत्य को जीवन की सामग्री बनाने के लिये। खाद्य द्रव्य में प्राण संचार करने का जो उपकरण रहता है, वही वायु में भी और वैज्ञानिक परीक्षागार में भी विद्यमान है। किन्तु जब तक उद्भिद् और प्राणीवर्ग में वह प्राण संचार का उपकरण सजीवता का आकार धारण नहीं करता तब तक प्राणों की पुष्टि नहीं होती। सत्य के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। केवल बातों ही बातों में उस सत्य सम्बन्ध को जीवनगत कर लेने की शक्ति कितने आदमियों में है? सत्य को बहुत लोग जानते हैं, लेकिन उसे मानते हैं वे ही मनुष्य जो विशेष शक्तिमान हैं। प्राण देकर सत्य का पालन करने ही में हम उसे सार्वजनिक धरोहर के रूप में परिणत कर देते हैं। यह मानना ही बड़ी शक्ति का काम है। जो लोग इस शक्ति की सम्पदा को समाज के अर्पण करते हैं, उनका दान अमित है। सत्य के प्रति निष्ठा रखने का यह आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द इस दुर्बल देश को दे गये। अपनी साधना का परिचायक (संन्यास आश्रम का द्योतक) जो नाम उन्होंने ग्रहण किया था वही नाम (श्रद्धानन्द) उनके जीवन में सार्थक हो गया। सत्य में उनकी असीम श्रद्धा थी। इस श्रद्धा में सृष्टि-शक्ति है। उस शक्ति द्वारा अपनी साधना को उन्होंने रूप मूर्ति दी है और उसे वे सजीव कर गये हैं। इसलिये उनकी मृत्यु ने आलोक के समान प्रज्वलित होकर उनकी श्रद्धामयी, भयहीन, कांतिमान अमृत छवि को उज्वल करके प्रकाशित किया है।

## श्री विधुशेखरजी भट्टाचार्य, प्रिन्सिपल विश्व भारती शान्तिनिकेतन बोलपुर

एक बार और मुझे उन से (स्वामी श्रद्धानन्द जी से) भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। परन्तु इस बार गुरुकुल में नहीं परन्तु यहां 'शान्ति निकेतन' में। अब वह 'संन्यासी थे, और उनका नाम श्रद्धानन्द था। वे बंगाल प्रान्त में आए हुए थे और हम ने इस अवसर से लाभ उठाते हुए इस प्रार्थनाके साथ कि वे शान्तिनिकेतन में पधारने की कृपा करें उन्हें आमन्त्रित किया। उन्होंने तत्काल हमारा निमन्त्रण स्वीकार

कर लिया और यहाँ ( शान्ति निकेतन में ) पधारने की कृपा की। शान्ति निकेतन के सदस्यों ने अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ गुरुकुल विश्व विद्यालय के महान् संस्थापक का स्वागत किया। वे यहाँ कुछ दिनों तक रहे। 'कला भवन' में जो अब कौलेज के आश्रम के रूप में प्रयुक्त हो रहा है एक सभा की गई थी। और उन्होंने दयापूर्वक विस्तार के साथ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करते हुए बतलाया था कि उन्होंने क्यों और किस प्रकार गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी और किन २ कठिनाइयों पर विजय पानी पड़ी थी। उनके भाषणको यहाँ बहुत ही पसन्द किया गया था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी वह व्यक्ति थे जिन्हें उचित रीति से 'यथा वदी, तथा करी' कहा जा सकता है। अपनी मातृभूमि में व्याप्त हर प्रकार की त्रुटियों को दूर करनेके लिए वह एक निर्भीक योद्धा थे। वस्तुतः उन्होंने अपने पास जो कुछ था उसका त्याग करके अपना जीवन देश और समाज की सेवा में अर्पण कर दिया था। और उन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्तिके लिए अपने जीवन को भी अर्पण कर दिया था।

देश में 'रौलट एक्ट' के विरोध में देश व्यापी आन्दोलन जारी था। गांधीजी देहली आते समय गिरफ्तार कर लिए गये थे। देहली के ऐतिहासिक नगर में सनसनी फैली हुई थी, जब सरकारी सिपाही घण्टाघर के पास खड़ी हुई निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने वाले थे, वह श्रद्धानन्द ही था जिसने उन्हें बचा लिया था। वह शीघ्र बहादुरी के साथ भीड़ में से निकला और सीना खोलकर आगे खड़ा हो गया और सिपाहियों को ललकार कर कहा—'लो गोली मारो, मैं यहाँ खड़ा हूँ।' स्वामी जी ने जो वीरोचित साहस उस क्षण दिखलाया था उसके सामने वे सिपाही न खड़े रह सके और तत्काल उन की बन्दूकें नीचे को झुक गयीं। उनकी आवाज़ का ऐसा ही प्रभाव था। परन्तु शोक ! कुछ वर्षों के बाद स्वामीजी का वह चेलैंज स्वीकार किया गया। सम्राट की गुर्खा फ़ौज के द्वारा नहीं वरन् उनके अपने एक देशवासी के द्वारा जिसने उन्हें गोली मारकर मार दिया। क्यों ? इसलिये कि वह देश के बड़े से बड़े व्यक्तियों में से थे।

## श्री हरदयालजी नाग

स्वर्गीय लाला मुंशीराम जी जो श्रद्धानंद के नाम से प्रख्यात हैं आर्य्यसमाज के गुरुकुल विभाग के एक नेता थे। वे स्वयं हिंदुओं की एक बड़ी जाति में से थे और अछूतों को सवर्ण हिंदुओं के अत्याचार से मुक्त करनेमें कभी भी पीछे नहीं रहते थे। उन्होंने मनुष्य समाज की सेवा के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था। वे एक आदर्श आर्य्य थे और अपने मस्तिष्क से अंध परम्पराओं और अंध विश्वासों यथा 'अस्पृश्यता' तथा सामाजिक असमानताओं को बाहर फेंकने में बड़ी सीमा तक सफलीभूत हुए थे। कुछ समय तक वे कांग्रसी भी रहे थे परंतु अंत में उन्होंने अपने को हिंदुओंके सामाजिक तथा धार्मिक सुधार कार्य्य

में लगा दिया था। उन्हें वेदों का अच्छा ज्ञान था और वैदिक ज्ञान के वे प्रकाश स्तम्भ थे। अपने जीवनका अन्तिम भाग उन्होंने शुद्धि और दलितोद्धार में लगा दिया था। वैदिक धर्म में उनकी अटूट श्रद्धा थी, और वह वैदिक धर्म्म के एक निर्भीक उपदेष्टा थे। पौराणिक मूर्त्ति-पूजा द्वारा 'अस्पृश्यता' के जिस धर्म्म का हिंदू समाज में प्रवेश हुआ है वस्तुतः वह घृणा का धर्म्म है। इस प्रकार का धर्म्म वेदों की भावना के सर्वथा प्रतिकूल है और इसका उन्होंने अपनी पूरी शक्ति से खण्डन किया था। वेद विश्व व्यापी मानव-धर्म्म की आधार शिला है। वेदों की संसार-व्यापी गौरव गरिमा की रक्षा के लिए उन्होंने बहुत परिश्रम किया था। उनके धर्म्म ने उनसे उनके जीवन का मूल्य मांगा और वे एक शहीद की मृत्यु मरे! प्रत्येक हिन्दू को उनकी शहादत के महत्व को अनुभव करना चाहिये।

परमात्मा करे स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति चिरकाल पर्य्यन्त बनी रहे।

## श्री दीनबन्धु सी० एफ० ऐन्ड्रूज

इस जीवन में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें मैं उतना प्रेम करता हूँ जितना स्वामी श्रद्धानन्द जी को करता था। हमारी मैत्री की चमकती हुई धूप में कदाचित ही कोई बादल आया हो। उनके उच्च चरित्र की महत्ता ही थी जिसने मेरे प्रेम को सच्चा और गहरा बनाया था। यह जान कर मैं बहुत प्रसन्न होता था कि स्वामी जी भी मुझे प्रेम करते हैं।

इस 'बलिदान जयन्ती' के अवसर पर श्रद्धानंद ट्रस्ट के मन्त्रीजी की अपील मुझ तक महात्मा गांधी जी के साथ ठहरे हुए वर्धा के आश्रम में पहुँची है। मैं पिछले २० वर्ष के उस दिन की ओर आँख उठाकर देखता हूँ जब मैंने पहले-पहल महात्मा गांधी जी से गुरुकुल हरिद्वार के तपस्वी म० मुंशीराम जी के सम्बन्ध में बात-चीत की थी। दक्षिण अफ्रीका के प्रोटोनिया में जब हम दोनों आपस में बात कर रहे थे तो बात-चीत के दौरान में महात्मा गांधी गुरुकुल और महात्मा मुन्शीराम जी के प्रति मेरे उत्साह पर बीच-बीच में मुस्करा पड़ते थे महात्मा गांधी उस समय के इन्तज़ार में थे जब वे भी गुरुकुल को देखने की प्रसन्नता लाभ करेंगे। हम दोनों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि संभव हुआ तो हम दोनों ही एक साथ महात्मा मुन्शीराम जी से भेंट करेंगे।

इस जयन्ती के पुनीत अवसर पर जो संदेश मैं देना चाहता हूँ वह बहुत सीधा-सादा है और मुझे आशा है कि यह सन्देश प्रत्येक आर्य्य समाज के प्रत्येक सदस्य और उसके द्वारा शेष भारत तक पहुँचेगा। मैं यह भी चाहूँगा कि यह सन्देश समुद्र पार विशाल भारत तक पहुँचे जहाँ आर्य्यसमाज में मेरे बहुत से दोस्त हैं जो श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं और जो मुझे इस लिए प्रेम करते हैं कि मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी को जानता और उन्हें प्रेम करता था।

मेरा सन्देश यह है कि स्वामी श्रद्धानन्द एक अत्यन्त प्यारा हृदय रखते थे। जब कभी ग़रीबों, दुखियों और दलितों के नाम में उस हृदय को अपील की जाती थी तो वह अपील उनके लिये अजेय हुआ

करती थी। इसलिये जब जब बलिदान जयन्ती आये तब तब उसके समस्त सच्चे प्रेमियों का ध्यान ग़रीबों की ओर—जिन्हें वह प्यार करता था—जाना चाहिए और उन्हें भी परमात्मा के बच्चे समझना चाहिए।

## भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू

मेरी स्मृति और मेरे अनुराग में स्वामी श्रद्धानन्द वर्तमान सन्तति की एक ऐतिहासिक मूर्ति के रूप में विराजमान हैं। मैं सदैव अनुभव करती हूं कि स्वामी श्रद्धानन्द भारत के वीर-काल की एक दिव्य विभूति थी। अपनी भव्य मूर्ति और ऊँचे व्यक्तित्व के द्वारा वह अपने साथियों के ऊपर ही एक बड़े देव की नाईं रहा करते थे। यद्यपि एक समय वह एक बड़े शिक्षा-केन्द्र (गुरुकुल कांगड़ी) के मुख्याधिष्ठाता थे परन्तु उन्होंने कभी किसी बड़े विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। विपरीत इसके वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों तक—जिनका शहीद की मृत्यु में अन्त हुआ—साहस और कर्मण्यता की अनुपम मूर्ति रहे और भारतीय जीवन के धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में राष्ट्र सुधार के कार्य्यों में इनका बहुत सुन्दर परिचय देते रहे। मानव-समाज की सेवा के उनके उच्च भाव का मैं बहुत आदर किया करती थी।

## श्री बा० श्रीप्रकाश जी बार-एट-ला बनारस

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर मैं उन्हें सादर सप्रेम स्मरण करता हूँ। उनके प्रत्येक कार्य में साहस भरा रहता था। दूसरों के विचारों की या अंधपरम्परा की उन्हें कोई चिंता न थी। जो ठीक समझते थे, करते थे। उसके लिए अपना सर्वस्व दे देते थे। वर्तमान भारत के वे विशेष पुरुषों में हैं। हम सब उनके योग्य हो सकें, यही आज हमारी आशा और अभिलाषा है।

## श्री डा० सत्यपालजी लाहौर

मुझे श्री स्वामी जी के चरणों में बैठने और धर्म्म का पाठ पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होचुका है वह स्वयं जीवन में जो सत्य, शिव और सुन्दर है उसकी प्रतिमा थे। आर्य्यसमाज के लिए वे जिए और उसी के लिए उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। अपने धर्म्म और अपने देश की विजय के लिए वे निर्भयतापूर्वक आगे बढ़ते थे। वे प्रेम के स्रोत थे तो भी वे कुछ सख्त थे, और वे किसी व्यक्ति से घृणा नहीं करते थे फिर भी समझौता-प्रिय नहीं थे। उनकी समस्त प्रतिष्ठा उनकी क़ुर्बानियों की वजह से जो दिन प्रतिदिन देश और समाज के लिए वे करते रहते थे—है और रहेगी। मैं स्वयं उन्हें बड़ी भक्ति और श्रद्धा के साथ याद करता हूँ। उनके हृदय और मस्तिष्क की विशेषताओं का आदर करनेके लिए उनकी सब ही स्कीमों और प्रोग्रामों मे सहमत होना ज़रूरी नहीं है। श्री स्वामी जी के चरित्र की विशुद्धता को जिसने स्वामीजी को साधारण व्यक्ति की अपेक्षा मीलों ऊपर पहुँचा दिया था हम सब को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

# स्वामी श्रद्धानन्द

( ले०—श्री पं० प्रियरत्न जी आर्ष )

नायक भी था, सैनिक भी था, स्वामी हमारा वीर था।
युद्ध के मैदान में रहता सदा जो धीर था॥

ऋषिवर की सेवा में रहा, उपदेश को धारण किया।
घर बार धन तन वार सब, आदेश के कारण दिया॥
जङ्गल में आ मङ्गल बना, मुनिवेश को धारण किया।
गुरुकुल बना रहबर हुआ, जीवन का जो राहगीर था॥१॥

नायक भी था······ ।

झगड़ा उठा, हलचल मचा, आगे बढ़ा संसार में।
दिन रैन भी था रत रहा, जो धर्म के विस्तार में॥
जब फंसी नय्या, हमारे धर्म की मझधार में।
की पार उसने, वीर था, नाविक बड़ा गम्भीर था॥२॥

नायक भी था······ ।

उलझन में देखा देश को, कूदा विकट मैदान में।
आज़ाद होना है हमें, भारत की सच्ची शान में॥
मैशीन गन के सामने सीना किया एक आन में
था दुलारा, देश प्यारा, वह बड़ा रणधीर था॥३॥

नायक भी था ····· ।

हिन्दु जाति पर बढ़ा, जब ह्रास का संकट पड़ा।
मिट गई विपदा सभी, जब वीर नर आगे बढ़ा॥
मिल गये शुद्धि से बिछुड़े, कट गया बन्धन कड़ा।
हिन्दुओं का प्राण था, दिल-दाद था दिलगीर था॥४॥

नायक भी था······ ।

मत के मस्ताने ने मारा, न विचारा कुछ ज़रा।
रोग शय्या पर पड़े भी जिसका स्वागत है करा॥
मतवाला था, बेहोश था, जो दिल में आया कर धरा।
दीनों का प्रिय प्राण था, वह अमीर था जो फ़क़ीर था॥५॥

नायक भी था ····· ।

### श्री गंगानंद सिन्हा भूतपूर्व मेम्बर लैजिस्लेटिव असेम्बली

श्री स्वामी जी महाराज काम करने वाले व्यक्ति थे निठल्ले नहीं थे । वे हजारों युद्धों में परखे हुए वीर नायक थे। हिन्दू धर्म्म के सैनिक थे। वीरता के साथ अपने मिशन के लिए जिए और वीरता के साथ ही मरे । उनमें द्वेष नहीं था, भय नहीं था, अविश्वास नहीं था । कठिनाइयां उन्हें भयभीत और पथ-भ्रष्ट नहीं कर सकती थीं । असफलताओं से वे निराश नहीं होते थे, विजय उन्हें हर्ष नहीं प्रदान करती थीं। उनके बहुत कम मित्र थे फिर भी कोई शत्रु नहीं था। उन्होंने अपने हत्यारे का भी विश्वास किया और मरकर भी उन ऊँचे आदर्शों की रक्षा की जिनके लिए आर्य्यसमाज स्थित है।

मैं उनके चरणों में भक्ति भाव से श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं।

परमात्मा करे उनका उदाहरण हमें जीवन प्रदान करे।

### श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन प्रयाग

स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी के लिये मेरे हृदय में जो भावनाएँ हैं उनके सम्बन्धमें मैं आज जल्दी में कोई लेख नहीं लिख सकता मेरे पास काम बहुत हैं।

स्वामी श्रद्धानन्दजी वीर थे, समाज सुधारक, लोक-सेवक और विशेषकर अछूतों के मित्र थे। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी स्वाभाविक निर्भीकता से काम किया। किन्तु मुझे उनका सबसे बड़ा काम गुरुकुल जान पड़ता है। शिक्षा के क्षेत्र में इसने उस समय के अंग्रेज़ीदां लोगों के सामने अपनी भाषा का महत्व रख एक नया आदर्श दिखलाया। शिक्षा के सम्बन्ध में अभी देश भर उस आदर्श से दूर है जिसने स्वामी जी के हृदय को प्रज्वलित किया था किन्तु आदर्श, घिरे हुये बादलों के हट जाने से दिखाई देने लगा और उस तक का मार्ग भी स्पष्ट होगया यह बड़ी बात है।

### श्री प० नेकीराम जी शर्म्मा

पूरे आठ वर्ष हो चुके। प्रति वर्ष २३ दिसम्बर को हम वीरगति-प्राप्त श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य तिथि मनाते आरहे हैं। उस दिन—और हो सका तो—पुण्य तिथि के दो चार दिन आगे पीछे भी हम स्वामी जी के गुणों को बखानते रहते हैं। जलसे और जुलूसों का अच्छा आयोजन कर लेते हैं। जहां तक दर्शनीय जोश का सम्बन्ध है, उसके प्रदर्शन में कोई कोरकसर नहीं रह पाती। ऐसे प्रदर्शनों से बहुत सम्भव है कि आर्येतर बिरादरी हमारे उत्साह की प्रशंसा करती हो, परन्तु हम स्वामी जी की बरसी वास्तव में अब तक नहीं मना सके और कोरे प्रदर्शन से हम अपनी दुर्बलता को छुपाने का प्रयत्न करते रहते हैं। सच तो यह है कि लोकाचार के अनुरोध से हम प्रति वर्ष एक ढोंग रचते रहते हैं । विजयादशमी (दशहरा) के दिन जिस तरह कागज के रावण को जलाकर हम बड़े अभिमान से पुरातन एवं तथ्यपूर्ण इतिहास की स्मृति में यह कहने लगते हैं कि देखा! भारत की

लक्ष्मी को चुरा ले जाने वाले विदेशी रावण को कैसे मार गिराया । हम बड़े ज़ोर से विजयी राजा रामचन्द्रजी की जय बोलते रहते हैं, परंतु इस पर कभी ध्यान नहीं देते कि राम की जीती लक्ष्मी अब कहां है ? तब एक दिन ले जायी गई थी और अब प्रति दिन जा रही है। आंखों पर पट्टी, कानों में डाट और दिल पर ग़ुलामी का पत्थर है। देखने, सुनने और अनुभव करने का ध्यान ही नहीं । रामलीला के प्रदर्शन में हमें किसी और की लीला या तो दिखाई नहीं देती और यदि दिखाई देती है तो हम नकल के इतने उपासक बन चुके हैं कि असल को समझने की योग्यता ही खो बैठे ।

हां तो कहना तो यह है कि हम वस्तुतः स्वामी जी की बरसी नहीं मना पाते । कायरों को वीरों के स्मरण का अधिकार भी क्या है ? स्वामी जी का सारा जीवन ही वीर जीवन था । जिस ओर वह क़दम उठाते थे, बढ़ते चले जाते थे। हज़ारों विघ्न बाधाओं को कुचल कर उद्देश्य सिद्धि के लिए आगे ही बढ़ना उनका सहज स्वभाव था । सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक कोई भी क्षेत्र, कैसा ही दुर्गम क्यों न हो, स्वामी जी की कर्तव्यनिष्ठा उसे सुगम बना लेती थी। हानि, लाभ यश, अपयश और सुख दुःख की कार्य्य करने की धुन में स्वामी जी को कभी परवाह नहीं थी । 'मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्" स्वामी जी इस सूक्ति के नमूने थे ।

ऐसे वीर स्वामी जी की बरसी तो तभी सही तौर पर मनाई जा सकती है, जबकि हम उनके बताये हुए किसी भी मार्ग पर उनकी तरह वीरता से चल सकें । ओह ! स्वामी जी कितने, लोक-हितकर मार्गों के सफल पथिक थे । और हम जो चौराहे पर खड़े या पड़े हुये ही समय बिता रहे हैं, टस से मस नहीं होते । हर २३ दिसम्बर को चिल्लाकर कह देते हैं कि बोलो स्वामी श्रद्धानन्द की जय ! अच्छा भाई । खूब बोलो, किंतु यह समझ लो कि इस जयनाद से ही हमारा क्या हित होगा । स्वामी जी की तो जय हो चुकी, पर बिना कुछ किये घर पराजित भारत और पीड़ित हिन्दू जाति की जय कैसे होगी, यह समझ मे नहीं आया ।

### श्री ला० दुनीचन्द जी बार-ऐट-ला

मैं स्वामी श्रद्धानन्द जी को उस समय से जानता हूँ जब वे जालन्धर में वकालत करते थे। मैं कह सकता हूँ कि वे एक सच्चे और ईमानदार वकील समझे जाते थे। आर्य्य समाज के रूप मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में मेरे आर्य्यसमाजी भाई ही मुझ से ज्यादा जानते होंगे क्योंकि मै आर्य्यसमाज का सदस्य नहीं हूँ। मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि वे जिस काम को लेते थे उसे सफलता तक पहुँचा दिया करते थे ।

### श्री० ऐस योगानरसिंमिहा

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में जितने प्रसिद्ध थे उतने ही शिक्षा के क्षेत्रमें भी प्रसिद्ध थे । संन्यास लेने से पूर्व वैदिक मेगज़ीनके सम्पादनमें उन्होंने अपनी प्रतिभा का खूब प्रकाश किया था । वैदिक

धर्म्म के प्रति उनके अगाध प्रेम ने उन्हें विस्तृत जीवन की विस्तृत प्रगतियों में पहुँचा दिया था। उनके जीवन ने हमें शिक्षा दी कि परमात्मा की सेवा मनुष्य समाज की सेवा ही है।

परमात्मा करे कि वे हम सब के लिये एक प्रकाश-पुञ्ज सिद्ध हों और हम सब उन तक पहुँचने का यत्न करें।

## अनुग्रह नारायणसिंह जी मेम्बर, लेजिस्लेटिव असेम्बली (पटना)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति-रक्षा के लिए आप जो स्तुत्य प्रयत्न कर रहे हैं, उसके लिए सभी हिन्दुस्तानियों के धन्यवाद के पात्र हैं। स्वामी जी इस युग की एक विभूति थे। उन्होंने दलितों के उद्धार और राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार और परिवर्धन के लिए जो कुछ किया उसके सब ही कायल हैं। जिस महान व्यक्ति ने अपने अध्यवसाय, लगन और परिश्रम से गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का पुनरुद्धार करके उसे बीज से वृक्ष का रूप दे दिया, उस की स्मृति-रक्षा के लिए हम आज जो कुछ करें वह थोड़ा है।

गैर सरकारी संस्था द्वारा जिस प्रकार की उन्नत राष्ट्रीय शिक्षा देने का प्रबन्ध स्वामीजी ने किया वह सभी राष्ट्रीयता-प्रेमी भारतवासियों के लिए अनुकरणीय है। भारत के राष्ट्रीय युद्ध और राष्ट्रीय निर्माण में गुरुकुल और उस के स्नातकों ने जो योग दिया है, वह स्वामीजी की दूरदेशी और प्रेरणा का फल है। मेरा विश्वास है कि स्वामी जी की स्मृति बराबर हम में शिक्षा-प्रेम और निर्भीकता का संचार करती रहेगी। ऐसे महापुरुष की स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करने का जो अवसर आपने मुझे दिया है उसके लिए मैं आपका अत्यन्त उपकृत हूँ।

## श्री० बा० राजेन्द्र प्रसाद जी प्रधान इंडियन नैशनल कांग्रेस (पटना)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन शुरू से ही त्याग का जीवन रहा था। उनका स्थापित किया हुआ गुरुकुल कांगड़ी उनकी सब से बड़ी यादगार है। गुरुकुल वह सर्व्व-प्रथम संस्था है जो पूर्णतया सार्वजनिक सहायता पर निर्भर है और जो देश की सुप्रसिद्ध, सफल और राष्ट्रीय संस्थाओं में से एक है। श्री० स्वामी जी महाराज का हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के प्रति प्रेम गहरा और स्थिर था। आर्य्य-समाज के एक अग्रणी होने की हैसियत में वे न केवल 'अस्पृश्यता आन्दोलन' के एक प्रबल समर्थक ही थे वरन् उन्होंने हमारे पीड़ित, और दलित भाइयों के उद्धार के लिए कार्य्य भी किया था। वे एक वीर समाज-सुधारक और शुद्धि के एक प्रसिद्ध समर्थक थे और शायद शुद्धि की बलि वेदि पर ही उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। उनका जीवन और उनकी मृत्यु हमारे देश के नवयुवकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ है, और आगे रहना चाहिए।

## श्री० ऐस० सत्यमूर्ति एम० एल० ए० (मद्रास)

श्री० स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने देश और समाज के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया

था। वे सच्चे कर्मयोगी थे। वे संन्यासी थे, जो अपने व्यक्तित्व से ऊपर उठे हुए थे, परन्तु जिन्होंने अपने समाज की महत्ता और देश की स्वतन्त्रता के लिए काम किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक महान हिन्दू और एक सच्चे भारतीय के संमिश्रण थे। ऐसे व्यक्ति सदैव ही भारत में जन्म नहीं लेते। उनका जीवन जैसा शानदार था उनकी मृत्यु भी वैसी शानदार थी। परमात्मा करे उनका उज्ज्वल उदाहरण देश और धर्म्म की सेवा में और संसार को इस बात का सबूत देने मे कि वैदिक-धर्म स्वतन्त्र नर नारियों का धर्म है हमें प्रोत्साहन प्रदान करता रहे।

### श्री० जी० के० देवधर एम० ए० सी० आई० ई० प्रधान सर्वेंटस् आफ इन्डिया सोसाइटी (पूना)

श्री० श्रद्धानन्द जी मेरे मित्रों में से थे। सन् १९०४ में गुरुकुल कांगड़ी में जब वह अपने बाल्यकाल मे था, मुझे उनके पास ठहरने का अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ था। इसलिये स्वामी जी के–जिन्होंने देश सेवा में अपना जीवन लगा दिया था–काम और उनके जीवन के संबंध मे कुछ लिखना मेरा कर्त्तव्य है। परन्तु संक्षेप मे स्वामी जी के साथ अपने घनिष्ठ सम्पर्क के आधार पर मै कह सकता हूँ कि उनका जीवन, आदर्श जीवन था और धार्मिक और सामाजिक सुधार के लिए उनका उत्साह वस्तुतः भारत के उच्च और देश-भक्त पुत्र के अनुरूप ही था।

मैं 'श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती' के उत्सव के लिए सफलता की कामना करता हूं।

### श्री० मोहनलाल सक्सेना ऐडवोकेट एम० एल० ए०

स्वामी जी के हृदय और मस्तिष्क की विविध विशेषताएँ और उनकी जीवन-प्रगतियाँ हमारे हृदयों में इतनी ताज़ी हैं जिनके दुहराने की आवश्यकता नहीं। हम में से प्रत्येक जो उनके सम्पर्क में आया था उनके निस्वार्थ प्रेम, उज्ज्वल सरलता, दूरदर्शिता मिश्नरी साहस और सब से ज्यादा निर्भीकता और परिश्रमशीलता से प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सकता। उन्होंने भारत के सामाजिक, शिक्षा-सम्बन्धी, धार्मिक और राजनैतिक, अभ्युत्थान के लिए काम किया था। उनका दृष्टिकोण निश्चितरूप से क्रान्तिकारी था। वह बहुत से समाज सुधारोंके मार्ग-प्रदर्शक थे। उनका उच्च जीवन सेवा और त्याग का समूचा रिकार्ड रहा है और भारत के प्रत्येक सच्चे पुत्र और पुत्री को उस पर अभिमान करना चाहिए और आनेवाली सन्तति उन्हें श्रद्धा और कृतज्ञता के साथ स्मरण करेगी।

### श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आचार्य्य दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर

स्वामी श्रद्धानन्द जी में अनेक गुण थे। यह उन पुरुषों को भली भांति ज्ञात है जिन्होंने कुछ समय तक भी उनकी संगति की है अथवा उन का जीवन चरित्र पढ़ा है। प्रिय धर्मवीर जी ने इस समय कुछ लिखने की आज्ञा की है उसी प्रेरणा से मैं यह लिखने लगा हूँ।

स्वर्गीय महात्मा में जो गुण हैं उन में से

मुझे सबसे अधिक प्रिय गुण यह लगा है कि वह जिस बात को ठीक समझते थे उसे करने में वह ननु-नच नहीं करते थे। जिसे उन्होंने धर्म समझा उस का पालन उन्होंने अपने जीवन में किया।

वह आर्य संस्कृति को सब से श्रेष्ठ समझते थे उनकी कन्या 'वेद कुमारी' पाठशाला में पढ़ती थी वह पाठशाला ईसाइयों द्वारा संचालित थी। एक दिन उस कन्या ने अपने पूज्य पिता को एक भजन सुनाया वह भजन यह था:—

ईसा मेरा राम रमैया
ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया

यह सुन कर उन्होंने अपने चित्तमें चिन्तन किया कि मैं आर्य संस्कृति के लिए यत्न करता हूँ और मेरी संतान यह भजन गारही है क्या यह ठीक है? उसी समय यह निश्चय किया कि आर्य-कन्या पाठ-शाला खोलनी चाहिए। अपने संगियों से सम्मति करके पाठशाला खोली। वह पाठशाला आज 'कन्या महाविद्यालय जालन्धर' के रूप में आर्य जगत् के सम्मुख है।

पश्चात्, वेद के जानने वाले उपदेशक हों और वेद-भाष्य किए जायें यह विचार आया। सभा मे गुरुकुल स्थापना की स्वीकृति हुई और निश्चय हुआ ३० सहस्र जमा होने पर खोला जाय, उस स्वर्गीय महात्मा ने प्रण किया कि जब तक ३० सहस्र धन न जमा होगा मैं घर पर नहीं लौटूँगा। पाठकों को आश्चर्य होगा कि ३० सहस्र की भीषण प्रतिज्ञा क्यों करनी पड़ी? उनको उस समय विचार करना चाहिए था। आज गुरुकुल का व्यय प्रति वर्ष लक्ष से ऊपर होता है और वह भी दान से ही मिलता है। उस समय यह बात थी कि उस समय ३० हजार धन जमा करना भी उसी महात्मा की शक्ति थी।

वैदिक-धर्मी होने से वह जन्म से वर्ण नहीं मानते थे इसलिए उन्होंने अपनी कन्याका विवाह जिस देवी का नाम चन्द्रकला था अपनी जाति में न करके दूसरी में किया उस समय आर्य-समाजी भी उनके विरोध में थे परन्तु उन्होंने किसी का कुछ ध्यान न किया और अपने कर्त्तव्य को अपनी इच्छानुसार किया।

उनके जीवन में आरम्भ में भी एक जाति-प्रवेश की समस्या आई। द्वाबामें रामदासिय नाम के लोग वास करते हैं, वह ज़िला अम्बाला, लुधियाना,जालन्धर होश्यारपुर में प्रायः अधिक हैं, यह विचार की दृष्टि से सिख थे उन्होंने सिख नेताओंसे मिलकर प्रार्थना की कि हमारे साथ जो पंक्ति भेद है इसे मिटाया जाय। वह केवल रोटी सम्बन्ध चाहते थे बेटी सम्बन्ध की चर्चा ही न थी। उस समय के सिखों में भाई तेजासिंह सुधारक समझे जाते थे। कई मीटिंगों के पश्चात् उन्होंने रमदासियों को कहा:—

'आप चांद मांगते हैं' हम आपको वह नहीं दे सकते। तब रमदासीये निराश हो कर जालं-धर समाज में आए वहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी उस समय के लाला मुन्शीराम जी थे। इन्होंनें यह बात समाजमें रक्खी वहाँ इस बात पर तो सब सहमत थे कि यह कार्य धर्मानुकूल है परंतु कुछ आर्य यह कहते थे अभी समय नहीं आया

है' उसका उत्तर कर्मवीर ने यह दिया था समय अपने आप नहीं आता है समय लाया जाता है। तब उन रमदासियों को उनकी सभा मे पहले लाहौर में सम्मिलित किया गया उसके पश्चात् आर्यसमाज ने प्रायः प्रत्येक को जो कि पंजाब में अछूत समझे जाते थे सम्मिलित किया है यदि उनके नाम लिखने हों तो मैं यह नाम लिखूंगा रमदासिए; ओड़ महतम कबीर पंथी, मेघ, बरवाल, डोम चमार, चूहड़े, धानक बौरीए, हेड़ी, कालकबलीये आदि सब को आर्यसमाज ने रोटी बेटी के अधिकार दिये हैं।

इस समय महात्मा गांधी जी अछूतोद्धार में लगे हुए हैं और कांग्रेस ने भी इस प्रोग्राम को अपनाया है परन्तु जिस समय स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने यह प्रोग्राम रक्खा था कि कांग्रेस को अछूतोद्धार का काम अपने हाथ में लेना चाहिये उस समय कांग्रेस ने इसे नहीं माना था यह घटना नागपुर कांग्रेस के समय की है उसमे पहले मौलाना मुहम्मद अली जी कोकनद् में प्रधान के आसन से भाषण करते हुए हिंदुओं को सम्मति दे चुके थे की आधे अछूत मुसलमानों को दे दो और आधे आप रखलो। राष्ट्रीय संस्था के न मानने पर भी स्वर्गीय महात्मा ने अपना कार्य बन्द नहीं किया उन्होंने देहली में आकर दलितोद्धार सभा बनाई और दलितों का प्रवेश आर्यों में उसके द्वारा हुआ। पहले-पहल सहभोज देहली में ही किए गये जिनमें उच्च वर्ण वालों ने भी सब के साथ मिलकर भोजन किया था, अब तो यह बात आम होगई है।

उनके बड़े कामों में एक काम शुद्धि का भी है यह शुद्धि प्रथम बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में आरम्भ की गई थी उस समय स्वर्गीय पण्डित भोजदत्त जी शुद्धि के शहसवारों में थे। उस समय यह कुछ कार्य करके अपना बीज छोड़ गई थी अब जब कि आगरा में राजपूत सभा ने प्रस्ताव स्वीकार किया इस पर मुसलमान बिगड़ गए और उन्होंने अपने प्रचारक भेजे इस बात को स्वर्गीय संन्यासी सहन न कर सके कि इस प्रकार आर्य विधर्मी बनाए जायं। जब कि पंजाब आर्य-प्रतिनिधि सभा सोच ही रही थी कि क्या किया जाय उस समय उस वीर ने कार्यारंभ कर दिया और स्वयं आगरे में जाकर शुद्धि का शंख बजा दिया इसमें सबसे प्रथम उन्होंने केहरीसिंह आदि सज्जनों को रायर में जातिप्रवेश कराया। शुद्धि के इस चक्र में लाखों मलकाणा राजपूत शुद्ध राजपूत बन गए। इसी शुद्धि आंदोलन से मुसलमान चिढ़ गये थे उन्होंने स्वामी जी को डराने के लिये पत्र भेजने आरम्भ किये। मैं अजमेर जाते समय देहली में स्वामी जी के पास ही ठहरा था उस समय उन्होंने इस बात का भी जिक्र किया था, साथ ही यह भी कहा था यदि इस वृद्धावस्था में किसी को शहादत मिल जाय तो यह सौदा सस्ता ही है किंतु मुझे उस समय यह ध्यान भी नहीं आया कि वृद्ध महात्मा की यह भविष्यवाणी सत्य होने वाली है। अंत में ६ पौष का दिन था जब कि एक मुसलमान जब कि वह रोगी थे और शय्या पर पड़े हुए थे धर्माभिलाषा की इच्छा प्रगट करके आता है अब्दुल रशीद

आता है और पानी पीने को मांगता है, जल दिया जाता है, वह पीता है, भृत्य बाहर निकलता है, वह पिस्तौल म गोली वृद्ध रोगी पर चलाता है उसी समय यह महात्मा शहीद होते है।

इस समय आर्य उस महात्मा की पुण्य स्मृति मे यह कार्य कर रहे है जिसके लिये धर्मवीर ने मुझ से लेख मांगा है। लेख समाप्त करने म पूर्व में आर्यो से नम्र और सानुरोध प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वर्गीय महात्मा की स्मृति मे इस बात का ध्यान रक्खे कि उन्होंने जो शुद्धि और दलितोद्धार का कार्यारंभ किया वह अभी तक अधूरा है उसे पूर्ण करने का यत्न होना चाहिये। भारतवर्ष मे अछूत नाम का कोई प्राणी न हो यह उनकी धारणा थी इसके लिये इस समय और भी काम करने हैं परन्तु शुद्धि का काम केवल आर्य्य समाजियों के कंधे पर है जब तक दूसरे भाई इसे न अपनालें उस समय तक इसको उत्तमता म चलाने का प्रबन्ध करना चाहिये।

## कवि-विनोद, वैद्यभूषण पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा 'अमृत धारा' ( लाहोर )

मंत्री महाशय ने "श्रद्धानन्द" अङ्क के लिये उनके मिशन के सम्बन्ध मे एक लेख भेजने को लिखा है, यदि एक ही शब्द में श्री स्वामी जी के जीवन का मिशन कहना हो तो मैं कहूँगा—

### परोपकार

वह श्री० स्वामी दयानन्द जी के भक्त थे और उनसे मिलकर एक बात जो जीवन में उन्होंने धारण की थी, वह थी संसार का उपकार करना अर्थात् सब की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना।

इस मिशन के प्रति उन्होंने अपना मन तन, धन सर्वस्व लगाया। मन की यह दशा कि जब से आर्य्य-प्रतिनिधि-सभा पंजाब के प्रधान हुए, उनको सिवाय जनता की सेवा के कुछ सूझता न था वकालत मे मन न जमता था, उसको छोड़ दिया तथा सब काम काज म मुंह मोड़ लिया और रात दिन उसी धुन में लग गए जब मन और कुछ चिन्तन ही नहीं करता, तब तन तो अनुगामी हो होगा। वकालत छोड़ने के दिन म मृत्यु समय तक उन्होंने अपने तन म देशोन्नति के कार्य्यों के अतिरिक्त कोई कार्य्य नहीं किया। कभी ३० हजार रु० इकट्ठा करने को निकले है, कभी गुरुकुल की स्थापना कर रहे है, कभी गुरुकुल में सैंकड़ों बालकों की रखवाली कर रहे है, कभी धन के लिये देशाटन हो रहा है कभी कांग्रेस का काम है, कभी शुद्धि का काम है, कभी हिन्दू सभा का कार्य्य है, जब देखो, कार्य्य में लगे ही पाओगे।

प्रातः चार बजे उठ कर वह नित्य कर्म से प्रायः सूर्योदय से प्रथम निवृत्त हो जाते और फिर सारा दिन कमरबद्ध होकर अपने कर्त्तव्य के पालन करने मे डट जाते थे। आराम किस बला का नाम है वह जानते ही नहीं थे। रोग के अतिरिक्त उनको बिस्तर पर लिटाने वाला और कोई न था।

धन भी सर्वस्व ही अर्पण कर दिया, लड़के

बड़े_हो ते ही सब सम्पत्ति आर्य्य-समाज के अर्पण कर दी और साथ ही उनके हस्ताक्षर करा दिए, कि पीछे कोई झगड़ा ही न रहे। यों कहना चाहिए कि स्वामी श्रद्धानन्द ने तन, मन, धन, सब कुछ वार दिया। उनके जीवन का मिशन था ही 'परोपकार।'

### श्री० पं० धर्म्मवीर जी वेदालङ्कार

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के अनेकों चित्र मेरी आंखों के सामने नाच रहे हैं। वह मुंशीराम जो भोग-विलास का जीवन ही अपना कर्त्तव्य समझता था। जो अमीरी में मस्त मांस और मदिरा के सेवन में अपनी शारीरिक तथा मानसिक सन्तुष्टि समझता था। जिसे अपने पत्नीव्रत को निभाना भी अत्यन्त दुष्कर प्रतीत होता था। जो नास्तिक था—जो पश्चिम की ओर जा रहा था - वह अकस्मात् महात्मा मुंशीराम बन गया। कितना चमत्कारिक परिवर्तन! भोगी मुंशीराम व्रती और संन्यासी बन गया। कितना अलौकिक परिवर्तन। पश्चिमी सभ्यता की तरफ़ जाता हुआ मुंशीराम अकस्मात् पूर्वीय सभ्यता की तरफ चल दिया। नास्तिक मुंशीराम दृढ़ आस्तिक बन गया। निस्संदेह यह अलौकिक घटना का परिणाम था। वास्तव में बात यह थी कि मुंशीराम के विषयों में अन्धकार पूर्ण हृदय को आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द की चमकती किरणों ने आलोकित कर दिया था। ऐसी घटनाएँ महात्माओं के जीवन में प्रायः घटित होती हैं।

× × ×

महात्मा मुंशीराम ने एक दिन स्वप्न लिया था जो महान् था—अक्रियात्मक था परन्तु था आदर्शवाद पूर्ण। वह स्वप्न था गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार—आर्य्य-संस्कृति का प्रचार। लोगों ने इसे पागल कहा—दीवाना कहा परन्तु वह धुन का धनी था। घर से चल दिया। घर-घर और द्वार-द्वार पर भिक्षा मांगने लगा और वक्त आया जब कि उसने घने जंगल में जहां शेर और चीतों का राज्य था—गुरुकुल की स्थापना की जो आज जगत् के प्रसिद्ध विश्व विद्यालयों में एक है। वह स्वप्न जो कोरे आदर्शवाद से पूर्ण था—क्रियात्मक सिद्ध हुआ। वह मुंशीराम जो पागल था—अद्भुत दिमाग का पुतला निकला।

× × ×

वह संन्यासी बना और संन्यासी बनते ही मनुष्य मात्र की सेवा का व्रत लेकर हिन्दुस्तान के कोने २ में घूमने लगा। उसने अछूतों पर अमानुषिक अत्याचार होते देखा। उसने अपनी प्यारी आर्य्य (हिन्दू) जाति में लाखों आदमियों को प्रति वर्ष बिछुड़ते हुए देखा। उसे स्पष्ट रूप में आर्य्य-संस्कृति का लोप दिखाई दिया। उसे आर्य्य-संस्कृति पर अनार्य संस्कृति की विजय असह्य हो गई। उन्होंने देहली में बैठकर व्रत किया कि अनार्य शिकंजे में फंसते हुए इन बिछुड़े हुए भाइयों को वापिस लाना है—मज़हबी ढोंग में संतप्त करोड़ों अछूत कहलाने वाले भाइयों को गले लगाना है—उसने शुद्धि और संगठन का बिगुल बजा दिया। सारे हिन्दुस्तान में उसकी आवाज़

गूंज उठी। उसकी इस गूंजती हुई आवाज़ को कट्टर सनातन धर्मियों के बहरे कानों ने भी सुना। उस आवाज़ का असर हुआ और भारी असर हुआ। निस्सन्देह सारे हिन्दुस्तान में एक अद्‌भुत क्रान्ति हो गई। बिछुड़े हुए भाई आर्य्य-संस्कृति में दीक्षित होने लगे। अछूत तथा दलित भाई हिन्दू-जाति का अंग बनने लगे। इसकी चीखती हुई गूंज को कांग्रेस और हिन्दू महासभा—आर्य्य-समाज और सनातन-धर्म-सभा ने सुना और उसे क्रियात्मक बनाया।

× × ×

शुद्धि और संगठन का नेता होते हुए भी स्वामी जी का हृदय संकुचित और अनुदार न था—विशाल और उदार था। उनके हृदय में किसी जाति के प्रति घृणा का भाव न था अपितु वे उस जाति की बुराइयों के दुश्मन थे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी जी के जीवन पर लिखते हुए 'यंग इंडिया' में लिखा था कि यदि मैं इन्हें कुछ भी जानता हूँ तो कह सकता हूं कि प्राण छोड़ते समय स्वामी जी के मन में अपने हत्यारे के विषय में यही विचार आया होगा कि परमात्मा उस नादान को क्षमा करें'। निस्सन्देह वह महान् और उदार था।

× × ×

स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय वीर था—हिन्दु-जाति का कर्णधार, समाज-सुधारक, लोक-सेवक दलितों का मित्र तथा शिक्षाविशारद था। वह स्त्री जाति के बन्धनों का मोचक तथा राजनैतिक क्षेत्र में स्वाभाविक निर्भीक था। देहली में रौलट एक्ट के जमाने में उस वीर संन्यासी ने घंटाघर में संगीन-धारी सिपाहियों को दहाड़ती हुई आवाज़ में कहा था 'गोली चलाओ मैं खड़ा हूं' कितना साहस! कितनी निर्भीकता! वह हर क्षेत्र में महान् था—नेता था। उनके महान् जीवन से आज 'श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती' के पुण्य अवसर पर साहस, स्फूर्ति और जीवन-शक्ति मिल सकती है।

# ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थो के प्रचारार्थ बहु सख्या मे ये ग्रन्थ एकत्र किये गये हैं और निश्चय किया गया है कि पुस्तक विक्रेताओ को कमीशन भी कुछ अधिक दिया जावे। छोटे बडे सभी ग्रथ अच्छे कागज पर बडे आकार मे हैं। उनका मूल्य सहित विवरण इस प्रकार है। इनके मगाने के लिये शीघ्र आर्डर भेजने चाहिये —

| | असली मू० | घटाहुआ मू० |
|---|---|---|
| (१) आर्याभिविनय | ।=) | ।) |
| (२) काशी शास्त्रार्थ | =) | )॥ |
| (३) सत्यधर्म विचार | =)॥ | =) |
| (४) पञ्च महायज्ञ विधि | =)॥ | =) |
| (५) आर्योद्देश्य रत्न माला | )॥ | )॥ |
| (६) संस्कार विधि बढिया कागज | ॥) | ।=) |
| (७) ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका बढिया कागज उम्दा छपाई बडा आकार | १॥) | १।) |
| (८) व्यवहार भानु | =)॥ | =) |
| (९) वेद विरुद्ध मत खण्डनम् | =)॥ | =) |
| (१०) शिक्षापत्री स्वा० नारायण मतखण्डन | =) | =) |
| (११) भ्रमोच्छेदन | =) | )॥ |
| (१२) भ्रान्ति निवारणम् | =) | =) |
| (१३) गो करुणानिधि | =) | =)॥ |
| (१४) स्वीकार पत्रम् | )॥ | )॥ |
| (१५) महर्षि का संक्षिप्त जीवन चरित्र मय रगीन चित्रो के | ।) | =) |
| (१६) दयानन्द ग्रन्थमाला दो जिल्दों में | ५) | ४॥) |

## सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकें

### ( १ ) संस्कृत सत्यार्थ प्रकाश—

यह महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी सत्यार्थप्रकाश का सस्कृतानुवाद है। अनुवादक गुरुकुल वृन्दावन मथुरा) के संस्कृत विभाग के मुख्याध्यापक श्री पण्डित शङ्करदेव पाठक हैं। अनुवाद की भाषा मधुर एवं सरल है। महर्षि का आशय ज्यो का त्यो प्रगट किया गया है। मूल्य २।) सजिल्द २॥)

घटा हुआ मूल्य ,, २)

### ( २ ) प्राणायाम विधि—

यह पुस्तक जिसमे प्राणायाम सम्बन्धी कठिन से कठिन विधियो को सुगम बनाया गया है श्री पूज्यपाद १०८ श्री नारायण स्वामी जी महाराज द्वारा लिखी गई है। प्राणायाम के प्रेमियों की एक बडी खोज तथा आवश्यकता इसके द्वारा पूरी हो सकती है। मूल्य केवल =), घटा हुआ मूल्य )॥

### ( ३ ) दयानन्द लहरी—

इसमे भगवान दयानन्द का स्तवन शिखरणी आदि सुन्दर छन्दो मे किया गया है। प्रत्येक छन्द के साथ भाषानुवाद भी दिया गया है। पुस्तक के लेखक श्री प० मेधावृत जी कविरत्न हैं। मूल्य =)॥, घटा हुआ मूल्य =)

( ४ ) आर्य पर्व पद्धति—

आर्य्य जगत मे एक से ही त्यौहार मनाने तथा त्यौहारों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करा देने के लिये इस पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक का प्रत्येक आर्य-परिवार मे रखना आवश्यक है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।=)

( ५ ) आर्यसमाज क्या है:—

यह पुस्तक पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. प्रयाग, द्वारा लिखी गई है। इस पुस्तक में आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास मौजूद है। संस्थाओं और आर्य विद्वान आदि के १९ चित्र हैं। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।।)

( ६ ) दश नियम व्याख्या:—

श्री पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यति द्वारा यह 'दश नियम व्याख्या" नाम की पुस्तक लिखी गई है। इसमें आर्यसमाज के दश नियमों की विस्तृत तथा गवेषणापूर्ण व्याख्या की गई है। मूल्य ।), घटा हुआ मूल्य ≈)

( ७ ) ओम्प्रत्यक्ष:—

यह पुस्तक श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी वैदिक यती की लेखनी से लिखी गई है। ओ३म् परमात्मा की विस्तृत व्याख्या विद्यमान है। मूल्य ।।।), घटा हुआ मूल्य ।=)

( ८ ) वैदिक सिद्धान्त:—

यह पुस्तक भिन्न भिन्न वैदिक सिद्धान्तों पर आर्य्य विद्वानों द्वारा लिखित निबन्धों का अत्युत्तम संग्रह है मूल्य १।) सजिल्द १।।), घटा हुआ मूल्य ।।) सजिल्द १)

(९) भारत माता का संदेश—लेखक—श्री भाई परमानन्द जी, मूल्य ।।), घटा हुआ मूल्य ।=), पुस्तक में पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यता, धर्म ( मज़हब ) और राजनीति आदि कतिपय विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार किया गया है।

(१०) ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार मू० ।।), घ० मू० ।=), लेखक श्री पं० स्नातक धर्मदेवजी विद्या वाचस्पति। इस पुस्तक मे ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर विद्वत्तापूर्ण रीति से बहुत सुन्दर विचार किया गया है।

(११) वैदिक सन्ध्या रहस्य—लेखक श्री महात्मा नारायण स्वामीजी, मू० —)।।, घ० हुआ मू० —) इस पुस्तक मे वैदिक सन्ध्या की बहुत रोचक, खोज पूर्ण, प्रमाणिक और वैज्ञानिक व्याख्या की गई है सन्ध्या के प्रेमियों और स्वाध्याय शील सज्जनों के मनन करने योग्य पुस्तक है।

(१२) आरोग्य दिग्दर्शन—लेखक—श्री महात्मा गांधी, मूल्य ।=), घटा हुआ मूल्य ।) शरीर-विज्ञान

और स्वास्थ्य-रक्षा के सम्बन्ध में श्री महात्मा जी के स्वयं अनुभूत प्रयोगों का संग्रह। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और पढ़ने योग्य है।

(१३) **इज़हारे हक़ीक़त**—(उर्दू) लेखक—ला० ज्ञानचन्दजी आर्य्य, देहली। महात्मा गांधी ने आर्य्य समाज और ऋषि दयानन्द के मिशन और ग्रन्थों के सम्बन्ध में जो आक्षेप किए थे इस पुस्तक मे प्रामाणिक रीति से उनका खण्डन किया गया है। पुस्तक की अन्यान्य विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि लेखक ने आलोचना करते हुए उस मान और लोक-प्रियता का पूरा ध्यान रक्खा है जिसके महात्मा जी अधिकारी हैं। पुस्तक में कोई भी स्थल ऐसा नहीं है जिसमे महात्मा जी के प्रति अवज्ञा का आभास होता हो। पुस्तक स्थिर साहित्य में स्थान पाने योग्य। मूल्य ॥ऽ)

(१४) **सत्य-निर्णय**—उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है, मूल्य १।)

(१५) **योग रहस्य**—लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज, मूल्य ॥)

इस पुस्तक मे योग के अनेक रहस्यों को प्रकट करते हुए उन विधियों को भी बतलाया गया है जिनसे कोई भी नया आदमी जिसे रुचि हो, योग के अभ्यासोंको कर सकता है। आत्मिकोन्नति के जिज्ञासुओं को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।

(१६) **विद्यार्थी जीवन रहस्य**—ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी। विद्यार्थियों के लिए उनके मार्ग का सच्चा पथ प्रदर्शक, उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर श्रृङ्खलाबद्ध प्रकाश डालने वाले उपदेश। एक प्रति ॥)

(१७) **यम पितृ परिचय**—लेखक—श्री पं० प्रियरत्न जी 'आर्ष' मूल्य २)

इस पुस्तक में 'यम और पितृ' प्रकरण वाले वेद मन्त्रों की विद्वत्ता पूर्ण व्याख्या की गई है। स्वाध्याय शील सज्जनों के पढ़ने और संग्रह करने योग्य अनुपम ग्रन्थ है।

(१८) **दयानन्द सिद्धान्त भास्कर**—सम्पादक—श्री कृष्णचन्द्र जी विरमानी, मूल्य १।)

पुस्तक की विशेषता यह है कि भिन्न भिन्न महत्व पूर्ण विषयों पर स्वामी जी महाराज की भिन्न भिन्न पुस्तकों व पत्र व्यवहार तक में वर्णित मत को एक जगह संग्रह किया गया है। यह पुस्तक सम्पादक के लगभग १२ वर्ष के कठिन परिश्रम का फल है। जिन किसी विषय में भी ऋषि दयानन्द की सम्मति जानना चाहो वही प्रकरण इस पुस्तक मे देखोगे। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

(१९) **आर्य्य सिद्धान्त विमर्श**—प्रथम आर्य्य विद्वत् सम्मेलन के निबन्धों का संग्रह। कतिपय आर्य्य विद्वानों ने गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी द्वारा प्रकाश डाला है। स्वाध्याय शील व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक अमूल्य ग्रन्थ का काम देगी। पृष्ठ संख्या लगभग ५०० मूल्य १॥)

| | अ० मू० | घ० मू० |
|---|---|---|
| (२०) बंगला अनुवाद आर्य्यसमाज | ।) | =) |
| (२१) शुद्ध बाल मनुस्मृति | ।=) | ।) |
| (२२) वर्ण व्यवस्था | -) | )॥ |
| (२३) आर्तीयता | ।=) | ।) |
| (२४) वेद में अश्लील शब्द | -)। | -) |
| ,, २५ प्रति का | १।) | १।) |
| (२५) शताब्दी वृत्तान्त | १।) | ॥) |
| (२६) विरजानन्द विजय | ।) | =) |
| (२७) हिन्दू मुसलिम इत्तिहादउर्दू | ।) | =) |
| (२८ भगवद्गीता | १) | ॥।) |
| (२९) ईशोपनिषद् (ले० महात्मा-नारायण स्वामी जी) | =) | =) |
| (३०) केनोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |
| (३१) कठोपनिषद् | =)॥ | =)॥ |

**32 Crucifixion by an eye witness —**

This valuable book contains a detailed account of the crucifixion of Jesus Christ, given by one who witnessed it with his own eyes —price As 6 Reduced price As 5

**33 Truth and Vedas—**

It is an excellent exposition and translation of Vibhrat price As 8, Reduced price A 6

**34 Truth Bed Rocks of Aryan culture —**

The subject dealt with in this book is the ideal of truth stating candidly by means of Vedic Mantras and fine stories to what extent the Aryan race has lived to this ideal —price As 10, Reduced price As 8,

**35 Torch Bearer—**

A biographical sketch of Swami Dayanand —price Rs. 1/8/ Reduced price Rs 1/

**36 V dic Teachings—**

This book contains the most authentic replies to the objection raised about the Vedas by Dr Bhandarkar The learned author has besides, brought forth the superiority the Vedic Teachings contained —price Rs 1/12/ Reduced price Rs 1/4/

**37 Voice of Aryavarta—**

This little book comes from the pen of Mr T L Vaswani and contains reflections on Rishi Dayanand and his life and teaching —price As 8 Reduced price As 6

**38 The daily Prayer of an Arya—**

This booklet contains an ethical exposition in the light of Modern Thought of our daily Sandhya —pr ce As 4 only

**39 The Light of the Vedas—**

It contains lucid translation of 500 Vedic Mantras A book worth presenting to people of alien faiths price Rs 1/4/

**40 Commentary on Ishopanishat—**

Translated by Pt Ghasi Ram M A LL B —price As 4

पुस्तक मिलने का पता—

**कार्यालय सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा,**

श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली।

प० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये 'चन्द्र प्रिन्टिंग प्रेस' कूचा घासीराम देहली मे प्रकाशित हुआ।